

डा. राधाकृष्णन

पूर्व

और

पश्चिम

कुछ विचार



राजपाल बुक्स, दिल्ली

EAST AND WEST : SOME REFLECTIONS

का हिन्दी अनुबाध

'बैटी स्मारक व्याख्यानमाला'
प्रथम भाग

अनुबाधक
रमेश वर्मा

मूल्य
प्रथम संस्करण
प्रकाशक
मुद्रक

1

पाँच रुपये
जनवरी १९९२
राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली
हिन्दी मिडिय प्रेस दिल्ली

दो शब्द

वैदिकविश्वविद्यालय ने बीटी व्याख्यानमाला के उद्घाटन का प्राणम देकर मुझे सम्मानित किया है। गत अक्तूबर मास में जो व्याख्यान मैंने वैदिकविश्व विद्यालय में किये थे उन्हींकी विषयवस्तु प्रस्तुत पुस्तक में है। प्रथम व्याख्यान में भारतीय संस्कृति की मूल प्रकृति का वर्णन है। दूसरे व्याख्यान में वैदिक संस्कृति पर है तथा दो भागों में विभाजित है। पहिले भाग में मूलानुसूतिया रोम विषय और ईसाई धर्म के धारण का विवरण है और दूसरे भाग में ईसाई मिशनर इस्लाम धर्मबुद्ध पौडित्य का पुनर्जागरण सुधार तथा प्राकृतिक विज्ञान एवं प्राकृतिक धर्म के उदय का। तीसरे व्याख्यान में उन संस्कृतियों की व्याख्या है जिनमें प्रायः पूर्व और पश्चिम दोनों परेशान हैं तथा एक सृजनतात्त्विक धर्म की प्रावश्यकता पर जोर दिया गया है।

तीन व्याख्याओं में इतिहास के सम्बन्ध-सम्बन्धियों का अध्ययन समझ है। केवल कुछ प्रमुख धर्मों को लिया जा सकता है। इनके अनुसार मैंने व्यक्तिगत रीति परिवर्तित होगी तथा व्याख्यान प्रतिवर्षित सगई। इस व्याख्यानमाला का प्रीतिव्य केवल बड़ी है। मैंने समय रवान और ज्ञान की नीमाओं को दृष्टि में रखते हुए विषय का निरूपण अपने हृदय से किया है। मुझे आशा नहीं कि सभी मुझसे सहमत होंगे किन्तु यदि इनके धर्म लोगों का विचार करने की प्रेरणा मिली तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा।

गत अक्तूबर मास में वैदिकविश्व में मुझे अतिस्मरणीय अनुभव हुए। इसका श्रेय त्रिनिपल निरिम जम्म और श्रीमती ईटीम जेम्स को है। उन्होंने अत्यन्त सहृदयता से धीरे-धीरे समझ अक्षापूर्वक मेरी मुविधाओं का ध्यान रखा था।

बी. विल्ली
२० मई १९३३

सर्वपत्नी राजाकुम्भत

आमूख

'सर एडवर्ड बेटी स्मारक व्याख्यानमाला' की स्थापना डॉक्टर एच० ए० बेटी और मिस मेरी बेटी ने अपने चाई की स्मृति में की है तथा उन्होंने ही धारण्यक भवराशि का प्रबन्ध भी किया है। सर एडवर्ड बेटी ने १९२० से १९४१ ई० तक जब हम वर्ष बंगला में उनकी मृत्यु हुई, वैरगिल विरवविद्यालय के कुसपति पद का दायित्व सम्भाला हुआ रह चुका है। वे अपने कष्टमाय्य वर्षों में वनाहा में धार्मिक समझि हुई फिर मुद्रास्कीति। दूसरे विरवपुत्र का भी धारण्य हुआ। कमस्यार कुसपतियों ने उनके नीचे काम किया तथा वो बार सम्भ समय तक उन्हें ही प्रदासनिक् दायित्व भी बहुत करता पका। फसत सन्नासि के उन पचीस वर्षों में वैरगिल विरवविद्यालय के विकास का अधिभ्यम भेय इस महात कनागवासी की दूरदृष्टिता और दुइ निरन्धय की है। इस व्याख्यानमाला में उन्हीके नाम से स्थापित प्रदान किया गया है।

इस व्याख्यानमाला का उद्घाटन पूरे एक वर्ष तक स्थगित रहता पका ताकि डॉक्टर राबाकृष्णन प्रथम बेटी स्मारक व्याख्याता बनना स्वीकार कर सकें। उनके व्याख्यातो के प्रति जिन्हे इस पुस्तक में प्रस्तुत किया जा रहा है सोधों में किन्तनी रति की यह इमी बान में व्यप्य है कि माटियाम के तीन हजार में अधिक विद्यार्थी और कागरिक प्रतिराशि उन्हें मुक्तने घाने से। योनाधों की रति का एक घोर प्रमाण है। रेहपाप हाल में प्रथमे अधिक स्थितिवा के लिए व्यबस्था महो है, फसतिण योना सर चाबेर बहुरी विन्नागियम-सामेरी की गम्भ कुतियों पर बेटीकर मुनने रहे। महा घाबाड भी टीर मुनाई नहीं बनी थी। व्याख्यानमाला की गमालि पर के दर तक हांघवति करन रहे।

एक० तिरिल बेम्स
प्रिन्सिपल एवं उपाध्याय
वैरगिल विरवविद्यालय

घापने मुझ दृष्टि ही। घब में घोर क्या करूँ?" घब में अगर के बीचोंबीच जमीन पर पड़ा एक बूझा घासमी बीसा। वह रो रहा था। उन्होंने उससे पूछा "तुम रो क्यों रहे हो? बूझ ने उत्तर दिया 'मॉर्डे' में मर गया था। घापने मुझे फिर जीवन दिया। घब में रोने के प्रभावों घोर क्या करूँ?"

हमारी वैज्ञानिक उपसाधनों हमारे स्वास्थ्य समृद्धि प्रक्रियाय यहाँ तक कि स्वयं जीवन की मोनोक्लोनिक सहायक तो होती है, नोक्लोनिक उनका उपयोग बना सकते हैं? अपनी बाल्या को पाराश या बासुना में डब जाने देते हैं या सुगंध को मानने सपने हैं जिसके अनुसार बतना एक सबूत है घोर जीवन से अधिक धयस्कर मूल्य है?

हम कमी-कमी कहते हैं कि हाइड्रोजन बम शान्ति-स्थापना का घरन बन सकता है क्योंकि उसकी विनाश-शक्तता पुत्र को रोकने में समर्थ है। हाइड्रोजन बम मानव के लिए एक शुनीधी है एक नवीन स्वभाव एक नवीन धार्मिक दृष्टिकोण के विकास की पुकार है। बिपटी ने घापने समय के जीवनशायी को समाह ही की कि वे कोय कम करें, बुरों को मराना न करें बुरों के उत्कृष्ट घरन बिस्तार करने को तैयार रहें, हाइड्रोजन घोर करना जैसे पूर्वों का विकास करें।

२ पूर्व और पश्चिम

इतिहास पर व्यापक दृष्टि प्राप्त करने पर हमें पता लगता है कि प्राच्य जीवन सर्वत्र पारश्चात्य जीवन-सर्वत्र स भिन्न नहीं है। राष्ट्रीय घपना महाद्वीपीय सती विज्ञान के प्रथममूलक विज्ञान में जिसके अनुसार सभी प्राच्य एक प्रकार के हैं घोर सभी पारश्चात्य दूसरे प्रकार के घपिक सत्यता नहीं है। इस प्रकार क सरसरे बलवध्य किसी राष्ट्र के इतिहास की जटिलता का संकेत तो करते हैं, किन्तु वह वास्तव में जयने कहीं घपिक जटिल है। सचार्ड तो यह है कि पूर्वों घोर पश्चिमी जाति का प्रारम्भ एक ही प्रकार से हुया था। घपनी प्रारम्भिक प्रकृत्यार्थों से उन्होंने प्रपेराष्ट्र स्वतन्त्र दृष्टिकोणों का विकास किया घोर कुछ ऐसे समय उपलब्ध किए जिनके कारण के परस्पर समय बीचने सये। घात्र दोनों एक ही समस्या का समाधान हूँ करने में सये हैं घोर बहु समस्या है मानसिक घोर धार्मिक मूल्यों के एकीकरण की। इन्हीं दोनों मूल्यों क पारस्परिक तनाब में ही इति हास का घर्ष घोर जड़ निहित है। पूर्व घोर पश्चिम दोनों में घनिकिष्ठ प्रति कूमवाएँ हैं घोर उन्हें हम करने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। पूर्व घोर पश्चिम दोनों एक-दूसरे से सीलने नवीन बिस्परिवर्तनशील परिस्थितियों के घात्र घटीत से साथ पुनर्यस-कन धार्मिक बिदलने का उस एक नया जीवन्त रूप देने को

सम्भता के मन्त्रों पर पूरा या पश्चिम किसी का भी एकाधिकार नहीं रहा है।

पूनीशास्त्रों के अनुसार, १०० ईसापूर्व या कम से कम उसके अपने समय (४०० ईसापूर्व) में पहले कोई महत्त्वपूर्ण घटना नहीं पटी।^१ यह समत है। ज्येठों से बहुत पहले ही एशिया के विभिन्न भागों—चीन ईरान और भारत—में मानव तथा उनकी संस्थाओं को निर्दोष बनाने की आवश्यकता पर विचार किया गया था। अरबुद्ध की चरित्रसंहिता का अर्थ्य भौतिक संसार पर ही नहीं प्राणा पर भी उद्गुणों की विषय दिखाना है और इसकी सहायता से ही यूनानी दर्शन परिपक्व हो सका। व्यक्तिगत मूल्य और सामाजिक भाषा-विचार पर अनुसूचित के विचार बलप्रतिष्ठ हैं।^२

किर मानव का अर्थ प्राणि-विशेष के रूप में हुआ और सम्भता उसके बारे में हम कुछ नहीं जानते, जवनी। इस समय मानव के इतिहास में विद्या परिचर्तन हुए। तब ८०० ईसापूर्व से २०० ईसापूर्व तक जिसे ब्रोकमर फार्म संस्था में 'पैग्रीव' बुन कहा है संसार के तीन विभिन्न भागों—भूमध्यसागरीय प्रदेश चीन और भारत—में दानों और बनों का विकास हुआ। इन विचार-प्रचामियों के मातीक बर्न का लंदन किता और व्यक्ति की स्वाधीनता तथा 'सावमी' के साथ उसके सम्बन्ध की पुष्टि की। प्रायेण यूपाम में बौद्धिक प्रपत्ति समाज परिस्थितियों—मनैक छोटे-छोटे राज्यों की सपस्थिति—के कारण हुई। राजनीतिक एकता स्थापित करने के प्रबल किए गए। सामान्तर प्राप्तात्मिक विकास वास्तव में मानवता की मूलभूत एकता का ही प्रमाण है। लगभग १५ बनों तक इन संस्कृतियों का सामान्तर विकास होता रहा। किर वैज्ञानिक और वाचिक उपनिषदों में चरिचामी देशों में विद्या परिचर्तन सा दिया और संस्कृतियों की मिश्रता स्पष्ट हो गयी।

अबोधों का अनुमान है कि भौतिक विषय का प्रारंभ चार या पांच अरब वर्ष पहले हुआ था। उसके पहले न तो तारे थे और न परमाणु। पृथ्वी का अन्त समय ही प्रारंभ रूप पहले हुआ था। किर अमरा टीइपाटी तथा स्तनपापी

१ 'ए क्लैसिकल इन्वेस्टिगेशंस' सन्दर्भक : एर चर्चेंस वाच एर अन्व (१९१४) पृष्ठ ४६, पृष्ठ ८-१०।

२ विस्तृत है कि अन्वृत्तित और केर्मान रोम ही मन्वृषी अरधी, किछन का मन्वृषी की किछन में वक्ता है, एक दोस्रो ही अन्वृत्तितिक को तुम्ह सनकने है तत्काल के किछनी है सिधकाल को लखक का अन्वृत्तितिक मानने है अन्वृत्तितिक की संकलन-मालों के पूर्व किछन पर विस्तृत रजने है, और अन्वृत्तितिक व अन्वृत्तितिक तुम्हों की विस्तृत लेख अरधे लखक करने है।

बस्तु पैदा हुए। बादमी इस ग्रह पर लगभग पांच लाख साल पहले आया। वह ध्वज प्राणियों से भिन्न मस्तिष्कीय प्राणी था। वह अपने सबसे नजदीकी रिश्तेदारों बलमानुषों से भी भिन्न था क्योंकि उसने पेड़ों पर रहना छोड़कर दो पैरों पर चलना शुरू कर दिया। मनुष्य अपने विछले पैरों पर चलने लगा तो उसके पगल पैरों और पंखों को उठके लीर का तार संभालने की प्राबल्यता न रही और वे अधिक मुहुंमार काम करनेवाले हाथों में बरस गए। इस कारण वह सीबा बड़ा रहने और काम की क्रिया को नियंत्रित रखने लगा फसल बागी का विकास हुआ। किन्तु बादमी तथा दूसरे जानवरों के बीच का सबसे बड़ा अन्तर तो है बादमी के मस्तिष्क का आकार और गुण। मानों अपने से पहले के जानवरों को पीछे छोड़कर बादमी तर्करहित जीवन के प्रयत्न से बाहर निकल आया और प्रकृत करने लगा, क्यों? यही एकमुक्त चेतनवादी प्राणुत्व है। वह सब सभी भौतिक शक्तियों का विचार नहीं है, बल्कि अपने मरिच्य के निर्माण में स्वयं भागी बनता है। जानवर अनुभव से और नकल करके ही सीखते हैं किन्तु अनुभव से सीखने की क्षमता का सर्वाधिक विकास बादमी में ही हो पाया है।

विचार-क्षमता का पहला प्रकाशन हबियार बनीने में हुआ। यूरोप एशिया और अफ्रीका में हमें पूर्व प्लीस्टोसीन युग के परपर के हबियार मिले हैं जो बिलेप कामों के लिए बनाए गए थे।

मानुष और कस्तुरी विचार के संगी हैं। पूर्व वैश्वोभित्तियुग में परपर के हबियारों के आकार और बनावट में सुधार हुआ फसल के और अधिक उपयोगी तथा सुन्दर हो गए। उत्तर वैश्वोभित्तियुग की कुलारमक क्षमता के नमूने—छेबहार सीपियां और बाँप लकड़ीदार कगल तथा हाथीदाँत की नाक की कीलें—हमें आज भी मिलते हैं। सुधायों की बीमारियों पर अधिक या लुटे हुए जिनों से पता चलता है कि उस समय के बादमी तीन विमार्शवाले कुर्यों को दो विमार्शवाले जिनों में प्ररिगत करने की योग्यता रखते थे। स्पष्ट है कि उन्हें परियेय तथा तत्सम्बन्धित प्रकाश के नियमों का ज्ञान था। विचारक्षमता और कस्तुरीसिद्धि दोनों सन्धिय थी। "आरचयंजनक वस्तुएं तो अनेक हैं किन्तु बादमी के बच्चे से बड़कर सबसे बड़ा, बिलक्षण कोई नहीं है" बहुत समय छोको बनीय का म्यानु कैबल विचारक्षमता, पक्ष्यक्षमता और स्वयं पैर की मूर्ति परम् कस्तुरीसिद्धि जैसे विचारों का मञ्जम तथा समय और स्थान की पूरी को पार करके ज्ञान का नुरतानु रखने और प्रसारित करने की क्षमता पर भी था। बलमानुष्य कृत्रियों की व्यावहारिक और भौतिक हबियारों के उद्योग ही

पुरामी है।

नियमितिक युग में शामिल हुई। धारणी गाय-गवह करना चाहकर गाय उदात्त करने लगा। धनाज की ऐनी और पशुपालन में परिवर्तन के मुख्य कारण थे और इन्हींके कारण जनसंख्या ठीक से बढ़न लगी। इनमें एक नवीन धर्म-व्यवस्था का उदय हुआ। ऐनी गरुड़ी या कुशान में उमीन शोना फिर बेल या इनी तरह के दूसरे जातघरों द्वारा गीबे जाते-बाने हम का हमेशाम नवियों में बहरे मिरावरक उमीन की निर्बाई करना—इन सबके कारण नये विषय का धारम्भ हुआ। नियमितिक जालि का धर्म है प्रकृति के प्रति एक नया तथा धार्मिक धारमशास्त्र बुद्धिबोध। इस धर्म के मानकों में प्रकृतिप्रदल बीजों की बुनबाव श्रोकारन करके धरनी धारमपकनानुसार उगड़े बनना ली। उहोने प्रा बुद्धिक बन से न पायी जानेबानी बुनिस बन्नुषों—जैस मिट्टी क बर्तन हैं कपड़—का निर्माण किया। उन्होंने पहिये बनाए के पशु-पालन करने धर बनाने और जनबायु के परिवर्तनों से धरनी रता करने के लिए मूनी या ऊनी कपड़े बुनकर या बमड़ा मिसकर पहनने के बरत बनाने लगे। स्वय को अनुशासित करके उन्होंने स्वामी समुदायों की नीब डामी। गाय-उत्पादन धर्मना की धारदरक धर है और प्राण प्रमाथों स पता बनना है कि हमरा धारम्भ मिय और मध्ययुग में यूरोप के किसी भी स्थान से 'लगभग २०० साल पहले' हा बुका था।

मानव-जीवन सह-सहित्य और सहयोग का संयुक्त जीवन है। यह सामुदायिक जीवन एक प्रकिया नहीं है, परिणय है जिसमें क्रियाएं प्रतिक्रियाएं होती हैं। महामस्मी के धने या बीजियों की बीबी की तरह सामाजिक या सधोर्गी जीवन पर प्रकृतियों का नहीं बल्कि धर्म और उदरस का प्रभाव पड़ना है। इसी सांख्यिक समाज के कारण बुद्ध (मिनिब-समाज बन आता है) भाया और संकीर्ण तथा सामिक और राजनीतिक संस्थाओं द्वारा यही पधार्य प्रकट होता है।

मासों बयों के धराप्य प्राप्ति विहास में मानव के निर्माण की रिण में निश्चित करम उटाए गए। उमकी गुणना में विद्यमान छः हजार बयों का सिखित इतिहास थोड़े ही समय का है। उन लाख बयों में धनेक धाकार के मनुष्य बुनिया के विभिन्न भागों में रहने व और एक-दूसरे के धारे में उगड़े समिक भी जात न था।

यूरोप को केन्द्र मानकर पूर्व और पश्चिम का मन्तर बनसाया जाता है। जीगी

१. प्रोफेसर बी. एन्जलार का विचार है कि 'सम्पन्नत रम काग की है कि यूरोप में नियमितिक धर्मशास्त्र का धर्मप्र प्रेषित मित्र-धर्म से हुआ था। रि. मी. (से स्वीकार करने है इस विचार का कोर निश्चिन प्रमाण नहीं मिलता।—'द क्राफिकल इन्डस्ट्रियस' धर्म संर (१९२४) पृष्ठ ४२।

मोहनजोदड़ो का सर्वोत्कृष्ट समय ३५००-२०५० ईसापूर्व के बीच था। मगर योजनानुसार बसा था। तटीय फुट चौड़ी सड़कें पूर्व से पश्चिम उत्तर से दक्षिण जाती थी। गलियों की चौड़ाई इनसे घापी थी। इमारतें पकी ईंटों और मिट्टी के गारे से बनी थी। अनेक इमारतें तो कई मंजिलों की थीं। मकानों में स्नानागार और नालिया का प्रबन्ध था। धार्मिक स्नानागार भी थे। नालियों के पाइप मिट्टी के थे—पकाकर, प्रापस में जोड़कर बनाए हुए। मिट्टी या पत्थर की टाबीडो से उनका सौन्दर्य-प्रेम स्पष्ट है। उनपर चमकदार पालिश है जबवा धैत वाक हाथी या मयूर के चित्र कुदे हैं। बालबत्तों के चित्र घमासपूर्ण हैं। वे छोटा चांदी सीसा तांबा घावि धातुओं का प्रयोग जानते थे। वे काँसे के सकर बनाता जानते थे। धारुपेक्ष नृत्य करती हुई एक मूर्ती की कांस्य-मूर्ति कुर्बाई से प्राप्त हुई है। चूड़ियाँ अंगत और नाक की कौनों भी मिली हैं तराशू मिले हैं जिनसे मामूम होता है कि तीसरे और मापने के उपकरणों का उन्हें ज्ञान था। गोटियाँ मिली हैं और एक तराशू का खेल बगों में बिमात्रित तक्ती पर मोहरों से खेला जाता था। उन्हें कपास (या रुई) को उपयोग में आना आता था।^१

मोहनजोदड़ो से प्राप्त धार्मिक अवयवों में माँ देवी की मूर्तियाँ हैं। इसके प्रतिरिक्त एक पुरुष देवता की मूर्तियाँ भी मिली हैं जो परम्परागत चित्र की प्रतिरूप मानूम पड़ती हैं। स्पष्ट है कि धार्मिक हिन्दू धर्म की अनेक विशेषताओं के स्रोत अत्यन्त प्राचीन हैं। सर जॉन मार्शम ने तीन मुर्तियों वाले एक देवता (त्रिमूर्ति) का चित्र किया है जो एक चौकी पर पधासन में ध्यानाभ्यसित बैठ है। वे मृगछाया पर धासीन हैं और उनको भेरे हुए हैं हाथी बाघ गंडा और भैंसा। महान वोगी चित्र की यह मूर्ति पांच-छः हजार वर्षों से भारत के धार्मिक जीवन में प्रमुख स्थान ग्रहण किए हैं और इस तथ्य की प्रतीक है कि धार्मिक जीवन साहस पवित्रता जीवन में एकता और भाईचारे से ही पूर्णता प्राप्त की जा सकती है। यही धारण हमें ब्रह्मसंहिता के चिन्तन में तीन उपनिषदों के दृष्टांतों में अज्ञान और ईर्ष्या को पराजित करनेवाले ध्यात एवं सौम्य बुद्ध में ध्यातमार्ग के पश्चात् मार्भमीय प्रेम में एकाकार हो जाने और धार्मिक आस्था के कारण है। इन युग की मूर्तियों के धार अतीव मोनरही टाबली के धार धार्मिक चिन्तनों में मूलक तथा बुद्ध भी नहीं आता था सारा है।

—बाल वेत्सर्न इन 'द ओरिजिन एंड गेन ऑफ इण्डिया', अमेरिकी अनुवाद (१९२६) पृष्ठ २०६।

१ इण्डियनोसो धार इण्डियन ने 'दक धीरे' का चित्र किया जिसमें एक मही अपने धार्मिक मंड के ऊपर से भी धार्मिक अवस्था और धार्मिक अर्थ देता होता है अतीव चिन्तने करने वाला करते है।

पुरानी है।

त्रिविध विद्युत् युग में शामिल हुई। धारवी प्राच-अवसृष्ट करना छोड़कर प्राच-उत्पादन करने लगा। धनाज की धनी और वसुधागत द्रव परिवहन के मुख्य साधन में धीरे-धीरे कारण जनमक्या तेजी से बढ़ने लगी। इनके एक नवीन चर्च-स्वरूपा का उदय हुआ। ऐसी मछड़ी या कुशाम में जमीन छोड़ना फिर बीस या इमी तरह के दूसरे जानवरों द्वारा घीसे जाने-जाने इन का इस्तेमाल नदियों से महुरें निहासकर जमीन की सिर्चाई करना—इन सबके कारण नये विद्युत् का धारण हुआ। त्रिविध विद्युत् शामिल का धार है प्रकृति के प्रति एक नया तथा धार्मिक धारमधारक दुःखिकोत्। इन युग के मानवों ने प्रकृतिप्रदान चीजों को बुझाए रही-कारण करने के धारवी धार-योजनानुसार उन्हें बदला भी। उन्होंने प्राकृतिक रूप से न पायी जानेवाली हनिम वस्तुधर्मों—बीजे मिट्टी के बर्तन ईटे कपड़े—का निर्माण किया। उन्होंने पहिले बनाए थे वसु-यामन करने पर बनाने धीरे-धीरे जसवामु के परिवर्तनों से धारवी रसा करने के लिए मूनी या उनी कपड़े बुनकर या जसका घिसकर पहनने के बरक बनाने लगे। स्वयं को धनु-जासित करके उन्होंने स्वामी धनु-धर्मों की नींव डाली। प्राच-उत्पादन सम्पत्ता की धारवक धर्म है धीरे-धीरे धारव प्रमाथों से पता चलता है कि इनका धारण मिस धीरे धारवपूर्व में क्रूरों के किसी भी स्थान से 'सगमय २००० साल पहले' हो चुका था।

मानव-जीवन सह प्रतिस्तर और सहयोग का संयुक्त जीवन है। यह मानव-धार्मिक जीवन बड़ प्रकिया नहीं है, परिणय है जिसमें क्रियाएं-प्रतिक्रियाएं होती हैं। मनुष्यवर्ती के धर्मों या धीरियों की बाबी की तरह, सामाजिक या सहयोगी जीवन पर प्रवृत्तियों का नहीं बल्कि धर्म धीरे-धीरे का प्रभाव पड़ता है। इसी मानविक धारव के कारण मनु-मिनिब-समाज बन पाया है। धारवी और संकेतों तथा धार्मिक धीरे-धीरे राजनीतिक संस्थाधर्मों द्वारा वही धारव प्रकट होता है।

साथों बर्षों के धारव्य धारु इतिहास में मानव के निर्माण की दिशा में निरिबल काम उठाए गए। उसकी तुलना में पिछले छः हजार बर्षों का निरिबल इतिहास बोड़े ही समय का है। उन लम्बे धुधों में धनेक धारव के मनुष्य धुधिया के विधिल धारों में रहते थे धीरे-धीरे एक-दूसरे के बारे में उन्हें ठनिक भी ज्ञान न था।

यूरोप की केन्द्र मानकर पूर्व धीरे-धीरे पश्चिम का धारव बढनामा जाता है। धीरो

१. प्रोफेसर बी. गार्मन धारव का धारव है कि 'समयकाल इस बात की है कि क्रूरों में त्रिविध विद्युत् धारव का धारव प्रवेश निकटतम से हुआ था फिर भी, धीरे-धीरे धारव करने हैं, इस धारव का कोई निरिबल प्रभाव नहीं मिलता।—'४ क्रूरों के धारव (इ.ई.ए.) धुध ४१।

मित्र क्षेत्र सांस्कृतिक या नृत्तरचनात्मक इकाइयाँ नहीं होते।^१ पूर्व और पश्चिम दोनों में से कोई भी संमूष्ट इकाई नहीं है। दोनों में से प्रत्येक केवल एक घटक है जो विकास की विभिन्न बराबरी में अनेक पृथक्-पृथक् भोगों और बर्णों के लिए प्रयुक्त होता है। दोनों की संसृष्टियों का प्रपत्ता प्रत्यक्ष व्यक्तिगत था। प्रपत्तमान मुसलमान और ख्रिस्तिानो कैथलिक या भीमो वामोवासी और कंकवासी क्षेत्र में कोई समानता नहीं है। फ्रांस और जर्मनी तथा स्पेन और स्कैंडिनेविया के समान चीन, जापान और भारत का प्रपत्ता-प्रपत्ता प्रपत्त सांस्कृतिक विकास हुआ था। अतः पश्चिमी वा पूर्वी संसृष्टि कहने का कोई अर्थ नहीं क्योंकि उनका धारक होने पर भी उनके अनेक उपविभाग रहे हैं। फिर भी पश्चिमी संसृष्टि तरह पश्चिमी संसृष्टि की उपसंसृष्टियों को परस्पर सम्मिश्रित किया जा सकता है, उसी संसृष्टि तरह पश्चिमी और पश्चिमेतर संसृष्टियों को नहीं।

इतिहास पर व्यापक दृष्टि डालने पर हमें मान्य होना कि सम्पूर्ण मानव जाति और उसकी सामाजिक व्यवस्थाओं के कुछ मौलिक तथ्य होते हैं, जो हमारे विचारों की आधारभूत विवेक रखनेवासे अन्तर्गत से अधिक प्राथमिक है। फिर भी ये अन्तर स्पष्ट हैं और किसी संसृष्टि को उसका रूप और विविधता प्रदान करते हैं। और संसृष्टि अपने सदस्यों को विपरीत विचारों से कियाधीन बर्णों के अत्यन्त सूक्ष्म संतुलन के अन्तर्गत अत्यन्त समतुल्य और इतना प्रदान करती है। उदाहरणतः भारतीय संसृष्टि एक लम्बी एवं वैविध्यपूर्ण परम्परा है। दर्शन और धर्म कला और साहित्य विज्ञान और मानव-विज्ञान के क्षेत्रों में एक महान अद्भुत प्रयास है।

किसी ऐतिहासिक संसृष्टि की बात करने का अर्थ है उसे अधिक उत्तमवासे मुखा और विरहासी की बात करना उसके सामाजिक बांध का निर्धारण करने-वासी सामाजिक धर्मियों की बात करना। कार्मकावियों का विस्वात है कि संसृष्टि उत्पादन के भौतिक उत्पादों का बाहरी बांध मात्र है किन्तु यह ठीक नहीं। केवल हिन्दू मारुत बौद्ध एथिया पश्चिमी ईसाई-साम्राज्य वा मुसलमान समाज जैसे नामों से ही मान्य होता है कि प्रत्येक समाज की आधारभूतार्थ सामाजिक परम्पराएं हैं, अधिकतम हैं। सामाजिक संस्थाएं, धार्मिक व्यवस्थाएं और वैज्ञानिक विन्यास सभी परस्पर कुछ आदर्यों से होते हैं, जिनके अन्त

१ क्षेत्र के साथ भौतिक क्षेत्रों के अन्तर्गत वा विज्ञान निरन्तर, अत्यन्त अन्तर्गत अन्तर्गत, अत्यन्त अन्तर्गत और अन्तर्गत में किताब है।

पर ही मानव अपनी प्रकृति को इतना पर्यु और मानव प्रकृति पर पर्यु व्यक्ति पर समाज—पर विद्ययी हो पाता है। जब तक कोई समाज अपने पारसे पर ओहित रहता है तभी तक उसके जगत् और समाजिकता में प्रयत्न रहता है। विभाग नदित हो जाने पर समाज का विकासिक माण और निम्न होवे जा जाते हैं। प्रति बाय विन्यासी का परम्पना ही वास्तुनिक ज्ञान का मूलम है। म्पत्त के परने में, संस्कृति कठोर होकर म्पत्ताना बन जाती है, एक निश्चय धारण प्रहम कर मेवी है जिसमें कोई और कर परण करने की, पावे विकास की समता नहीं रह जाती। पुरानी और नई समी म्पत्तिया की कर्त होती है। उनपर हमने प्रभाव परण है। पुराने समय में चीनी और हिन्दु म्पत्तिया का म्पत्तक परिचयी म्पत्तिया के साथ था। इसी प्रकार परिचयी म्पत्तियों का म्पत्तक चीनी और हिन्दु म्पत्तियों के साथ था। विद्यार्थी का धारण प्रभाव बहुत अधिक हो सका है जिसे उस सीमा तक स्वीकार करने की प्रकृति हममें नहीं है।

३ सिधु-साम्यता

विद्यन वेस्टकोट ने स्वयंमि की सी० एच० एच० व से कहा था "भारत पर पुनाम ही ऐसे को विचारक राष्ट्र थे जिन्होंने मसार के इतिहास का मूलन किया। पुनाम कृतोण का धनुषा था। उनी प्रकार भारत तथा एशिया का म्पत्तया रहेया।" भारत एशिया का म्पत्तया होने का दावा नहीं करता और चीन की म्पत्तिया की म्पत्तिया और महत्ता को स्वीकार करता है फिर भी इस समय में इतना ही स्पष्ट है कि म्पत्तियाम से ही एशियाई मामलों पर भारत का महत्तरपूर्ण प्रभाव रहा है।

जाने म्पत्तयाकानु और निश्चयवाद, धारणविषयक इतिहास और हेतुवादी विचारधारा-महित भारतीय संस्कृति का प्रभाव बार हजार वर्षों से म्पत्तया पर छाया हुआ है। इकोनेमिवा और इकोनीन मत्तम और कार्मिड बर्मा और म्पत्तया चीन और बापाग कुछ संघों में भारतीय धारण—हाइल और बीड—के साथी हैं। म्पत्तया का धारणार सौम्य और बोरीबुदुर की धारण रम्यता की धारणर हमें उनके निर्माताओं की म्पत्तया धारण और म्पत्तयाकानुता पर धारणर हुए बिना नहीं रहता।

हमारे एक महान कवि कलिदास को मान्य था कि बिदेसों में भारत का प्रभाव किता था। इसीलिए क्या धारणर यदि सग्होंने हिमासय पर्यंत का धारणर इस तरह

(१) 'कार्मिड किर देवद', कम्पत्तयाकानु म्पत्तया वन म्पत्तया क्पत्तया (१९४२), इप २५ (धारणर म्पत्तया वन म्पत्तया)।

सिर्फ क्षेत्र सांस्कृतिक या गृहस्थशास्त्रीय इकाइयाँ नहीं होते।^१ पूर्व और पश्चिम दोनों में से कोई भी संघुष्ट इकाई नहीं है। दोनों में से प्रत्येक केवल एक शब्द। जो विकास की विभिन्न घटाओं में अनेक पृथक्-पृथक् लोगों और बर्गों के त्रि प्रयुक्त होता है। दोनों की संस्कृतियों का अपना अलग व्यक्तित्व था। अथवा मुसलमान और क्रिस्तिनो कैथलिक या चीनी ताओवादी और लंकावासी बौद्ध कोई समानता नहीं है। फ्रांस और जर्मनी तथा स्पेन और स्वीडिनेविया के समान चीन जापान और भारत का अपना-अपना अलग सांस्कृतिक विकास हुआ था। पर पश्चिमी या पूर्वी संस्कृति कहने का कोई अर्थ नहीं क्योंकि समान धारण होने पर भी उनके अनेक उपविभाज रहे हैं। फिर भी जितनी अन्धी तरह पश्चिमी संस्कृति की उपसंस्कृतियों को परस्पर सम्बन्धित किया जा सकता है, उतनी अन्धी तरह पश्चिमी और पश्चिमेतर संस्कृतियों को नहीं।

इतिहास पर व्यापक दृष्टि डालने पर हमें मालूम होगा कि सम्पूर्ण मानव जाति और उसकी सामाजिक व्यवस्थाओं के कुछ मौलिक तत्व होते हैं, जो हमारे विचारों को प्राकृतिक किये रहनेवाले घटकों से प्राकृतिक है। फिर भी घटकों स्पष्ट हैं और किसी संस्कृति को उसका रूप और विशिष्टता प्रदान करते हैं। और संस्कृति अपने सदस्यों को विपरीत विचारों में क्रियाशील बर्गों के अत्यन्त सूक्ष्म संतुलन के फलस्वरूप उत्पन्न समतुल्य और इकता प्रदान करती है। जहाँ अन्ध, भारतीय संस्कृति एक सम्पूर्ण एवं वैविध्यपूर्ण परम्परा है, अर्थात् पूर्व और पूर्व कला और साहित्य विज्ञान और मानव-विज्ञान के क्षेत्रों में एक महान अदृष्ट प्रयास है।

किसी ऐतिहासिक संस्कृति की बात करने का अर्थ है उसे भीतर रखनेवाले भूत्वों और विश्वासों की बात करना उसके सामाजिक इतिहास का विश्लेषण करने वाली धार्मिक दृष्टियों की बात करना। मार्क्सवादियों का विश्वास है कि संस्कृति उत्पादन के भौतिक उपारों का बाहरी अंश मात्र है किन्तु यह सत्य नहीं। केवल हिन्दू भारत बीज एशिया पश्चिमी ईसाई-साम्राज्य वा मुसलमान समाज जैसे नामों से ही मालूम होता है कि प्रत्येक समाज की धार्मिक-साधना धार्मिक परम्पराएँ हैं जीवनपर्यन्त हैं। सामाजिक संस्थाएँ, धार्मिक व्यवस्थाएँ और वैज्ञानिक विज्ञान सभी परस्पर कुछ मात्राओं में अलग हैं, विभिन्न हैं।

१ यूरोप के साथ भौतिक संस्थाओं के अन्ध पर दृष्टि का विश्लेषण निम्नपूर्व, अन्ध अन्ध है। अन्ध, अन्ध, अन्ध और अन्ध, चीन अन्ध और अन्ध में विभक्त है।

पर ही ज्ञानवर्धन प्रकृति की वृत्त। राम और मानव प्रकृति और बलि व्यक्ति और समाज पर समाज—पर विचारों का पाठा है। अब तक को समाज अपने धर्म पर जोर दे रहा है। उसी तरह उसके जगत् और जगत्विषय में चल रहा है। विचारों पर विचार हो जाने पर समाज का विचारविरोध और विचारों का जाने है। मनु काय विचारों का परम्परा ही मानव विचार का मूल है। स्वयं के मनु में संस्कृति कठोर हाफ़ मनुका में जाती है, एक विचारों का प्रकार प्रकृत कर देती है। विचारों को और रूप प्रकृत करने की, माने विचारों की समता मनी यह जाती। पुरानी और नई सभी संस्कृतियों की जड़ होती है। उनपर हमारे प्रभाव पड़ने हैं। पुराने समय में भीम और हिन्दू संस्कृति का समक परिषदी संस्कृतियों के साथ था। इसी प्रकार परिषदी संस्कृतियों का समक भीम और हिन्दू संस्कृतियों के साथ था। विचारों का मानव प्रभाव बहुत अधिक का था है। विचारों को समक तक स्वीकार करने की प्रकृति हममें नहीं है।

३ सिधु-सम्पत्ता

विचारों के स्वीकार की ही एक एकदम में कहा था "भारत और यूनान ही ऐसे दो विचारों के राष्ट्र थे जिन्होंने मनु के विचारों का मूल किया। यूनान यूनान का प्रगुषा था। उसी प्रकार भारत सदा एशिया का प्रगुषा रहा। भारत एशिया का प्रगुषा होने का बाका नहीं करता और चीन की संस्कृति की प्राचीनता और महत्ता का स्वीकार करता है, फिर भी इस समय में इनका तो स्पष्ट है कि प्राचीनकाल से ही एशियाई मामलों पर भारत का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है।

मनु के अध्यात्मवाद और निरक्षयवाद, धार्मिकविषयक दृष्टिकोण और हेनरिच विचारों का—सहित भारतीय संस्कृति का प्रभाव बार हज़ार वर्षों से मनु का छाया हुआ है। ईबोनेथिमा और ईबोनीन समय और यार्डिन बर्मा और लंका चीन और जापान कुछ प्रसों में भारतीय धार्मिक—हाफ़ और बीज—के मार्ग हैं। संस्कार का धार्मिक धर्म और बारीबुदुर की धार्मिक सम्पत्ता को देकर हमें उनके निर्माताओं की धर्ममूर्त प्रेरणा और निरक्षयसत्ता पर धार्मिक विचार नहीं रहता।

हमारे एक महान कवि कविशास का मानव था कि विचारों में भारत का प्रभाव कितना था। इसीलिए सभी धार्मिक यदि उन्हें हिमाचल पर्वत का बलय इस तरह

किया मानो वह पृथ्वी को मापने का यज्ञ हो। सम्यताओं को मापने का पैमाना हो।^१ कहा जाता है कि हिमालय पर देवताओं का निवास है।^१

जिस संस्कृति का विकास लम्बे समय तक अधिष्ठित रहा हो उसकी धारणा से सारास्कार करने का हंग यह नहीं है कि किसी विशेष समय पर उसका सेना जोटा से लिया जाए। यह सेना-बोला न तो उसके पहले की बसाओं में मिल सकता है और न बाद के विकास में। किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझने का हंग यही है कि उसकी सम्पूर्ण वृद्धि को समझा जाए और उस मुझ धर्म को पाने का प्रयास किया जाए, जो हर बसा में अपनी अभिव्यक्ति के लिए संवर्धित रहता है किन्तु कभी भी सम्पूर्ण व्यक्त नहीं हो पाता। यही है वह धर्मधारमा जो इतिहास की विभिन्न अवस्थाओं को एक सूत्र में बाँधती है, और प्राचीनतम तथा नवीनतम सभी अवस्थाओं में उपस्थित है। भारतीय संस्कृति का यह धर्म यह धार्मिक केन्द्रित क्या है ?

कुछ समय पहले तक हम सोचते थे कि लगभग तीन हजार वर्ष पहले भारत में एक उच्च सम्यता थी जिसका विद्यालय प्रभाव पश्चिमी देशों पर यूनानियों और धर्मों द्वारा पड़ा था। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की पुरातात्विक खोजों से पता चला है कि ३०० ईसापूर्व सिन्धु घाटी में एक अत्यन्त उन्नत सम्यता थी। मुहूर्तों और ताबीलों पर की गई खुदाई से परिचय निकाला जा सकता है कि बाद के भारतीय धार्मिक जीवन पर इस सम्यता का धर्मित प्रभाव पड़ा था।^२ हर जैन मार्गम का कथन है कि अनेक प्रमाओं से भारत में एक अत्यन्त विकसित

१ कल्पवृक्षस्यं दिशि देवतासु

विद्यालयो नाम मद्रसिदाय ।

पूर्वापरी लोकनिकी बसुका

श्विन्त वृक्षिन्त इव धारवदः ॥ —कुमारसंस्कृत, २१

२ देवभूमित्प्रसक्तो ।

३ भारत देशमें न सिद्ध है। सत्य होने के सम्बन्ध में भारत में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। वहाँ के विद्वान वैशाखी से विद्वानों का उद्भव है, सकारण नहीं गयी है, अनेक-अनेक एन्डो और आदिवासी ने जो सृजित करते वहाँ सत्यता बिखर है, विद्वानों सम्बन्धों से अनेक विचार और अनेक धर्मों का उद्भव है। लेकिन अनेक धर्मों और अनेक सत्य को धर्मगत राष्ट्र और अनेक धर्मों के सम्बन्ध में है। अनेक धर्मों के उद्भव है तथा उनका एक धर्मकार और धर्मकार अनेक धर्मों में एक धर्म है। जिस, वैश्वविद्यालय और अमेरिका की प्राचीन सम्बन्धों का सम्बन्धित एक मात्र संसार के अन्तर्गत पर नहीं है। किन्तु भारतीय सम्बन्धों की अनेक प्रमाओं के, अनेक के पुनर्प्राप्ति से सिन्धु घाटी से अनेक विचारों का उद्भव है और भी अनेक है — धर्मों के उद्भव वहाँ नहीं-संश्लेषण सम्बन्ध (१९२६), पृष्ठ ११ ।

मस्त्रुति की अपस्थिति का पता चलता है जिसके पीछे पश्चिम ही भारत की परती पर एक सन्ना इतिहास हुआ चाहिए, जिसके प्रारम्भिक युग की मात्र बुधनी सम्पत्ता ही की जा सकती है।^१ प्रोफसर वाइन्ट ने लिखा है 'मिग और बेबिनोविया के समान भारत में भी ईसा पूर्व तीस हज़ार साल पहले अपनी एक सर्वथा स्वतंत्र व्यक्तिगततासिनी सम्पत्ता थी जो अन्य सम्पत्ताओं की निरमोर थी। और स्पष्टतः उसकी जड़ें भारतीय परती में गहराई तक जाती गई हैं।' वे प्रागे लिखते हैं 'यह धमी भी जीवन है यह निस्तम्बेह भारतीय है और प्राचिनक भारतीय मस्त्रुति की प्रापारोपता है।'^२ इन मस्त्रुति का पविष्ठ सम्बन्ध पश्चिमी राष्ट्रों की मस्त्रुतियों के साथ था।^३

१ मोहनगोदावेर ए इवलय सिविलिजेशन (१९३१) पृष्ठ १, २, ३।

२ 'न्यू लाइव ऑन ए मोस्ट रोटेड ईन्ड (१९३४) पृष्ठ २२। प्रोफेसर वाइन्ट ने लिखा है "एर निर्दिष्ट है कि तन्म संसार का निर्माण करनेवाली प्राचीनतम अति मस्त्रुति में पृथिवी के स्थान से पहले मरल वा प्रमुख मात्र था।

'ए इवलय सिविलिजेशन एंड ए मिग ईन्ड' हेतुअन रिडिबिरोपोटी अयड इरिक्कन अर्किओलाजी, लन्दन ७ पृष्ठ २२। डॉक्टर वाय का कथन है "उममें कोई मन्वेह नहीं कि मरल प्राचिनतम मानव-मस्त्रुति के क्षेत्रों में में एक रहा इन्द्र और वह कल्पना थी स्पष्टतः कि परिणम को मान्य बनाने के अस्त से पूर्व से मानवम मिश्रण प्राची, जो न तो सेमेरिक के और न चाय, मरल के ही निवासी है। इस सर्व दखते हैं कि सुपरिचरुं तम भारतीयों के किपुने समाज हैं। इस तथ्य में भी नहीं मरल होना है।" २७४।

३ मिग और बेबिनोविया की सम्पत्ताओं तथा चीन और मरल की मस्त्रुतियों का सम्बन्ध वेबर प्राचिनक मस्त्रुति क, जो अनेकामिक भी है और अचकिमसी भी उद.हरत मानते हैं। इसी गुणता से करते हैं मूलानो-बहुरी आधार पर वेबर अतिथम में विचित्र तदावक मस्त्रुतियों में। चार्न अल्पम इस विचार के विरोध में करते हैं "आज हम जिन मरल और चीन को मानते हैं उनका अन्व 'अस्तवना' युग में हुआ था उनकी मस्त्रुतियाँ प्राचिनक नहीं लगती हैं। मरल और चीन दोनों ही अतिथम के अत्यन्त प्राचिनक गहराओं में उतर लके थे। वेबर मिग और बेबिनोविया तथा मरल और चीन की अचिकल्पित मस्त्रुतियों से सम्बन्ध न हो लता था।" चार्न अल्पम हल 'ए ओरिजिनल वेबर गेल अयड सिधरी' अगरेटी अयुधर (१९३३), पृष्ठ २७७। कन्वेड वेबर हम तब से अचिक नहीं हैं। वे लिखते हैं: 'श्री ती ईसापूर्व तक संसार में तम मस्त्रुति-क्षेत्रों—अरिबनी अशिचरुई-बूदनी, मरलेय और चीनी—को अत्यन्त ही बुझी थी। इस समय में ही श्री ईसापूर्व तक तीनों क्षेत्रों में समान अस्तवकनक रूप में एक ही समय में और अल्प अल्प रूप में अचिक एवं अरानिक क्षेत्रों में हुई तन्म अन् विचरते और लिचनों की विराट् अर्कवैमिकक की ओर थी। अरबूय बहुरी अिरी मूलानो अरानियों, पुक, अरानोने अय विरल की अचिक एवं अरानिक अस्तवकन की गईं तब अचिकक मस्त्रुतियाँ अ विचान हुआ। अरानिक अस्तवकनक प्रकृति के कारण वे और अचिकक हुईं अने अने में अनी, मिगि हुईं पुक अनी अस्तवकनक हुईं अ सुपरी। य विरल के अचिक विरलताँ और

मोहनजोदड़ो का सर्वोत्कृष्ट समय १३००-२२३० ईसापूर्व के बीच था। नगर योजनानुसार बसा था। तीसरा फुट चौड़ी सड़कें पूर्व से पश्चिम उत्तर से दक्षिण जाती थीं। गमियों की चौड़ाई इनसे घाबी थी। इमारतें पकी इटों घोर मिट्टी के दारे से बनी थीं। घनेक इमारतें तो कई मंजिलों की थीं। मकानों में स्नानागार घोर नालियों का प्रबन्ध था। सांख्यिक स्नानागार भी थे। नालियों क पाइप मिट्टी के थे—पकाकर, घापस में जाड़कर बनाए हुए। मिट्टी या पत्थर की टाबीलों से बनका सीस्बर्ब-प्रेम स्पष्ट है। उनपर चमकदार पामिच है ब्रजवा बँत बाब हाथी या मगर के चित्र लुदे हैं। बानबरो के चित्र मपातप्य हैं। वे सोना चाँदी सीसा तांबा धारि धातुओं का प्रयोग जानते थे। वे कपड़े के संकर बनाता जानते थे। घाकर्वक नृत्य करती हुई एक मुबठी की कांस्य-मूर्ति लुवाई से प्राप्त हुई है। लुडिया बंगन घोर माक की कौलें भी मिली हैं तराजू मिले हैं जिनसे मामूम होता है कि तीसने घोर मापने के उपकरणों का उन्हें ज्ञान था। मोटिया मिली हैं घोर एक तरह का बेम बगों में बिभाजित लकड़ी पर मोहरों से सैसा जाता था। उन्हें कपास (या कई) को उपयोग में लाता जाता था।^१

मोहनजोदड़ो म प्राप्त धार्मिक धकधवों में मां देवी की मूर्तियां हैं। इसके घतिरिक्त एक पुरप देवता की मूर्तियां भी मिली हैं जो परम्परागत सिव की प्रतिरूप मानूम पड़ती हैं। स्पष्ट है कि धाधुनिक हिन्दू धर्म की घनेक बिद्येपठाओं के मोठ धरवन्त प्राचीन हैं। सर जॉन मार्शम ने तीन मुर्तियों वाले एक देवता (त्रिमूर्ति) का चित्र किया है जो एक चौकी पर पधासन में ध्यानावस्थित बैठ हैं। वे मुबछामा पर घासीन हैं घोर उनको बरे हुए हैं हाथी बाप बैठा घोर भसा। महान मोकी सिव की यह मूर्ति पांच-सह हजार बयों से भारत के धाध्यात्मिक जगन् में प्रमुप स्थान पड़न किए हैं घोर इस लप्य की प्रतीक है कि धारमबिजय साइस पबिबता जीवन में एकठा घोर भाईबारे सा ही पुर्यता प्राप्त की जा सकती है। वही धार्वी हमें परमात्मा के चिन्तन में सीम उपमियाओं के इच्छाओं में घमान घोर ईर्ष्या को पराजिन करनेबाले धान्त एवं सीम्य बुद्ध में धारधममर्षक के परचान् सार्वभौम प्रेम में एकाकार हा जाने घोर धारंनिक ल्यस्थान के घारव है। एम जुन की लम्पति के धार, धार्वी मोनहरी लम्पती के धार धार्मिक बिल्याणी में मूबन लय बुद्ध भी मरी मोता या सता है।^२

—बार्न वेल्सम इण द थोरिजिन बरद थोम बाइ हिस्टरी' धेरोरी जनुवत्, (१९३३) पृष्ठ २७२।

१ लम्पति के धार हेरोनेरुम ने 'कब धारे का चिक बिध चिन्में कप मरी लपने दक्षिण मेव के कप मे बा धारिक धकधा और बंधिध इन पैर इता है भारतीय चिन्ने कपने ठेकर करने है।'

ईश्वर का भक्त बन जाने और धारमयीन साधनसाधों में ऊपर उठकर परम पिता परमात्मा की इच्छा का पालन हम पाणिब जगत् में सँभ करनेवाले साधुओं के ध्यानवाचिक में पिबठा है। सुखनात्मक जीवन केवल उन्हींके लिए संभव है, जो पुरुष और पवित्र रह सकने हैं, और जिनमें एकाग्र-चिन्तन का साहस है। एकान्त के क्षणों में ही सत्य और सौख्य के ज्ञान हास है और हम उन्हें पूर्वी पर माते हैं। भावनाओं के परिपान पहनाते हैं। शब्दों में व्यक्त करते हैं। प्रतिमयता प्रदान करते हैं या दर्शन के रूप में सांक देते हैं। मस्तिष्क का धारमा का वाहन बनाने के लिए पुरान्त और चिन्तन आवश्यक है। सम्पूर्ण बुद्धि भीतर से बाहर की ओर होती है। धारमा ही स्वतन्त्रता है। सच्चा ऐश्वर्य मानसिक है। मौखिक नहीं। स्वतन्त्रपेता व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से असंग है।

भारतीय इतिहास के प्रारम्भ में ही मानव-चेतना की एक निरिच्छत विद्या निर्धारित कर दी गई है। धरना प्रतिष्ठा बनाए रखना धारमा की निष्कृता कीस्वर रखना ही मानव-जीवन का सत्य है। हममें धारमपरकता का तिडीय कामरन है जो बाहरी प्रभावों के दबाव में मुक्त है। साधारणतः हम स्वयंभावि कल है। हमारे कथन और कार्य सामाजिक स्थितिमा और भावनाएँ, विचार और अभिप्राय सभी बाह्य शक्तियों द्वारा उत्पन्न होते हैं। किन्तु मानव की किसी अन्य साधारण पर कार्यरत होना चाहिए। एक पृथक प्रतिष्ठा बनना उसके लिए आवश्यक है। जो कुछ वह है उतने में ही उसे सम्पुष्ट नहीं होना चाहिए। अपनी चेतना में उसका पुनर्जन्म या कायाकल्प होना चाहिए। धामोद-प्रमोद और विनाशमय जीवन बिनाशवाला व्यक्ति अनिर्वायत धान्तरिक पत्र के पथिक भीतर से बड़ने और नई-नई शक्तियों व गुण प्राप्त करनेवाले व्यक्ति से ऊँचे तल पर नहीं होता। मानव केवल मौखिक सम्पत्ति—यहाँ तक कि ज्ञानार्जन—से ही सम्पुष्ट नहीं हो सकता। उसका ध्येय कुछ और है—साधनमासाधारण करना।

४ शक्ति संस्कृति

१२ • ईसापूर्व में ६०० ईसापूर्व तक शक्ति युग माना जाता है। अग्नेर होमर का 'साइटे टेस्टामेंट' से भी पुराना है। वेदास्त के उद्गम केवों के प्रथिम पंच शर्वात् उपनिषदों की रचना 'शौशिक' और एस्पूमीनिवाई ब्रह्म तथा पाइया गोरस व ज्येठो से पहले हा बुद्धी थी। शुभ धाय और धायपुत्र दर्शन के सम्मिसन के प्रतीक हैं।

धार्मिक उल्पीडन केवल-मात्र जियने मानव महान हो सकता है। अग्नेर के इन प्रसिद्ध शब्दों में पूरा पड़ा है। "प्रतिष्ठा वा अनभित्वा कुछ नहीं का। मानु।

जा ऊपर आकाश भी नहीं था। फिर वह क्या है जो गतिशील है ? किस दिशा में गतिशील है और किसके निर्बलान में ? कौन जानता है ? कौन हमें बता सकता है कि सृष्टि कहाँ हुई, कैसे हुई और क्या देवता इसके बाद पैदा हुए ? कौन जानता है सृष्टि कहाँ से आई ? और कहीं से आई भी तो इसका निर्माण भी हुआ या नहीं ? केवल वह प्रकृता जानता है, जो स्वर्ग में बैठा सम्पूर्ण सृष्टि को देख रहा है, और फिर क्या वह भी जानता है ? ^१ इन सवालों में धार्मिक लोग धार्मिक धर्मिष्टान्तों और बौद्धिक सत्येहवाह की प्रामिष्यक्ति है और नहीं से भारत के सांस्कृतिक विकास का आरंभ हुआ। अन्वेष के दृष्टा एक समय में विश्वास करते हैं। यह समय हमारे अस्तित्व को नियंत्रित करनेवाला एक नियम है, हमारी सत्ता के विभिन्न स्तरों को बनाए रखता है एक अतीत वास्तविकता 'एकम् सत्' है और विभिन्न देवता इसीके अनेक रूप हैं। अन्वेष के देवता वास्तव में अमर ईश्वर की शक्तिवा हैं, सत्य के अधिभाषक हैं तथा हम प्राचीनता उपासना और भेंट द्वारा उनकी कृपा प्राप्त कर सकते हैं। उनकी कृपा के बस पर हम सत्य के नियम 'असत्य पंथी' ^२ को पहचान सकते हैं।

वेदों में जिन शक्तों का इंगित मात्र किया गया है, उपनिषदों में उन्हींकी व्याख्या की गई है। हम पाते हैं कि उपनिषदों के दृष्टा जिस सत्य को देखते थे उसके प्रत्येक रम-रूप के प्रति पूर्वतः ईमानदारी थे। इस तथ्य के कारण उनकी व्याख्या के अनेक निष्कर्ष या सब पुराने पड़ गए हैं किन्तु उनकी कार्यविधि उनकी धार्मिक और बौद्धिक ईमानदारी तथा आत्मा की प्रकृति के बारे में उनके विचारों का स्वाधी महत्त्व है।

उनका कहना है कि एक केन्द्रीय सत्ता प्रचलन है, केवल एक जिसके भीतर सब कुछ व्याप्त है। प्रत्येक भौतिक विजयों अन्तर्गत की प्रमाप विद्यासता और अगमित प्राकाशीय विद्यों से पुरु परमात्मा का अस्तित्व है। सम्पूर्ण सत्ता का

१ X, १२६।

२ विष्णु धर्मशास्त्र (मैक्सर) में (पौरुषी राजश्री ईसापूर्वके) आदिवा वेदे अतिसत मिलते हैं जिसमें वैदिक देवताओं राज, मित्र बरह और अग्निनिष्पत्तों का विज्ञ है। कहा जाना है कि अग्नि देव की मूर्तिवा में एक मन्दिर का निर्माण कर दिया था। बाद राज और एत वेदे वैदिक धार्मिक देवताओं की पूजा का शायी भी। वैदिक और अग्नि देवताओं का निष्कर्ष मन्त्रम प्रमिष्ट है और बहुत धार्मिकत्व से ईशान और भारत के निष्करी सत्य-अन्वेष अन्वेष बहुत सही रहे हैं। मित्र पूर्व के अन्वेष के वैदिक देवता के और प्रार्थना ईशान में उन्हें मित्र का नाम था। मित्राण सम्प्राण का अन्वेष में राज अन्वेष हुआ। इस सम्प्राण को भी ईशान का रूप का अन्वेष और अन्वेष को समझा अग्नि देवता का अन्वेष था। एक समय ला सत्य अन्वेष का ईशान अग्नि के नाम हम सम्प्राण को अन्वेषित होने लगे। अग्नी युयु मन्त्र पूजा अन्वेष सत्य के बीच में अग्नि अन्वेष के अन्वेष, मित्राण का एक देवता मन्दिर मिला है।

प्रतिरूप परमात्मा के कारण है और परमात्मा के ही कारण इस संसार का कृष्ण रूप है।

परब्रह्म पुरुषोत्तम सारी बस्तुओं के भीतर व्याप्त है मानव की धारणा में तो उसका निवास है ही। "अपुत्रम स अविष" लक्ष्मी और महत्तम स अविष्क महत् महत् प्रसित्व का सारतत्त्व प्रत्येक प्राणी के भीतर उपस्थित है। भारत के बाहर जिस सिद्धांत के कारण उपनिषद् सर्वाधिक प्रसिद्ध है वह है—तत्त्वम् अस्ति परब्रह्म का निवास प्राणी के भीतर है। परमात्मा हृदय की गहराइयों में प्रतिष्ठित है। "वह आविष्टता इन्द्रियवर्णन नहीं है अंधकार से विहीन अज्ञान का गहराई में स्थित है भावियों में अवस्थित है प्राणियों के हृदय में निवास करती है। परब्रह्म की उपस्थिति की प्रतीति स अविष्क पवित्र हो जाता है।

परब्रह्म पुरुषोत्तम को पहचानना और उसके साथ एकाकार हो जाना मानव-मान का सुर्य है। इस सम्मिलन की व्याख्या बाह्य रूप से नहीं की जा सकती। ईश्वर को अपने से बाहर मानकर न तो उसकी धारापना की जा सकती है, और न सेवा या प्रेम। यह एक ऐसा कार्य है जिसे ईश्वर को अपना बना लेना और स्वयं ईश्वर का बन जाना ही कहा जा सकता है। मानवीय बिज्ञेन की इस क्षेत्र में कोई पहुंच नहीं है इसीलिए हमका बिस्वस्त विवरण देना मानव के बिज्ञेन के लिए असंभव है। किन्तु मानव का हृदय ईश्वर से अत्यंत प्रेम कर सकता है।

उच्चतम अवस्था 'ज्ञान' की अवस्था कही जाती है। इस एक शब्द से ही स्पष्ट है कि ईश्वर को समझना अनिवाप्य संभव है और साथ ही मानव की समझने की सीमित शक्तियों से परे भी। उच्चतम अवस्था बिज्ञेन से परे है। विज्ञेन हीन नहीं। अत्यंत विज्ञेन वह सम्पूर्ण ज्ञान है जिसे हम अपनी समस्त शक्तियों के उपयोग से प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक केवल विचारों का नहीं है। यह तो ज्ञान को परिष्कृत करने की अक्षित्व को पुनर्गठित करने की अक्षित्व के नवीनीकरण की प्रक्रिया है। यह एक कृष्टि है, अक्षेपणता है, अक्षीय स्वतंत्रता में मुक्ति है। यहां पर, जानना और होना तथा अपनाता और मान्यता होना एक ही है। जिस व्यक्ति को यह मान्य है वह सत्य में सम्येह नहीं करता जिस प्रकार ठेक भूप में उड़ा हुआ व्यक्ति सूर्य की उपस्थिति में सम्येह नहीं करता। इस 'जानने' को 'विज्ञेन' कहा गया है। इसका विज्ञेन है 'अविज्ञेन' अक्षित्व और अक्षियों का संकरी सीमाओं में बंध रहना।

यह सम्मिलन केवल बिज्ञेन द्वारा नहीं ब्रह्म सम्पूर्ण अक्षित्व द्वारा संभव है। इसके लिए आवश्यकता है आत्मनिष्ठापन की आत्मनिष्ठता मानस तथा उसके

सहयोगी धर्म बुधा घोर विन्ता पर विजय पाने की। "धरणी वासनाओं पर विजय पानेवाला सामन धरने ही भीतर धरणी आत्मा के शौर्य को देख सकता है।" पूर्व धारमत्वान के जीवन में ही हम उच्चतर ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस ज्ञान के बिना अस्वावी भावनाएं विवेक को धुपित कर देती हैं।

परिच्छदी विस्वविद्यालयों में दर्शन की जितनी प्रथासिया प्रचलित हैं उनमें सर्वाधिक लोकप्रिय प्रथानी का नाम है 'मॉडिफ़ाड पॉजिटिविजम'। इसमें सभी कथनों को दो विभावों प्रयोगसिद्ध घोर अप्रयोगसिद्ध में विभाजित किया गया है। कहा गया है कि अप्रयोगसिद्ध कथनों में बार-बार एक ही बात को दोहराया जाता है। इसके विपरीत प्रयोगसिद्ध कथन अनिश्चित हैं तथा इन्हियों द्वारा उन्हें सिद्ध किया जा सकता है। जो बातें पुनरुक्ति नहीं होती अथवा जिन्हें सिद्ध नहीं किया जा सकता एकदम स्पष्ट होती हैं। अध्यात्मविद्या नीतिशास्त्र समधारण भावनात्म्य हैं तथ्यों से इनका कोई सम्बन्ध नहीं। इसलिए इन्हें ज्ञान नहीं कहा जा सकता। इस सिद्धान्त में मान लिया गया है कि अनुभव केवल ऐन्द्रिकता घोर शौरिकता पर आधारित है। इसके विपरीत उपनिषदों में कहा गया है कि मानव की आत्मा की सीमा जागरितात्म्या के अनुभवों तक ही नहीं है क्योंकि वे अनुभव इन्द्रियमात्र तथ्यों तथा उनसे प्राप्त परिणामों पर निर्भर हैं। अनुभव अधर्षनीय भी होते हैं घोर अर्षी अथवा विचारों द्वारा उन्हें दूसरों तक नहीं पहुंचाया जा सकता। मानव में ऐसी क्षमताएं हैं जिनका पता उस स्वयं नहीं है।

यदि ईश्वर का साक्षात्कार ही धर्म का मध्य है तो इस साक्षात्कार के लिए हमारे पास काफी समय होना चाहिए। एकान्त में ही मानव सर्वाधिक मानवीय होता है। किसी एकान्तसेवी की जितने धरणी देखी हुई बातों घोर अनुभूतियों को व्यक्त करने की क्षमता नहीं है अनुभूतियां अस्पष्ट रहन हो सकती हैं। ये अनुभूतियां उन व्यक्ति की अनुभूतियों में अधिक अस्पष्ट होती हैं जिसका स्वभाव ही सामाजिक कार्यक्षेत्रों में भाग लेना होता है। बहुत लम्ब है कि जिन दूरियों अथवा प्रमाथों को हमारे सोच एक पलक भरकाकर, एक हलदी टिप्पणी बरक अथवा मुस्कराकर टास जाते हैं उन्हींमें एकान्तसेवी का ध्यान उलभ जाता है। यह दूर्य अथवा प्रमाथ अुरबाध पँठे जाते हैं धर्यं प्रहण करते जाते हैं भावना का अनुभव का रूप प्रहण कर लेते हैं। विज्ञान घोर दर्शन साहित्य घोर कला सभीमें वैचारिक अन्वेषिक एक अद्वितीयता मौलिकता वैयक्तिकता को जग्य देती है। धरने उच्च तम विचारों में अन्वेषिक अन्वेषिकता से मानव अकेला होता है।

धर्म अथवा का अनुभव है। धर्म धार्मिक भावना घोर धार्मिक जीवन का

धनुषासन धीर पृथक्त्व होता है कि वे मनु सत्य के दर्शन कर सकती हैं किन्तु हम सोच तो सत्य को विभिन्न उर्ध्वसंगत रूपों में ही देख पाते हैं। प्रत्येक बर्म का कुछ बिन्दु सत्य एक धीर समान है। सिद्धान्तों में पारस्परिक धन्तर प्रथम है क्योंकि वे हैं मानवीय परिस्थितियों पर सत्य के प्रमाण से उत्पन्न। प्रत्येक युग में धानी विशेषता होती है जिसका पता उस युग की मान्यताओं से लगता है जो युव विशेष में स्वयंविद्य मान भी जाती हैं। सत्य की अभिव्यक्ति किसी प्रकार के धर्मों में नहीं हो सकती इसलिए सत्य को पृथक् परिभाषित नहीं किया जा सकता। सभी परिभाषाएँ धर्मिबाधित धनुषयुक्त होती हैं धीर सब कहा जाय तो भ्रामक होती है। प्रत्येक फार्मूला धर्मों धीर विचारों में सत्य को बाधने का प्रत्येक प्रयास—या सीमित धर्मों में सत्य तथा समय धीर प्रथम के धनुष्य होता है—वास्तव में विस्तृत-मनन के लिए एक आधार-मात्र है। उसकी सहायता से हम उसे समझने की धीर प्रयत्न हो सकते हैं जिसे किसी फार्मूला प्रतीक पत्रवा सिद्धान्त में बांधा नहीं जा सकता। सिद्धान्त उत्तरदायित्वहीन नहीं है। हम स्वेष्या से विचार नहीं कर सकते। धीर न ही सिद्धान्त धनावश्यक है। जिस भाषा में सत्य की अभिव्यक्ति की जाती है उसमें विभिन्न लोगों की भाव्यकतानुसार विकसित कोनिया होती है। वे एक सत्य की प्राप्ति के धनेक साधन मात्र हैं। धन्तर बहुत प्राकरिक बिन्दु धर्मगत हैं इकाई ही यथार्थ है।

मान प्राप्ति के एक मरय के धनेकानेक उपायों की मायता भी ही यथी है। प्रत्येक उपाय का धारम्भ नहीं से हो जाता है जहाँ मानव स्वयं को पाता है। हिन्दू धीर बीड सिद्धान्त स्यापक धीर धार्मिक हैं। वे प्रत्येक मानव की धाम्या तिमक धारस्यताओं धीर समताओं के धनुष्य हैं। सत्य को पहचानने तथा उस तक पहुँचने के रास्ते धनेक हैं। किसी विशेष विधि को धपनानेवाले भोग उनी को धर्मिय धीर एकमात्र समझने सपन है। किन्तु जब वे यहन सत्य के दर्शन कर पाते हैं तब उन्हें धामास होता है कि जियता विधास सत्य स्वयं है उतने ही थोड़े उम तक पहुँचने के पथ है। धार्मिक धर्मों उत्सवों प्रणामियों धीर सिद्धान्तों द्वारा उनके धरे एक मुस्यव्यता क धेक धे पहुँचा जा सकता है, धीर इतमिा इनके द्वारा केवम धामेव मरय के दर्शन होने हैं। इनका महत्त्व उचित रवान पर ही है। उन्हें धरक सत्य समझन की समती नहीं करनी चाहिए। वे सत्य की ध्याना-मात्र को धर्णित करते हैं। वे धर्मित करते हैं परिभाषित नहीं। प्रत्येक धरक प्रथक विचार एक निर्देक है जो धरन में धरे की धीर संकेत करता है। धनेक को धनेकित धरनु समझने की धून नहीं करनी चाहिए। धिनायुक्त धरुी धर्मिय नहीं धानी।

परब्रह्म का प्रतिबिम्ब हम ब्रह्मांड पर है इसीलिए यह पवित्र है। यह स्वर का मन्दिर है और ईश्वर 'पृथ्वी' में उपस्थित होते हुए भी पृथ्वी से घनम है पृथ्वी उस नहीं पहचानती वह धार्मिक प्रकाश है वास्तव है। सभी शक्तिमा और संघम से ब्रह्मांड को मुक्ति ईश्वर द्वारा मिलती है।

मानव की तांत्रिक प्रवृत्ति से अधिक बार धार्मिक प्रवृत्ति पर श्रेय जाता है। मानव ईश्वर की चेतना का उत्तराधिकारी है। उसके भीतर गुहन की प्रेरणा है जो उसकी स्वतंत्रता का सधन है। वह स्वयं को स्वयं से ऊपर उठाने का है। वह अनिर्वाच्य कर्ता है कर्म नहीं। यदि हम मानव को केवल पारिज प्रकाश परिचयगतीम बिचारों बाधा प्राची समयों, तो हम समय नहीं मरने नि मानव को अनिर्वाच्य सीमाओं में बाधा नहीं का मरना क्योंकि वह ईश्वर का प्रतिरूप है और ईश्वर के समान है तथा एक नैतिक धारणता का उद्धारन-मात्र नहीं है। वह ब्रह्मांड की प्रकिया का अर्थ पदार्थ नहीं है। वह धार्मिक प्राची है और इगणित वह नैतिक और धार्मिक संसार के स्तर से ऊपर है। मानव का स्वामी विन जीवन प्रारम्भ होता है, सभी उसके धार्मिक अस्तित्व का पत्रा बनता है।

प्रकृति प्राणा की विरोधी नहीं है। प्रकृति के साथ मयाव और धार्मिक मोरव का संयोग नहीं बैठता। बेराम्य धानन्द का नहीं मोह का विरोधी है। प्रकृति की सीमाओं को न मानना हमारे लिए धार्मिक नहीं। हमारे वरीर ईश्वर के मन्दिर और 'धर्म-साधन' है। धार्मिक स्वाभाव्य और भौतिक जीवन में कोई बेर नहीं। प्राचीन विचारकों ने अस्तित्व की महान भुम्भना ब्रह्मांड की महत्वाप्राप्त रचना तथा जीवन और अस्तित्व के सभी स्तरों की पारस्परिक प्रकिया पर मईव और दिया है।

परमात्मा के समझ धारणा के समूर्ण समर्पण धारणा और परमात्मा के अर्थ नीय समय को अनेक बिधा में व्यक्त किया गया है 'जैम अग्नि में विनमागिया निकलती है और फिर अग्नि में वापस जाती जाती है, जैसे समुद्र के धारणों में पानी गहियां फिर समुद्र में जाती जाती है।

जब मानव का स्पष्ट ज्ञान होता है, जब वे वागिरि होते हैं तब उन्हें समुभव होता है कि किसी अरुपनीय अर्थ में वे परमात्मा की अविच्छिन्न उपकरण मात्र हैं, परमात्मा के 'बाहुन' हैं। यह समुभव करने के पार हम अर्थिकता में ऊपर उठ जाते हैं और अपने सहवासियों का पक्ष ग्रहण करने जाते हैं क्योंकि हम और हमारे सहयोगी सजा एक ही परमात्मा की अभिव्यक्ति हैं। हम परमात्म

के उपकरण बन जाते हैं और प्रेम, सहभावना तथा करुणा के परिपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

हिन्दू धर्म में सक्रिय करुणा बिनम्रता और मानवीय कोमलता का बड़ा महत्त्व है। हिन्दू धर्म की मानवता का प्रसार पशुओं के लिए भी है। बुराई के साथ संघर्ष में सक्रिय को नहीं बल्कि प्रेम के उपयोग की बात कही गयी है। बुराई को पराजित करने के बुरे प्रयत्नों से बुराई बौ ही विजय होती है।

सैद्धांतिक रूप से सभी मानवों का धर्मम-मनन अद्वितीय मूल्य स्वीकार किया गया है, किन्तु सामाजिक ढांचे में उसकी प्रतिक्रिया का पता नहीं लगाया गया है। पश्चिम में पूर्व से अधिक वास्तविक समानता है। व्यापक व्यक्तिगत धर्मों को स्पष्ट करने के उद्देश्य से जाति-मर्यादा का जन्म हुआ था किन्तु अब यह विषेया विचार और धर्ममत्ता का प्रतीक बन गई है। कैवल जन्म या धर्मधरों की कमी के कारण अनेक व्यक्तियों को कठोर परिश्रम, संन्यास और बुद्धिपूर्ण जीवन बिताना पड़ता है। इसके विपरीत अनेक व्यक्ति किसी प्रकार भी अधिक योग्य न होते हुए भी आसान मुझी और सुविधाओं से भरा-पूरा जीवन व्यतीत करते हैं। अनेक कमजोर व्यक्तियों के मन में इसमें पुजा उपजती है। इस निर्जीव जाति-व्यवस्था के कारण अनेक व्यक्ति अल्पविरास के विचार ही गए हैं ऐसे धार्मिक संस्कार मानते हैं जिन्हें वे कतई नहीं समझते। जाति-व्यवस्था मानव में निहित देवत्व के धारण के सर्वथा विपरीत है। यह सिद्धांत उन तानाशाहों के प्रयत्नों का समर्थन नहीं करता जो रूप सबको समान बना देना और यदि संभव हो तो एक कर देना चाहते हैं। हम बिलकुल एक नहीं हो सकते क्योंकि हम धर्मम-मनन जन्मते और मरते हैं और यही कारण है कि हम तानाशाही रास्तों से हमें भागते रहेंगे।

मानव में देवत्व का निदान है—इस सिद्धांत को मानने के परवाना बहु निष्कर्ष निकलता है कि कोई भी व्यक्ति चाहे वह बिलना ही बड़ा पापी क्यों न हो मुक्ति से परे नहीं है। कोई ऐसी अज्ञान नहीं है जिसके द्वार पर सिगा हो भीतर प्रवेश करनेवाली सारी आशा छोड़ दो। बिलकुल बड़े व्यक्ति नहीं होते। उनके चरित्र को उनके जीवन के संदर्भ में देखना हीना। पापात्मा संभवतः बीमार व्यक्ति है जिसका प्रम लक्ष्य अष्ट हो गया है। सभी मानव धर्मरत्न की सन्तानें धर्मरत्न्य पुत्रा हैं। प्रत्येक के भीतर, उनके धर्म के समान उमठे व्यक्ति के भीतर स्वर के धर्म के रूप में धारणा मौजूद है। अनेक व्यक्तियों की धारणा बर्धरणा और निर्दयता के अन्तर्गत भी पिदा लड़ाने के समान बनी होनी है लेकिन होनी धर्मरत्न है। और जीवन तथा सक्रिय होनी है और प्रथम आनुगत धर्मरत्न पर उभरने का महार शर्ती है।

मुक्ति धरने प्राप नहीं मिल जाती यह हमारे प्रयत्नों पर निर्भर है। कहा जाता है कि प्रयत्न करके हन मुक्ति नहीं पा सकते यह तो परमात्मन् का स्वतंत्र उपहार है और इसे समझन पाना ही शक है। भारतीय विचार में धनुमार प्रत्येक मोक्ष का वर्णन ही मोक्ष प्राप्त करना है। कल्या विनी कूरस्य देवता की देन मान नहीं है।

उपनिषदों में परमात्मन् और वैयक्तिक ईश्वर के बीच धारण के घनिष्ठ सत्य और नरकर घस्तिव्य के सापेक्ष सत्य के बीच धन्तर स्पष्ट बनाया गया है। कहा गया है कि मानव के धास्तरिक विकास का धर्म है जीवन के नीतिक स्तर से धाष्मारिक स्तर की धोर प्रयाण। उनमें धाष्मारिक जीवन ध्यतीत करने के इंस बताया गए हैं। ये र्थय परिचलनशील हैं निरस्तर हैं और इनसे सिद्ध होता है कि सत्य पर किसीका एकाधिकार नहीं।

३. बौद्ध धर्म

छठवीं शताब्दी ईसापूर्व में गारे संसार में धूब जागृति हुई। चीन में कन्फ्यू सियस यूनान में पाइथागोरस तथा भारत में महावीर और बुद्ध इसी काम में हुए। बुद्ध का सिद्धान्त उपनिषदों के सत्तों का ही पुनरुचन है, जिसपर नये इंस में जोर दिया गया है। धर्म को उन्होंने 'धम्म' कहा और बताया कि ज्ञान प्राप्ति का उपाय यही है।

परमात्मन् को बुद्ध ने 'प्रमा' और 'कल्या' में भरे-पूरे जीवन में देना। किन्तु ध्याय के सिद्धान्तों का प्रतिपादन उन्होंने नहीं किया। धरने धनुमर्षों के सम्बन्ध में वे सर्वथा मोक्ष रहे। उन्होंने उम पय का निर्रस किया जिसपर धबाधकप में चलकर हम भी उस स्थिति पर पहुँच सकते हैं जहाँ वे स्वयं हैं और वह सब देन सकते हैं जो उन्होंने देना है। ह्वें उनके ज्ञान के प्रमाण नहीं मानने चाहिए, किन्तु धाकरयक परिधम करके वह ज्ञान प्राप्ति करना चाहिए। तप में सधूर्ण मानव का बहस टालने और बस्तु के साथ एकाकार कर देने की धक्ति है।

उपनिषदों के मोक्ष के विपरीत 'निर्वाण' का धादर्श है। बुद्ध का धष्टमार्ग वैयक्तिक धर्म का ही सुतरा रूप है उपनिषदों के धया धम और धान के सिद्धान्त का प्रकारास्तर है। प्रत्येक बोधिप्राप्त ध्यक्ति का कर्तव्य है कि वह नीके धिरे हुए प्रत्येक धग्य ध्यक्ति की ज्ञानप्राप्ति में सहायक हो। हम चाहें या न चाहें जानें या न जानें हमारे भीतर देवत्व धबाध है और मानव जीवन का सकल बुद्धत्व प्राप्ति करना ही है।

नातुसेन (पहली शताब्दी ईस्वी) ने बुद्ध का वर्णन निम्न शब्दों में किया है

बुद्ध चाहनेवाले धनु के लिए भी तुम भला चाहनेवाले मित्र हो। हमेषा दोन निरामनेवासि में भी तुम सुषों की शोक करने हो।" "तुमने रही भोजन तिया कमी-कमी तुम भूये रहे बठोर रास्तों पर जमे जानवरों द्वारा रींटे गए, कीचड़ पर सोए। तुम स्वामी से किन्तु तुमने बोधियाप्ति में कुमरों की सहायता करने के लिए आग्रामान महे अपने पत्र घोर बचन बरान।" श्रीमो गणाधी ईस्वी के बीड़ दामानिर धर्मग ने बुद्ध की कल्या के विषय में कहा है 'बोधिसत्व सभी प्राणियों को उसी प्रकार प्रेम करते हैं जिस प्रकार कोई व्यक्ति अपने एकमात्र पुत्र का प्रेम करता है। जिस प्रकार चिड़िया अपने बच्चों को चाहती है घोर उनकी देखभाल करती है उसी प्रकार का व्यवहार बोधिसत्व सभी प्राणियों के साथ जो उनके अपने बच्चे हैं करते हैं।' उनका कथन है कि 'दुखी शोधी प्रथमों वाचना के पास तथा गलती करनेवाले सभी के प्रति करुणा रखयो। ध्यानिदेव हूँ 'बुदे मे बुदे धनुषों की भी भला करने' की सलाह देते हैं। पापानी उरदेगक होनेन (१११२ १२१२ ईस्वी) ने धर्मिताम (धर्मिशा-जापानी) की उपासना का धारण दिया है "कोई भी ऐसी भौषणी नहीं है जहां ब्रह्मा की राहनी फिरसे न पहुंच सके। कोई ऐसा आरामी भी नहीं है जो अपने विचारों को उन्मुक्त करने के पश्चात् देवी साथ को न पहचान सके घोर उसे हृदयगत न कर मे।"

हिन्दू घोर बीड़ दोनों धर्मों में प्रभाव घोर संघट्टर के साम्राज्यों धर्मानु स्वयं घोर नरक का मन्तर सम्पादी है। परमात्मा की परम उक्ति उनके धार्मिक प्रेम की पराजय नहीं जाती। हिन्दू घोर बीड़ दोनों धर्मों का मन्त्र है सम्पूर्ण मानवता की मुक्ति। महापान बीड़ धर्म के अनुसार, बुद्ध ने जान-बूझकर बोधि की धर्मिक व्यवस्था को प्राप्त नहीं किया ताकि वे राष्ट्र के धर्म लोगों की सहायता कर सकें। उन्होंने प्रथम किया है कि जब तक सारी मृष्टि धूम की प्रत्येक रूप पर्य तक नहीं पहुंच जायगा वे निर्वाण नहीं संये।

अगरा धर्म यह नहीं कि हिन्दू घोर बीड़ धर्म सिद्धांतों में भला घोर सुदर्न गुण घोर दुर्गुण न मन्तर ही नहीं समझ जाता। इसका धर्म वैश्व इतना है कि सुदर्न के लिए भी धर्मी संभावनाएं हैं। कम सिद्धांत यही है कि आत्मा को एक न वाद एक धर्मक धार्मिक धर्मक प्राप्त होन है। यदि मानवों को वैश्व एक धर्मक दिया जाय ता एक जीवन के धर्म में धर्माई के धर्म पर मुक्ति घोर सुदर्न

१. कल्प-की दुर्गात कर्मा सुदर्नकेन।

२. धर्मिताम उपासना मूल लेखकधर्मिताम। १११२

३. धर्मिताम मूल उपासना मूल।

४. ३. धर्मिताम उपासना मूल लेखक। १११२ उपासना मूल।

क बल पर मरक ही धार्मिक प्राण्य हो जाणगी । धीर यदि ईस्वर म धनगत प्रम धीर धनगत बरपा है तो यह सम्पूर्ण सिद्धाण्य ही ठीक नहीं है ।

धीर यह तो सुप्रसिद्ध है कि ईगार्ड सन् के प्रारंभ से पहले निम्नलिखित बर्मा मैगाल कम्बोडिया धान्याम चीन धीर जापान (पूर्वी देगो) म तथा धन्याम निस्तान पामीर तुर्किस्तान गीरिया धीर फिसिसीन (पश्चिमी देगो) म धार्मिक भी रक्षणपान किए बिना बीड धर्म का प्रचार प्रसार हुआ ।

सीमटी ताताग्री ईतापूर्व म इण्डीचीन इण्डोनीशिया मलय प्रायद्वीप धादि लोकों में 'धर्म-बिज्ज' का प्रारम्भ हुआ । हिन्दू संस्कृति बहुत पहले समय म ही जावा में स्थापित हो गयी । वहाँ वारोबुदुर क मन्दिर धीर गिरीष धात्र भी धीरूह हैं । कम्बोडिया में धंगकोर-वाट के सिंघान मन्दिर का निर्माण लगभग १०६० ईस्वी में प्रारंभ धीर उसके १० बर्य बाद समाप्त हुआ । भारतीय उन सिंघेणों के नाम बौद्ध धर्मों में पाए जायेनाये नावों जैसे बन्धा कम्बोड धीर धनराजधती — पर रक्ष दिए गए । ठीक इसी प्रकार धनगीका म सबसे पहले बमने बाने यूरोपीय धाने धाय बोस्टन कॅन्ट्रिज धीर मिराबपूड जैसे नाम म धाए । इत कुहतर कारण से भी बीड धीर काकाधधर्मों का प्रचार हुआ धीर भारत के समान वहाँ भी धर्मों में एक सामंजस्य स्थापित हो गया । उत्तरी भारत के प्रथिम धातव सम्राट हर्ष' (६०६-६४७ ईस्वी) ने धिध धीर बुड के मन्दिरों का निर्माण करावा ।

भारत में बौद्ध धर्म के लोप हो जाने का कारण यही है किन्तु धीर धीर धर्म एक प्रकार से धायध में मिल गए, धिधेय रूप से एक जब दोनों धर्मों में धन्य बिन्धाधों का बाहुस्य हा गया । कुछ बौद्ध सम्प्रदायों ने कहा धारण किया कि निर्वाण प्राप्ति का केवल एक उपाय है । यह बिन्धार भारतीय धार्मिक धनता भी लचीली धनेकधधिधी लस्तिण्य बौद्धिध्या के सर्वथा धिपरीत था । भारतीय धर्म ने इत 'एकमात्र' सिद्धाण्य को दूरकरा बौद्ध धर्म की प्रमुय सिद्धाण्यों का ग्रहण कर लिया धीर इत प्रकार धरमारा को बनाए रखा । धनेक महान धन्य प्रजा सिधा महान धाहिय कपारमक प्रगति वैज्ञानिक धिकास धीर धपरिमित राज नीतिध लक्ष्यता इत बुध की धियेवताएँ थीं । धधिन भारत के बिन्धारकों—

१. यथा में बुड धिन के छोटे धार्ड के रूप में पूज्य थे । लगभग १३० ईस्वी के एक धन्य सम्राट का नाम 'सिध बुड' था । कम्बोड के एक धियधेय सिन्धाधधिलेध (लगभग १२ ईस्वी) में बधराध 'बलध' की धनधधता है । 'बलध' का बाध लक्ष्य है, धना धिन धीर लक्षिक सिन्धु ।

शंकर रामानुज माधव—जे उत्तर घोर दक्षिण प्रार्य घोर इतिहास को संस्कृति के एक सूत्र में बाँध दिया घोर भारतीय राष्ट्रीय एकता की नींव रखी ।

६ पारसी धर्म

मुसलमानों के अत्याचारों के कारण अपने देश से निकलकर पारसी धर्म के अनुयायियों ने भारत में धारण पायी । एक पारसी इतिहासकार का कथन है "फारसी या पारसी धरणाधियों को अपभ्रित कष्ट सहने पड़े । यहाँ तक कि वे सपसग बिनष्ट हो गए । तब कहीं जाकर वे भारत के तट पर पहुँच सके । यहाँ एक हिन्दू साधक ने उन्हें धरण ही घोर धर बसाने का अधिकार दिया ।"^१ अनुमान है कि सन् ७१६ ईस्वी के आसपास पारसी भोग संजग के पास चतरे ये घोर धर्मि देवता का जनका पहला मन्दिर एक हिन्दू साधक की सदाधयता के बस पर बही बना था । पारसी धर्म दूसरे धर्माधिसम्बिधों का मन-परिवर्तन कराने वाला मत न था । यह दूसरे धर्मों को पतन के का पूरा धधधर देने का हामी था ।

७ इस्लाम

पारसी धरणाधियों के रूप में भारत आए के किन्तु मुसलमान घोर ईसाई विजेताधों के समान आए । इस्लाम के प्रति हिन्दू दुष्टिकीण सहिष्णु था । धरय धिर प्राचीन समय से धरधों के साथ भारत के निकटतम सम्बन्ध—विद्येय रूप से व्यापारिक घोर धार्मिक सम्बन्ध ये घोर धीनों देसों के बीच स्वस घोर बल-मार्ग स्थापित थे । हिन्दू साधकों ने भारत में मुसलमानों का स्वागत किया घोर उन्हें मसजिदें बनाने तथा अपने मत का प्रचार करने की धाना दी । भारतीय विचारधारा सोधों को जीवन के किसी विषय रास्ते पर बसने को बाध्य नहीं करती । यह भारत भूमि पर रहनेवासे हर समुदाय को प्ररित करती थी कि यह धन्धे जीवन की अपनी परिभाषा के अनुसार जीवन-यापन करे । पत्रहवीं शताब्दी के सपसग मध्य में भारत स्थित धारम के राष्ट्र के राजदूत धधुस रवाना ने भिया है 'यहाँ (कालीकट) के निवासी काकिर है इरलिए मैं सोचता हूँ कि मैं लधु-देस में हूँ क्योंकि कुनमा न पड़नेवासे हर धारमी को मुसलमान अपना धुधन समझते हैं । फिर भी मैं स्वीकार करता हूँ कि यहाँ पूर्ण धार्मिक सहिष्णुता है यहाँ तक कि हमें बड़ाया भी भिसना है । हमारी दो मसजिदें हैं घोर हम धार्मिकधिर रूप में समाज पड़ घाने हैं ।'^२

१ कथना : दिररी का-द-धारम-ध (१-२) रीर १ पृष्ठ १३ ।

२ धरे : दिरररीन देरर देवेल्ड इन धरधना' धधर १ पृष्ठ ६ ।

हेतु में इस्लाम के प्रसार के माध-माध समाना घोर बहोर रामगत घोर दाह तुलाउम घोर तुममीशम तथा नामक घोर बंगल क गिदालों में धाम्नि कता की मावना प्रबल हाती गई। हिन्दू घोर मुगलमाम बिनामों में समभोगा कराने की कोशिस मन्त मशरफावों के प्रतिगिन नहगाए परबर न की बा जहूनि इस्लाम की बटूरना बा ना कम दिया बा। परबर बा मग्निन बिलनमीम या घोर हूय काभन। उनही पोरना है 'मर्भा' यमों में समभगर घारमी तथा ममी यलों में मयमगीन बिचारक घोर उख्यमय गविनयन ध्यनि होते हैं।' बागे उनका कहता है "घरनी परिग्यनि के घनमार हर घारमी पर मारमा का नाम रगना है किन्तु बाग्निन में उम घन्य की मजा निर्पागिन करना समन है।' जहोवीर ने हिन्दू मयापी जट्टर क बाग में मिया है कि "उम्मे बेगन बिकान घर्षान् मूछीबा" के बिकान बा पुर्ब ज्ञान बा।" बाग्निन बा मुकन बड़ा पुन बागामिकोह एक तेम एक बा ग्वमिना बा तिमम गिद दिया मया बा कि हिन्दू घोर मुगलमाम मती में घनर केबन भाया घोर मीनी बा है।

इस्लाम की ईरानी बुद्धिजीवियों का ध्यान बिलगण मनेत्र घोर गिण बोधवान मिसा बा। इस्लाम-पुर्ब पारमी परम घोर मानिरीश" व मिष्टार येन धारिकामीन घर्म-मग्निनयों न पाग्म में ग्नाम पर बड़ा प्रमार दाया। ग्नाम का मूछी सम्प्रणय—बिनके प्रमिद मन्त है प्रताए मारी जनामहीन म्मी घोर हाकिम—मारनीय घईत बैशाल के धरमन ममीम है। इस्लाम की बिगयना है घरनाह की बिदेय दूरी पर मानना। इमके बिगरीन मूछीमन न उमकी कानामय उपस्तिथि मानक की धारमा के धरमन निरक पानी गई है। मूछीमन बा बिगनाम घईत परमदबर में है परमेबर का प्रकाम माना गया है घोर मग्निन बिच उमका प्रतिबिम्ब। बार बेकर कहा गया है कि मानक की धारमा घन मग्निन न घनग हा गई है घोर भीतर भीतर मबा बाहनी है बि घन्य धारकीनों के बाबरक बापस जाकर उसीमें भय हो जाय। धन-मग्निन के कृनिन में हूय कग्निन घर्म मानक घोर मग्निनय धरमाभारक का समन्वय मिनता है। मूछी मानाहारी नहीं हैं घोर पुनकम तथा घबतार में बिदबास करते हैं। कहा जाता है कि मग्निनी गनाघरी के एक प्रतिद मूछी सल सम्भनी 'मन्त मही लाते वे समजिरी की पबिकता मानते वे मन्दिरी में होमैबासे हिन्दू बाग्निन अनुष्ठानों के समान अनुष्ठान मग्निरी में करते वे घोर मुसलमानी क समान सिद्धता करते व नपाक पकूते वे।' उनकी

१. मिनेर मिनः 'ककर र दोह मुग्ना (१-१०) पुन १४१-२।

२. 'मिनेर मिनः' (मारीकी अनुष्ठान), अनुष्ठानकः बैरिज, पन्त २, पुन १४२।

३. 'मिनेर मिनः' (मारीकी अनुष्ठान) अनुष्ठानकः श्री और हापर संव २, पुन १४३।

जीवन-विधि उन्नीसवीं शताब्दी के हिन्दू सन्त स्वामी रामकृष्ण के समान थी।

स्त्री ने उपासना की स्वतंत्रता के पक्ष में सिरते समय प्राचीन हिन्दू विचार धारा की परम्परा को ही निभाया है। वे लिखते हैं

‘धिराग प्रसंग प्रसंग है सेनित रोघनी एक यह कहीं दूर से घाती है।

यदि कोई धिराग को ही देखता रह गया तो जयना बेड़ा गर्क हो जाएगा क्योंकि वहीं से अनेकता का प्रारंभ होता है।

रोघनी का गौर से देखने पर ही पश्चिम घटीर में निहित ईतावस्था से मुक्ति मिलती है।

हे ईश्वर तुम सम्पूर्ण सृष्टि के सार हो। और मुसलमानों पारसियों व यहूदियों में प्रत्येक सिर्फ दृष्टिकोण का है।

कुछ हिन्दुओं ने एक हाथी खरीता और उसे एक घंघरे बमरे में बड़ा कर दिया। जब देख पाया असम्भव था इसलिये हर कोई उसे हूबेली से छुट्ट महुसूय करके मगा।

एक का हाथ हाथी की सूँड़ पर पड़ा। उसने कहा ‘यह जानकर तो पानी के नल की तरह है।

दूसरे ने उसका काम छुमा। उसे हाथी पंखे बीया मानूम पड़ा।

तीसरे ने उसकी टांग छुई और बताया कि उसका आकार यम बीया है।

चौथे ने उसकी पीठ बगलपाई। बोला घरे, यह तो वस्तु बीया है।

घबराने में से प्रत्येक धारमी ने एक अमती हुई मौमबत्ती से ली हाथी को उनके वर्जित में धिलता न हाठी।’^१

इस्लाम का भारतीय रूप हिन्दू विचारों और आचारों द्वारा बड़ा गया है।

विद्यालय सुन्नीमत की तुलना में हिन्दूधर्म के अधिक समीप है। लोकार्थों के सिद्धांत अन्तर्गत और विद्या सिद्धान्तों के मिश्रण से निर्धारित है उनका विचार है कि प्रती बिल्कुल का बसवा बसवार है। भारत में अनेक बसवतार जातियाँ हैं। बार में जब जिन्हे भी मुसलमान आक्रमणकारियों ने भारत पर हमले किए तो भारतीय मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ कंधे से कंधा बिड़ाकर उनका सामना किया। फिर जब वे आक्रमणकारी भी भारत में बस गये तब भी छोटी-माली लड़ाइयाँ होनी रहीं। अनेक उदाहरण हैं जब मुसलमानों के नेतृत्व में हिन्दुओं ने या हिन्दुओं के नेतृत्व में मुसलमानों ने लड़ाइयाँ लड़ीं। भारतीय मुसलमान भारतीय भाषाएँ बोलने लगे एक ही जाति के बंधन बने और भारतीय ध्यागारिक समुदायों में

^१ स्त्री काट्ट ३ दिने ४ (१९२) १८ १९२ (अथ ५-११ वेंट अन्तः) अथी अनुवाद कर व लिखक द्वारा।

मन्मिषित हा दर । समा-जनी गो प्रयत्न समदान में हि यों पीर प्रगलवानों म
 भर करना उनना ही मुनिम हा जाता वा रिचना मात्र *—दान बरन
 बाहार-बयनगर पीर रिचार्गे में इननी व्यष्टि समानता गीत। वा र्ग वी।
 मुगलों क शासनकाल में गाही दरबार हिन्दू धोर मुसलमान बिडाना क मिनन
 रसल बन मण्ड, अहा बे एक-दुमरे वा घरती घरती मन्मिषिा में अग्निन बगते
 क। प्यारुबी गतारुबी में थप्ट मुसलमान रिडान घमकेनी न मन्मिषिा बाग पर
 बिदय वाप्यता प्राल कर मो। उनक बिदय में हम वना बपता है रि रिडान
 धोर दान के धन म हिन्दुओं की बिजना धनूर् उतगप्यता वी। बाग्न क रिदेर
 गीतनाएक महनगीमता क। प्रभुनि में मुसलों क। प्रमारिन बिचा धोर चौगुबी न
 उन्नीसवीं गतारुबी तक की सांगुनिक गतिबिधिया में हिन्दू मुसलमान मन्मिषिा
 स्पष्ट है। मवीत धोर स्वागत्य बिचकता धोर नून में हिन्दू धोर मुसलमान
 बिचार्गे वा उन्मूण समस्य वा। सांगुनिक बना गामारिन मन्मिषिा धोर
 घामिक महिणुना की परमराय में भाग्न क हिन्दू धोर मुसलमाना वा घनीन
 समान है।

८ ईसाई धम

रुबी गन् के प्रारम्भ में ही भाग्न म ईसाई धर्म का प्रचार है। मयाबाह क
 मीरिवाई ईसाईयों का बिचाम है कि उनका ईसाई धम मोच मन्म टामन में
 प्रारंभ हुआ है। उनका कहना है कि उनक ईसाई धम वा स्वक्य पणिम के नूट
 पीटर धोर मट पास डाग स्वापिन ईसाई धर्म के स्वरूप म मिम धोर स्वतन्त्र है।
 तीसरी गतारुबी के एक घामिक बब 'द ऐन्जम घाई टामन' म बिगा है कि
 धमदुन टामन माल नहीं जाना चाहते थ लेकिन ईस्वर न एमी माया रुबी कि
 मान क घासक घाईघारेम के प्रतिबिच घबानेक के हायों उहू गुताम के क्य
 में बेष बिवा गया। वहुम वा इत पुरी कहानी की कलिग समझ जाता रहा फिर
 भारत के उत्तरी-पदिबमी काने में एक मुहूर मन् १८३४ म बिमी त्रिमपर मोडा
 एनेन का नाम लुवा हुआ वा। इमन हम यह निष्क्य तो महीं निकाल सकत कि
 बमदुन टामन पहली गतारुबी में भारत बये थे—हामाकि यह घर्मभाष्य नहीं—
 लेकिन यह तो सोच ही सकने हैं कि तीसरी गतारुबी के भारत धोर मेसापाटामिया
 क ईसाईयों के साथ भारत क निष्क सम्बन्ध थे। इतना स्पष्ट है कि बहुत पुराने
 समय से भारत के पदिबमी तट पर ईसाई बाबाय रहे हैं। हिन्दू उनका यद्द। सम्मान
 करत क धोर हिन्दू घासक उनके लिए बिदवाधार्गे का निर्माण कराते थ। राण्ट
 रेवरेंड स्टीफन नील में जो कुछ समय तक त्रिबेस्सी के बिद्यार रहे थे 'स्पोटेटर'

में लिखा है 'सीरियाई लोगों की बराबरी हिन्दू जमींदारों की जाति नायर लोगों के साथ है वे स्वयं को अस्य हिन्दू जातियों से ऊंचा घोर परिबलित जातियों से तो बहुत ऊंचा समझते हैं।' धारम्भ के ईसाई अपने को सामान्य हिन्दू समाज का ही धर्मिबार्थ भंग समझते थे घोर धर्म-परिवर्तन के विरोधी थे।

ईसाई धर्म में परिवर्तन के लिए मिशनरी प्रचार भारत में यूरोपियों के बसने के साथ-साथ प्रारम्भ हुआ। पूर्व में धर्म प्रचार करनेवाला महान ईसाई मिशनरियों में से एक थे प्यसिड वैबियर, जिन्हें अपने मिशन की दैवी प्रकृति पर घट्ट विश्वास था। उन्होंने पूर्व के घने-घने जंगलों में अपने धर्म का प्रचार किया। उन्होंने बाइबल जोषाघो त्रितीय को लिखा था "अपने अधिकारियों के सम्मुख आप यत्नार्थमव स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर दें कि आपके क्रोध से बचने घोर आपका अनुग्रह प्राप्त करने का केवल यही रास्ता है कि जिन जंगलों पर वे घासन करते हैं वहाँ अधिक से अधिक लोगों को ईसाई धर्म की दीक्षा दें।"

हिन्दू विचारधारा के अनुसार ईसाई धर्म को प्रस्तुत करने के अन्तर्गत नोबील के प्रयत्नों को बढ़ावा नहीं मिला घोर इसके बाद तो ईसाई मिशनरी हिन्दू विश्वासों के साथ तनिक-सी भी प्रत्यक्ष समानता को जानबूझकर नजरअंदाज करने लगे। पुर्तगाल की शक्ति का हास घोर उच्च तथा अंग्रेज शक्तियों के उदय के पश्चात् व्यापार ही मुख्य ध्येय हो गया घोर प्रोटेस्टेंटों को कैथलिक धर्म की पठिबिधियों के साथ कोई हमदर्दी न रही। ईस्ट इंडिया कम्पनी अपने अधिकृत क्षेत्र में मिश नरी प्रचार को बढ़ावा नहीं देती थी। जब यूरोप के प्रोटेस्टेंट धर्म में धर्मप्रचार की प्रवृत्ति आयी तो भारत में मिशनरी कारनाम भी बढ़ गये। नई नस्थाएँ स्थापित हुई घोर हिन्दू धर्म के विरुद्ध प्रचार इतना तीव्र हो गया कि साई मिशन को हिन्दू धर्म विरोधी धारे उपदेश रोक देने पड़े। उन्होंने बौद्ध धर्म कायरेकर्म के वैसर मैन को लिखा "हिन्दुओं का सहाय करके जो पटिया बातें सिंगो आयी हैं कृपया उन्हें पढ़िये। इनमें धर्म-ईसाई पाठक के मस्तिष्क का तन्मुष्ट करने या विश्वास विस्ताने सायक एक भी शब्द नहीं होगा किमी भी प्रकार का तर्क नहीं प्रस्तुत किया जाता बकिर घुमा की घाम मुक्तवती रहनी है घोर एक तन्मूर्ख मानव-जाति को बापी टहराया जाता है—ज्योकि बहुपीढ़ियों से चल घा रहे धर्म में विश्वास करती है घोर अपने धर्म की सत्यता पर विश्वास नहीं करती। क्या हमारे धर्म की यही नीति है? १८१३ में कम्पनी का एकाधिकार समाप्त हूँ गया तो मिशनरियों के करतबों का फिर से बढ़ावा मिला। भारत के प्रमुख नगरों में ईसाई शिक्षण-नस्थाएँ स्थापित हुई, घोर ईसाई धर्म प्रचार के मामले में सरकार उत्साह दिखाने लगी।

हिन्दू-गुनरक्षण राष्ट्रीयता के बिनास और परिचय के चर्म के चने महान के ईसाई नेताओं का बाध्य कर दिया कि वे भारतीय गणतन्त्र का समर्थन और ईसाई बनीतियों में उभरा समावेश करें। भारतीयों के नेतृत्व में उच्च भारतीय राष्ट्रीय दल ने उदात्त को विद्वान् बनाया एक प्रमुख उद्देश्य बना दिया ता कि राष्ट्रीय भावियों को हिन्दूधर्म में धन्य करने की मांग का बयान हो जाय ।

सामान्य हिन्दू ईसाई धर्म का महान्-कृतिगुन समझना और उसके गुण का परलना काहूँ है । ईसाई धर्म हजार देश में ईसा की दूसरी शताब्दी में ही । नये विद्वान् होने के साथे उच्च अधिचारों का साथ-साथ देगवागिया का अधिचार भी प्रचल है ।

धर्म-परिवर्तन के अन्तर्गत ईसाई धर्म ग्रहण करनेवाले उदात्त बाद के नौम स्वयं को भारत की महान संस्कृति का उत्तराधिकारी मानते हैं । अनेक उच्च अधिच काहूँ भारतीय ईसाई तथा प्रमाण का रहे हैं कि उत्तराधिकार भारतीय धार्मिक अन्तर्गत अन्तर्गत और गूनीन ईसाई विद्वानों । म एक प्रकार का समग्रय स्थापित हो जाए, ऐसा ही समग्रय धर्म की परलना और ईसाई धार्मिक विद्वानों के बीच क्रूरों के अन्तर्गत अधिचारी विचारक स्थापित कर पाए थे । ईसाई धर्म पर 'युवानियों और बंधुओं का बंध' का है ही युवाओं की धर्म-परिवर्तन वास्तु उद्योग काही लाभ हो सकता है ।

६ चीन

भारत और मुद्ररपूर्व के देशों में कुछ गुण-जिसे मुद्रर परिवारिक सम्बन्ध और पूर्वजों के प्रति यथा-मानन का ही उपस्थित है । विचारों और भावनाओं में एक साहचर्य है जिसे साधोकार और बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में पाए गए हैं । समग्रय पचीम धार्मिकों का मुद्ररपूर्व में बौद्ध धर्म में सम्मता को विकसित करने का काम किया है एमिका को विचारधारा को धारण दिया है महान धार्मिक धार्मिकों और मध्य एशिया की भाषाओं में उद्योग भाषाओं में आशिया का मुद्रर किया है । बौद्धधर्म में अनेक बंधु भावियों की जीव-साधक प्रति दया के एमिका शिक्षा के साथ पर सम्म बनाया है और महान बना का मुद्रर किया है अन्तर्गत धार्मिक शिक्षाओं में नौम-जातिक प्रतीकारणका और नीतिवियम धर्म-अन्तर्गत के लिए अन्तर्गत है । कुछ समय पूर्व के राजनीतिक धर्मधर्मों के साथे एमिका के लिए युद्धपूर्व तैयार कर ही है ।

साधो का अस्तित्व सर्वप्रथम है । साधो ही एक ऐसा उपाय प्रकृति का एक प्राकृतिक विवेकपूर्ण विचार है जिसे उद्योग उद्योग में ही विवेक और साधो

व प्रान्दोलित संसार में रहनेवासे हम लोगों के लिए सुपयोमी है। यदि हमें राज्य का काम मुपाद रूप से बसाया है तो अपने परिवारों को व्यवस्थित करना होया अपने परिवारों को व्यवस्थित करने के लिए स्वयं को मुबारना होया प्रातम मुबार के लिए हृदय की सुखि आवश्यक है। कल्पयुधियस के अनुसार हृदय की सुखि परिवार की पुनर्ब्यवस्था और राज्य का मुबार रूप स बालन हमारा कठम्य है। कल्पयुधियस के अनुसार प्रनुसत्ता का शोथ व्यक्ति है। जनता का विश्वास प्राप्त न कर पानवालो सरकार का पतन अवश्यभावी है।^१

कल्पयुधियस ने 'जम' या परोपकार के सिद्धांत पर विशेष जोर दिया है। 'जिस प्रकार के व्यवहार की भासा दूसरों से धाप अपने लिए नहीं करते उस प्रकार का व्यवहार आप स्वयं दूसरों के साथ न करें।' कल्पयुधियस की सिद्धांतों के अनुसार 'जिन' का मंतम्य है—मानवीय व्यक्तित्व के प्रति सम्मान स्वयं अपनी तथा दूसरों की प्रतिष्ठा की स्वीकृति ईमानदारी सहृदयता और मानवीय संबिधताएं।

अपनी 'एनालेक्ट्स' (शाब्दिक अर्थ 'साहित्य-समुच्चय') में कल्पयुधियस ने लिखा है कि परमात्मा के बारे में मैं मौन ही रहूंगा। "मैं कुछ नहीं कहना चाहता। उनका विचारों त्पु-कुद् वृष्ट्या है "यदि आप मौन रहेंगे दुखी तो हम आपके विषय क्या सिलेंगे और किसका पालन करेंगे? गरुडी उत्तर देते हैं "क्या बह्रांड बासता है? चारो अतुएं एक रूप से घाटी-जाती हैं और उग्रीके अनुसार घाटी बस्तुओं का अत्यादन होता है, किन्तु क्या बह्रांड कुछ बह्रांड है?" "परम अक्षिणामी ईश्वर के शिवाकसाओं में न ध्वनि होती है धीर न मंत्र।"^२ कल्पयुधियस का ज्ञानी पुरुष 'मयकगीता' के 'स्वतंत्र' के समकस है।^३ कल्पयुधियस का कथन है "मैं जानता हूँ कि परती उड़ सकते हैं मछलियां तैर सकती हैं धीर पशु उड़ सकते हैं किन्तु बीड़ाक को गिरामा तैराक को कटिया से अंजामा

—

१ सरकार के बारे में प्रश्न किए जाने पर कल्पयुधियस ने कहा : "सरकार को बालन कल्प में तीन हैं : उपपत्ताओं की प्रकृता हो कुछ अल्पकी अनुपिन हो और राजक के प्रति अल्प में विश्वास हो।" त्पु-कुद्ने कहा : यदि अल्प न हो लगे और स्वयं से एक को दांडक रहे तो लक्ष्य पर किने दांडक अदिष्ट ? "कुछ अल्पमें," गुड ने उत्तर दिया। त्पु-कुद्ने फिर कहा "इन से मा बालन करने और राज दा में स की एक को दांडक वा प्रसन्न उद प्राप्त हो, तो सिमे त्याग क्या अदिष्ट ? गुड ने उत्तर दिया "उपपत्ताओं को। तथा मे अल्प-मात्र का अल्प अनुप ही मिलनी रही है किन्तु यदि अल्प को (अल्पे अल्पों पर) विश्वास नहीं है ना (राज्य का) स्वयंसेवक का अल्प ही मी अल्प।" अज्ञानकर्म XII VII।

'अर्थशास्त्र भाग २ अंश' अध्याय ३३।

धीरे उड़नेवाले की धीरे सारा जा सकता है। जिस तरह 'ईमान' बापनों के बीच या उनके पार उड़ता है उसी प्रकार हमें भीतिक परिवारों के प्रायय में मुक्ति पानी ही चाहिए। बीनी समाज में भौतिक का स्थान सम्मानजनक नहीं था। एक प्रसिद्ध बीनी कहावत है

घण्टे सोड़े में कीलें नहीं बनाई जाती

घण्टा धारमी सैनिक नहीं बनता।

इससे पूर्व पाँचवीं सदी के शार्शनिक मोस्तु का एक विद्वान्दशी महाकविनाम सार्वभरिच 'अकिलवण ईस्वर' में विश्वास था। 'उर्बाई पर स्थित ईस्वर के प्रथ से हमें मुक्त करने चाहिए, क्योंकि 'बहु' महतुल्य देवता रहना है कि जगता घाटिया धीरे धमेरी बगहों (जहाँ मानवीय दृष्टि प्रगटत रहती है) में क्या है? रहा है। केवल 'उमे' ही प्रसन्न करने की चेष्टा हम करनी चाहिए। 'बहु' घण्टाई का चाहता धीरे कुराई स बुधा करता है। 'बहु' म्याय में प्रथ धीरे घम्याय से बुधा करता है। पुष्पी पर छापी शक्ति उसी के कारण है धीरे उम शक्ति का उपयोग 'उसी' के अनुसार हुमा चाहिये। 'बहु' चाहता है कि राजा धरनी प्रजा क साथ ब्याभुता का व्यवहार करे धीरे धानव-माव परस्पर प्रेम कर, क्योंकि 'बहु' स्वय सभी मनुष्यों को प्यार करता है। 'बहु' स्वियों को विधवा धीरे बच्चों को धनाय बनानेवाले बिजताओं से पुना करता है। मोस्तु में धरनी शिष्या का निष्ठा में बिधा है "ईस्वर की धारावता धीरे मानव-माव क प्रति प्रथ—यहाँ बिबेठ है।"

बीनी लोग किसी बड़ मत के पुरान नहीं हैं। इनीलिए संशोधन की महावता सदैव है। बीन की विभिन्न धार्मिक प्रथासियों में धर्मिक सीमा तः पारम्परिक सम्बन्ध है। महतुल्य ईसाई निगलरी धीरे बीनी बौद्ध धर्म के विश्वास का रीगम्य में निष्ठा है। 'बीनी लोग एकमात्र कःपुपुणियसबाही साधोबारी धीरे बौद्ध हैं। यह प्रवस्था हम स्पष्ट दिखलाई बङ्गी है। कुछ देवता सभी धार्मिक प्रथासियों में पाए जात हैं। इनके अतिरिक्त कुछ छोटे तमरों या कःसों में सम्मिलित मंदिर हैं जहाँ तीनों धर्मों के देवताओं की मूर्तियाँ सिंहासनों पर साव-साव रनी हैं। प्रतिदिन की पूजा ता पोरी दर पीकी कभी या रही बरेण मूर्तियों में हो जाती है किन्तु विशेष प्रथमरों पर मामाग्य बीनी लोग मन्दिर में जाना पसन्ध करते हैं धीरे वे साधोबारी हैं या बौद्ध इनमें कोई धन्तर नहीं पड़ता। यदि आप किसी पर जा रही जानें धीरे बिद्यप प्राधत में उगक समप जीवन-धर्मन क बारे में जानना चाहें, तो आपको सभजन अनेक विविध बातें मृतम को मिलें—सौंपकतर तो टीने-राम रंग म मिथिन बिचार पठति ही सामने धाएनी जिसमें कःपुपुणियस क सिद्धांतों के धनुमार कने हुए

प्राचीन चीनी दृष्टिकोण के साथ बौद्ध अस्तित्ववादी दर्शन का संभवता-सा मिश्रण ही होगा।”^१

चीन के प्रति चीनी दृष्टिकोण का प्रतिबन्ध परिवर्तन है रुद्धि से मुक्ति।
छात्रवादियों का कथन है “जीवित मनुष्य कोमल घोर मुकुमार होता है मृत्यु
के पश्चात् कड़ा घोर सख्त।” इसलिए कहा गया है ‘कड़ापन घोर सख्ती मृत्यु
के अंग है तथा कोमलता घोर मुकुमारता जीवन के।’^२ सख्ती का विनाश मूल है
सुखापन परिस्थितियों के अनुसार स्वयं के झलने की लक्षणा। हम दूसरों पर अपने
विचार साधने नहीं चाहिए, बल्कि अपने विचारों को दूसरों को प्रभावित करने का
प्रयत्न करना चाहिए, घोर अपनी धारणाओं को दूसरों द्वारा संशोधन के लिए सुसा
रणा चाहिए।

चीनी ‘वैश्वसिक’ वैश्वसिक पाठशालाओं के अनुवादों द्वारा यूरोप पहुंच तो
नीतिज्ञ और बौद्ध जैसे दार्शनिकों ने उनके मूल्य घोर महत्व को स्वीकार
किया।

१० धर्म में रुद्धि घनाम स्वतंत्रता

वैश्वसिक विद्वानों के अनुसार आचरण ही अन्तिम परीक्षा समस्त विद्या
जाय तो विभिन्न मतानुयायी परस्पर विस्तृत धनज्ञान मामुम पढ़ेंगे यदि जीवन
की विधि पर ध्यान दिया जाय तो वर्तमानुयायी व्यक्ति परस्पर समान मामुम पढ़ेंगे।
हमारा धर्म ही सत्य का प्रतिनिधि है घोर इसे व माननेवाले काफिर है बिना
विनाश आचरणक है—यह दृष्टिकोण वास्तव है।

मोक्ष एवं समस्त में आसक्तनेवाली वस्तुधा के बारे में हमारा ज्ञान अभी प्रयोग
वर्धमान घोर अपूर्ण है फिर भी ईश्वर के स्वभाव और संसार के साथ उसके सम्बंध
के बारे में हमें इतना विश्वास हो—यह धारणा ही ही तो वास्तव है! केवल हमारा
धर्मज्ञान वा हमारी संस्था ही पर्यटित निर्धर्म घोर वैधी है तथा ईश्वरीय गिणा
घोर कृपा की व्याख्या करने व उन्हें प्रदान करने में समर्थ है—य प्रसार के अर्थ

१ रिचार्ड इन फ्रांज़ गार्डन (१९१२), पृष्ठ १७२।

२ लघो १६ विभा LXXVI बुद्ध स्तुति का अन्वय इस प्रकार है “मनुष्य वृद्ध
की रीति वन का। वैश्वः वार्ता वरुण कुशा है” फिर भी असी तक केवल आचरण का ही
ज्ञान गया है। मैं विचारण लोभ में दृष्टानुसार पूर्व मुक्त है। मैं वार्ता व नने का अर्थ व
ले अर्थवत्त है विष्णु वर मनी अन्वय कि उमरा फलकई है। आर्से नेती श्री वैश्वसिक
आर इन पेशेद आन्ता (१९११) पृष्ठ ७१ (अवदान में अर्थवत्त)।

यूरोपीय धार्मिक इतिहास के ज्ञाता चीन और भारत की इस पारस्परिक-जनक दृष्टि को समझ नहीं पाते कि वहाँ साम्प्रदायिक धर्मों का उदय महत्व नहीं है जितना पश्चिम में। किसी बौद्ध को बर्मी भी नहीं सुझेगा कि उसका पड़ोसी चीन नास्तिक है, जिसे धनस्त नरकवास ही मिलाया। ये बेबता ठो परमेश्वर के विभिन्न रूपों को बघति है। ईसा की प्रारम्भिक घटाश्रियों में अनेक चीनी यात्री भारत गए थे। उनके बर्ननों से हमें पता लगता है कि विभिन्न मतानुयायी एकसाथ बैठकर धारमा और परमारमा के प्रश्न पर चर्चा किया करते थे और विभिन्न बर्मा-बसन्धी विराक विरचविद्यालयों में अध्यापन करते थे। सम्पूर्ण मानव-जाति की धारमा का मात एक उद्देश्य है। धसन-धसन लोच धसन-धसन बंध से उसे प्राप्त करना चाहते हैं। भारत में बहुत पहले से धसससस्यक यहूदी सीरिबाई ईसाई और पारसी मौजूद हैं—यह इस उष्य का प्रमाण है कि भारत में धार्मिक सहिष्णुता की भावना समाचार कायम है।

इसका धर्म यह नहीं कि बिकास को प्रोत्साहन नहीं मिलाता। प्रत्येक परम्परा मठ सिद्धान्त विभिन्न संघों से बना एक धाकार है और इसमें परिवर्तन साम्प्रदायिक बिकास के कारण होते हैं बाहर से सावे नहीं जाते। विभिन्न मठ घटाश्रियों की दृष्टि के परिणाम हैं और वैदिक धारणों द्वारा निर्मित जातीय कुलों की मिट्टी में उनकी जड़ें हैं। धार्मिक परिवर्तनों का परिणाम भवानक हो सकता है किन्तु दूसरे धार्मिक दृष्टिकोणों का प्रभाव एक प्रकार के 'समीर' का काम करके स्वामा बिक परिवर्तन पैदा करता है। धायनी मंत्र में निर्दिष्ट है कि बाह्य रूपों को भेद कर उन रूपों द्वारा इगित लोच तक पहुंचने का सतत प्रयास प्रत्येक ध्यवित को करना चाहिए। बाह्य रूपों से सन्तुष्टि ही धार्मिक जीवन का सबसे बड़ा दोष है। धात्र जब विभिन्न धर्म धामने-सामने हैं, पूर्वीय दृष्टिकोण इसी बात पर जोर देगा कि एक धर्म का स्थान दूसरे द्वारा ग्रहण किया जाना धावश्यक नहीं है। यदि हम धाध्यात्मिक यथार्थ और ऐतिहासिक परम्परा में बिबेध कर सकें तो हम स्वीकार करना होगा कि मानवता के धाध्यात्मिक जीवन के पोषण के लिए विभिन्न धर्म सद्भाषनापुष्कर कार्य कर गारते हैं।

भरकार और धानी शिशा-नस्थाओं की गहायता से भारत पर धानी मंत्रानि धानने के पश्चिमी धाधिनियों के प्रयत्नों से भारतीय जनता की निरक्षयता को जप दिया और भारतीय मन्त्राज की मनह का धान्दोषिन किया, किन्तु महलाई में पैटी भारत की हीनवाणीत परम्परा पर धधिक प्रभाव नहीं पड़ा। मठपर हमें अपनी धमकनों को मुख्य धाधार का टूटना नहीं गमम्मा या सकता।

सम्पूर्ण भारत में मार्चनीय धर्म का पुनरुत्थान हुआ है जिसका धाधार वेदों

की प्रमुख गिजाएँ हैं। हममें हिन्दूधर्म की मिश्रान्त-बनी अस्मान्त्रय का निर्माण करनेवाले उपनिषद्, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र सम्मिलित हैं। राममाहन राय (1887-1911) ने प्रचलित एक हिन्दूधर्म के सुधार की प्रणाली उपनिषद् से पाई। स्वानन्द मारम्भनी को ज्ञानि-प्रथा और अस्तुत्पत्ता से मुक्त धारणों धार्य मयात्र का प्रमाण अज्ञेय के स्थापना में मिया। श्रीमती एनी बेन्टन व नेपुन्स व विद्यामोडिटरम मोमामटी ने हिन्दूधर्म का एक प्रमतिगाम और माधनीय प्रकृति प्रणाल की। रायहृत्तव धार्याजन ने जिनके अनुवांसिया की मस्या माया से है हिन्दूधर्म के धार्म्यात्मिक एवं सामाजिक पध पर जार दिया। रायहृत्तव व विभिन्न धार्मिक मतों का गहन अध्ययन किया और उनकी धार्म्यात्मिक एकता व धार्म्यात्मिक अनुभवता को उजागर किया। ज्ञान मयापर निमत्र की धर्मविश्व और मज्ञायमा पावी ने एक पुनरुज्जीविन भारतीय मयात्र की स्थापना के लिए भगवद्गीता का महारा दिया।

हम मारी गजाविद्यों के दीगत भारत के निवासिया ने एक मस्कुति का विकल्प किया है और उसे निरन्तर कायम रखा है। यह कोई नई विचारधारा नहीं बल्कि एक जीविन प्रक्रिया है जो परिवर्तनशील परिस्थितियाँ के अनुसार स्वयं को ठामन हुए धार्मिक से धार्मिक मसृष्ट होती गई है।

विभिन्न जातियों के विभिन्न माया भाषी तथा धर्मन मस्कुतियों क मोम मागतीय धरणी पर मिडे हैं और ममय-ममय पर हुए मयों के बावजूद एक ही सन्नता क मरम्भों के रूप में रहन मये हैं—ऐसी मस्यता जिनके प्रमुख गुण हैं मयी जीवधारिया म स्वयं एक 'अदृश्य वास्तविजता' के प्रति धारणा धार्म्यात्मिक अनुभव का महत्त्व संस्कारों और मिश्रान्तों की मारेचना बौद्धिक धारणों के प्रति एक धर्ममयन और प्रत्यक्ष विरोधों को सम करने की मागुरता। उनके धारणों को संवधिराम नहीं बल्कि जीवन्त मय ममय जाता है जो मस्यूर्ण मागवता की धार्म्यात्मिक धारम्यकताओं को पूरा कर सकता है। बहुत पुरान समय से यहाँ तक कि मुँेर काल में वायव ही कोई बर्य या मस्युधाय धारा वा स्वयं ऐसा ही जिन धारण न स्वीकार न किया हो कि भी जारण की धारणा धारिबनित है। गोधीत्री न 'यंग इडिया' म मिया था "मै नहीं चाहता कि मेरे घर के चारों और एक दीवार उठा हो जाए और विडुक्तियों का बन्ध कर दिया जाए। मैं चाहता हूँ कि धर्मात्मक स्वतन्त्रतापूर्वक सभी धरों की मस्कुतियाँ मेरे घर के चारों और मंररानी रहें। लेकिन यह निश्चय है कि कोई भी संस्कृति मेरे पाँव नहीं उखाड़ सकेगी।" हमारी संस्कृतियों ने भारत को प्रभावित किया है, पठविठ नहीं।

यूरोप के समान भारत की घमंडता क्षेत्रीय राष्ट्रीय घान्दोसनों में नहीं बदली है और हर समय भाषा वासे क्षेत्र में स्वतंत्र राजनीतिक इकाइयां नहीं बन पाई हैं। इसका कारण है एक प्राचीन संस्कृति की सुदृढ़ता और बाहरी—ईसा की घाटी की घाटाब्दी ने मुसलमान और घाटाहूरी घाटाब्दी के बाद यूरोपीय—प्रभाव।

भारत ही यकैसा देश है जहाँ मन्दिरों गिरनों और मसजिदों का घान्तिपूर्ण सह-घान्तिव है। मैं स्वयं हिन्दू मन्दिरों महुदियों की प्रार्थना-सभाओं बौद्ध मठों ईसाई गिरनों और मुसलमान मसजिदों में भागध है चुका हूँ और न तो मैंने घपनी बौद्धिक घान्तिवकता के साथ कोई लमभ्येता किया है और न घपने घान्तिवक घित्वाओं को छेड़ महुंघने बी है। मसपाठहीन बिबेक की प्रकृति भारत की घान्तिव परम्परा में घ्याप्त है।

घनेक महुान घारमाओं के प्रमर्तों से भारतीय संस्कृति का निर्माण हुघा है—उनकी पीढ़ाओं से बाँधा ऊपर उठा और रक्त से निर्मित हुघा है। घाटाबिघां बीतने के साथ-साथ उसमें मिट्टी का रंग मिस बया है। घपनी मन्धी बुद्धि के सारे बाव और घम्मे उतार मीजूव हैं। यह घारुर्घक नी है और बिघर्षक भी घपने बिरोपा भाओं से हुमें बाँका देनी है और घबिनापी बीघनी घक्ति ने मोह सेठी है। भारत ने बंठा है कि उठकी घमरासीन संस्कृतिघां घपनी घवमी पीढ़ी की मसृतिघों को वमह बेकर बिनीन हो मई फिर कुघ मबीन संस्कृतिघां भी घुप्त हा नई, किन्तु भारतीय मसृति फिर नी बीबित है। उठकी घारमा के पीघक की मी कानी तो की किन्तु कुमी कमी नहीं।

माननीय बिघारमारा निर्मल छरिना महीं है। सामारकठ उसमें सूब मिट्टी-मिसी होती है और घान्ति भारत में काप्री मिट्टी जम मई है बिने हुदाना घाबसक है। घंघ-बि-बाम सूब पैना है। घान्ति भी बहुत सोग मून-अर्थों में बिबिघाघ करते हैं। यहाँ तक कि मिडिल भारतीय मी घपनी मसृति की प्रकृति को उमरी उप-मधिघों और मभाबनाओं को महीं मममने। ब्यबसायमय घन्तरों ने कूक घान्तिघों का म्म घ्रहण कर मिया है। छान्तिवक बिघारोंनाम ब्यक्ति घस्यू-घना को घारक और बुप्रकृति मानते हैं। घनेक सामाबिक रीति-नरघाघ काघम है हासांकि उनमें बीरत का प्रगत म्म मया है। सेकिन् ये बीघ मीठपी नहीं हैं। भारत के घारमों के गाय इन्का बाँ घाम्य मरी है। भारत घान्ति कभी बीबित रूँ घान्ति है जब यह घपन घान्ति का प्रनिनिघित म करनेघामी मसपाओं की मूनना बग्घ कर दे। घनेक मसपां तो घदिघ्या—कभी बीबिन घानी की वाघान प्रतिमा—बनकर रह मई है। घान्ति के मसपां न वाघाओं को पुन-बीबन प्रगत मिया वा सवता है। घान्ति घाबसकता है कि भारत घपनी ही प्रकृतिघों को बाव कर मया है।

द्वितीय व्याख्यान पश्चिम (१)

१ पश्चिमो संस्कृति

पश्चिमो संस्कृति के मुख्यों और विद्वानों के उत्पन्न ज्ञान रोम और इतिहास स्तोन है। पूरुबान न समीक्षात्मक दृष्टिकोण पर्यवेक्षण-विषयों और राजनीतिक विद्वान् विसे। परमनिरपेक्ष कानून और व्यवस्था-सम्बन्धी नियम रोम की देन है। ग्रेगोरियस और ईश्वर के निर्देशानुसार आचरण करनेवाले धार्मिक मानक के विचार इतिहासीय प्रवृत्त हैं। पश्चिमो परम्परा के तीन प्रवृत्त तत्त्व हैं—विचार अनुवायन और धारणा। किन्तु यूरोपीय ज्ञान की किसी भी व्यवस्था में इन तत्त्वों का सामंजस्य स्थापित हो सना एसा नहीं कहा जा सकता। धार्मिक में प्रवृत्तों की अनुवृत्त में ही है। रोम के मुकरान का मीन के बाह्य उत्पन्न रोम और शासक का काम सना। रोमक ज्ञान के कभी सीधरों और सामान्य ज्ञान रिकों की ग्राहकियों पर प्रतिबन्ध नहीं समाया। ईसाई धर्म भौतिक शक्तियों की शक्ति के लिए संप्रयत्न रहा। धार्मिक राजनीतिक प्रवृत्तों की विवृत्तता पर व्यवस्था-सम्बन्धी विद्वान् सागु करने के प्रयत्न विफल हुए हैं और ज्ञान द्वारा नियंत्रित एक साधनीय समाज के आह्वानानुसार आचरण में ही हमें सफलता नहीं मिली है—और पुष्ट तथा विशुद्ध की कल्पितों दृष्टी प्रवृत्तताओं के बाह्य प्रभाव हैं।

पूरुबान इतिहासीय और रोम पर पूर्व का प्रयत्न प्रभाव था। एमिया माह नर और मिय की संस्कृतियों में पूरुबान न बहुत कुछ प्रवृत्त किया। ईसा में पहले की शताब्दियों में यहुदी-ईसा में पूर्व की धार्मिक प्रवृत्तों में पहलुपत्री रही की प्रवृत्तों उत्पन्न आध्यात्मिक उत्पन्नता के ईश्वर और अनुवृत्त-सम्बन्धी कृति-ईसाई धर्म के प्रवृत्त किया। ईसाई धर्म ने अपने मीन में प्रवृत्त-धार्मिक शक्तियों—विद्या संप्रदाय और मनी के मुपारों—का उत्पन्न किया। जर्मन और मंगोल आक्रमण कारियों की राजनीतिक और धार्मिक व्यवस्था ने पश्चिम के राजनीतिक प्रवृत्त को

प्रभावित किया। अरबी इस्लाम ने स्पेन और इटली से होकर, पश्चिमी संस्कृति को यूनानी सांस्कृतिक विरासत का कुछ भंवा पुनः प्रदान किया जिसे पश्चिम रोमक साम्राज्य के दिना में मूल भेद्य था। अपने अनुसंधान और पयनेशन से प्राप्त मनीष वैज्ञानिक सिद्धान्तों को भी अरबों ने यूरोप में फैलाया और इस प्रकार पुनरुत्थान और नवजागृति की आचारभूमि प्रस्तुत की।

२. यूनान और पूर्व

ऐतिहासिक प्रथम सांस्कृतिक संदर्भ में पूब और पश्चिम की सर्वा करते समय हमें भौतिक माध्यमों का विचार स्पष्ट रैना चाहिए। पाँचवी सताब्दी ईसापूर्व के यूनानियों के लिए पूर्व या पश्चिम का अर्थ था आरस और पश्चिम या यूरोप का अर्थ था प्राचीन विद्युत यूनानी (हेलेनिक) संसार।

भाषा के जन्म के सम्बन्ध में हमारे विभिन्न सिद्धान्त हैं। पहली परम्परा के अनुसार भाषा में पशुओं के नाम रखे थे और विभिन्न भाषाएँ ईश्वर की देन हैं क्योंकि वे ब्रह्म की मीनार का निर्माण रोक देना चाहते थे। वैज्ञानिकों का विश्वास है कि भाषा का विकास क्रमशः हुआ अस्पष्ट स्वर और हावभाव क्रमशः भाषीय तर्कों में बदलते गए। अन्य लोगों का मत है कि मानव ने प्रकृति में जो ध्वनियाँ सुनीं उसकी नकल की और इसीसे भाषा बनी। भाषा का अन्तम आहे जो हा उसमें अभिव्यक्ति की बहु शक्ति है जो पशुओं के लिए दुर्लभ है। भाषा के माध्यम से ही विचारों का आदान प्रदान और सहयोग संभव है। यह किसी भी मानव-मनुष्य में पाया जानवाला एक सामाजिक आवश्यक है।

आज से डेढ़ सौ साल पहले जब सर विलियम जोन्स जैसे यूरोपीय प्राच्यविदों ने यूरोपीय विद्वानों को संस्कृत से परिचित कराया तो ग्रीक सीटिंग तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं के साथ उसका धिष्ठ सम्बन्ध स्पष्ट हो गया। जिस प्रकार फ्रेंच इटाली पुर्नगायी क्रमादिवाँ और स्पेनी भाषाएँ अपने राष्ट्रिय उच्चारण और वाचन-विषयों में परस्पर समान हैं उसी प्रकार संस्कृत और फारसी, धार्मिकियाँ प्रन्धानियाँ रसावानी भाषाएँ, ग्रीक सीटिंग द्यूटन भाषाएँ (नारबी एथोइनी जर्मन और जेम्मा-नीकन) तथा केल्टिक भाषाएँ (वेल्सी धर्म और गैलिक) भी परस्पर समान हैं। क्या ये सभी भाषाएँ किसी ऐसी मूल बोली से उद्भूत हैं जिस इतिहास के किरी पुण में किसी स्थान के निवासी बोला करते थे या ये एकदम भिन्न बोलियाँ हैं जिनमें विरोध क्रम और समानता अधिक है? क्या ये भाषाएँ एक ही बोली के अटकर विपरने से बन गई हैं या एक-दूधरे

में मिसली हुई एक ही केन्द्र से प्रसारित बोरियों के निरन्तर प्रवाह^१ जैसी है? इनकी व्याख्या चाहे जो हो भाषाओं की समानता के इतना पता तो लग ही जाता है कि कई निश्चित मानव-जातियों की धर्म-व्यवस्था सामाजिक संगठन और धार्मिक विकास किस सीमा तक परस्पर समान थे। सहज ही कल्पना की जा सकती है कि इन जातियों में एक निश्चित भीमा तक स्थानातीत सम्पर्क स्थापित था।^२

जहाँ से हमें वैदिक भारतीयों और होमरी यूनानियों के इतिहास का पता है, उस समय के सामाजिक विकास की समय समान अवस्था तक पहुँच चुके थे। देवी-भाड़ी शिकार और मछली पकड़ने की कलाओं का ज्ञान लोगों को था। घोड़ों का सामाजिक महत्त्व था। पहिया 'पहिये की नाभि' 'पुरी' 'बुधा' प्रादि शब्दों से पता चलता है कि पहियेदार गाड़ियों का प्रयोग होता था। 'नीकामा' और 'डाँकों' द्वारा पत्त-परिवहन प्रचलित था। ऊँट काता-बुता जाता था। सामान्यतः पत्थर के बने औजारों और हथियारों हथौड़ों कुम्हाड़ियों और तीरों का प्रचलन था। ताँबा ज्ञात था। कबीले पिता की वंश-परम्परा में वसत के शासन सरदारों और राजाओं के हाथ में था। प्रसन्न सुरसा के विचार से गाँवों को जहारबीबारी से बच रिया जाता था। एक धाकाध-देवता (ज्यूपिटर ज्यूस पेटर, घौस पिता) की पूजा बसि बैकर की जाती थी। ये सभी नाम प्राचीन 'हाई जर्मन' नाम 'बिबू' तथा प्राचीन गार्बी 'टायर' एक ही धातु 'बमकना' से उद्भूत हैं। बरुन के समकक्ष 'घौरागोस' हैं तथा उपस् का इषोस। बुद्धसवारी में पथ प्रपुषक्य बुद्धा प्रकाश और बीपि के विषय देवता अस्विनिकुमार 'डामो' स्ववुरी के जिनका काम था देवताओं की रक्षा तथा मानवों की सहायता करना।

१ 'इ यूरोपिकल इन्डिस्ट्रिय (१८५४), पृष्ठ १ पृष्ठ ८३।

२ प्रोफेसर बी. एडमंड काररर ने लिखा है : "जब कबला जर्मन होमर कि इत्यत्र प्रवेश—जैसे यूनान और भारत—में रहने और वरन्तर समेक्य समुदाय बालियों का व्यवहार करनेवाली दो अतिना विकसत की समान अवस्था पर पहुँचकर 'परार' 'पाक' और 'करना' जैसे समान शब्दों का आधिपत्य करें और समान ढंग से उनका व्यवहार करें, जैसाकि वैदिक भारतीय और होमरी यूनानी संस्कृत करते थे। अवस्था ही कुछ अतिना व्यपत्त में रहने पद्य रहती रही होमे कि वरन्तर संस्कार संभव रहा होगा और अनेके मिश्रण की एक अवस्था ही धार्मिक धार्मिक संस्कृति रही होगी।" श्री पृष्ठ ८४। हिस्ट्री जो यूरोप की तरफे पहली लिपिक और संस्कृत भाषा है बाल्य विद्यास, व्यवहार और शब्दकोश में संस्कृत, धर्म का सिद्धांतनिर्धार भाषाओं से भिन्न है। अस्वय 'जब वह हो संभव है कि मिश्रण की जल अवस्था तक पहुँचने से पहले ही अनेके पूर्व वैदिक या ऐतनौतिक शब्दों के कारण अन्य भाषियों से प्रभाव हो गये होंगे।" श्री पृष्ठ ८४।

इरोस (कामदेव) 'हिसियोस से देवताघा मे प्रथम थे।' वेद धीर होकर बनों में घाकाशीय पिठों की पूजा साधारण बात थी। वैदिक ऋतु प्रकृति का नियम यूनानी 'डाइक' में विद्यमान है। यूनानियों का प्रयत्न परमात्मा को इसी संसार में खोजने का था। उनके धर्म में प्रकृति की घायल महत्त्वपूर्ण शक्तियों धीर घटनाओं को संप्राप्त मानकर देवताओं के रूप में पूजा जाता था।

इन समाजताघा से पता चलता है कि इनको मानवजातियों—प्राचीन यूनानी धीर वैदिक भारतीय—में परस्पर सम्पर्क अवश्य रहा होना यद्यपि दोनों में से किसीको उस काल की याद नहीं है धीर वे प्यरसी साम्राज्य में अपरिचितों की भाँति मिली थी।

यूनानियों को मिस्री मसीरियाई प्यरसी धीर हिब्रू सम्प्रदायों के बारे में भी मासूम था किन्तु वे उन्हें बर्बर मानते थे क्योंकि उनके विचार थे वे तर्कसंगत विद्याओं के साधारण पर जीवन नहीं व्यतीत करते थे। मिस्रियों को जब मुरदाह रखने में घानन्द प्राप्त होता था। मसीरियाई मिलने-पड़ने से घनमिलन से धीर उनके देवता घाबे पशु थे। यहूदियों की घास्वा घनुष्ठानों में भी धीर प्यरसियों को स्वतन्त्रता का धर्म तक नहीं मासूम था। यूनानियों को सयता था कि पापों की बुनियाद में वे ही घकेमे समझदार लोग हैं धीर हर समय उन्हें पापमपन की छूट मग जाने का लतदा है। बबरता का रबाब तो उनक लिए सचमुच घलती था—कनस बाहर में नहीं भीतर में भी।

धनेक घबसरो पर यूनानी अपने को मिस्र धीर मसोरोनामिया की प्राचीन सम्प्रदाया का शिष्य कहा करते थे। वैद-यूनानियों का प्यन यूनानियों पर काफ़ी था किन्तु दगले यूनानी बुद्धि की मौमिजना म कमी नहीं घा यानी यपोरि कुगरो से प्राप्त विचारों का घाने मागल के घनुकूल बनाने की शिया म उन्हीं उन विचारों का काफ़ी बरस डाला था। हय याद में दैगेवे कि जब उन्हींने ईसाई घान्तों को दहल दिया तो उन्हीं अपने व्यवहार के घनुकूल बना लिया। यूनानियों के बारे में प्यन ने कहा था 'हमें मास मैना चाहिए कि यूनानियों ने जो बुद्ध भी यूनानी जानियों में पहल किया उस घन्तल घट्टार ही बना दिया।'^१

प्यन ने 'मिमिपम में मिला है कि मिस्रवासी यूनानियों का बरबा घममले थे। प्यनो हैनेरिक ममात्र के पननोगुण दिनों म बीविल घे इसलिए मिस्री मस्क्री

१ यूनानी-वैदिक के घनुकूल मप्यन की शक्तियों के प्रदक्ष मंत्राण का प्रयत्न घाने घे।

२ 'मिस्रवासी' दक्ष हो।

के स्थापित की स्मृति मानते थे।^१ पिरामिड मानव-जाति की महान सभ्यता के प्रथम के प्रतिष्ठित तथा नियोजन धीरे धीरे वर्धमानता की चरित्रगत उपलब्धि थी। मिस्र के मन्दिर प्रायः भी नील नदी के प्राचीनतम निर्माणों की ईश्वर में धात्वा के गढ़ाओं के रूप में पड़े हैं। पैंतीस सप्तमियाँ में भी अधिक समय में सभ्यता में पूजा होती या रही है। इस समय के गण-शासक नाम बचाने का है—समस्त ईसा सप्ताह। पूजा के लिए प्रेरित करनेवाली भावना प्रायः ही उपस्थित है धीरे-धीरे स्थान प्रायः ही उनका ही पवित्र है जिनका ईसा मग़रब भी बर्णन करते थे। पाँच हजार साल पहले के मिस्रवासी नैतिक सदाचार के उत्कृष्टतम मिश्रण की मानते थे। मृत्यु से पूर्व हर प्रीमल मिर्ची घबने देखायाओं धीरे गहवोमिया की विद्वान् दिना देना चाहता था कि उनसे नैतिक धार्यामय जीवन व्यतीत किया है। प्रायः मृत्यु से पूर्व के स्पष्ट समय में वे बार-बार बड़ी कहते थे कि वे जीवन भर सद्बुद्धि द्यानु धीरे धरुदे पड़ोसी रहे हैं "मैंने सपनाया के बराबर ही विषयाओं को भी किया था। मैंने छोटे-बड़े में मेर नहीं किया। सभी धर्मों के समान मिस्र की 'मृत्यु-मुक्तक' (बुद्धि पाँच व डेह) में भी धार्यल विधिष्ठ सेमी में सदाचार की विनिष्ठता के बारे में सिखा है "मैंने किसीका रोक का कारण नहीं किया। मैंने किसीको शोषणपूर्वक बात नहीं की। मैंने किसीको धार्यल नहीं किया। मैंने किसी ग्याय धीरे सत्य से धरे-धूर दार्थों को धनमुना नहीं किया।"^२ उन प्राचीन ग्रामरुक्त व्यक्तियों का एक प्रदर्शन नैतिक सदाचार का एक उत्कृष्टतम धार्यल किया करता था।

यूनानी धार्यल समस्त धीरे साहित्य के लिए विधियों के धार्यल थी। कहा जाता है कि बेन्स सोलन पाइथगोरस धरुदेग क इमोकाइस धीरे प्लेटो में मिस्र की यात्रा की थी धीरे मिस्र की पुजारियों में गिला प्रवृत्त की थी। यू इन इतिहास का अनुचित ऐतिहासिक प्रयास नहीं है। फिर भी इतना तो निश्चित है कि मिस्र धीरे वैश्वनीयता के बल धीरे प्रमाण से अनुचित होकर ही यूनानी साहित्यिक उपलब्धियों में प्रवृत्त हुए। सोलन-सेमी धीरे मेतल-शासकी के

१ 'दिव्य', २२ अ-२३ व।

२ इमूरी संविधान के प्रवृत्त में कहा गया है "जो समय देखाया में मुझे धार्यल इमूरी की—जो प्रवृत्त बात करनेवाला सेक व धार्यल व धरुदे पर धार्यल प्रकाश की स्थापन करण का अनुभव धीरे समुद्रिक का बलना करण था, "जो विधि व धरुदे के धार्यल मरी होने देण था "जो धरुदे धरुदे को इमूरी धीरे प्रकाश का धरुदे करण था—मैंने धरुदे धरुदे किया।"

सिद्ध भी यूनान मिय का साभारी था।^१

यूनानियों की एकलव्य विद्यपता की मानव-विशेष की शक्ति म घास्या।
 अपने मूलिक और पार्थिक दृष्टिकोनों का तर्कमंगल साधार प्रस्तुत करने का
 प्रवास हमेशा उम्हेंमि दिया है। उनके मस्तिक तर्कप्रधान म। मानव विचार
 बाण के शेष को सीमित करके यूनानियों ने सत्य के स्थान पर तर्क और घाघ्या
 तिमक दृष्टिकोण के स्थान पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण को स्थापित किया।

यूनानियों और बर्बरी का अंतरमात्र वर्णगत या जातिगत नहीं है। वेद
 है मस्तिक की विधिप्यता का। यूनानियों को अपनी संस्कृति की घोटला में
 अपना विदवाह या और तुलनात्मक रूप से वे जाणियत प्रसहिष्णुता में
 मुक्त थे। यूनानी संस्कृति को स्वीकार कर लेनेवासे बबर यूनानी मानसिए जात
 थे। उदाहरणतः सेंट पॉम में जो यहूदी परिवार में जन्मे और बड़ से सारे
 यहूदी अनुष्ठानों और पूषक्य की भावनाओं को त्याग कर यूनानी संस्कृति को
 स्वीकार कर लिबा। श्रीक भाषा और यूनानी जीवन-मदति अपना लेने पर घचीन
 जातिवों को भी नागरिकता और सामाजिक समानता के अधिकार प्रदान कर
 दिए जाते थे।

यूनानियों की दृष्टि म सत्ता और ऐश्वर्य प्राप्त करने में नहीं घबिक महत्त्व
 पूर्व या मानसिक घमियों का विकास और उपयोग। वे यूराल के मुक्त म।
 प्रकृति के प्रति तर्कमंगल और नृजनतात्मक दृष्टिकोण उनकी विशेषता थी। उनकी
 'दशन घब म बहु घची कुछ सम्मिलित या त्रिधे हम घाज विज्ञान बहने हैं।
 घचन का उद्देश्य यथासं निरीक्षण का हयका-मा पु' हैकर परम्परामुबद्ध
 विचारी की एक श्रुताता उपरिचन करता है जबकि विज्ञान म यथासं निरीक्षण
 का अनुशात घबिक होता है।

यूनान क सर्वप्रथम विधिगत दार्शनिक वेसम (५२५-४५२ ईसापूर्व) ही
 प्रारम्भिक ग्यामिति और गगान के जनक थे। उनके समय के कई घय दार्शनिक
 और वैज्ञानिक भी थे जिन्होंने पानी, हवा के निघातों का चार घमिचन तर्कों

^१ प्राचिन काल में एकर गंग का दूनरी का तीपरी शब्दका। एक दूनरी मरिचि देवार
 एका मायक म्वा। मे बर दक प्रार के कागज पर निघा और कीरी बर कीरी सुघित एका
 म्वात एका म्वा मिय में एका बरसेम क्कण घकीज काय में होय बना म्वा एका म्वा और दूनम
 में एका क्कण मिय म्वा ही निघा म्वा बकीकि दानों काधार-मधार तथा क्कण माय में
 गम्वाय थे।— द मिलीनी काग द्किक (१९५०) पृष्ठ १५ में एका कौनियन द्क एका घकीज
 (पृष्ठ ४) थे।

को मूल मानकर संसार की व्याख्या करने का प्रयत्न किया था। पान्थाबोरस (१८२-२०० ईसापूर्व) एक महान वैज्ञानिक थे। मृष्टि में व्यवस्था और सामंजस्य है, इस सिद्धांत का प्राबल्यार करके उन्होंने मानव की संबन्धनात्मक प्रकृति को सम्युष्ट किया था। अपने नमकोण विमूढ़ प्रमथ रस्मी की सम्बाई रंदा का अनुपात और योगाकार पृथ्वी के विचार में उन्होंने सिद्ध किया कि ब्रह्मांड नियमबद्ध है। अपने में पुरातनिक वैज्ञानिकों के समान पान्थाबोरस ने किसी सिद्धांत की गार नहीं की बरन् ब्रह्मांड का नियंत्रण करनेवाले मुक्तिविश्व सम्बन्धों या नियमों पर जोर दिया। बर्नुनों में सामंजस्य उनके लिए काव्यमय विम्व मात्र नहीं था और इससे उग्र सन्तोष था। एनैकमागोरस (२०१-४२६ ईसापूर्व) ने अपने प्रायतवासी धर्मों के स्पष्ट प्रथम सिद्धांतों के स्थापन पर सतिष्टत को रखा। उन्होंने तात्पर संसार के कारणम्बक एक प्रगोचर प्रथम सिद्धांत का प्रतिगाहन किया।

अक्रादमी के विह्वार पर ही हुई व्यटा (४२०-३४३ ईसापूर्व) की विख्यात वेतावनी में मथिन के प्रति उनके प्रम का पना समता है। यूनानियों में सर्वाधिक प्रभाववासी वैज्ञानिक मरस्तु (३८४-३२२ ईसापूर्व) थे। वे पनि बावन एक प्रयोगशील दार्शनिक थे और तथ्यों को एकत्र करके विज्ञान के समस्त अक्ष में व्यवस्थित करते थे। अक्सर उन्हें प्राबुनिक विज्ञान का जनक कहा जाता है। उन्होंने तर्कशास्त्र अनुविज्ञान और बनसति-विज्ञान की आधारविस्थाए रनी। उन्होंने भौतिकी काव्यशास्त्र मनोविज्ञान पठरित्त-विज्ञान तगोस भूगोल मीनिगास्त्र और राजनीति पर लगनी बभाई। लगभग इसी समय यूनानी प्रायप-विज्ञान का उदय हुआ। परिचामी संस्कृति का विज्ञान से अनुप्रेरित करने का अत्र यूनानी विशालों को ही है। उन्होंने ही परिचय को बौद्धिक और नीतिक अनुपासन प्रदान किया।

यूनानी लोयोस में अनुपात समन्वय और धार के प्रति आपरुक्ता थी। अपनी सौर्यपरक इधियों को धर्मियस्त करने की आकाशिकी पृथ्वी को यूनानी कला का सहाय मिया। मानवों अनुपों और वीषों को चिचित करने में यूनानियों ने अपनी कार्य-कुशलता मगा थी। यूनानी कला धन्य कलाओं—जैसे भारतीय कला को किसी अप्राप्य किसी पूरत्व अपने से ऊपर किसी तक पहुंच सकने में प्रयत्नशील है—की तुलना में धतिक मानववासी है।

विश्वकामीस प्राणी की हैसियत से प्राप्त सम्मान के लिए आवश्यक है कि मानव अपनी राजनीतिक और धार्मिक संस्थाओं की तर्कसंगत धारणा करना, राजनीतिक क्षेत्र में यूनानियों ने सर्वत्र विश्वकूर्म व्यवस्था स्थापित करने का यत्न

नियम अधिनायकवाद के विरुद्ध क्रांति की धोर ऐसे समाज को स्वीकार किया जो अपनी सामाजिकता के प्रति जागरूक हो और स्वतंत्रतापूर्वक अपने कानून स्वयं बनाये। विवेकशील नागरिक स्वतंत्र है और केवल अपने द्वारा निर्मित कानूनों से नियंत्रित है।

अक्रियता प्रस्था को स्वतंत्र रूप से कायशील होने से रोकनेवाली हर संस्था से युवानियों को विद्रुषी। उनके परभूक्तिपूर्वक व्यक्तिवाद का ही यह परिणाम था कि स्वामीय सरकारों के क्षेत्र के प्रभाव के प्रथम प्रभावशाली राजनीतिक संस्थाएँ स्थापित करने और उन्हें चलाने में सफल नहीं हो सके। फारसियों के विरुद्ध युद्ध में यूनानी एक एकाधिकारी सम्राट की प्रथम शक्ति के विरुद्ध अपनी स्वाधीनता के प्रति जागरूक स्वतंत्र व्यक्तिवादों की क्षमता से लड़ वे।

यूनान का विकास वास्तव में 'पौखिम' (नगर) का विकास था। यूनान नगरों का समूह था और प्रत्येक नगर एक स्वामीय पृथक्, सम्प्रभुताप्राप्त राज्य था। नदरों में परस्पर युद्ध होत रहत वे और नगरों के भीतर इतने प्रयासक बय-नपर्य होते थे कि कौची सरी ईसापूर्व में यूनान टैसीटस ने राष्ट्रपति पिरै नगरों के मेनापतिधों के लिए लिखी गई नियमावली में आगाह किया था कि गहरपनाह वे बाहर के राष्ट्र जितन खतरनाक हात है उतने ही भीतर के भी।

दुर्भाग्यवश यूनानी लोग धार्मिकामीन समाज की कुरीतियों से राजनीति और पर्यवहार का बाधनेवाली खंजीरें लाड़ नहीं सके। स्वामीय यूनानियों में भारी संख्या में गुलाम बना रहे थे।

यूनानी नगर-राज्यों का अपनी निरभूतता का व्यवहार करने की रीति मान्य नहीं थी। वे ऊँच उठकर यूनानी राष्ट्र की बात तक न सोच सके वे संघटित होकर एक राज्य का निर्माण न कर सके जो उनकी समस्याओं को सुलझ सकना। मानव प्रगति के परस्पर प्रतिहार पर धाज भी रोक लगानेवाली उच्च राष्ट्रवादिता यूनान की ही देन है।

विवेकशीलता मानववाद और नागरिक गुण यूनानियों को विशेषता था। हायर, एनाक्सिम लरिस्टोचम पेरीामीन थ्यूमीडाइडस प्लेटो और अरस्तू विदार, माइमोनाइड्स यूनानी मानववाद के प्रतिनिधि हैं।

वैश्व बाह्यत में यूनानी बना पर अपने एक भाषण का ममान करत हुए यूनानी देवताओं की मयधरमरी प्रतिमाओं के चेहूतों पर मधिन उदामी के बारे में बहिन हमें न कहना दिया था 'धारका धारक है कि मैं मगत धारक और विरगत गुण में रहनेवाले धारणित-वासियों में मैं एक—'तना उदाग हूँ? मयमुच हमारे पाग मब गुण था बहिया स्वगिन गीम्वर धन्य घोतन

साक्षर घाम घीर फिर भी हम मुग्गी न थे हम केरम घरने लिए जीबिन थे घीर तप ममी को प्रताड़ित करने थे। हम मये नही क घोर इमीलिए हमें बिनल होना पड़ा " इतिहास की समस्याएँ बड़ी समझिल्लु फिर भी बड़ी कूटिल हलीं हैं। कोई भी बुद्धिमान युवानी समय सजडा था कि वेनापानाघिसाँ युद्ध के बार बिजेता घीर बिजित दोनों ही बिदनी गनुया क हारों म पड जाणप। किन्तु मानव-स्वभाव ही ऐसा है कि अपेसम घीर स्पार्टा एव नही हो पाण घोर मार मार की लडाईँ से मान कवन फारसियों घीर मकदुमियाइया को हुषा। जा ममस्या घाम हमें घामान मानूम पड़नी है उमीका समाधान युवानी नही प्राप्त कर सक घीर परिणामस्वरूप मकदुमियाईँ घीर रामध दक्षिणों के पाटों क बीच रिम गए। युवानियों के बिनाग का कारण या उनही एव जाने की घयाम्यता।

उम युग में सम्पत्ता की परम्परा का चयन करनेवासी हमरी मभितिया थी। घाम की स्थिति भिन्न है। सामूहिक बिनाग के घायुनिक दण्डों म युद्ध का धर्य यदि यह नही है कि युष्मी पर सम्पूण जीवन का बिनाग हा जाए तो सामूहिक धारमहत्या ता धरसप है। इप भावनाओं में उबास घाने लगता है ना घान्ति की रथा के लिए केवल परिणामों की तरफमन घामका पर भरोसा नही बिधा जा सकता। बिदर के मन्दिणक पर घनीन का बोझ घमी भी भारी है। एक हो पाने की घमक्यता का कारण ज्ञान की कमी नही है, बल्क सङ्घर्षाणी नैतिकता घीर सङ्घर्षाणी की कमी है। यदि हम सज्जी तरह समझ में कि हमारे सामन को हा टाले—सङ्घर्षाणी या समूम बिनाग—घीर सङ्घर्षाणी के लिए प्रयत्नशील बन ताहमार पुत्र देवता घोषणियाईँ देवताओं क समान उदास नही प्रसुन प्रमन होवे।

युवानियों की घम-मन्धवी पारसा घामन की पूजा घीर परम्परागत संहि लुटा तक ही सीमित नही थी। घाधिकार मे कमी घा रही भावना मे बिनाकुम घमप एक भावना मे जन्म बिधा एक 'घडरस मास' को पहचानने की समय बनमी हम ममार के घाधार-दकारों मे घमप हुन की भावना घानी। माय्यता प्राप्त युवानी हसन मे बिष्कून घमप घीर उपनिषदों के दसन के इतने समान यह परम्परा घाँधी घीर एन्सूचीनियाईँ रहस्यवाद एम्पीडोलीड (५००-४५० ईसापूर्व) पाइथागोरस घीर प्लेगो में बिद्यमान है तथा मे समी-पुनजन्म-सिद्धांत परम्परा के उच्चासन से घारया का पनन घारया की बनमान निर्बामन-स्थिति घीर-तप-माय द्वारा मालिक्ता घीर-परमानन्द की मूल दया में पुन-पहुँचने की मभावना पर बिदबाम करल है। इम परम्परा घीर उपनिषदों के बिचारों की समानता म यह धर्य नही कि उनके उद्देश्यों में भी साम्य है।

एल्ब्यूसीनिबाई रहस्वमय समारोह 'दिमीटर' यर्षात् 'बीबनबारिणी माता' के सम्मान में होते थे। सर जॉन मायर्स के अनुसार पूर्वी भूमध्यसागरीय प्रदेशों में दिमीटर की पूजा 'उतने ही पुराने समय से होती आ रही है जितने पुराने का ज्ञान हम अभिलेखों भववा स्मारकों से मलता है। धनातुमिया की प्राक्भारतीय यूरोपीय संस्कृति पर भाषण बैठे हुए सर जॉन मायर्स ने कहा था 'भवता है कि जहां कहीं भी उस संस्कृति ने प्रबल क्रिया भरे-पूरे घरीरबामी नारी मूर्तियां मी बहां पहुंच गईं, जो धायव उससे अनिच्छतापूर्वक सम्बन्धित थी। इनसे उनकी प्रकृति-पूजा के प्रकार का पता चलता है 'एशिया की महामाता सम्प्रदाय उसका एक विशिष्ट का है जो भारतीय-यूरोपीय धर्म के सभी धनगर कर्णों में पाए जाने वाले 'पिता-देवता के बिलकुल विपरीत है'। "माता देवी" पीछों जन्मपूर्व घोर मानवों को बीबल घोर समृद्धि प्रदान करनेवाली फलवती बरखी की प्रतीक है।

इसके अभावा डायनीसियाई जम होमर के बाद के समय में य स से बिदेसी धार्मिक की शक्ति ब्रह्मण पहुंचा जहां उसका काकी विरोध हुआ। इस धर्म में रात्रि वालीय धामोह प्रभाव नृत्य-नाच का प्राबाल्य था। विश्वास किया जाता था कि इस धर्म के अनुयायियों के शिर पर देवता 'घाई' हैं जिसके कारण सब-मात्र के लिए, मशालों छटाव नबीत घोर नृत्य के प्रभाव में पूजापत्र करनेवाला स्वयं को अपने में बाहर एक ईशो स्तर पर उबवासीय समझने लगता था। डायनीसियस बरमो स्मास का देवता था घोर उसका 'समारोह' रात्रि में होता था * घोर रिबयां ही उसकी सबसे अधिक घोर सबसे विशिष्ट अनुयायी थी। इत समारोह का धन्त स्वयं में एक अनुभव था। दिमीटर के प्रति होमर की स्तुति में कहा गया है "बहु भाव्य वाली है जिसने इन बीबा की 'देगा' है।" घेसी धर्म का बागदान है 'परमास्मास तथा अमरन्ध में विश्वास'। य ही लोग एक भारतीय यूरोपीय भाषा बालते थे घोर उनका विश्वास था कि मानव की धामा धनिवायव ईविक है।

घाईधर्म का धन्य चाहे जो रहा ही ब्रह्मणी इतिहास में उनका स्वात एक वैगम्बर घोर घुस का है। उनके छिडाम्भ एक संकलन में घोजू है। इन मिडाम्भ के उदरव छटरी से बोपी लतावरी ईसापूर्व की लपनाघों एमीडोसनीय यूरोपिडीक *

* इन कूर्मिक मिबिवाइयडाम्भ मन्दाइक अमर (१९३२) पृष्ठ ११, १२१। मिनु घोर देरक लपनाघों में 'माता देवी' की पूजा मबलिन थी।

१ कापिटीय घाई ५१।

२ कूर्मिकीय वृत्त 'दिरोवाटल में शीतिलन करने देते वर इन वृत्त को सवर धर्मन काय है कि शीतिलन के मणुपर वर लारी का बंजन लिये लता है। इनमिडाम्भ में कथना बलना है कि 'इन्ने ब्याग के मणा का चाते निगल वर मी चय है' घोर म अमरंघ

(४८४-४०७ ईसापूर्व) जैटा^१ पिहार (५२२-४४३ ईसापूर्व) और इथियोपिया की कब्रों पर लपी साने की तकियों पर मिलत है। इन विभिन्न स्रोतों से हम समझ पाते हैं कि पॉर्फिरी जीवन प्रज्ञानी में तप-साधन, माताहार के नियम, धार्यान्पासन से मोक्षप्राप्ति आदि तत्त्व सम्मिलित थे। इस मत का विरवास था कि प्यायी लोगों को पुरस्कारस्वरूप बरवानन्द तथा धर्म्यायी लोगों को सब मिलता है। पॉर्फिरी कब्रों पर पाई गई वस्तुओं पर मृत व्यक्ति की धार्या को इस प्रकार सम्बाधित किया गया है "तुम मानव से देवता बन गए हो।" पॉर्फिरी गीतियों के सम्बन्ध में प्रोफेसर एफ० एन० कॉलफर्ड ने लिखा है "ईश्वर की महती कृपा प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि है धर्मविधि-उत्सव विमल सम्पूर्ण कष्ट सहन करने परम और पुनर्जीवन के परधात् ईश्वर का धर्म मानव-मात्मा को प्राप्त हो जाना है और इस प्रकार पुनर्जन्म के चक्र में उसकी मुक्ति निश्चित हो जाती है।" इन रहस्यों से साक्षात्कार करनेवालों का पुनर्जन्म माना जाता है। वे देवताओं के समकक्ष हो जाते हैं। सर्वम धार्यात्मक वर्णध्व है धरलोहन निरीक्षण। इन्हीं रहस्यों से जो प्रकार के प्राणियों के धार्या का प्रसर स्पष्ट हो जाता है—उसका अनुभव करनेवासे का सीमात्म और उनसे अछूता रह जानेवाले का दुर्भाव।^२

एस्पूरीनियाई, डायनीसियाई और पॉर्फिरी मनों के सिद्धान्त अनिवायत होमरी धर्म के सिद्धान्तों से काफी भिन्न हैं। डायनी देवताओं के समस्त मानव के लिए धार्यात्मक है कि वह स्वयं को प्रभावित करे। देवताओं और मानवों के सम्बन्ध बाह्य है। देवताओं के साथ सीधा सम्पर्क असंभव है। मानव अनिवायत देवताओं से निम्नकोटि के है इसलिए स्वयं देवत्व की कामना नहीं कर सकते। पिहार का कथन है "सुख बनने को कल्पना मत करो।" उन्होंने ही कहा है "धरनों के लिए नश्वरता ही पर्याप्त है।" और पुन कहा है "धरन मनुष्यों को धरनी है विषय मामुम है और मानुम है कि उन्हे धरनी जीवन में कितने धरन की प्राप्ति होगी है, इसीलिए उन्हे देवताओं के धरन को स्वीकार कर लेना चाहिए। धरन है मेरी धार्या धरन जीवन की कामना न करके उपलब्ध साधनों का समुचित उपभोग करो।"^३ यूरीपिडीज इत 'बाही' में कोरस कहता है "धरनी नश्वरता की

अधिकृत शत्रु मर्कित मोना वरिडाया में कोई अकर्मिक विरला^४ वता है।

१ 'मेयलस ५२०-ना 'अन्वसत' ३३-५० 'सात १ २३२-ना * २३२-५।

'दिविध १ ३४४-दी 'अधन ५२३-५।

२ 'दिविध केलेवट विप्री ली ४ (१३२३), एव २३५।

३ देविने 'अन्वसत अन्वित ३-५।

४ अन्व के ली 'अन्वित अन्वित अन्वित 'व ३३३ में देवर अन्वित (१३२०), एव २३२-२३४।

बात मूल जाना मनुष्य का चातुर्य हो सकता है विवेक नहीं।^१

रहस्यात्मक बर्णों का विरवास है कि साधक और साध्य के बीच ऐक्य संभव है। शायनीसियार्ड वरमानन्द में व्यक्ति की धारणा स्वयं को एकेसेपन से ऊपर उठा हुआ अनुभव करती है और इसलिए, अपनी उद्दाम अनुभूति की परमसीमा पर, वह स्वयं को 'बाकाइ धर्मान्' अनुप्रेरक देवता के साथ एकाकार समझने लगती है। इस नायिक इत्य से केवल एक परस्पायी धामन्दानुभूति होती है। पॉज़िवाई सम्प्रदाय के अनुयायियों का प्रमुख विरवास है मानव धारणा का विना हुआ देवत्व। धारणा अपना प्रतिम साकार प्रहल करने के परभाव पाबिय शरीर में सौटकर नहीं पाती। वह कहती है "मैं अब दुःखायी नक से बाहर उड़ पाई हूँ। अब मैं ईश्वर हूँ नजर नहीं।" रहस्यात्मक बर्णों की बट्ट-सहल में घट्ट धारणा है उनके अनुसार यह जीवन का नियम है और मानवीय प्रतिष्ठा की अनुभूति के लिए धारणा की मर्यादा पीड़ा धन्यस्त आवश्यक है। धारणा-सम्बन्धी पॉर्फियार्ड कल्पना में ब्रह्मांड को संहाकार माना गया है (यही विचार आधेरे के भी पाया जाता है)। पॉर्फियार्ड धर्म में मुक्ति के लिए धारणा की धारा की कल्पना की है। यूनानियों ने एक सार्वभौम विरवास के प्रति धन्य धारणा का विवास नहीं किया बल्कि कुछ शक्तिबोधों और देवताओं में उनका विरवास था जो अपने व्यवहार में मानवा जैसे तथा सामसाया के समय में धन्यस्त कमजोर थे। इनके विपरीत पॉर्फियार्डों का विरवास एक सर्वम्पात साध्यात्मिक तत्त्व में था। एक मसहूर पॉर्फियार्ड नहाबत है—'यूस ही धारि मध्य और प्रस है।' तथा सापनाभय जीवन पर जोर, युनजंग और मोस में विरवास मानव और पर धारणा के बीच साहात्म्य की संजायना तथा धन्यविरवालों धारि के विपरीतों में—'जो न तो यूनानी है और न रोमटिक—पॉर्फियार्ड धर्म पर कोई विरोधी संभवतः भारतीय प्रभाव सहित है।'^२

^१ ११५ के शर के परिशिष्टों।

^२ कॉर्नेर जंगल र विविधोर्धी पॉर्फि धर्मो और विरवास में (१९००) पृष्ठ २६।
^३ 'धन्य बर्ण और धर्म कई देवता के रूप विरवास के पक्ष में सत्य हुए तथा यम सत्य है कि धारणा विरवासों का नेतिक स्तर धारणाधर्म के कारण था किन्तु यूनानी धर्म में धर्म के लिए धारणा विरवास की कल्पना प्राचीन काल में प्रचलित प्रतीति है।'—'विश्व धर्म धर्म (१९२६)। धर्म और कृत्य के सिद्धांत धर्मों के धर्म में प्रभाव है क्योंकि धर्म धर्म तब धारणा के धर्म के धर्म धर्म हैं। धर्म धर्म (II) का धर्म भी धर्म है।

सपथी युवाजी समाज ने कभी रहस्वात्मक धर्मों को स्वीकार नहीं किया। ये धर्म सदैव मजस्य घोर विरोधी भावें जात रहे। धर्म-संश्लेषण राज्य द्वारा पप्रते हितार्थ होता था। नागरिक की हितवत्ता से प्रत्येक व्यक्ति का राज्य के प्रति धर्म कर्तव्य का पालन करना पड़ता था। माहस्य जीवन में उसे हर्म्य या धर्मो की पूजा करने की स्वतंत्रता थी। रहस्वात्मक धर्म बूक प्रविष्टायन व्यक्तिगत धर्म और राज्य की सत्ता की उपेक्षा करते थे इसलिए उन्हें धर्म नहीं प्रपविष्टायन माना जाता था।

रहस्वात्मक धर्मों को युवाजियों से पूर्व गैर-युवाजी जिनियाई प्रमाणा के भारतन जनता सपथ्य जाता था जिनपर बाद में होमरी देवता सादर दिये गये।^१ वृरी पिबोबहुव 'बाडी में गिरा है कि बायनीमस मन 'एगिया की पयली से प्राया था। सम्पूर्ण नाटक म इस धर्म के धैर-युवाजी उद्भव पर उार दिया गया है। वेन्पुत्र के एक प्रसंग के उत्तर में सुन्दरवेपी बायनीमस कहता है 'हर बर्बर (गैर युवाजी) इन रीतियों को मानता है और नाचना है। 'हा वेन्पुत्र उत्तर देता है 'क्योंकि वे युवाजियों से स्यादा बेबकूद हैं। "नहीं इस बात में प्रथिक बुद्धि मान है सिधं रीति रिवाज मिल है।" युवाजियों ने शीघ्र ही इस धर्म को स्वीकार

१ निम्न मे जर्मनी युवाक 'होमर गैर धारमनी मे निम्न है 'युवा' धर्म के प्रमाण सिरोबन्धन धर्म के प्रथि के है तथा धर्म के परिदृष्टात्मक वा ऐन्ध्रमात्मक धर्मो का इत्यन व्यक्तियों से भारत के मध्य में हो युवा वा।" (पृष्ठ ५०)। डि. सी. धारम द्वारा उन्धारित क्रोचिकन डिफिन्टारवेराम प्रसंग २०२ (१९०५) पृष्ठ २३६ में व इन्ध्र ग्रीस का कथन देखिए 'युवाजी सम्पन्न घोर निरोधः युवाजी धर्म को देहा के दो बाधित लत्तो के अनुसर (जैसे कथन हो उत्त ही हो सक्ते थे) दो लत्तो में विपश्चित कल्या और एक को धारमक-युवाजी युवाजी, उत्तरधार्मिक तथा युवा को अन्धधर्म-युवाजी गैर-युवाजी धारि नाम देया प्रथवा कथयित है। युवाजी धर्म का प्रथित युवा वा गैर-युवाजी धर्म के बाद ही युवा वा गैरधर्म और कथि कथि विरु है।" युवा पर धारमक-युवा धारितल या धारमक र्वाधित युवा वा किन्तु उत्तम म्मन धारितल है।"

युवाजी का निर्यात है कि युवाजी धर्म धारितलः धारमक और अन्धधर्मक वा। ये धर्म हैं : 'मे देवता नहीं भक्ति करना धारम है कि उत्तरधार्मिक किसी धारमक के समान धारमक की बोर्द सिन्धु पयानी किन्तु युवाजी धारमक धारम में न थी। नन्-वेधेधारी युवा में धारम केव युवा किन्तु लत तक युवाजी बुद्धि किन्तु नहीं रह गई थी। युवाजी धारमिकों के धारमिक कथन और ऐन्ध्रमात्मक से जो धर्म रिक्कत की शीर्षक है। धारम किन्तु युवा धारमक "धारम को अनुचित करनेवाला युवा निर्यात को शीर्षक धारमिक उत्तम धारमिक धारमिक वा—धारम है इस धारम का बोर्द धारम कथे धारम म वा धारम उत्तम कर्त धारम का धारम उत्तम धारम में व धारम ईन्ध्रमात्मक से ही नहीं कन् धारमिकों और बोर्दा धारम धारमिक धारम में।" (१९११), पृष्ठ २६ २४।

कर बिना और अपनी सर्व रक्षणा-शक्ति का प्रयोग करके उन्होंने 'माता सर मैरी' को बीबीड की राजकुमारी बना दिया क्योंकि उनके विचार स बीबीड ही पहला यूनानी मगर था जहाँ वे धार्मिक हृत्स पहुँचे थे। हेरोडोटस का विचार है कि बायनीसस जिस में यूनान पहुँचा था।^१ खुस्सारमक बर्म में लकी पर्वों के प्रति घाबर करना सिखाया जाता था और उनको प्रकृति कड़ म थी। इसके विपरीत होमरी या प्रोतम्पिपार्ई बर्म अपने को ही प्रत्यक्ष मानता था।^२

पाइथागोरस ने खुस्सारमक और तर्कयुक्त प्रकृतियों का सामंजस्य स्थापित करने का संकेत प्रयत्न किया था। उनके विचार का आधार 'पैराड (सीमा) का उदात्तीकरण' है। समस्त और कामून के प्रति हार्मिक निष्ठा भी इस विचार में मौजूद है। सृष्टि एक 'कॉन्सोस' है। स्पून-जयत् की व्यवस्था को समझने के बाद, उसके मनुष्य पर सूक्ष्म जगत् में भी उसी प्रकार की व्यवस्था स्थापित की जा सकती है। अपनी मात्मा को संभारना मानव का प्रथम कर्तव्य है। पाइथागोरस का विश्वास था कि बस्तुजगत् की वास्तविक और प्राज्ञ प्रकृति केवल समानुपात और संख्या में मौजूद है। उनके विचार स गणित और संकीर्ण का परस्पर सम्बन्ध है। यथोक्त संकीर्ण का देवता है। पाइथागोरस ने एक धार्मिक समाज की स्थापना की जो जिसका एक निश्चित जीवन-विधान था। इस समाज का उद्देश्य एक धर्म कैपासिस में व्यक्त है। इसे धर्म तो कुछ नियमों को मानने तथा भयत रहन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। पाइथागोरस का सिद्धांत था "इस संसार में हय धरनवी है और वरीर मारता का नरुबरा है छिर भी मारताहन मुक्तिगम मदी है। कारण हम ईश्वर की बल सम्पत्ति है ईश्वर ही हमारा रगजाता है और उसकी आज्ञा के बिना जानने का हय कोई अपिकार नहीं है।"^३ पुनर्जन्म पनुषों के बल पर प्रतिबंध थाकाहायी भोजन तप-सापना द्वारा शुद्धीकरण मन्त प्रपवा स्पोरिया की आबदयइता-सम्बन्धी उनके विचार यूनानी कम है मारतीय धर्मिक।

१ कथा ग्राह्य है कि टर्कोसिस में कहा था 'मौनिक की स्थापना करनी और धार्मिक को जोइस में लम्बे काल कुशलित के रूप मन्त में व्यक्त है पर मेष गेरेल दे मने मन्त को शक्ति करके कुपोन्नाम का आवाहन करना।"

२ मैकान की दिवानी मर्गल है "दो लक्षोधिक बर्मल प्रथीम सपुा की मर्गलत दिवित कर मे फुडिनीव है। १५५ हावड कहा है कि यूनानी देवन अपने मर्गल के और रावधनी के रव करते तप क्कानित है। — मिनरनिक्ल एरिडिय मै इतिहास रा" (१), पृष्ठ ११।

३ डी क्लै: मर्गलौव निजलदी (१११), पृष्ठ १५।

एम्पीडोक्नीड का कथन है कि उन्हें अपने पूर्वजगो की स्मृति थी। उनके अनुसार, धर्म की प्राप्ति का साधन विद्यन-जनन है। धर्मप्राप्त तपस्वियों की धारणाओं को उनका देवत्व पुनः प्राप्त हो जाता है। एम्पीडोक्नीड का कहना है "देने कोय नरवर प्राप्तिमें मैं द्रष्टा कवि घासक और चिकित्सक बन जाते हैं और धर्मन महामाग्य देवतास्वरूप हो जाते हैं।" उन्होंने हार्दिक ध्यान-के स्वरो मे घटने गहनापरीकों का प्रतिनयन करते हुए कहा था "प्राप समझा स्वामन है। मैं धारके बीच उपरिचय हूँ—नरवर मानव नहीं धमर देवता बनकर।"

पुनाम के सवमे महान हार्दिक मुद्रास मे किसी बिचार-पद्धति की स्थापना नहीं की बंधों की रचना नहीं की किसी सिद्धांत की सिद्धा नहीं की। मुद्रास की जीवन-पद्धति तो है किन्तु कोई मुद्रापी सिद्धांत नहीं है। मे बाजार में सोमों से मिलते उनके बिचार मानने का प्रयत्न करते उन्हें बिचार करने की सिद्धा देने और अपने कार्य की तुलना दार्ई के कार्य के साथ करते को मुद्राके बिचारों की जन्म गिने में सहायता करती है। मुद्रास मे ही परिचयी मानव का विरवात दिमावा कि उसके भीतर एक धारमा है—को सामाग्य आपरितास्वता की बुद्धि और नैतिक चरित्र की प्राचार्यधमा है—धीर बहु मानव की सबसे अधिक महत्वपूर्ण चीज है और मानव को उसका अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए। अपनी मृत्यु से पूर्व उन्होंने अपने विचारों से कहा था कि धारमा अधिनाधी है और मृत्यु बसकए स्वर्ण तक नहीं कर सकती। धारमा का धारि धरीर के साथ नहीं हुआ इतमिए धरीर की मृत्यु के साथ उतका धमन भी गही होया। मुद्रास का प्रथिम कथन प्रसिद्ध है मैं एभसबायी प्रमथा मुनाती नहीं बिस्व-नागरिक हूँ।

जेटो की दृष्टि में धारमा व्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण भंग है, क्योंकि उसका सम्बन्ध धारवत जगत् मे है नस्वर जयत् से नहीं। उसका जीवन प्रगल्भ है। मृत्यु कोई सुराई नहीं धरीर-कारणार से मुक्ति है, जिसके बाव धारमा बिचार-संसार में पुनः पहुच जाती है जिसके साथ पुष्पी पर जन्म लेने से पहले उसका माता बा। जन्म से पीछा पहले बहु बँठरबी का पानी पी लेती है और दूसरे संसार का अधि कांत बा सम्पूर्ण ज्ञान बिस्मृत कर बैठती है। वहाँ की वस्तुओं के ज्ञान से उसे अपने किसी समकक सम्पूर्ण धीर कोपरहित ज्ञान का इसका-हमका धारमास होता है। इस जयत् में प्राप सम्पूर्ण ज्ञान पुनः स्मृति-मान है। केतन जगत् से ऊपर उठने में धाफर हो जाने के बाव उस सम्पूर्ण जयों का धारमास पुनः होने लपटा है। मानव

१ श्री १५६। 'विद्यासूत्रे ईश वेद वेदा, अनेन ११५५, ५७ ३१ मे ३ कन- कालोद्गत दायेल ५५ उदास।

का उद्भव परमात्मा के साथ यथार्थबन्ध पूर्व ऐक्य-स्थापना^१ ही होना चाहिए। प्लेटो के मतानुसार मृत्यु के लिए धीमारी का नाम दर्शन है क्योंकि उसीके कारण आत्मा इस मोक्ष हो जाती है कि एक बार फिर बहुमानव-धरीर की सीमाओं में बाध घाने का बह पाने के बजाय स्थायी रूप से विचारों के संसार में टहरी रहे।

'ज्ञान एक गुण है'—मुकरात के इस सिद्धांत को स्वीकार करते समय प्लेटो 'ज्ञान' को चेतन वपन् का ज्ञान नहीं बल्कि इसमें परे के अत्यन्त श्रेष्ठ वपन् धीर परम यथार्थ—विश्वे विचार' कहा जाता है धीर चेतन वपन् जिसका एक अत्यन्त प्रतिबिम्ब मात्र है—का ज्ञान समझते हैं। हमारे विचारों का योग धीर सर्वोत्कृष्ट विचार है 'धुब का विचार' अर्थात् ईश्वर। ईश्वर को अनुमृति या बुद्धि के सहारे नहीं बल्कि धार्म्यात्मिक पुनर्जन्म अथवा ईश्वर में विलीन हो जाने के प्रयत्न से पहचाना जा सकता है। मानव आत्मा की मतिमय शक्ति है 'इरोल अर्थात् प्रेम जो अनेक अवस्थाओं को पार करके उस वैधी सीधयों के प्रति जातता में बल पाता है धीर यह 'वैधी सीधयें' स्वयं 'सत्य' है।

सत्य के सम्बन्ध में प्लेटो का विचार परम्परागत यूनानी विचार नहीं है। धारीर आत्मा का मकबरा है धीर धारीर त्याग करने के बाद एकाकीपन में ही आत्मा अपना वास्तविक रूप बहान कर पाती है। तब वह यथार्थ की धीर उन्मुख होकर सत्य की प्राप्ति करती है। अपने मटकाव के इस लम्बे दौर के बाद जब आत्मा इस सम्पूर्ण सत्य की स्थिति में पहुँच जाती है तब वह अन्तर-अन्तर तथा अन्तरिबर्तनीय बन जाती है। सत्य सत्य हमारी आत्मा में लिहित है किन्तु सामान्य व्यक्ति को इसका पता नहीं रहता धीर वह मन्मथ पापरिक्त नहीं होता।^२

प्लेटो ने अविष्य-ज्ञान की दो शक्तियों में रखा है। एक तो उस अविष्यबन्धता की अथवा कला जो लक्ष्यों धीर शक्तियों का विरलेनन सीध बुझा है धीर बिद्धियों के अङ्ग या बलि दिष्ट वण पशु की धानों का देलकर दवताओं की इच्छा बना सकता है—बहु बुद्धि मिद्धियां प्राप्त कर चुका होता है जिनके बल पर ईश्वरके आन पाने का दावा करता है जिन भी बहु स्वयं पुर्णतः संपन्न रहता है। दूसरी है प्रेरणात्रय अविष्यवादी। वैगन्धर स्वयं अथवा व्यक्तिगत नहीं रह जाता। उत्तर दवता का प्रभाव हो पाता है धीर अपने समय के लिए बहु वैधता की भाग की शोङ्गनेवाला यन्त्र-साध रह जाता है। आत्मा की पार्श्विकता^३ अविष्यवादी करने वाली शक्ति दनी प्रकार की थी। 'निष्पात्रिबन्ध' में 'अज्ञानातिवा' से हमें

१ 'अधारीरमा' १०३-४।

२ 'धीरो' ४२-४।

३ 'अना' ८०-१।

४ 'ईश्वर' 'वैध्या' ४४८-४-डी। अज्ञानातिवा, अज्ञान वन्ती।

उत्पत्तियों में व्यक्त मोक्ष के सिद्धान्त की याद बरबस भा जाती है।

उत्पत्तियों के समान 'रिपब्लिक' में व्यक्त हुआ प्रथम 'सन्' तथा त्रिभि-
यस मध्यम 'डेम्पूरज्ज' प्रथम 'मोड' व सप्तक (ईश्वर) या ब्रह्मांड की धारणा
(हिरण्यमय) १ में प्रस्तुत है। उनकी प्रकाशनी में तीन मौलिक सिद्धान्तों—प्रथम
कारण ब्रह्मांड हुआ तर्क प्रथम 'मोनास' और ब्रह्मांड की धारणा प्रथम परम
धारणा—को हीन देवता माना गया है जो अपने प्रकाश जन्मकाल में ही परलोक
प्राप्त है। 'मोनास' को ही विशेष रूप से संसार के सर्वकर्म एवं नियंता प्रबिनामी
पिता के पुत्र के रूप में माना गया है।

मुद्राराज ने जेटो की रिपब्लिक में धारण राष्ट्रमंडल का वर्णन किया है
और जब उनसे पूछा गया कि इन प्रकार का राष्ट्र कहां पाया जाता है तो उन्होंने
कहा कि इस धारण के अनुरूप राज्य पृथ्वी पर कहीं नहीं है। "किन्तु राज्य स्वयं
में ऐसा कुछ है जो केवल उसे हीन सकता है जो देखना चाहे और देखने के बाद
धरणी धारणा में भी वैसा ही नजर बसान का बल करे। यह कहीं स्थित है वा नहीं
प्रथम कभी होगा भी वा नहीं इससे कोई प्रश्न नहीं पड़ता। कारण उस प्रकार
का व्यक्ति तो उसी प्रकार के नगर में रह सकेगा किसी ग्राम में नहीं।" २ रिप-
ब्लिक में वर्ण-व्यवस्था के तीन आधार माने गए हैं—विवेक भावना और इच्छा
पुति—और इनसे उत्कृष्ट भारतीय वर्ण-व्यवस्था की बात आती है।

प्रथम और पुनर्जन्म-सम्बन्धी सिद्धान्तों के प्रतिरिक्त जेटो ने रुज्जासक
और मोडों की जन्मात्मी है तथा जन्मा के स्तरों ३ की बात की है। इनमें और
उत्पत्तियों की धारणा में प्रहसुत साम्य है।

होमरी और प्रॉफ़ियार्ड प्रकृतियों के प्रभाव के कारण जेटो के धारणा-संबंधी
मन में प्रतिकिराण है। ४ "जेटो के मुख्य सिद्धान्त तथा स्वयं-नरक सम्बन्धी कथाओं

१ वेब्लर—'द रिपब्लिक ऑफ़ जेटो' (१९५६) पृष्ठ ५२-५३। (जेनरल एंड प्रब्लिक)

२ १-२६२ बी।

३ 'मिडल-सेक्यूलर में वर्ण-व्यवस्था के विभिन्न स्तर जेटो के स्तरों में हैं। "जहाँ मैं और
जब मैं नजर करना चाहता हूँ कि जहाँ वर्ण-व्यवस्था इन स्तरों सिद्ध और प्राचा व्यवस्था, तब
होना व्यक्ति में हमारे व्यक्ति को करने विचारों पर पूरा निर्यात हो तो वे प्रत्यक्ष ही वर्ण-
और स्तर हांग वही कारण है कि हम लोगों की स्तर पर राधा जोर देने हैं।" 'मिडल-सेक्यूलर'
१२२ पृष्ठ।

४ प्रोफ़ेसर अ. व. स्टीवर्ट ने लिखा है "जेटो की मुख्य कथा निम्नप्रकार की है—जेटो मोक्ष
के धारण में भी, जिसकी प्रेरणा उन्हें बार्थोलोम्ये से मिली थी। जेटो के ही प्रॉफ़ियार्ड
उप ने बाद के वर्णन पर और प्रिण्टिपल से स्टीवर्ट वर्ण के सिद्धान्त और विचारों पर, सर्वप्रथम
प्रत्यक्ष प्रभाव डाला।" 'द रिपब्लिक ऑफ़ जेटो' (१९५६) पृष्ठ १२२।

के अधिकांश बच्चों का धारण प्रॉक्रियाई श्रोत्रों पर प्रापृत पिंडार के विवरण है।^१ प्रॉक्रियाई विवरणों का प्लेटो पर गंभीर प्रभाव पड़ा था। प्लेटो के मानस में होमर और प्रॉक्रियाई तथा मस्तिष्क व आत्मा का संबंध बन रहा था।

अपने 'निकोमाखियाई नीतिशास्त्र' में अरस्तू ने कहा है कि मानव का प्रमुख उद्देश्य 'नव्वरता को यथासंभव दूर रखना' है।^२ उनकी कल्पना है "चेष्टार है तो अच्छतम भी बचद्व होगा। मानव की उच्चतम प्रकृति ईश्वर की प्रकृति के समान है।" इस (प्रकृति) को विकसित करो और अमरता की प्राप्ति करो।"

समस्त ज्ञान इन्द्रियजन्य है। कुछ जीवों में स्मरण-शक्ति—आत्मा में स्थायी रूप से स्थान बना सेनेबानी इन्द्रियगत प्रभावधीसता—होती है। दूसरों में स्मृति में बैठे प्रभावों को संभारने की क्षमता 'सोमोस' होती है। विचारों के दो माध्यम हैं। प्रथम 'एपिस्तीम' अर्थात् तथ्यों को तर्क-कसौटी पर कसने के बाद प्राप्त ज्ञान तथा द्वितीय 'नाइब' अर्थात् मस्तिष्क की उच्चतम यन्त्री एक प्रकार की सङ्घट्ट घस्तुदृष्टि। अपने ग्रन्थ 'थॉन व सोम' के तीसरे खंड में अरस्तू ने लिखा है कि अधिकांश ज्ञान हमें घाटीरिक इन्द्रियों तथा इन्द्रियजन्य धनुनृतियों को विवेक द्वारा सोसने के बाद प्राप्त परिणामों से मिलता है। साथ ही यह भी कहा है कि एक दूसरे प्रकार का ज्ञान भी होता है। अरस्तू ने स्वयं तो इस ज्ञान के स्रोत के बारे में कुछ नहीं कहा किन्तु उनके माध्यकार अकॉरीबाइ ने इसे 'ईश्वर बताया है।

यूनान में धार्मिक विचार की दो बाराएँ हैं जिनके उद्गम पूजक तथा प्रकृतियाँ मिलते हैं। एक के प्रणेता थे अस्तु थीर ज्ञान केन्द्र या धायनियाई मिनेटस तथा दूसरी की स्थापना पाइथागोरस ने बशिमी इटली और सिविसी नामक पश्चिमी राज्यों में की थी जहाँ पर प्रॉक्रियाई धर्म का भी प्राचाल्य था। पहली विचार धारा तर्कयुक्त तथा नास्तिक थी जिनसे प्रकृतिवाद को जन्म दिया। बाद में इसी प्रकृतिवाद का विचार देमात्राइटस के परमाणुवाद तथा एपीक्यूरस के आनन्दवाद में हुआ। दूसरी विचारधारा का प्रचार पाइथागोरस एगीबोवनीइ मुद्रागत प्लेटो^३ और अरस्तू, जितेन्द्रियों (जैनों के तथ्यों) और नव-सेनेवादिनों में किया था। इनने ईमान् धर्म को बहुत हद तक प्रभावित किया।

१ बौद्ध धर्म के सिद्धी काइ वेगर्न सिद्धमराण (१९४४) अध्याय २२ अर्धक १४१।

२ X ११ ७३-४, ११।

३ "प्लेटो के मुख्य सिद्धांतगत सत्य अर्थ-सत्य-की बयानों के परिचालन करने की वाच्यता अधिकांश ज्ञान व प्रकृतिवाद के सिद्धांत हैं।" २ व ४६४४ इ सिद्ध काइ प्लेटो (१९०२) काइ १२१११। बौद्ध धर्म में 'नव-सेनेवादिनों को 'निसी अधिकांश ज्ञान व' है। सिद्धी काइ वेगर्न सिद्धमराण १९४४ का १२१।

घरने निरन्तर बँधनस्य के कारण ल्हेम्स रगार्न घोर पीडीउ धानी-धानी स्वाधीनता की गतात कर मके । इमाम्पतीउ (लगजम ६ ६ ईमापूर्व) ने मन्हुनियाई प्रभुता से पुनात को बचाने के लिए प्दारस के साथ उन्धि करने का प्रताप रगा । घाएमोत्रीटीउ (४७ १२६ ईमापूर्व) जिगहाने जहा पा नि मुनातबागी की बिरोधता उमकी सरहृति मे है रकन में नही पुनात को प्दारस की धधीनता मे बचाने के लिए मन्हुनिया के क्रिमिप का धामन स्वोकार करने को ठंमार ये ।

३ सिक्खर की बिजय

सिक्खर ने बहुत दूर-दूर के धधों को बिबित किया बा । बहु रहस्यामक प्रभुतियों का स्वकिप बा । मिग में बहु निबाह रिप्ल धम्मन के मणिर म गया घोर मणिर के धाम्पिक कस में मकेने पुकारी के साथ जीनर मया । धान तक मात नही है कि वहां क्या हुआ किन्तु इतना स्पष्ट है कि उने धनुमब हुआ कि परबाग्ना के नाब उमका कोई बिरोध सम्बन्ध है घोर मसार-जर म एरना स्थापित करना उसका ईरवर-अरत कर्तव्य है । धपनी मन्हुनियाई पुण्ड्रूमि की सहायता से उसने पुनात की स्वयं को मर्पौरुण्ट सपम्हने की नीति के बिरोध में काम किए । धपने मुद धररगु के माब-साब उसका भी बिदबास बा कि एधियाई लोय सिर्क बास बनने योग्य है सेकिज एधिया ईरान घोर पस्चिमोत्तर भारत के निबासियों म सपक के बाब उमे यह बिचार त्याग देना पडा । तक उमने बिभिन्न देसबासियों में परस्पर मैत्रीभाव स्थापित करने के धनेक उपाय किये । उसका कहना बा कि उसके साम्राज्य के सभी लोय धाम्बीदार हैं प्रजा नही । उसने ईरानी मुनेवार निबुल किए, एक मिमी-जुमी मैता का निर्माण किया तथा बडे पैमाने पर धरतर्पट्टीय बिबाहों का प्राल्साहित किया । उसने घोषित किया कि सभी ध्यक्ति एक परमात्मा के बने हैं इसलिये सभी को मामबीम बन्धुत्व-स्थापना के लिए प्रयत्नधीस होना चाहिए ।^१ सिक्खर को धाधा पी कि पूर्व घोर पश्चिम का सामंजस्य एक बिषय-धर्म में होगा जिनमें सभी धर्मों की सर्वोत्तम बातें निहित

१ क्लार्क ने सिक्खर के बारे में लिख है : "धरगु ने उसे मन्वाह की पी कि वह क्या दिनों का केप किन्तु धर्मों का लक्ष्मी बने कपतिधों को अकथ मिज और लम्पटी लम्पट किन्तु इतरों को पनु का रोष । सेकिज सिक्खर ने उसके निरराने स्वधरत रिब स्वोकि धनुमब निराम बा कि लुमी लोना में मैत्रीभाव घोर लंघर में बरजा लपलि करवा म्पना ईरवर-परस कल्प है । इसके निर, लम्पधने में काम नही बस लो उमने जोर दाता हर ल्वाय के विर सिनों को बड किब, घोर लोपन ईधि-रिबको निरब सामाजिक धरधार-निरारी को लुनी एक

होगी।

पूर्व और पश्चिम को मेलग करनेवाली बीवार को सिकन्दर ने छोड़ दिया तो दोनों में घापसी व्यवहार स्थापित हो गया। वह ऐसे साम्राज्य की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहा जिसमें पूर्वीय और यूनानी सम्बन्धों का बोग हो। अपनी मृत्यु से कुछ पूर्व महामुठ की समाप्ति के घबसर पर उसने १०० व्यक्तियों को एक भोज में आमंत्रित किया जिसमें केवल यूनानी ही नहीं बरन् उसके साम्राज्य की सभी जातियों के लोग शामिल थे। भोज के पश्चात् सभी उपस्थित लोगों ने एकसाथ बैठकों को बस चढ़ाया (जो एक धार्मिक इजम था) और दान्ति के लिए, वहाँ उपस्थित लोगों के देशों के घापसी सहयोग के लिए तथा सम्पूर्ण संसार के लोगों के सहबिस्तन सहयोग तथा सम्बन्धना के लिए सिकन्दर का प्रार्थना के साथ-साथ समारोह का आयत हुआ। सभी मनुष्य माई माई हैं इसलिए उन्हें मानसिक एवं हार्दिक एकता ('होमो मोइया') की भावना से सहपरिचित बनाए रहना चाहिए।

सिकन्दर ने ही उस यूनानवादी (हेलेनिस्टिक) संसार का निर्माण किया जिसने रोम को और रोम के द्वारा प्रायुक्तिक संसार की तीव्र की। यूनानी संस्कृति को पूर्वी भूमध्यसागरीय देशों में प्रसारित करने के बाद वह उसे सिन्धुतक तक ले गया। भारतीय साम्राज्यों की स्थापना से सिकन्दर बहुत अधिक प्रभावित हुआ। उसके यूनानी वैदिकीय उत्तराधिकारियों ने समझी चीज मताश्रित्य। एक प्रकृष्टा निरस्तान और पंजाब में यूनानी संस्कृति को जीवित रखा। अश्वमेध (शासन का ३२१-२१६ ईसापूर्व) से सीरियाई राजकुमारी से विवाह किया और मैसूरु के साथ मैत्री-सम्बन्ध बनाये रखा।^१ सिन्धुतक और मैसूरु के बीच पर्यन्त महोरजक पत्र-व्यवहार हुआ था। एक बार सिन्धुतक ने छोड़ी यूनानी पराज कुल्ल मुनकके और एक मिथ्यावादी धार्मिक की मांग की। मैसूरु ने उत्तर दिया कि वह शराब का दुग्गी में श्रेय देना मैजिन मिथ्यावादी धार्मिक न श्रेय पाने के लिए दुग्गी है क्योंकि 'यूनान में धार्मिकों का व्यापार करने की प्रथा नहीं है। पश्चिम के राजकुल्ल परमर मौर्य-साम्राज्य में आया कण्ठ थ।

१ "औरें लण्डन ने अपने दूनयी वीयिबो के सब लिख लण्डन बन्दे रसग। फिर भी अरबने है कि क्यानी म्यथ का अरत पर लिखन कम प्रभाव रहा। कन्दन ने समग इतिवस मरिण्ड लय मिय को भी अत्यधिक प्रभावित किया था। सिन्धु परानिनुष में एक क्यानी राजी की उदरलिन लय अथो और मे रवा व मिय के भाग्य-महाशे के बीच व नउ व विज्यागु लण्डनी का कान्तर क्युना प्रभाव है दुग्ग तक वदुवद ही कक गता।" एनिमन इतरकोने लिख व म इतिवस उ व वेमने वण्डे (१६१६), पृष्ठ १३।

त्रिया का प्रथमन था। शरीर-विज्ञान ज्ञातिष घोर भूमोस में महत्त्वपूर्ण लोभें हुईं।

तत्त्ववादी जेभो पर बिदम्बर के मानबता को एक कर्म के स्वप्न का बड़ा प्रभाव था। उनके अनुसार बड़ाई बेबताओं का एक विधान भबर है घोर घोरमी उम परम शक्ति के बल पर राज्य करता है जिसे खूम जिज्ञता मार्बजीम नियम ईश्वर, बुद्ध नी कहा जा सकता है। तत्त्ववादिया के अनुसार 'भोमोस ईश्वरीय है। ने इस सवार के समाना किसी ईश्वर को न मानते थे। स्वास्थ्य या बीमारी सम्पन्नता या निर्पन्नता का घबिक महत्त्व न था। धारमा ही सर्वस्व थी—धारमा को यह संसार सरीख नहीं सकता। दुनिया हमारे साथ बाहे जैठे बेघ घाए, हमारे सामने रास्ता मुसा है कि हम अपनी धारमा में निहित होकर दाम्नि प्राप्त कर सें। बौद्धा के समान तत्त्ववादियों का भी विश्वास था कि स्वय को छोड़कर कोई किसीको हानि नहीं पहुंचा सकता। गुण स्वयं धपना पुरस्कार है। यही एकमात्र धामन्द है। तत्त्ववादियों ने ही ईसाईधर्म को प्रवृत्ति के भिन्न से उद्भूत स्वतन्त्रता सजायता घोर बन्धुत्व के सिद्धास्तों में धारमा प्रदान की।

तत्त्ववादियों ने रोम को एक सम्राट मार्कस घारेनियस प्रदान किया। घारेनियस का स्वप्न था कि सम्राट की हैमिदल से उनका देस रोम था किन्तु मनुष्य की हैमिदल में बहु मारी दुनिया था था। बहु पागलकार्य लो करता था किन्तु उनका हृदय वही घोर था। उनका प्रतीक था एम्पीडोबमीड का बनु म जो 'प्रकाश में प्रकाशित था घोर सभी बस्तुओं तथा धपने जीनर के लय को देखने में समर्थ था। उनके 'मेडीटेगम्स' में पना बमता है कि बहु मबके लिए समान धपि बार में विश्वास करना था।

तिकम्बर के घात्रमन के एक ली साठ बर्य बाद मिमिन्द (मैनेटर १०२-१२ ईसापूर्व) ने गगा की घाटी में प्रवेस किया। भाग्यीय स्वप्न में उनली लषि थी घोर बौद्ध बिचारकों के साथ उनसे घारबाध किया। मिमिन्डघाष्ट या 'जे स्वप्न घाँफ रिम मैनेटर' एक महत्त्वपूर्ण बौद्ध पब है।

घानियर में बैमनगर के लमीन एक पापाम-स्वप्न (१२० ईसापूर्व) पर बाली मिमि में बैमनगर के स्वबार न रहनेबाये एक घुमानी राजघुन की कथा घरित है

"प्रजापामर घोर बंधरघाली सम्राट बापीपुत्र जामभद्र क समुद्रिवापी पागलपाम के बौद्धक बर्य में बटान मघाट घानियासरीशस के घुमानी राजघुन स्वप्न के मुत्र लघमिना निघामी हीमिदोडोरम में देवों के देव बामुदेव का यह बरु-स्वप्न जामभद्र (जबघाम बिन्नु के उगामर) द्वारा निमित्त बमया।"

४ इसाई धर्म का उदय

बाप्राबबू की पट्टियों पर हिन्दी और मिट्टनी नामक दो प्रकार जातिया के बीच बौरहबी वनायो इसापूर्व म हुई मयि का बनन है जब इग्ट मिन और बरम जीमे बैरिफ देवतायो का प्राबाहन उनका बरदान प्राण करन क मिया किया गया था। इस बिबरन मे स्पष्ट है कि इसापूर्व १० - ००० वर्षों के दौरान भारत का प्रभाव निबटपूर्व और एशिया माइनर पर था। एक और मय म दाता राज्य परिवारों के बीच एक बिबाह-सम्बन्ध के उपमध्य म प्राचीनबाँइ देने क मिया बढबा देवताया 'धादिबम' का जिहू बेरा म 'मय' कहा गया है प्रादान किया गया था। ऐमनामार्ता पत्रा म भारतीय नामपारी राजासा की सूची का जिक्र है। उन प्राचीनकाम म भी भारतीय बिबाह ब्रह्मा की उतरी चाटी म पहुच या ब। मिय की प्राचीन राजधानी मेथियम म प्राण भारतीय प्रबन्धयो के प्राधार पर मर फला इडम पेटी का बिबवास है कि १० इसापूर्व म प्राचीन मिय मे भारतीय उपनि वेध स्थापित था।

१३८ इसापूर्व में माइरम मे बीबीमोन साम्राज्य को पराजित करके बीबीमोन को अपनी राजधानी बनाया। उस समय यहूदिया को भारतवासिया क बार म प्रबन्ध पना चमा होया। उसके उत्तराधिकारी बाग मे सिन्धु चाटी को बिजित किया और उसे अपने साम्राज्य का बीसवाँ राज्य बनाया। भारतीय और यहूदी प्रबन्ध ही बीबीमोन में परस्पर सम्पर्क म प्राण होंगे। भारतीय लोग यहूदियों को कानून के प्राबन्ध प्रपवा 'बनायी बहते थ। कुछ सूतानियों का ता बिदवास था कि यहूदी लोग हिन्दुओं की ही सन्तान हैं।"

१ 'परातोष बाग' की एक कथा सुनेपान के म्याम की कार बिलानी है। कतने एक पूर्ण मय मे पुत्र बनारन के राजा के मन्त्री थे। एक बार दो मित्र एक ही बच्चे को अपना बर ली थी और पुत्र को निर्भय करना था कि बच्चा कितन है। दोनों ने से एक ली पक्षि भी और बसने बच्चे को अपने मोहन के लिए पुत्र लिया क। पुत्र ने प्यवा की कि एक ली बच्चे का फिर पकडे और हुरी है और लन अपनी-अपनी ओर लीये और बिसे जो धर्म मिय मय म्दीमे स्थापन करें। पक्षि भी मे इस निबन्ध का मय लिया किन्तु लम्बी मा ने बच्चे को अपनी करने के बन्धन अपना नाम भी हुरी ली को दे देवा ली-अर कर लिया। पुत्र ने म्दीका बच्चा लय बिबा।

२ अमेरिजन (मय) : मारेरिजन के शासन का अन्तिम और कालज्जना नाम से प्रसिद्ध नेर कन के शासन का अन्त वर्ष ३० ईसवी, देवनायेम में मनु राजा है। वर्ष की प्रकल्पा में ६६ ईसवी के प्रलय बार) के मनुस्मर निबन्धन का अन्त है कि 'जुके गुन बरलू ने यहूदी को परिवन्ध बहाय थी। निबन्धन लन बरलू के राज बरलू करता है : "क कल्पि मय से यहूदी था और मेनलीरिच का निपटरी था क यहूदी मारतीय बार्तानियों के बंदा है। भारतीय लई कथामो और भीरिर्क 'बुदर' बहते हैं।"

ईसापूर्व अन्तिम दो सताब्दियों में बृहदाचार में कुछ ऐसे मनों ने विकास पाया जो भूत-भूत-सम्बन्धी पारसी विश्वास की उपज थे। "पारसी ईश्वर में धरुहीमान की स्वतन्त्रता के सन्धान यहुवी एकेबरवाह में किसी प्रेतछन्नि की स्थायीगता की युवाइस न थी। किन्तु इन सताब्दियों में बृहदाचार में बहुत परिवर्तन हुआ। सैतान (सैटन) को दुष्टात्मा के रूप में मान्यता दी गई, जिसका काम ईश्वर की आज्ञा से वर्तमान युग में ससार में अध्याइयों का विरोध करना था। इसके प्रतिरिक्त प्रबंधकार के पक्षिधामी शासन की आज्ञानुसार काम करनेवासी दुष्टात्माओं की सेना को मानवीय व्याधियों धीर पापों के लिए उत्तरदायी मान लिया गया। 'ईजीप्स' में लिखा है कि ईसा सन् के प्रारंभ के समय यहुवियों में यह धारण लुप्त प्रचलित थी। "फारसियों के सम्पर्क के फलस्वरूप ही यहुवी विचारधारा में यह विचार बुझ गया था कि संसार में दुष्ट शक्तियाँ सक्रिय हैं। इस तथ्य के प्रति कोई भी संदेह इस सत्य से मिट जाता है कि 'शोबित' का दुष्टात्मा 'धर्मो हियस' वास्तव में 'धवेस्ता' का 'ईरमा बीन' है।"^१

फिनिसीयन का 'धसीनी' धीर सिकन्दरिया का 'परस्पुटी' संभवतः बौद्ध सम्प्रदाय थे। क्रम से क्रम बौद्ध सिद्धांतों से धार्मिक प्रभावित हो धरम थे। सीरिया जातियाँ जो ईसा से पहले ही पाँच सताब्दियों तक पहले फारसी साम्राज्य धीर फिर यूनानी-रोमक साम्राज्य का अंग थी भारतीय प्रभाव-क्षेत्र में आ गई। प्याइनी का कथन है कि सीरिया फिनिसीयन धीर मिस्र में बौद्ध धर्मानुयायी रहते थे।

धमीनी लोगों के कुछ धार्मिक विश्वास धीर धाधार गर-यहुवियों की हैं। जोमेकम के अनुसार धसीनी "अन्ततः यहुवी हैं धीर धर्म्य मतावलम्बियों की धीना परस्पर धार्मिक प्रेम करते हैं। ये धमीनी गुणियों को बुराई समझकर दूर रहते हैं।

येटेनर एन. ए. बुक ने लिख है : "प्रार्थन भारत के धार्मिक वैज्य वरत का नाम मूल रूप में उत्पत्ती ईश्वर में था। 'द इंडियन ऑफ द इस्ट' (१९१८), पृष्ठ २४।

१ टॉलर अन्तिम वेदन का लेन डेविड येटेनर दिग्दी अन्त मन्त, (१९१९) पृष्ठ ४१२ में। डेविड को पूर्वी यूनानी के दौरान अन्त भारतीय धार्मिकता में मान्यताधार्मिक को बन्दे बन्दे विन्त मिहल मन्त (६२) धार्मिक ईश्वर कथनों में भी इन्हीं धर्म का पूर्वी मन्त धर्मिधर्म होना है। पूर्वी यूनान के प्रति लन्डोरोर का अन्त विन्तिय है। पूर्वी विश्वास के बारे में अन्त विन्तिय अन्त लन्डो में था वर अन्त धीर अन्त के अन्त लन्डो कर्नोई की मन्त अन्त अन्त दुष्कल धर्मियों के लन्डो में लन्डो है। इन लन्डो पर मन्त अन्त वर अन्त लन्डो वर अन्त है कि कर्नोई कन्त के लन्डो दिग्कन्त—इन्तलन्त अन्त लन्डो लन्डो लन्डो—अन्त कन्त वर अन्त लन्डो है। अन्त लन्डो लन्डो (१९१९) दिग्कन्त लन्डो लन्डो वर अन्त लन्डो (१९१९), पृष्ठ १२।

हिन्दु संयम और वासनाओं के समय को मुक्त समझते हैं। ये धन-सम्पत्ति से बचना करते हैं और इनका साम्यवाद प्रगल्भनीय है। उनके समुदाय में कोई भी व्यक्ति दूसरे से अधिक सम्पन्न नहीं है क्योंकि उनका नियम है कि उनके समुदाय में सम्मिलित होने वाले बामा प्रत्येक व्यक्ति अपना सब कुछ दूसरे के साथ साझा दे रहा महा तक कि उनके बीच मरौबी भयबा धन-सम्पत्तता क नदण नहीं है बकि हर घादमी को सम्पत्ति हर दूसरे घादमी की सम्पत्ति के साथ मिश्रित है और मान्य पड़ता है कि व सब एक ही गिता की सन्तान है। उनका कोई एक निश्चय नगर नहीं है किन्तु हर नगर में वे सम्पन्नता में रहते हैं। उनका निश्चय मन है कि गरीब धनकारक है और जिस तत्त्व में उनका निर्माण हुआ है वह स्थायी नहीं है, किन्तु प्राणायाम धन है और सबैव जीवित रहती है। इस गरीब क बंधन से मुक्त हली है तो माना उन्हे सन्ने कागबाम में छटकाग मिल जाता है और वे प्रसन्नतापूर्वक अरर की धोर उड़ जाती है। 'व्यक्तिस्मा करते बाम और एक मावु व जो बिसतुन साधारण धारन करते और उ के बामा से बने कपड़ पहनते व। बरसी ईश्वरगटाचना में सीत रहकर वे धन तथा दूसरों के पापों के समय के लिए प्रार्थना करते रह।'

बोधेयम की इतिमा र्म इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि ईसा के समय में यहूदियों को हिन्दुओं के सिद्धांतों और पूजा आदि के बारे में बहुत-कुछ पता था। सन् ७० ईसवी में यरूशलम के समूह विनाश से पहले मत्तारा में बाबा के मजबूत किस पर एनियाडर नामक किसी व्यक्ति के नेतृत्व में यहूदियों का कब्जा था यहूदियों ने धार्मिकी बाग रोमकों से लोहा लिया। किसे के चारों घोर घेरा बाम रिया गया और एक समय ऐसा आया जब उसकी रक्षा करना धर्ममव हो गया। एनियाडर ने अपने सहयोगियों से कहा कि रोमकों क हाथों में पड़ने से कहीं बचना है कि वे सब एक-दूसरे को मार डालें। समय कहा "धायी दुस्मनों के हाथों में पड़ने से पहले हम अपने बीबी-बन्धों को मार डालें और उनके बाद, बाहिर है उमी धानदार मीत को हम साथ भी धसे मसा से और इन प्रकार स्वतन्त्रता को ही धानी उत्कृष्ट यादमार के रूप में छोड़ जाए।" इस मयातक परीधा से यदरातबामा के समय उमने जो तक उपस्थित किए व उनमे उगनिप्यों बीडपर्म और मयवद्गीता की विधाओं की याद धा जाती है। साधवत आत्मा और मस्तर गरीर के बीच का यह स्पष्ट धारन 'घोरु टैस्मट' में मही मिलता। 'घोरु

१ 'बोधेयम' संपादन पृ-१ किनेक्ट १९०७, पृ १ ४-६।

२ मैजू पूर्ण बलि मय १९-२०।

टेस्टामेंट के अन्तिम अङ्क की रचना घोर उपर्युक्त भाषण के बीच के समय में ही बहुरी उपदेशों में यह नया विचार हुआ था। यह प्लेटो का प्रभाव भी हो सकता है। किन्तु एलियाडर ने स्वयं इस हिन्दू-उपदेशों से प्रभावित बताया था। जेरोसिम के विमान सन् ७० ईसवी में बहुरीयों घोर रोमकों के युद्ध में प्रमुख भाग लिया था भाषण का अंश यों प्रस्तुत किया है "इसपर भी यदि हमें अपने रास्ते पर चलने के लिए विदेशियों की सहायता की आवश्यकता पड़े ही तो हमें आर्थिक धारकों के अनुयायी भारतीयों ने शिक्षा लेना चाहिए। वे लोग इस जीवन-काल को अतिशयपूर्वक व्यतीत करते हैं। इनके आवश्यकता बाधता समझते हैं घोर अपनी आत्माओं की घरीर से मुक्त करने को उत्सुक रहते हैं। यही नहीं जब घरीर से मुक्ति के पीछे कोई दुर्भाग्यपूर्ण कारण का भाव्यता नहीं होती तब भी उन्मत्त धारकत जीवन के प्रति ऐसी उत्कट कामना होती है कि वे अन्य लोगों को अपनी विद्या की पूर्वमुखता से बेते हैं। घोर कोई उन्हें रोयता नहीं बल्कि सभी उन्मत्त बड़ा सामान्य धामी समझते हैं। भारतीयों से अधिक विद्वाने विचार रखने के कारण क्या हम अपने नहीं धामी चाहिए? ईसा की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद एलियाडर इस प्रकार बहुरीयों ने बात करना था मानो वे हिन्दू विद्यार्थी घोर धारकों से उपरिचित हों।

पूनावादी समार में विदेशी आर्थिक प्रभाव सीरिया बैबिलोनिया अनातोलिया घोर मिस्र में होकर पहुँचे। बैबिलोन का बोगदान था लक्ष्युवा घोर ज्योतिष। किन्तु सर्वप्रथम बहुरीयों से रहस्यारमक धर्म जिन्होंने आत्मबल से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया। किसी एक ईश्वर में जो स्वयं मृत्यु का विचार घोर बाद में पुनर्जीवन हुआ ही व्यक्तिगत संयोग की स्थापना होने पर ही मुक्ति सम्भव है। एस्मितिजार्ड धर्म में मायक की मुक्ति का लक्षण उमड़ी मृत्यु घोर अन्तरात्मा ने पुनर्जीवन को बताया गया है। मिस्र 'माग्मिम-अन्वग्मी धर्म दूर-दूर तक फैला था। उसके धर्मक भाषण है। वह सर्वव्यक्तिमती एवं सर्वगुणवती है विषयों की विषय वैधी घोर विषय है। उसके स्थापन पर मीटोना के प्रतिच्छिन्न होने के समय तक उन्मत्त वास्तव कायम रहा।

मिन्डरिया क बहुरीयों ने पूनावादी विचारों को स्वीकार कर लिया। ईसा के जन्म से भी पूर्व पहले मिन्डरिया के बहुरीयों ने प्लेटो के विचारों में प्रभावित होकर एक आर्थिक धर्म की रचना की। इस मुनेमान की ईश्वरप्रदान बलि का आध्यात्मिक प्रभाव बताया गया। पूनावादी के प्रभाव से एक समस्या उत्पन्न हुई—

१. इन धर्म का ईश्वर की कार्यप्रणाली का अर्थ ही अर्थ ही। ईश्वर ने धर्म का स्थापन किया है इत्यादि और फिर मैं पंडित गणेश्वर। शैविक धर्म (भारत-भारत) का

यहूदी पैगम्बरों के मतानुसार निर्धारित एक ईश्वर तथा ब्रह्माण्ड की उत्कृष्टतम व्यवस्था में व्यक्त परमात्मा से परस्पर क्या सम्बन्ध है। सम्पूर्ण सृष्टि में निहित 'ईश्वरीय विवेक' का सिद्धान्त धरनाकर ईश्वर-सम्बन्धी यहूदी और यूनानी मान्यताओं में सम्बन्ध स्थापित किया गया यह 'ईश्वरीय विवेक' ईश्वर में कुछ-कुछ पारम्य रखते हुए भी पृथक् नहीं है। इन धर्म में 'विवेक' तत्त्वज्ञानियों के 'सोसोम' सृष्टि में निहित तर्कसंगत सिद्धान्त में भिन्न नहीं है। यूनानीयानी जुडाबाद में 'विवेक' धार 'सोसोम' की समानता का स्वीकार कर ली लेकिन यह भी कहा कि इसका उद्भव सर्वसृष्टिसमस्त परमात्मा है। ईश्वर ने दुनिया बनाई और मानवा को ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान कराया 'सागाम' उमीची बाणी थी। मिस्रदेशिया के क्रिओ ने यहूदी एकेररबाद के कुछ धारारमून सिद्धान्तों को यूनानी पाठकों के लिए इसी प्रकार तर्क-सहित प्रस्तुत किया था। पियों के समय (पहली शताब्दी ईसापूर्व) इस धर्म में धारुर्ष है कि उनमें यूनानी विद्वानों और यूनानी धर्म का सामन्त है। उनमें में धर्मिर्वात की रचना भाग्यम क सामननाम में रिया की मृत्यु से और धारर उनके जन्म में भी पूर्व हुई थी। पिया न ईश्वर की धर्मिक कता पर विवेक जोर दिया है और उन मारे सम्बन्ध में परे बनाया है। इस उनके अस्तित्व का ज्ञान तो है किन्तु उनकी प्रकृति का ज्ञान नहीं है। उन विचार की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। उनके लिए जो विषय इस प्रयोग करने हैं उनमें सापेक्ष धार सीमित दानों प्रकार के धर्मिक मसार से उमरी बुरी का ही पता चलता है। यदि ईश्वर ही समार नहीं है तो फिर लोगों का सम्बन्ध वेचन उन्ही धर्मियों में व्यक्त किया जा सकता है या उमरी हैं फिर भी 'उमके' पाम नहीं है। प्लेने के अनुसार, यही 'परम ज्ञान' ('आ-दियाड') है, जिसे वात की विचार

धारर सिद्धी समुने के। " 'सागाम' XXII. १७-XXIII ११ के प्रत्येक पर का समानाओं पर एक सिद्धी धर्मिक धर्म (१ ईश्वर धार धर्मिर्वात) में मिल आता है। इस धर्म का क्या हमें सागाम करर रर्ष करने लगा था। प्रोफेस XXII १७ के प्रथम शब्द है 'धारने काम म्पेकर येरी वात ह्मो और दिन धारकर कर्ने धार कर लो। इसक लिए धर्मिर्वात में लिख है, 'काव सागाम येरी धर्मों को ज्ञान से ह्मो, दिन धारकर कर्ने मममो। 'दोनों की विवेक-वस्तु है कुछ समाने : धर्मों को म्पे सागामो कर्षी ज्ञानिर्वात में लिखा न करे, धर्मिर्वात किन्तु म्पे सिद्धी, धर्म-सम्बन्ध के लीसे म्पे सागाम। समस्त धर्मों की शक्ति का क्या क्या सागाम है कि दोनों की धर्मिक सागाम है। समस्त धर्म धर्मिक विवेक वात कर है कि ह्मो धर्मों में लिख है कि धर्मों धर्मिर्वातों ज्ञान के समाने कौन सागाम करवा सागाम, और ह्मो में लिख है कि धर्म-सम्बन्ध किम प्रकार धर्मिर्वात की धर्मिर्वात करनी है।" 'द लैवीय धर्म धर्मिर्वात (११७) पृष्ठ १७-१८, में धर्मिक धर्म धर्मिर्वात।

पारार्थों में ईसा के व्यक्तित्व के साथ जोड़ दिया। यहूदियों के लिए, यही ईश्वर के गुणों के सुष्ठुमान स्वरूप है। क्रिस्तो के अनुसार, धार्मिक ईश्वर और सीमित संसार को ओड़नेवाला सिद्धांत 'मोरोस' ईश्वर से उत्पन्न प्रथम पुत्र यहाँ तक कि 'द्वितीय ईश्वर' स्वयं मानव है। दोनों में व्यक्त 'बाक' (एकर ही ईश्वरीय व्यक्ति है) के लुप्त यह 'मोरोस' सिद्धांत जोपी ईश्वर के सम्मिलित है।

रोमवासी यूनानियों के प्रथम लुप्त थे। विजेता होने के बाद यहूद उठने युवा नियों से बहुत कुछ सीखा। यूनानियों ने सभियों तक शास-व्यवस्था को काम्य रखा फिर भी उनमें मानव प्रतिष्ठा की जगजगत भावना थी जो यूनानियों और यूरुओं के धर्म को पाटने में सक्रिय थी। वे मानव में उसकी धमना में विश्वास करते थे। यूनानियों का यह विचार रोमक द्वारा लुप्त में परिवर्तन कर दिया गया। रोमक कानून हमारे लिए धारदार विरासत है। यूनानी रोमक सम्पत्ता में दोनों पारार्थों का सम्युत्पा। ब्रिजित हस्त 'एनीस' रोमक भाषा में प्रच्छन्न यूनानी कल्पना थी। यूनानियों की भाकार के प्रति सजबता में रोमकों की उद्दय एक दायित्व की भावना को बहस जाता। रोमक मस्तिष्क सुस्पष्टता और परम्परा पर जोर देता था यह हमें बांधनेवासी जंजीरें नहीं बनू बिरासत है जिसे हमने सम्हालकर रखा है। रोम का विश्वास कानून द्वारा नियमित एक राजनीतिक विरासत पर था जिसमें हर धारदार भाविक को कानून बनाने में भाग लेने का अधिकार था और कानून की विवाह में सभी भाविक समान थे। रोमक नैतिकता यह थी कि सामाजिक कार्यों पर उत्तम विवर्तन रखा जाय और समाज की भावनावासी के माधमें व्यक्ति स्वयंसेवा में अपनी भावनावासी को बहस धारदार करे। सामाजिक रहस्य-सहक की दृष्टि से यूनानी रोमक सम्पत्ता धारदार सजब थी। इन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतन्त्रताओं की रक्षा की तथा कार्य समता और धारदारारिता को बहावा दिया। रोमक सामाज्य सुरोण उभरी धरतीका मिग और निवृत्तपूर्व में ईसा था। रोमक महार बस्तुन-यूनानीय महार नहीं बनू यूनान्यवासीय महार था जिसमें लड़िया महार और उभरी धरती की सम्मिलित थे।

यूनान में स्वयंसेवा विचार-भावना को प्रोत्साहित किया और रोम में काम करने का महत्ता ईसा किया। इसके धारदारितन निमित्तलीय में लुकेणों को बाध में लुकेणका ईसाई धर्म सुरोण का प्रकाश किया। रोम न पहली धारदार ईसाईयों के मौरिया और निमित्तलीय को जीत लिया। जिस के सिद्धांतिया धार मौरिया के धर्मोण लुकेणों में यूरुी जनमया बांधी थी। बागन की धरदार बोधाबाण, धरदारबाण, मोराधर बाबाण तथा विचारधाराण मौरिया जिस और निमित्तलीय

पहुँच चुकी थीं। पूना के समीपवर्ती एगियाई प्रदेशों में बौद्ध धर्म का प्रचार था। ईसापूर्व दूसरी शताब्दी के लगभग मध्य में का भारतीय सरदार अपने राजा के विरुद्ध विद्रोह में अटकल होकर घोर भायकर उतरी दरमा का शहर नामक स्थान में पहुँचे वहाँ उन्होंने एक मठ बनाया तथा बृहन्-मन्दिर का निर्माण किया। मठ और मंदिर बार बी बर म अधिक समय तक चलने-पलने रहे और धारिक बार में एक वर्षी में मठ का ध्वस्त कर डाला।

वहाँ कहीं भी रोमक साम्राज्य का बोधदाता रहा उनका कानुनी और संघटनों तथा पदाधिकारियों के संगठन और सम्मान को समुचित मान्यता प्राप्त हुई। राम संघटित धर्म का प्रतीक बन गया। उसकी मर्यादित धर्म म बानून और शाजाकारिता धर्म तथा सहिष्णुता और स्वल्प प्रतापन की भावनाया का सम रूप था। पूना के नाम और इसा के धर्म होना का सम्मिलन रामक साम्राज्य में हुआ। सोचा जाने लगा कि धर्म सम्पूर्ण भूमध्यसागरीय समार को एकता के एक नवीन मूक में बाँध सकता है तथा एक साम्राज्य का सह-शासनिका का रूप को समाज धर्मसम्पत्ति का मयोग-धर्म में और धारिक मङ्कल बना सकता है।

पॉपुलर की म्युमन् १४ ईस्वी में हुई और टा-बेरियम को उलगाधिकार मिला। ईसाई धर्मों में बर्गिण धर्मार्ण टा-बेरियम के शासनकाल में बटिन हुई। हिन्दू समाज एक प्रकार का धारिक मङ्कल था के एक ईश्वर की पूजा करते व धिने के सम्राट विचारिक ग्यापार्थीय और युद्ध म धमना नामक मानने व इसी पूजा में उन्हें सम्पूर्ण एवना का मूक में बाँध रखा था। हिन्दू धर्मिक में धर्म और धिनी धर्म म धारिक मूसा का प्रभु याहूवेह महान का पैगम्बर माना जाता था। बाद के पैगम्बरों—समाज, हासिया यथाना, बरमिया और इब्रियम—ने धर्म यथी धर्म को धारिक एकेम्बरवार में परिबर्तित कर दिया। ईश्वर धर्मिकयंत्र कृपाणु है और बाहुना है कि उनके उपासक भी महत्व मनें। याहूवेह ध्याम परम-मङ्कल का देवता है और ग्याव कृपा तथा धर्म को रखा उसका प्रमुख उद्देश्य है। यह संसार नियमों से बंधा है और इनमें धारिक मूकों का महत्व सर्वोपरि है।

मिक्कर महान की विचारों के फलस्वरूप समस्त मिक्कर और मध्यपूर्व के शाक-शाक जूदिमा की हैमनवार के धर्म में आ पहुँचा। जूदियों ने धीक भावा बोधना धीक किया और धरने धर्म को टक म पहुँचन इन की नीमा तक धर्म बर्गिणियों के धारिक-धर्मिक को धरना मिया। हिन्दू धर्मिक्यों के धीक भावा में धनुवार हुए। इस प्रकार हिन्दू एकेम्बरवार उन समय का धर्मिक धीक धर्म रज्ज्वायक विचारों के धीक नवीन पहुँचा। मूक धर्मिक धर्म हुए भी उनमें बौद्धिक प्रणामी धीक धीक का धमना मिया धिनेके बारक यह मूर्खीय धिनेसत

में प्रविष्ट हो सका। यूनानी विचारधारा के शक्तिपूर्ण प्रवेश से उत्पन्न घटपट करीबेबासी प्रवृत्ति मुझ पर भी और विस्तृत मानवता के लिए उपयोगी हो गयी।

'द ऐक्स गॉड प्रोपोजिस्स' एक उदाहरण है जिससे हमें यथा यत्नता है कि उपरोक्त और दार्शनिक प्रचारक और प्रजातापक किस प्रकार साम्राज्य के एक कोने से दूसरे कोने तक जाया किया करते थे। सेंट पॉल अपने जर्नल पर दो साल रोम में रहकर पूर्व बिस्वात से उपरोक्त और पिशाष्ट देते रहे और 'किसी व्यक्ति ने उन्हें रोका नहीं'।^१ रोम में विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन दिया जाता था।

पश्चिमी एशिया पर, जहाँ ईसाई धर्म का विकास हुआ पश्चिम और भारत का प्रभाव स्पष्ट है।^२ बौद्ध विचार यूनानी नगरों से होते हुए सम्पूर्ण भूमध्य सामरीय प्रदेश में फैल गए थे वे यूनानी नगर व्यापारियों तथा अन्य प्रतिनिधि मंडलों के रास्ते पर पड़ते थे। सिक्न्दरिया में तो पूर्व के विचारों का स्वागत सीरिया से भी अधिक था। इसकी शुरु के प्रारम्भ से पहले की घताब्दी में यूनानी ईजिप्सोनिबाई, बौद्ध और भारतीय जैसी विभिन्न धर्मग्रन्थों के विचारों का बहुत उम्पियक हुआ। इसी बीच लम्बे समय तक रोम और भारत के बीच सम्बन्ध हाबोबात युगल कालीमिर्च और रेशम—घबान् सीमाओं के भीतर न मिलने वाली चीजों—का व्यापार होता रहा।

रोम ने जब तिब्बतपूर्व को राजनीतिक रूप में परास्त कर दिया तो पूर्व की धारणा में रोम में तीव्र प्रवेश किया। इजराइल के पैन्थरों और भारत के धर्मनिकों ने जिन लोगों के दृष्टिबाध को व्यापक बना दिया था उनके लिए यूनानी रोमक पत्र भावनात्मक रूप से धर्यान्त थे। धारण और उत्तेजित मोक्ष मुक्तिदायक धर्मों के लिए पूर्व की ओर देगने लगे। एशिया माइनर में लाइबल की पूजा घाई जिनमें चीनों और मूर्यों की व्यपस्था के साथ-साथ एक ऐन देवता की कल्पना थी जो पुनर्जीवन के लिए मृत्यु का वरण करता है। गौरिया में विद्याल छात्रा एवं और धारण ने विप्राइ की पूजा (धारण बीजा लम्बार गृह्य और धनुशासन के साथ-साथ) धार्ये। बाह के पारसी धर्म में विप्राइ को मुक्तिदाता परमेस्वर मान लिया गया। 'मयूग मरवा न पश्चिमारा डरपुत्र न एन प्रवा'

१ ऐरलन घाट व जॉर्जिन्स XXVIII ३१।

२ लुनवा कीर्ति। एक एक धारणनः लरीड इन कीर्तिनिष्ठा (१ ८३)। "वर्तनक कि मयूग इरानापी रोस्वरवर को भी कृषि कथनों में लता टाना। न कृषि कथन धार्मिक विज्ञान और व्यवहारीक और कर्तव्यों की विन्य यथा व्यवस्था में लगे हैं।"

माने की। एस्त्रियामा जब मैंने बिस्मृत अगलाहों के देवता मिया की रचना की तब मैंने उसे धारने—सहृदा मन्त्रा के—समान धर्मि और प्रार्थना के योग्य बना दिया।^१ मित्राज निरीह प्राचियों तथा पापियों का मुक्तिदाता है।^२ तुमाजैने क पण्डितोक्तम मन्त्र (१६-२० ईसापूर्व) की समाधि ए पता जसता है कि ज्यो-ज्यो मित्रा सम्प्रदाय परिचय म पैमता गया मिया को यवोमो हीमिमोस और हेजो नीम का ही प्रतिरूप समझ जाने सता।^३ इम सम्प्रदाय को सबसे अधिक सफलता रोमक साम्राज्य में मिली। दायीवनीगियन गैनेरियन और सिडिनिमस ने ३०७ ईसवी में कारमन्तुम में मित्राज के नाम पर एक मन्दिर का निर्माण कराया। कॉन्स्टेन्टाइन की बिजय के परचात् सम्प्रदाय में सिडिसना धारने लगी और मन्त्रत विमोरोसिमस (३०६-६३) की धाजा से इसपर प्रतिबंध लगा दिया गया। मिय से मोसिरिस और धाहिसिस की पूजा का पध पहुचा इसमें सम्पूर्ण मानवता के कष्ट-निवारण क मिए धाजुल एक पीड़ित किन्तु दयामयी 'माता भयवती' की कथना की। इन देवी-देवताओं के समस्त भोक्तव्य क माम्यताप्राप्त देवताओं का महत्त्व कम हो गया। ये समस्त सम्प्रदाय और धर्म पुनाम क रोमकी प्राचीन धाबि कारिक पूजाओं के लिए वो धमस्य बिदेयी ये किन्तु रहस्यात्मक धर्मों क लिए, जो मध्ये धरने तक पुनामियों के बास्तबिक धर्म रहे के एकदम अपरिचित नहीं म। कॉन्स्टेन्टाइन द्वारा ईसाई धर्म को माग्यता दिए जाने के बाद भी जूलियन को एन्सूसिम के रहस्यमय धर्म और मित्राज की पूजा की बीरता ही गई। यदि ईसाई धर्म बिजयी न हुपा होना तो मित्राज या मेरफिमि धमका 'माता भयवती' की बिजय हुई होगी भोमपियवाई देवताओं की लही।

मिया सम्प्रदाय और ईसाई धर्म म धरमुत नमानताएं की। उनके अनुवाची परस्पर 'बन्धु' म। उनकी धास्वा बपतिस्मा और तपस्यामूलक धाचारो म की। दोनों में ही देवता इहलोक और परलोक का मध्यस्थ बा। दोनों की धिजा की कि मुक्तिदाता परमेस्वर पुन' पदार्थ क करेगा मृतकों को जिन्नादेगा पुष्य और पाप का निर्मम करेगा तथा पुष्यारामाओं को धमगन्ध क पापारामाओं को बिनाम प्रदान करेगा। जस्टिन का कथन पा कि सम्पूर्ण मित्राबाद सम्प्रदाय मीतान की बालबाची है। और उसका उद्देश्य ईसाइयों को गुमराह करना है।^४

१ 'किरि कप' X.१।

२ की, X. २४। X. २३।

३ 'किन्ट्राम ऐर एरत पेलेन ड सिडिन्सिमिटी' ज्ञानक प्रोफेसर एर की-एड गैरन क निरन ऐरिय। सिडई कर्नल, बमबरी १६३२।

४ 'एरोलोपिज' १-१६।

ईसाई धर्म ने रहस्यात्मकता को प्रोत्साहित और घाटा का सिद्धांत प्रचारित किया तथा उसकी पूजाविधि भारत की इसीलिए उसका प्रचार-प्रसार हुआ उसकी विद्या की कि ईश्वर की बुद्धि म वास और सम्राट समान है। इसीलिए निम्नश्रेणी के लोग उसकी ओर आकर्षित हुए। उसने आधुनिक-मेम और साहचर्य को महात्त्वपूर्ण स्वात दिया। धीमे ही मूलानी दर्शन को धपना देने में उसमें एक बौद्धिक तत्व उत्पन्न हो गया जिसने विचारकों को आकर्षित किया। उसके कमलकारक तत्व धर्मविद्वासी लोगों के लिए पहले ही आकर्षक-केन्द्र थे।

ईसा-सम्बन्धी अनेक कहानियों और उनके द्वारा प्रयुक्त दृष्टान्तों के समानान्तर कहानियाँ या दृष्टान्त भारत में थे। ११ ईसापूर्व में रोम ने यूरेशिया पर अधिकार किया। ३० ईसापूर्व से लेकर ४० साल तक यूरेशिया पर हेरोड का प्रासन था। ईसा के जन्म से संबंधित 'ईजीप्स' में हेरोड का डिक है। एक ठारे द्वारा निर्दिष्ट ईसा के जन्म के समय उग्रहार लेकर पहुंचनेवाले पूर्व के तीन बुद्धिमान व्यक्तिनों ने हेरोड को बताया था कि एक सम्राट का जन्म हो गया है। इसपर हेरोड ने बेथलेहेम के सभी नवजात शिशुओं की हत्या की आज्ञा दे दी। जोसे फ़स ने इस प्रसंग का वर्णन नहीं किया। कुछ भी हो यह कथा हमें कंस की याद दिलाती है। उसे बताया गया था कि उसका भाजा ही उसका बच करके राज्य का उत्तराधिकारी बनेगा। इसी कारण उसने अपनी बहन के सारे बच्चे पंदा होत ही मरवा दिये थे केवल कृष्ण की हत्या बह नहीं कर सका। मैथ्यू के दूसरे अध्याय में बर्निस संपूर्व कथा का दृष्टान्तकर्म की कथा से सम्बन्धित साम्य है। कृष्ण की भाँति ईसा की भी ईश्वर-पुत्र कल्प में पूजा होने लगी।

ईसा का किष्कानवासिता दृष्टान्त स्पष्टतः बौद्ध धर्म से लिया गया है। कुछ से पूछा गया कि वे परोक्षात्मक कुछ लोगों को अधिक उस्ताह से क्यों उपदेश देने हैं। इसपर उन्होंने उत्तर दिया कि मान साक्षिय किसी विज्ञान के पास हीन गैत है—एक अक्षय्य बुनग मामूली तीसरा पटिया। वह पहले अक्षय्य गैत को फिर मामूली का और सबसे अल्प में पटिया गैत को बोएगा यह सोचकर कि जो उगमें जानवरों का चारा ही उम प्रायगा। इसीलिए कुछ पहले अपने भिक्षुओं को और फिर साधारण अनुयायियों को उपदेश देने थे। अल्प में दुगरे मनात्मन्विकों को यह सोचकर उगने देने थे कि वे एक ही शब्द समझ गये तो बहुत समय तक उग नाम हाया।

ईसा को जो प्रशंसन दिए गए थे उनमें हमें सातवीं शताब्दी ईसापूर्व के बटोरनिपद् में बर्निस यम द्वारा नबिनेना का दिए गए प्रसाधनों धपका मार हाय गीनम को दिए गए प्रलोभनी की बाव घाती है। परबुचको प्रलोभित करते

हृदय धड़काने वाला है "तुम महारा मजदा से मुग मोड़ गा तो हजार बप एक मसार पर राज्य कर सकते हो। जगन्मन का उत्तर है "मेरे लिए ऐसा करना धर्ममय है फिर चाहे मरा धरि मरा जीवन मेरी धारणा ही बर्षों न मष्ट हा थाप। ईसा के समय के यहूदियों को ये हिन्दू बौद्ध और पारसी कहानिया धरमय मान्य रही हायी। ईसा द्वारा परिवार और गृह का परिष्कार विमुक्त भारतीय परम्परा है। भारतीय संन्यासी धरमधार गहन पयंठक ही को हाते है। ईसा का कथन है "लौकिकियों की भांति होनेी हैं परी धर्मियों में रहन हैं मकिन ईसाण के बेटे के पास सिर छिपाने की कोई जगह नहीं है।" उनका हमारा कथन है "ईसा की श्रद्धा का पासन करनेवाले व्यक्ति हो मेरी मां भाई और बहिन हैं।

यहूदियों की बरहबिल परम्परा से ही ईसाई और इस्लाम दोनों धर्म उद्भूत हैं। ऐतिहासिक जातियों के बीच जनमे ये तीन धर्म इस धर्म में ऐतिहासिक माने जाते हैं कि किसी न किसी समय में किसी न किसी स्थान पर हुई देववाचियों ही इनकी आधारधिता है। ये तीनों इतिहास की पटनाओं से संबंधित हैं—विरोध प्रकार की पटनाओं से जिनमे इतिहास के प्रति ईसा के स्व और रबि का पता चलता है। ईसा एक परम सविज्ञ है वह पृथ्वी पर इसलिये नहीं रहता कि पृथ्वी उसकी ही सृष्टि है। ईसा मनुष्य को अपनी बाची द्वारा अपना बोध कराता है। धारणा के रूप पर हम ईसायीय जीवन के भागी बनते और ईसा के सहयोगी हो जाते हैं। जुदावाद में ईसा ने यहूदियों को अपना प्रियजन कहा है। ईसाई धर्म में ईसा के प्रियजन हैं बर्ष के सभी धारणावान लोग। इसी प्रकार इस्लाम धर्म में धारणा रखनेवाले मुसा के बन्दे होते हैं। यहूदी धर्म में ईसा ने अपनी बाची ने मानवकण धारण कर लिया। ईसा का कुंभारी के गर्भ से जन्म 'वास' पर विस्था कोली से मादा जाना और पुनर्जीवन ईसाकेच्छ क धर्मिधायं धर्म हैं।

ईसा स्वयं को यहूदी धर्मोत्त से सर्वथा पृथक तो नहीं कर सके फिर भी उसकी विचारों का रूपान्तर करने की कोशिश उन्होंने की। यहूदी पैगम्बरों की इस धारणा को ईसा ने भी माना कि यहूदी धर्म ही ईश्वर के धर्म से उद्भूत हो गये हैं और उन्हें सर्वप्रथम प्रायश्चित्त करके पुनः धारणा कर्तव्य पासन प्रारंभ करना चाहिए। रामक साम्राज्य द्वारा यहूदियों की पराजय बास्त्रम म राष्ट्रीय धरमराज के लिए ईसायीय ईश्वर है। ईसा ने कहा कि इसका प्रायश्चित्त और ईसायीय नियम को पुनः राष्ट्रीय जीवन की आधारधिता के रूप में स्वीकार करना चाहिए। राष्ट्रीय प्रायश्चित्त और ईसायीय राज्य की स्थापना के प्रति धारणा के स्वीकरण के रूप में उन्होंने सबसे पहला सांख्यिक काम यह किया कि अपतिरता करनेवाले

जर्मन के अनुशासकों से अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया। यहूदी लोप रोम की पराधीनता से मुक्ति पाना चाहते थे। एक बार तो उन्होंने बसपूर्वक ईसा को यहूदी-सम्राट बना देना चाहा था। रोम की सरकार ने ईसा को यहूदी-सम्राट के रूप में ही सजा ही थी। 'एक्ट्स ऑफ एपोस्टिल्स' के प्रारंभ में कहा गया है कि ईसा के पुनर्जीवन के बाद उपस्थित व्यक्तियों ने उनसे प्रश्न किया "ब्रह्म, क्या साग इस समय इजरायल को स्वतन्त्र कर देंगे ?" ईसा का बार-बार यह कहना कि वे यहूदियों के लिए जन्मे हैं उनके कृत्यों के राष्ट्रीय महत्त्व की पुष्टि करता है। उन कमानी स्त्री की कथा जिसमें उन्होंने कहा था कि 'बच्चों की रोटी छीनकर कुत्तों को दे देना उचित नहीं' इसका एक उदाहरण है।^१ उन्होंने अपने शिष्यों को व्यक्तिगत और समाजिक दोनों के लिए जाने बोलना सिखाया था। इसके बजाय उन्हें 'इजरायल की लोई हुई भेड़ों' के पास भेजा था। ईसा ने अपना काम यहूदियों को पुनः ईस्वर बलि में लपटा देना निर्धारित किया था।

ईसा ने स्वयं को अपने पूर्वजों के धनीन से धरम कर भिदा और अपने जीवन तथा शिक्षा में एक धार्मिक धर्म के मूलधारों को प्रस्तुत किया। वे अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कुछ कहते थे। "मेरी शिक्षा मेरी नहीं उसकी है जिसने मुझे भेजा है। अपनी आत्मा से बोलनेवाला अपनी महत्ता बढ़ाता है किन्तु जो अपने बोलनेवाले की महत्ता बढ़ाना चाहता है अपनी महत्ता भी बढ़ा लेता है।" ईसा अपनी अदम्य चेतना से प्रेरित होकर बोलते हैं। ईसा सारी मायनाओं को ठुकरा देने हैं। कोई कुछ भी कहना रहे मैं तुमने कहना हूँ। अपने अनुभव से प्रभावित सत्य उनका आधार है। उनके लिए सत्य कोई ऐतिहासिक तथ्य नहीं बल्कि धार्मिक जीवन है। उनकी शिक्षाओं में यहूदी धर्म की सारी कानूनी गणेशियों की उल्टाई और कहा गया है कि मानवा पक्षिण सभी बात बोलों पुरान बाइबिलों में भीजू है। 'तुम्हें अपने प्रभु परमेश्वर को प्यार करना चाहिए।' 'तुम्हें अपनी ही तरह अपने बड़ोंसियों का प्यार करना चाहिए।' ईसा के धर्म में उन बोलों सत्य बातों की मायना है। वे जो जीव का बचन है 'कानून के प्रमेता मूमा से धीर दया तथा सत्य के ईसा। ईसा ने परमेश्वर के राज्य का स्वीकरण करने की कहा गया तो उन्होंने कहा 'जो परमेश्वर का राज्य प्रायतः दिवस' नहीं पचना और न मही कहा जा सकता है कि वह समुद्र-समुद्र स्थान पर है। क्योंकि परमेश्वर का राज्य अस्त-वस्त में

१ १२।

२ मैथ्यू XV २३।

है।^१ हम स्वयं के जितन मर्मीय हैं परमेश्वर उससे बड़ी घबिच हमारे समीप है। घबने घन्यम् के परमेश्वर को पहचानना हमारा कर्तव्य है। मानवाय गया हैबो ब्यवस्थाओं क बीच कोई दुर्घट बाधा नहीं है।^२ घनि मानव मर्दया घट्ट हो घौर घास्तिव ममारा मे उमका कोई मगाव न हो तो घर्म का मनेघ उनके हृदय म कभी भी प्रबेग नहीं पा सकना। घूनानी घन के कृष्ण मर्दों म ब्यवह परमेश्वर घौर घास्ति क बीच का घनर ईसाई घम म भी प्रबिष्ण है। मानव स्वनाव ब्यक्तिगत घौर 'मवप्रयम' पाव के कावय क मजोर हो चुका है इतमिए रबनामक कायों के घमाम्य समघ्य जाता है। मानव एक प्रवार म प्रहृति की उपज है, परिबर्ननीयम है घावम्यवना के घाम भुक्तता है घबने मावावेयो हाग मंघामित हागा है जिम्नु बहु घात्मा की घिनमायी भी है घौर इमीमिए बहु प्रहृति तथा जगत् मे परे भी है। प्रहृति घौर घात्मा के मंगम पर लड़े मानव के घनर में परमेश्वर मे मिलन का बिन्दु मीबूव है। 'स्वर्ग म उतरे हुए ब्यक्ति को घाडकर कोई घम्य ब्यक्ति स्वयं नहीं पकूव सकना।'^३ ईसा मनुष्य के बेटे से घौर ईश्वर के भी। वे घास्तिव के दोनों म्पयों—सांघारिक घौर स्वयिक—के मभ्यर्क में ब। वे मध्यस्थ के रूप में घाण य। मानव की हैमियल स उनके सामने घनेक प्रलोमन ब। यहाँ तक कि जीवन की घालिरी घड़ी मे उन्हें प्रनीमन दिये गये। "मरे पर मेश्वर तुमसे मुझे त्याग क्यों दिया है?" उन्हें मानमिक यातनाएं महुनी पड़ीं। उनके लिए मव कुछ बड़ा कष्टप्रद था। ब घालरिक गंघाधों घौर मवयों प्रयी धनों घौर हनुओं पर बिजय पा सके इमीमिए ब मानवमात्र के लिए घाहरी बन सक। र्मा की प्रबुडता घौर ब्यक्तिव का बिघाम होना गया। "बच्च की उन्न बड़नी गयी उमकी घात्मा मजबूत होती गयी बुद्धि का बिकाम हुआ घौर ईश्वर

२. बैल बर्न ह्यूजे ने मेड घामल ब्यवस्था की निम्न पलिप को उरुण किया है :
 "ईश्वर मे अधोपम ब्यक्त्त मिलुन है घौर हमारा कनेत्तर को घोज मे लय रहकर, लघुधर घामत्तर के लिए घाई ककम घौर उनकी ककम वाग्ना करके कनेक लोम मदान पलरी करते हैं ककि हम मरे सनव परमेश्वर कभीके र्भर निघन करता है— ककि उनका घाघाण ही ककत्तर क मन्दिर है कदा वह लरेव कन्विन रहता है।" 'दि निक्लेचुराइन' III ३। बैल बर्न घूलन मिशिटलक कनेमेड काडू रिबीकन घूमरा संघरय (१९२३), II. पृष् २४१ २।

३. घॉलटन का ककम है "मामल म्पसे यी निबंमित हो चुका है, र्मयिप निक्लि वाग्ल की ब्यक्त्ता है। र्मयिच नहीं कि वे वाग्ल हृदय में घंविन नहीं हैं बल्कि र्मयिच कि घने घने हृदय को ही ल्याव रिख है।"

४. बॉन III. १३।

का उदर पर घात घनुषह था ।^१ उन्होंने मानवीय और देवी के बीच की लाई को पाट दिया ।

'स्वर्ग का साधनाय' का अर्थ है मानस की एक अवस्था अस्तित्व का एक उच्चतर स्तर, ज्ञान-प्राप्ति की अवस्था बोधि विद्या । सत्य से स्वतंत्रता मिलती है । ईसा के 'पञ्चाताप' का अर्थ है चेतना में परिवर्तन । पञ्चाताप ग्रीक भाषा के एक शब्द 'मिटा-नोइया' का अनुवाद है । इसका अर्थ है चेतना में परिवर्तन धार्मिक विकास ज्ञान का उच्चतर स्तर । मानव-मन उच्चतर सत्य की अनुभूति के योग्य हो जाता है ।^२ यह केवल प्रायश्चित्त अथवा पञ्चाताप नहीं है, बल्कि अस्तित्व और मन का सामूहिक परिवर्तन है । हमारे बुद्धिबोध में अज्ञान है, धर्मविद्या के स्थापन पर विद्या की स्थापना है । यह सोचने अनुभव करने और कार्य करने का एक नया ढंग है । यह पुनर्जन्म है । ईसा ने मीकुदेमुस से कहा था "नये सिरे से जन्म बिना कोई भी व्यक्ति परमेस्वर का राज्य देख नहीं सकता ।"^३ प्राकृतिक अनुभव का नहीं बल्कि सुख धार्मिक आध्यात्मिक मानव का पुनर्जन्म होगा है । यह विकास का अगला कदम है । "पञ्चाताप करो तो तुम्हारा परिवर्तन हो ।"^४ यह हमारी चेतना का अक्षरम उदर जाता है । "यदि तुम परिवर्तित होकर बच्चों के समान बन जाओ ।^५ हमारे जीवन का कामकाज ही संसार की माया और रहस्य के प्रति उल्टा होगा है । हम जो साधारण भौतिक अणु और इन्द्रियवाह्य बस्तुओं में ही लगे रहते हैं । जीवन का रहस्य जीवन द्वारा ही मल्ट कर दिया जाता है और एक स्मृति भर रह जाता है और सब भर को ही कभी-कभी उन बातों की याद घानी है जिसे हम कभी जानते थे या जो कभी हमारे पास थी । हम अक्षर ही अक्षरी सोयी हुई निधि को पुनः प्राप्त करना चाहिए,^६ ताकती और स्वाभाविकता का फिर पाना चाहिए । मानव को अक्षर अदमता है । एधीतिया हों से सेतक कहना है 'सनेवायो जायो और मृतकी मे ऊपर उठो ।'^७ मंगलिन और बाह्य-विलून होत से पहले प्रारंभ में ईसाई उपदेशों का गार

१ 'लूक II ३१ ।

२ तुमना बोधि । 'पान-उदर' 'उमने अदर मन में सब-क-अन्वितान का ज्ञान अन्त दिष्ट है ।' III ११ ।

३ अत III. ११ ।

४ 'लूक' का अर्थ अक्षर III. ११ ।

५ 'मैनु' XVIII. ३ ।

६ 'गुल्ल' का अर्थ अक्षर III ३ ३ ।

७ V ३५ ।

प्रास्तरिक ज्योति के प्रकार के कारण भीड़ में जागृति में पड़ना ही था। कुछ ही तरह ईसा भी जागरित थे और क्रूरों को जागृति का ज्ञान बनाते थे। स्वर्ग का छायात्मक कहीं भविष्य में नहीं है। वह हमारे समीप है। वह हमारे भीतर है। इस प्रबन्ध को प्राप्त करने पर हम नियमों में मुक्त हो जाते हैं। सन का दिन मनुष्य के लिए है मनुष्य सन के लिए नहीं।^१

इजीप्त के उपोद्घात में सेंट जॉन ने कहा है 'परन्तु जिन लोगों ने उसका स्थापित किया' उसके नाम पर विश्वास किया उन्हें उसने ईश्वर की सन्मान बनने की शक्ति प्रदान की।'^२ ईश्वर की सन्तान या पुत्र का धर्म केवल ईश्वर-विरहित प्राणी नहीं है बल्कि सेंट पीटर के शब्दों में 'ईश्वरीय प्रकृति का सामेपार' है। प्रथम भोज के समय ईसा की ईश्वर-प्राप्तियों के सेंट जॉन द्वारा किये गये वर्णन से यह स्पष्ट है 'कि वे सब एक ही जाएं हे पिता जिस प्रकार तू मुझमें है और मैं तुझमें हूँ वैसे ही वे हममें हों जो महिमा तूने मुझे दी जने मैंने दे दी है जिससे कि वे भी एक ही जाएं जिस तरह हम एक हैं।'^३ हममें से प्रत्येक ईश्वर का प्रबन्ध बन सकता है।^४ सेंट जॉन के उपोद्घात के शब्दों में 'सोस' ही 'सन्धी ज्योति है जो सवार में धारक, प्रत्येक मनुष्य को ज्योतिर्मय बनाती है।

ईश्वर मस्तिष्क में उपबन्धनासा विचार नहीं धनुषक किया जानेवासा शय्य है। नूजाबाद में प्रास्ता रखनेवासे कोरिन्थियाई ईसाइयों के विरुद्ध पॉल ने कहा था "क्या सर्व करना किसीके लिए ठीक है? क्या इसमें कोई लाभ हो सकता है? फिर भी मैं प्रभु के दर्शनो और प्रकाशों की वर्षा करूंगा। मैं ईसा नामक एक व्यक्ति को जानता हूँ जो औरह वर्ष पहले स्वर्ग-सोक की घोर उठा मिया गया। (देहसहित या देहसहित मैं नहीं जानता परमात्मा जानता है)। और मैं जानता

१ मार्क II. १७।

२ L. १२।

३ XVII. २१२।

४ यह बात संवेदात्तर है कि ईसा ने कभी स्वर्ग को ईश्वर द्वारा निकुल अंतरकर्ण कहा हो। सर्गोप प्रोफेसर थोर ज्य लास्त्युड का कल है 'जो तो समझा है कि ईसा के भौतिक और स्वर्गिक दोनों रूप इसमें भरतक ही हैं। इ जीवों का मूल्य ज्वार होने के कारण वे ईश्वर के सन्तुष्ट शय्यमान हैं। हमें इसमें ईश्वरीय संश्लेष का भावस भर मिलता है। हिन्दू पेंड इन्टरप्रेटेशन इन द गॉस्पेल्स (१९४६) पृष्ठ २२२। सेंट जॉन मित्रों के बीच में श्रुत का कल है: 'मेरे विचार से सेंट जॉन ने भी कभी ईसा को परमेस्वर का समकक्ष नहीं माना है। कलबी इतिहास में परमेस्वर का शय्य इमेरा 'सिदा' से ज्ञेय है और संश्लेष है कि यह कभी इस जन्मनासिकई विरासत को लोकार करत कि ईसा ईश्वर के समकक्ष और स्वर्ग ईश्वर के समीप है।'^५—'द प्रिन्सिपल ऑफ़ थ्योलॉजी इन द इन्डियन टेरिटोरि (१९२२), पृष्ठ २२।

है कि उस स्वयं से जाया गया धीर होने ऐसी अवस्थाय बात सुनी जिन्हें मुंह पर माना मनुष्य के लिए उचित नहीं।^१ धर्म ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान धीर चेतना का विकास है। ईसा को ईश्वर के अस्तित्व का ज्ञान था धीर उनकी चेतना विकसित थी। सेंट पॉल के इन शब्दों 'ईसा के स्वभाव के समान अपना भी स्वभाव बनाओ'^२ का संकेत पामिफ चेतना परम पिता की सर्वव्यापकता की धनुभूति परमेश्वर के साथ संयोग की धीर है। "तुम्हें अपने प्रभु-परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय आत्मा धीर मस्तिष्क से प्रेम करना चाहिए। हमें ईश्वर को अपने सम्पूर्ण अस्तित्व समस्त प्रेम करना चाहिए। प्रोगस्टीन के मृत्यु से पूर्व स्पष्ट बचन का सबसे प्रशिद्ध वाक्य है 'तुमने हमारी सृष्टि अपने लिए की है धीर हमारे हृदय जब तक ठेरा घायम न था आगये वैचन रहये।' भजन-सहिता में एक टिप्पणी है 'बिना प्रकार हिरनी पानी के बरसे के लिए घायुत रहती है उसी प्रकार, हे परमेश्वर, मैं तरे लिए घायुत हूँ।'^३ ईसा का मत है कि मानस-परिवर्तन ही चेतना का उदात्तीकरण हो। हम लोग साधारणतः इन्द्रियबन्धु बाह्य जीवन जीते हैं। हम तथाकथित 'धीर के मस्तिष्क' इन्द्रिय-आप्त मस्तिष्क के आधार पर जीते हैं। मनुष्य का आत्मिक स्वल्प तो कमी उमर ही नहीं पाता। आन्तरिक परिष्कार द्वारा ही मनुष्य सम्पूर्णता प्राप्त कर सकता है।

हम ईसा के समान ईश्वर के प्रति आगच्छक होना चाहिए। हमारे भीतर बहु आगच्छता कुल तीन धीर धनुभूति विकसित है। ईसा में यह सम्पूर्णतया व सद्यस्त रूप अविद्यमान थी सर्वप्रथम मानव आत्म का अस्तित्व हमारे लिए पहली बार जगमे अस्तित्व का जीवन है द्वितीय आत्म का अस्तित्व दुबारा जगमे देने की अवस्था है। मानव-आत्म के लिए आत्मिक रूप से दुबारा जगमे देना आवश्यक है।

ईसा का अस्तित्व सार्वभौम रूप का अविद्यमान उदाहरण है। ईसा हमारे

१ II क्रिस्तिकम् XII १-४। टॉमस अक्विनास का कथन है "ईश्वरीय ज्ञान का अधिम ज्ञान होता नहीं अर्थात् के प्रकाश द्वारा अदृश्य का ज्ञान है जिसे के बारे में ज्ञान है (अस्तित्व-सिद्ध XXXV १)।" 'तुम्हारे ही प्रकाश में हम प्रकाश को अदृश्य मर्त्ये। क्रिस्तु हम प्रकाश का दो दंगों में देगा आत्मक है। प्रथम शरीर स्वल्प के माध्यम से। हम प्रकाश स्वयं-कर्म का अस्तित्व-सिद्ध शरीर है। द्वितीय अस्तित्व स्वल्प द्वारा और आत्मिक के की प्रकाश में शरीर को प्राप्त हुआ था। हमी कारण हम अज्ञान में उन्ने रूप अविद्यमान नहीं बल्कि प्रकाश उन्ने अज्ञान शरीर में अज्ञान का ज्ञान क्रिस्तु अस्तित्व प्रकाश ही ज्ञान मया।—'क्रिस्तु सिद्ध' II १५५ १।

२ क्रिस्तिकम् II १।

३ XLII. १।

लिए ही जीवन के प्रादुर्भाव हैं। उनसे प्रेरित होकर हम केवल ईसाई नहीं बल्कि स्वयं ईसा बन सकते हैं। इरेमियस के शब्दों में ईसा ने मानवता का पुनरुत्थान किया।

ईसा की बुद्धि में सम्पूर्णविद्या धर्म का मूल तथ्य नहीं है। सारे इस धर्म पर्यन्त ही जीवन में समाप्त हो जायेंगे। परमेस्वर के धर्मत्व का आभास प्रादुर्भाव है उसके धार्मिक वर्णन की आवश्यकता नहीं। मनु-सिद्धांत तो इतिहास सभूतियों को आत्मबोध प्रदानाएँ हैं। जिनमें आत्मविज्ञानों के त्याग पर शब्दों का प्रयोग किया जाता है। पृथ्वी पर हम शीघ्र के पार-पार काया-नामा देखते हैं।^१

ईश्वर की आकाशवाणी बूझाई देना है। आकाशवाणी द्वारा ईश्वर सत् का ज्ञान प्रदान करते और उस प्राप्त करने की शक्ति देते हैं। मनुष्य की आत्मा ईश्वर की महिमा का ज्ञान है। इसमें एक प्रकार का समता का भाव निहित है, ई परमेस्वर, मुझ पापी पर दया करो।^२ ईसा का मत है कि मानव के भाग्य का ज्ञान देना ही नहीं बल्कि एक उपलब्धि भी है। इसके लिए परिधम धाराजना उन तथा चिन्तन-मनन का जीवन व्यतीत करना आवश्यक है।^३

ईसा का धर्म यद्यपि सीधा-सादा है किन्तु उसका प्राप्त प्राप्ति नहीं। अपनी व्यक्तिगत रक्षियों का परित्याग करके केवल परमेस्वर की आज्ञा का पालन करना होगा। 'जीपी इजील' में ईसा ने कहा है 'मिरा एकमात्र कृतव्य है अपने भेजने

^१ 'ओरिजिनस' XIII. १९। सन् १६०० की अपनी शास्त्री में रिस्क ने लिखा है कि ईसा के प्रति हमारा दृष्टिकोण हमें ईश्वर में निष्ठा कराने है। "नव-वक्त्रों के लिए ईसा केवल समीपवर्ती एक बहुत बड़ा ज्ञान है जो ईश्वर का दृष्टि से प्रोत्साहन कर देता है। उनमें धर्मकीय ध्यान से ईश्वर को पाने की प्रकृति पैदा हो जाता है। वे शीलकृत हो जाते हैं और सत् में धर्म की अंधधुंध की तीव्रता का भाव आते हैं। वे ईसा, परिक्रम और सन्तों के बीच पर्यटन कर जाते हैं। व्यक्तिगत और स्वयं के बीच स्वयं को खो बैठते हैं। व्यक्तिगत कर्तव्यों से अन्धधुंध भ्रम दूर जाया है। वे न व्यक्ति होने हैं न सामाजिक, और न प्रतिदिन के जीवन से अन्धधुंध होते हैं। वे अपने कर्तव्य से निरल हो जाते हैं और ईश्वर को प्राप्त करने के लिए धर्मत्व है कि वे निरल न हों। ईश्वर आदिपरिष्कार का-काश्मू राजा हीरी सुं' में (१६३१) पृ. ३२६।

^२ 'लूक' XVIII २३।

^३ डॉ. ए. ए. ए. ने चिन्तन-मनन की प्रक्रिया का कथन यों किया है : "जब तक कि हम निष्ठावान् नहीं हैं और निष्ठावान् होने का ही काम है कि वे ईश्वर से सम्बन्धित करें। स्वयं ईश्वर के सम्बन्ध में।" 'इरोमिया' VII. ३। ओरिजनस ने इसी प्रकार के शब्दों में आत्म-विज्ञान की प्रक्रिया का बंध समझाया है "ईश्वर" प्रथम शब्द है, और अपने स्वयं में ईश्वर की शक्ति को उत्पन्न करने, परिष्कार और निर्माणकारण द्वारा मनुष्य ईश्वर के समान बन सकता है।

संस्कृतियों का प्रत्युत्पत्तन कोई धर्ममात्र आधार नहीं बल्कि व्यावहारिक वास्तु बिकला है।

ईसा के जीवन से प्रभावित होकर जब कुछ लोगों में उन्हें ईसाई धरणा मानने की प्रवृत्ति आयी तो 'सोयोग' सिद्धांत ने उनके विचारों को सर्वसंगत रूप प्रदान किया। पॉल के पत्रों में संसार और इतिहास के साथ ईसा के सम्बन्ध को ईश्वरीय बिंबक और उच्चतम प्रत्यक्षीकरण माना गया है। जॉन ने इस बुद्धिवाद को और विवक्षित रूप दिया। ईसाई 'जायोग' धन्यताम से बनमान है और ईश्वर के साथ मिलकर एक इकाई का निर्माण करता है। यह उसकी धार्मिकब्रह्मि का साधन है। यह संसार ईश्वरीय 'सोयोग' परमेश्वर का बिंबक धरणा बिचार की ब्रह्मि है। इसका बिजायन मानव के मस्तिष्क में बिजायन ईश्वरवाणीप्रदान मनुष्यों पैगम्बरों और साथ के प्रति जायकक किता भी देस के सोगा के मस्तिष्क में हाता है। मनुष्य के मस्तिष्क में इस उद्घाटन का समुचित परिणाम नहीं दिखता और मनुष्य ईश्वर के समान बनने की दिशा में प्रवृत्ति न कर सके। इसीलिए ईश्वरीय ज्ञान की उद्योति एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व में प्रस्फुटित हुई। "सोयोग" हाव मांस का धरीय कारण कर हमारे बीच धामा और हमने उसकी महिमा देसी। 'सोयोग' द्वारा ईश्वरीय ज्ञान का प्रकाशन सर्वप्रथम मृष्टि में हुआ। फिर धानव ज्ञान में फिर पैगम्बरों में और धरणा ईसा में।

हम कुछ भी करें ईश्वर का प्रेम हमपर मदेव बना रहता है। सेंट पॉल का कथन है "क्योंकि मुझे बिब्राम है कि मनुष्य जीवन पृथिव्य प्रधानताएँ, धरणाया वर्तमान धरणा मस्तिष्क ऊँचाई गहराई या काई और प्राची इतमेंस कोई भी हमें परमेश्वर के प्रेम में धनग नहीं कर सकता। यही प्रेम हमारे प्रभु ईसा में बिब्रमान है।"

ईसा के जीवन और उपदेशों के साथ 'नरक-धरणा' सिद्धांत का कोई साम्य नहीं

१. यदि मैं जबर उठकर सर्व पदुषू तो नू बदाई।

अदि मैं नरक में पहुँ तो धरणा लुबा ली है।" बरुन-संविद्या १३१ =।

२. धम्म VIII ३८-३९। धरणाईय का कथन है "यदि तुम्हारा मित्रत्व मेरे मीत्र न होय तो मरा धरणा ही न होय। फिर मैं क्यों बहूँ कि तुम मेरे सर्वगत धरणा ? धरणा, इ भिरे धरणाकर यदि तुम मेरे मीत्र मित्रत्व न करोमे तो मैं क्यों का नरद्वैय देता धरणा ही न पर धरणा ? धरणा यदि तुममें मैं न होय तो मैं मरा केसे धरणा न होय। क्योंकि तुम्हेंमि धरणा बरुणुं मित्रि है, तुम्हेंमि मरी बरुणुं की मृष्टि हुई है। और तुम्हीं मरा बरुणुं के मरुंक हा। मैं तो तुममें ही हूँ, फिर तुम्हारे धाम मैंमे धरणा ? या तुम मेरे धरणा बना। मैं धरणाकोम ? क्योंकि सर्व और धरणा के धरणा मैं धरणा धरणा, धरणा तुम मेरे धाम धा मको इ परमेश्वर, तुम्हीं तो धरणा कि 'मैं' सय और तुम्हीं में धरणा है।" 'परिचय' C. C. XXXII.

बासे की धासा का पासन और उसके कार्य की सम्पत्ति।" हममें से प्रत्येक को ईश्वर द्वारा निर्धारित अपने कर्तव्य के प्रति सजग रहना चाहिए।

बुद्धि का विकास मायाजाप से मुक्त होने पर ही होता है, फिर भी जीवन की क्रूरता को मायमता और घसट् की स्वीकृति कभी नहीं की गयी। हमारे लिए उपदेश है कि हम अपने पड़ोसी को प्यार करें। किन्तु उन पापी समझकर प्यार करने का उपदेश नहीं है बरन् उसमें विद्यमान ईश्वर के लिए मानव समझकर प्यार करने का है। सेंट पॉल ने भिक्षा का "प्रास्था प्राणा और प्रेम तीनों का निवास है, और तीनों में प्रेम सर्वोत्कृष्ट है।" "प्रेम स्वकृपा की सिद्धि है।"

ईसा ने एक सार्वभौम नीतिकृता की घोषणा की है कि सभी मनुष्य बन्धु हैं एक ही 'पिता' की सन्तान।^१ 'युद्ध समाप्त' के बुट्यान्त में ईसा ने पड़ोसी की नयी परिभाषा दी है। हर धार्मिकताग्रस्त प्राणी और हर प्राणी बिकरौ सहायता करने की सामर्थ्य हममें है। हमारा पड़ोसी है। सेंट पॉल ने कसीम्बीज गणित गुरु के प्रति ब्रजम से उद्धरण दिया है 'हम उसीमें जीवित परिचासित हैं उसीमें हमारी सत्ता है। क्योंकि तुम्हारे कुछ कवियों ने कहा है, 'क्योंकि हम वास्तव में उसकी ही सन्तान हैं।' 'ईसा का उपदेश है "अपने अनुभवा से प्रेम करो अपना दुःख चाहनेवालों का भसा चाहो। अपने दुःख करनेवालों का भसा करो अपने सहायकों के लिए प्रार्थना करो। तभी तुम अपने स्वर्ग-स्वर्ग 'पिता' की सन्तान बन सकाये।" सेंट पॉल का कथन है 'ईसा न पहुँची है न नूतनी न बर्बर न साइबेरियाई नहु न वात न स्वतन्त्र। फिर भी ईसा नापक एक व्यक्ति हैं वे सब सजाहित हैं।' 'वे छोटे अन्तर घसमत हैं क्योंकि जीवन सम्पूर्ण और प्रविभाज्य है। इस एक-बुधरे के धरा है। ईसा का कहना है कि हमें सम्पूर्ण मानवता का उत्तरदायित्व ग्रहण करना चाहिए। देश-विदेश के निवासियों को

(IV १४)

२ रोमस XIII १०।

३ मैथ्यू XVIII १)

४ रोमस XVII २०।

५ मैथ्यू V ४४। XXVI ३२ भी देखिए।

६ 'कोलोसिकम्' III. ११। टायमोटिक का कथन है "हमारे काम की हर मनुष्य-मरण कथना है जो हमारा ध्याय के साथ अन्तर्गत एक है और अन्त के अन्त अन्त-अन्त अन्त के अन्त है। हममें न हम अन्त ही जाने हैं। न ईसा के उपदेश अन्त अन्त के अन्त के अन्त के अन्त है। किन्तु हर अन्त अन्त अन्त ही अन्त अन्त अन्त का अन्त अन्त ही है। न-कारणों के अन्त 'अन्त अन्त अन्त अन्त' (२११४) में अन्त अन्त 'अन्त अन्त अन्त अन्त अन्त' II १४ का अन्त अन्त अन्त अन्त।

संस्कृतियों का घटनमिन्न कोई प्रसंगीय आधार नहीं बल्कि व्यापहारिक वास्तु विद्यता है।

ईसा के जीवन से प्रभावित होकर अब कुछ लोग म ऊँह ईवी प्रवृत्त मानने की प्रवृत्ति जायी ठा 'मोमोस' सिद्धांत ने उनके विश्वास को ठरकसयत रूप प्रदान किया। पॉल के पत्रों में संसार और इतिहास क साथ ईसा के सम्बन्ध को ईस्वीय विवेक और उसका प्रत्यक्षीकरण माना गया है। जॉन ने इस दृष्टिकोण को और विकसित रूप दिया। ईवी 'मोमोस' अन्तकाल म वर्तमान है और ईस्वर के साथ मिलकर एव इकाई का निर्माण करता है। यह उसकी आत्मविभक्ति का साधन है। यह संसार ईस्वीय 'मोमोस' परमेश्वर का विवेक प्रयत्न विचार की विभक्ति है। इसका विज्ञापन मानव के मस्तिष्क में विशेषतः ईस्वरवाणीप्राप्त मनुष्यों पैगम्बरों और साथ के प्रति जागरूक किसी भी देश के लोगो के मस्तिष्क में जाता है। मनुष्य के मस्तिष्क में इन उपघाटन का समुचित परिणाम नहीं मिलता और मनुष्य ईस्वर के समान बनने की विद्या में प्रयत्न न कर सके। इसीलिए ईस्वीय ज्ञान की ज्योति एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व में प्रस्फुटित हुई। 'मोमोस' हाइ मांस का खरीर धारण कर हमारे बीच आया और हमने उसकी महिमा देली। " 'मोमोस' द्वारा ईस्वीय ज्ञान का प्रकाशन सर्वप्रथम सृष्टि में हुआ" फिर मानव जाति में फिर पैगम्बरों में और अन्ततः ईसा में।

हम कुछ भी कर ईस्वर का प्रेम हमपर सर्वत्र यत्न रहता है। सट पॉल का कथन है 'क्योंकि मुझे विश्वास है कि मृत्यु, जीवन फिरसे प्रमानताएं पकितया वर्तमान प्रवृत्त अविष्य ऊँचाई यहराई या कोई और प्राणी इनमेंसे कोई भी हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकता मही प्रेम हमारे प्रमु ईसा में विद्यमान है।"^१

ईसा के जीवन और जयदेशों के साथ 'नरक-अग्नि' सिद्धांत का कोई साम्य नहीं

१ यदि मैं ऊपर धरकर स्वर्ग पहुँचू तो तुम्हारा है।

यदि मैं नरक में रहूँ तो धारण करने तुम्हारा भी है।^{१०} 'मजक-संहिता' १३३ =।

२ पैगम्बर VIII १८-१९। बर्गेनियन का कथन है : "यदि तुम्हारा निवास मेरे पीछे न होना तो मेरा अस्तित्व ही न होता फिर मैं क्या चाहूँ कि तुम मेरे समीप आओ ? इसविषय में मेरे अत्यन्त यदि तुम मेरे अन्तर विषय न करने तो मैं क्या कर न रहा मेरा अस्तित्व ही न रहा अत्यन्त। अन्तः यदि तुममें मैं न होना तो भी मेरा कोई अस्तित्व न होता क्योंकि तुम्हीं सारी वस्तुएं निर्मित हैं, तुम्हीं सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई है और तुम्हीं सारी वस्तुओं के संचालक हो। मैं तो तुममें ही हूँ, फिर तुम्हारे पास कैसे आऊँ ? वह तुम मेरे पास आओ से क्या कहो ? क्योंकि स्वर्ग और नरक के बाहर मैं क्या आऊँ, क्या तुम मेरे पास आ सको दे परमेश्वर तुम्हीं तो कहा कि मैं स्वर्ग और नरक में परिवर्तित हूँ।"^{११} 'बर्गिस C. C. XXXII.

है। ईसा कहते हैं कि हमारे बंधु बाहे 'सात के सत्तर मुने बार्'। हमें बट्ट पहुँचाने हमें उन्हें क्षमा कर देना चाहिए। ईसा की क्षमासा यह है ता फिर परमेश्वर की इच्छा भिन्न नहीं हो सकती। यदि ईश्वर निरन्तर नरक-भूमि के लिए उत्तरदायी है तो निरक्षय ही उसमें कुछ धरती होया। यह सत्य है कि हम स्वतन्त्र हैं किन्तु मानवीय स्वतंत्रता का उपमाय करने के लिए धावस्तक तो नहीं कि परमेश्वर का क्षमापनी करण कर दिया जाय यदि हमस ब्याप्तता बरतने की घाटा की जाय तो घाब ब्यक्त नहीं कि हम ईश्वर के प्रति सहृदय न हों। "क्योंकि बहु शब्दों और दुरे दोनों पर अपने पूर्व की रोसनी क्षमकता है तथा ग्यायी और शम्पयी दोनों पर अपनी बर्ण करता है। यदि नरकवासी सर्वत्र ईश्वर का बिरोध करने में समर्थ है तो बहु पञ्चाताय और परिवर्तन में भी अपनी स्वतंत्रता का उपभोग कर सकता है।

अभिमान धार बूजा से हमारा स्वभाव बाहे बितना कमपित हो चुका हो हम अपने भीतर बिदग्धित बेवस्व को समाप्त नहीं कर सकते। यदि हम परमेश्वर हर अपह नहीं बख सकते तो फिर कहीं नहीं देख सकते। एक बानिक ब्याख्या के अनुसार ईसा की मानवता सम्पूर्ण मानवता की प्रतिनिधि है, और ऐतिहासिक ईसा ही नहीं समस्त मानव-जाति को इस 'अवतार' का साम मिलेगा। संसार का समस्त संदर्भ न कहा है "परमेश्वर इसलिए मनुष्य बना कि मनुष्य परमेश्वर बन सके।

दूसरे मतानुवायी किन्तु शब्दार्थ में बिदबास रखनेवासे व्यक्तिओं को भी ईसा अपना मित्र मानते हैं। कुछ लोगों ने ईसा से पूछा कि क्या निर्दोषों को भी ईसा न शब्दार्थ बरतने देना चाहिए तो ईसा ने उत्तर दिया "जो हमारा बिरोध नहीं करते हमारे सहयोगी हैं। यह पोल के शब्दों में बर्ण 'सभी के लिए सब कुछ होता चाहिए। इन्हे सभी आत्माओं पर समान पद्धति की न ता घाटा करनी चाहिए और उन न पापना चाहिए।

महानतम ईसाई शम्पारवादी इस मत को स्वीकार करता है कि हम परमेश्वर की प्रकृति का सकारारमक प्रयत्नीकरण नहीं कर सकते। सेंट टॉमस एक्विनास का कथन है ईश्वी भावना के ब्यबहार न माने का मुख्य बंध परित्याग का है। कारण अपनी बिद्यामता के बस पर बहु भावना हमारे ज्ञान की सीमा के भीतर के सारे धाकारों से परे हो जाती है इसीलिए, अपने ज्ञान श्रांग उसका स्वकप नहीं जान सकन।" पुन 'परमेश्वर की जानने का रंग है उने न जानना हमारे मरिणक की

१ 'मैथ्यू XVIII २१।

२ 'मैथ्यू V ४२।

३ 'दुग्ध केन्सा कर्त्तव्य' I XIV।

सीमा से परे परमेश्वर के साथ संयोग करना—जब मस्तिष्क सारी चीजों से घ्रमम हटा जाता है स्वयं को भी त्याग देता है और फिर परमेश्वर की परम-व्यक्तिर्मम किरणों में लय हो जाता है। परमेश्वर के परिचय की इस अवस्था में हमारे ज्ञान से परे की ईश्वी ज्ञान की रहिमया मस्तिष्क को घामोचित कर देती है क्योंकि उस परमेश्वर को पहचानना सम्पूर्ण सता में ही ऊपर नहीं बरन् हमारी ज्ञान की सारी सीमाओं से ऊपर है, और यह केवल ईश्वी ज्ञान में ही संभव है।^१

धम्म्यात्मवाद मोक्ष के लिए ध्रावस्थक निरिचय और मुठ विश्वासी पर धधिक बल देता है। इसमें बिररीत महानतम ईसाई बिषारक कहते हैं कि हम शीघे के धार पार धुंभसा-धुभसा देखते हैं और मुठतापूर्वक कुछ नहीं कह सकते। एक हार्ट का धपन है "निरिचय स्वकषों क भीतर परमेश्वर को खोजनेवासा ध्यक्ति स्वकष तो पा लेता है किन्तु उसके भीतर स्थित ईश्वर को नहीं प्राप्त कर पाता। जिधी निरिचय स्वकष में परमेश्वर को न खोजनेवासा ध्यक्ति उसे प्राप्त कर लेता है क्योंकि परमेश्वर उसके भीतर ही है और ऐसा ध्यक्ति परमेश्वर के बेने के साथ रहता है और स्वयं जीवन बन जाता है।"^२

ईसा के उपरोधों में तपस्या का पुट है, जो सभी सन्ध धर्मों का धर्म है। कसि एक साधन है जिसके बल पर मनुष्य धपनी प्रहति से ऊपर उठ सकता है। परमे श्वर के परबिद्धों का धनुसरण करने के लिए ह्ये सब कृष परिधाय कर देना चाहिए। "सिद्धि प्राप्त करन के लिए," ईसा ने कहा था "ध्रावस्थक है कि धपना सब कुछ बल डालो गरीबों को बे डालो तुम्हें स्वर्न में धपार धन-धमया मिल जाएगी।"^३ मिनके पूर्वी बर्ष में यह धामत्रण गंधीरतापूर्वक स्वीकार किया गया क्योंकि वहां साधुधों की उपस्थिति का उल्लेख है। सेंट एष्टनी (२७ ईसवी) ने एकाकी जीवन धारन किया बे मरूमि में एक क्षामी मकबरे के भीतर जा बैठे और इसी तरह बीस साल बिता दिए। सेंट धबानासियस कृत 'भाइक धाक सेंट एष्टनी' के सेंटिन धनुबाब द्वारा मठबाब परिचय पहुँचा।

पूर्वी रोमक साम्राज्य के उपस्थियों ने एक सूकी (मिस्टिक) धम्म्यात्म का प्रतिपादन किया जिसमें ईश्वर के साध्यात्कार और ईश्वरत्व-संयाग पर बल दिया गया है। हममें न प्रत्येक को एक नयी दुनिया का संरिधबाहक बन जाना चाहिए, जो धमी धबनमी है किन्तु धग्य के लिए कतह धबस्य रही है।

ईसा का सम्पूर्ण जीवन और उनके सिद्धांठ इनने स्पष्ट है कि उन्हें यहूदी

^१ कसेट इ रिभिडिय नॉमिक्लिस्त VII १.४।

^२ 'इंडीरिचय' CX. VII

^३ मैथ्यू XIX. २१।

अथवा यूनानी विचारों का स्वाभाविक विकास नहीं माना जा सकता। स्वर्दीप ही एक देश है जो भारत की आदिम विभूतियों की साधुता से प्रत्यक्ष प्रभावित होकर सोचने लगे थे कि ईसा का सौंदर्य अथवा भारत से अनुप्राणित है। उन्होंने रबीन्द्रनाथ ठाकुर को मिला था

इतिहास के अध्ययन से मैंने समझना प्रारंभ कर दिया है कि ईसाई धर्म स्वतंत्र सेमिटिक उत्पत्ति का नहीं है किन्तु हिन्दू विचारों और जीवन से उत्पन्न है। 'ईसा मुझे अद्भुत दुर्लभ सुन्दर पुष्प-से लगते हैं, जिसका बीज उड़कर अंधार विदेशी भूमि पर जा पहुँचा है। इस तथा अनेक अन्य जगों में भारत विश्व इतिहास की महाजगती है। यहूदी क्रियाएँ ईसा स्वभावतः अपनी देवी प्रकृति के एक अंश के रूप में वैश्वव्यापी प्रकृति के आदर्श को जो मूलतः हिन्दू धर्म से सम्बन्धित है, मानने लगे थे। उनमें सार्वभौम कल्याण और सार्वभौम सहायता की विनया प्रमाण हमें गैलीलियोई पहाड़ियों पर 'कॉरि' पर बढ़ने की योजना में मिलता है।

"इस मुख्य विचार-विन्दु का अनिर्धार्य परिणाम यह हुआ कि हम सत्कार के उत्कृष्टतम धर्मों को एक पैर की छानाओं के रूप में देख सकते हैं। इसका अर्थ यह कि मेरी भाषा एकाकी होती क्योंकि ईसाई विचार-विन्दु के सभी धर्मों को मुझे त्यागना होगा और पश्चिम के मरे परिचित और प्रती ऐसा करने की बात तक नहीं सोच सकते।" १ /

१ ब्रह्मसंहिता के अनुसार ईसाई धर्म का अर्थ है स्वतंत्र विचार ही एक देश है (१२४६) इतिहास के अध्ययन से मैंने समझना प्रारंभ कर दिया है कि ईसाई धर्म स्वतंत्र सेमिटिक उत्पत्ति का नहीं है किन्तु हिन्दू विचारों और जीवन से उत्पन्न है। 'ईसा मुझे अद्भुत दुर्लभ सुन्दर पुष्प-से लगते हैं, जिसका बीज उड़कर अंधार विदेशी भूमि पर जा पहुँचा है। इस तथा अनेक अन्य जगों में भारत विश्व इतिहास की महाजगती है। यहूदी क्रियाएँ ईसा स्वभावतः अपनी देवी प्रकृति के एक अंश के रूप में वैश्वव्यापी प्रकृति के आदर्श को जो मूलतः हिन्दू धर्म से सम्बन्धित है, मानने लगे थे। उनमें सार्वभौम कल्याण और सार्वभौम सहायता की विनया प्रमाण हमें गैलीलियोई पहाड़ियों पर 'कॉरि' पर बढ़ने की योजना में मिलता है।

गुणना कीजिये। निम्न सूत्रों में 'भारत भूमि' इत्यादि शब्दों की भाषा को और संस्कृत शब्दों की भाषा को भी; यह इत्यादि शब्दों की भाषा भी; अर्थों के द्वारा हमारे अतिशय अर्थों की भाषा भी; इनके द्वारा ईसाई धर्म में निहित अर्थों की भाषा भी; अथवा अर्थों के द्वारा अर्थों की भाषा भी। अर्थों की भाषा अनेक प्रकार से हम सभी भाषा है।"

द्वितीय व्याख्यान (उत्तरार्ध)

पश्चिम (२)

१ ईसाई धर्म में सत्ताधिकार विहास

पहली और मानवी शताब्दियों के बीच परिपक्वी रखा ने ईसाई धर्म की बीला से ली "समे पश्चिम के विकास में एक नया मोड़ आया। प्राचीन मनुष्य और ईसाई धर्म दोनों की अङ्ग मजबूती में पश्चिमी युग में धर्म का"। मिथित धार्मिक मस्त्राओं द्वारा एक अनीब गभीर आध्यात्मिक एक सार्वभौम आस्था यूनानी-रोमक संसार की आबस्थानाओं बिस्वाओं और आचारों के अनुसार बन गयी। इस सिद्धान्त को एक बुद्ध आचार पर एकमयन रूप दिया गया। राम ने अपनी व्यावहारिकता और मुसपटन-धर्म के रूप पर धर्म का संस्था का उपदेन में बदर की। ईसाई धर्म का हृदय तो पूर्वीय रहा किन्तु उसका मस्त्रिण आध्यात्म और धार्मिक मस्त्रिण, यूनानी-रोमक का गए।^१ मरत पूर्वीय आस्था तथा उसकी मूठी आध्यात्मिकता एवं एक और मानवीय बिचारों के बीच निरन्तर एक तनाव की स्थिति रही है। सिक्न्दरिया के कनीमें का बिचार है कि कार्टिन्थियाइयों ने ईसा का यह रूपन मूठी बिबेक धर्म का संस्था ईसाई धर्म के बारे में है "मैं कामना करता हूँ कि तुम्हारी आस्था बढ़ जिये मैं तुम्हारी परुष से बाहर की बातें तुम्हें

१ पात्रेपर कन्ट बीगर का कथन है : "यूनायिती ने ईसा" आस्था को मैट्रिणिक रूप दिख और ईसा सिद्धान्त का मन्तुन सिद्धान्त यूनानी मन्तुन का मूभि पर बलि दुष्य। विभिन्न मन्, सिद्धान्त और आध्यात्मिक विरक्तता यूनानी मन्तिक का रूप है और उनका इतिवृत्त बन बुद्ध हम प्रथम का है कि किमी अन्य कारण से उनमें के फिने गुण पैरा ही नहीं हो सकते। फिर सा इतना अल्प यूनानी धर्म में मन्तुन दुष्य बल्कि इतना म दुष्य का "सर्व धर्म के लक्ष्य करने संस्था के मन्तुन विभिन्न मन्तुन में बिबल का और अनेक मन् की अनीय विरिक्त सिद्धान्त-प्रकारी की। प्राचीन यूनानी धर्मनिका के बीहक टिकेला का इतनीय गुण के लक्ष्यताओं मन्तुन सर्व-धर्म के सिन्ता के अनुसार कए धर्मों में सिद्धान्त तो मन्तुन का मन्तुन फिर भी बने रही है किन्तु बिचार और मन्तुन दोनों की बलि हुई है। 'द बिबलमी बीहक मन्तुन का सिद्धान्त', (१९४७), पृष्ठ ३।

बता सकूँ।" "इससे वे हमें बताते हैं कि धार्मिक रहस्यों का ज्ञान जो परम
 भास्वा की धरणा है, सामान्य उपदेशों से परे की वस्तु है। 'धार्मिक रहस्यों
 का ज्ञान प्राप्त करने का उपाय फरिस्तों ने प्रतिष्ठित रूप से कुछ पात्रों-से धार्मिक
 बाबियों को बताया था वहीं से हमें प्राप्त हुआ है। फरिस्तों का कथन है 'परिवर्तन
 धर्मग्रंथों के बिचारों को अपनी भास्वा पर तीन प्रकार से विवर करना चाहिए
 जिससे सामान्य व्यक्ति की परिशुद्धि तो धर्मग्रंथों के (कहना चाहिए) 'धरि' से
 हा सके और कुछ उन्हाई तक पहुँच चुके व्यक्ति की परिशुद्धि धर्मग्रंथों की 'भासा'
 से। इसके प्रतिष्ठित निर्दोष व्यक्ति तथा ऐसे व्यक्ति की परिशुद्धि दूसरे प्रकार से
 हो सकती है जिसके बारे में ईसा ने कहा है 'हम पूर्वतः गुपी लोगों के समस्त विवेक
 पूर्ण बातें कर सकते हैं—धार्मिक धरणा संसार के धासकों के विवेक की बातें नहीं
 क्योंकि वे बिनासशील हैं। हम ईस्वर के प्रकाश विवेक की गुप्त विवेक की जिसे
 गुप्त पूर्व ईस्वर ने हमारे महिमा-वर्धन के लिए निश्चित किया था बात करते
 हैं। ऐसे व्यक्तियों की परिशुद्धि धार्मिक नियम से जो धनागत का संकेत करती
 है होती है। मनुष्यों के समान धर्मग्रंथ में भी धरि, भास्वा और विवेक गुप्त
 क्षीयते फरिस्तों तथा अन्य सत्ताओं के समान संत होनिवत में एक मौखिक गुप्त
 परम्परा की बात नहीं है जिसका उद्भव ईसा से हुआ और प्रसारण पैम्बरो
 द्वारा। संत जेजिस ने 'दो प्रकार की धार्मिक विचारों की बात कही है 'जिनमें
 एक सामान्य है दूसरी गुप्त और उनकी अपनी धरणा-प्रसंग 'साधन' और
 'गुप्त परम्पराएं' हैं।"

दूसरी शताब्दी में 'एप्लोसोबिस्ट्स' नामक कुछ लेखकों ने इस नये धर्म की पुनर्नी
 बांस के सर्वोत्कृष्ट धासों के अनुकूल जीवन-मार्ग और धरणा के रूप में प्रशंसा की।
 पॉस्टिन मार्टीयर का कथन है "जिन लोगों ने 'मोयोस' के अनुसार धरणा जीवन
 व्यतीत किया है वे सभी ईसाई हैं फिर बाह्य वे नास्तिक ही क्यों न कहें बाते हों। जिन
 पुनर्नीयों में मुरातत और हेपलनाइट्स।" संसार को बचाने के लिए परमात्मा

१. दे सिमितीव IV १. देसिज सिव न X. १।
 २. देसिज सिव न X. १।
 अनुसार (१६२४), पृष्ठ २३ २४।
 ३। 'ब्रजेसीटी' ४६। पुनर्नीय की विधि। धार्मिकीयः 'सब जिसे ईसाई धर्म कहा जाना
 है वह धरणा-प्रसंग में भी धरि मनुष्य-धरि के धरि से ईसा के रूप तक कभी भी अनुसर्जना
 नहीं रहा। तभी धरि में मीरुद सधये धर्म का नाम ईसाई धर्म बना।" 'दिसिपलन LXIII
 २। म मनुष्य के नास्तिक धरणा-प्रसंग कथन के निरोधन का कथन है। "ईस्वर ने सिविय
 शक्तियों में सिविय धरणा में अनेक पैम्बर और विवर धरि में 'दिसिपल सिविय धरि में ईसाई

की त्रिध बायीं ने ईसा के रूप में प्रकटार किया था वही बायीं पहले के युगों में ससार को शिक्षा देती थी। बायीं ने यहूदियों को ईश्वरीय नियम विषय और पुनामियों को बर्षन। अस्टिन सभी सत्याचियों का स्वागत ईसाइयों के रूप में करते हैं क्योंकि ईसा सत्य हैं।

ईसाई धर्म को हेनेमबाद के साथ मिथित करने के घनेक प्रयास किये गये जिन्हें 'ज्ञानमार्गी' ('नॉस्टिक' यूनानी शब्द 'नॉमिस से धर्म ज्ञान) कहा गया। 'धर्म अपनी ही मर्यादों को सुबुद्ध बनाना चाहता था इसलिये उस 'ज्ञानमार्ग' से लोहा सेना पड़ा और एक धर्मग ईसाई प्रख्याम को विकसित करता पड़ा।' सिरम्बरिया में एक समय प्लाटिनस के सहपाठी पॉरिजेन ने यूनानी बर्षन का महत्व स्वीकार करते हुए ईसाई सिद्धान्त के विकास में योग दिया। अस्टिन से पॉरिजेन तक कं नबपेटोबाद और धर्म के पाश्चरियों के ईसाई धर्म का सम्बंध धर्म के साथ धार्मिक या बर्षन और विज्ञान के साथ कम। कौन्स्टेंटायन के समय में ईसाई धर्म को राज्य की मान्यता प्राप्त हो गई और पियोसोसियस के शासनकाल में बहु साभ्राज्य का सर्वमान्य धर्म हो गया।

काउन्सिलों सहधर्मियों की धर्मभ्रुत होने के धपराप में बंदिता करने लयीं और इस प्रकार एक नई कृति बनी।^१ 'न्यू टेस्टामेंट' में सेंट पॉल उन सभी व्यक्तियों को धाप देते हैं जो (उनकी दृष्टि में) गलत इजीनों का उपरोध देते हैं।^२ टिमोथी के प्रथम एपिस्तल में जो भिन्नमतानुयायी धर्मोपदेशकों को सैतान ('सेटन') के गुपुर्व कर दिया जाता है।^३ सेंट जॉन की इंजीम में कहा गया है कि "ईसाई नियमा बली न जाननेवाला यह व्यक्ति धापपसूत है।"^४ निरिचय विरवास एक विधेय प्रकार से बने मस्तिष्कों में भीषण प्रतिक्रिया उत्पन्न करते हैं। इस 'मन्तिमुप (Apostolo ago) की मुख्य सिद्धांती धामुसम प्रेम की त्रिधके स्थान पर धधमी

की पूरक निम्न ऊंचे से की जाती है और उसे निम्न जानो से पुकरा जाता है। 'ध' पेश से संकाईशिया किरैरे पंचम (१४२९) का धधराय विरद कलक कलकरी १९२४ पृष्ठ १ ६ में।

१ 'बीबी एलएन' के एक मसुदा ईसाई पन्थेवासी धधरा के सेर मेमरी का कल्पन है: इस धिक्कस से धधिक निरिचय धूराधियों में कुछ नहीं है कि धर्म का सार सिद्धान्तों में है। बीकर क्ल 'धू मैथिस देर लिपिबोली (१९४३), पृष्ठ ९।

२ 'बीबी एलएन' के सेर जॉन क्लरकोर्टम के साथ धुपना धधिर "धर्म को अपनी माध स्वीकार किये निरद धाप करमेकर को कल्पना किये नहीं कहा सकते।'

३ कैलाटिकस L. ८।

४ I. १।

५ VII. ४६।

हीन घटावियों में मुसलमन प्रभुता के बंधन की स्थापना हो गई जिसमें धार्मिक बंध देने का विधान भी शामिल था। प्रभुता पश्चिम और धर्मनिरपेक्ष थी किन्तु धार्मिक विरवाह के घट्य रूप के प्रति प्रसहिष्णु थी और उसका मारा वा 'बो मेरे साथ रही है मेरा दुश्मन है और जो मुझे मिलकर नहीं रहेगा मरूट हा जायगा।'^१

रोमक साम्राज्य में समाज का निर्माण नहीं किया। सभी नागरिकों को बांधने वाले समान धारण सामाजिक उद्देश्य मयथा धार्मिक सिद्धान्त नहीं थे।^२ उसमें मनुष्यों का एक विधान समुदाय-मात्र वा एक धारणहीन कुछ। सम्राट की सरकार रोमक विजयों का शिलीना-मात्र यह गई राजनीतिक मुख्यवस्था कायम करनेवासी सरकार नहीं। साम्राज्य का जितना अधिक विस्तार होता गया साम्राज्य के प्रति भावनाएं उतनी ही कम होती गयीं। धार्मिक धर्म और बाह्य भावनाओं से धार्मिक विधान मुक्त पर एक केन्द्र से शासन-व्यवस्था मुक्त रूप में बना सरलता मुक्ति हो गया। बर्नस्टेडाल ने क्रुस्तुलनुनिया को पूर्वी रोमक साम्राज्य की राजधानी बनाया और पांचवी शताब्दी का प्रलय होते-होते पूर्वी रोमक साम्राज्य पश्चिमी साम्राज्य में बिलकुल भ्रष्ट हो गया। धर्महीन बस घटावियों तक यह 'दूसरे रोम' के रूप में स्थित रहा। पूर्वी और पश्चिमी साम्राज्यों का विभाजन भौतिक विभाजन-समुद्रतमों और खाड़ियोंवाले यूरोप के प्रायद्वीपीय भाग और मुख्य महाद्वीपीय भाग के आधार पर हुआ। ईसाई धर्म स्वयं दो प्रकार का हुआ गया—पश्चिम का कैथोलिक और पूर्व का अर्थोडॉक्स। रोम और क्रुस्तुलनुनिया एक ही मस्तिष्क के भागीदार थे लेकिन मध्ययुग में सामग्री यूरोप की मेनाओं में क्रुस्तुलनुनिया पर अधिकार कर लिया और वे एक-दूसरे से भ्रमण हो गये।

२० - १ • ईसाई के काम में मुख्य पूर्व के हाथों में आ पहुंचा और पश्चिमी मस्तिष्क पूर्व में प्रभावित होने लगी। क्रुस्तुलनुनिया साम्राज्य के लिए यह बात

^१ कायरीन में मुसलमन की शक्ति "कई बार भी बर्खा है वा कुछ इस तरह वा उल्टे देने के लिए वह नहीं पूरा जाय कि उनका धर्म क्या है इनके आचार्य क्या हैं वगैरह पूरा जाय है कि वा किसे प्रेरित करते हैं।" "बर्नस्टेडाल VII. में प्रथम सिद्धि के अनुसार डॉक्टर मैथ्यू ने कहा था "ईसाई धर्म-शास्त्रों में गहराई का मतों धार्मिक दुर्भावना परिवर्तन वह दुष्प्रभाव को ईसाई को वर्धमान वा मान्य" रूप में। ईसा ने बहुत मजबूत करने मिली के समय वा समय था—उनके कारणों से हुए उन्हें परमाणु मकान। वह एक विशेष प्रकार के धर्म-शास्त्रों में शास्त्रों का मान्यता वा लक्ष्य ईसाई मनना करने लगा। रोमक धर्म वा शिवा करण के मिश्रण-सम्बन्धी धर्म में विस्तार वा धर्म को केवल शिवाही धर्म का ही बरतन वा था। टिप्पण रोमन सोवियती धर्म में दो धर्मों के अन्तर्गत (१२ ४) कुछ २४४।

करोने।" घान 'त्रिमुर्ति' (ट्रिनिटी) के सिद्धान्त सत्तों के सम्प्रदाय और 'ट्रिनिटी' के तीनों स्वरितों और सत्ता की मूर्ति-स्वापना के कारण ईसाईधर्म का प्राचरण स्पष्ट 'थोसह टेम्पलेंट' के विपरीत है। अनेक परम्परावादी ईसाई-विचारक इस प्रतिक्रमता से रष्ट होकर मूर्तिमंजक बन गये। एम्पीरा की काउंसिल (३० ईसवी) ने अपने सुद्धे नियम में गिरबो मे बिज प्रबर्धित करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। यूसेबियस (२६४-३४० ईसवी) ने कॉन्स्टेन्टाइन महान की बहिन कॉन्स्टेन्टिया की पवित्र मूर्ति बनाने से इनकार कर दिया। कॉन्स्टेन्टिया ब साइप्रस मयरी के बिधप एपीक्रेबियस (३१२-४२ ईसवी) ने एक गिरबे में परबे को इतमिए पत्रक दिया चूकि उसपर एक बिज काड़ा गया था। प्रमाण है कि अनेक सताधियों तक मूर्तिमंजन की साहूरी रही और अनेक लोगों ने एक नये धर्म की तैयारी शुरू कर ली थी इस सम्बन्ध में यहूदी धर्म के धारकों का पूर्वतया पासन करे।

इसके धार्मिक पश्चिम में ईसाई धर्मानुवायी कबिवादी विचारों में अनेकने और विज्ञान के धर्मों में 'संस्थापक के नियमों के पासन से अधिक बिज उनकी प्रकृति को समझने में लगाने लये।" ध्यान ईसाई धर्म से हटकर 'अर्थमैन्सिप' पर चला गया। कुछ ईसाई धर्म का प्रचार करने के स्थान पर सत्तार से बिरक्त हो जाना चाहते थे। धर्म सत्तार में एक नैतिक व्यवस्था स्थापित करने के पद्यगामी थे। धर्म के सिद्धान्तपथ से अधिक क्रियापथ में बिस्वास रखनेवाले लोग किसी नये धर्म की तलाश में थे।

सातवीं शताब्दी में उद्भूत इस्लाम की बिधेपनाएँ भी प्रौढिक एकेरबुवाय तथा मालवीय भाईचार पर जोर। अस्माह की भाषी अनेक पैगम्बरों द्वारा—बिज गुरुवा में अंतिम और महानतम पैगम्बर मुहम्मद थे—मनुष्यों तक पहुँची है। धर्मगुरुक कुरान अस्माह की मूक्तियों और उपदेशों का संकलन है। इसमें अस्माह की—बिजकी धाराधना के निमित्त प्रतिदिन नियमानुसार नमाज पढ़ी जाती है—इच्छा निर्हित है। इस्लाम में ईसाई धर्म की भाँति एक 'परम व्यक्तिगत सत्य' के

१ 'ब्रह्मसूत्र' XX. ४-५।

२. 'द टिचरान ऐंड दान फाद रोमन एन्डर' अन्वय ४०। धर्मियोय के अधिमन्त्रण मार्सेनिसमे से लिखा है : "सन्ट कालेरीडियस टिचर के एन्ज के प्रारम्भ में ईसाई धर्म किनुड धर्ममन्त्रण का, किनुड अपने धर्मविस्तार में जो कथन कर दिख। धर्म-मन्त्रणी धर्म-किनुड में अनेक नये धर्म का और अनुकरत नये धर्म के इच्छाविधि की धारणा कम। अनेक अनेकने धर्ममन्त्रण से ही दुः। किनुड का एन्जार्थ अर्थोडॉक्स करने का ध्यान में ही अनेक नये धर्म।" अन्वय में अनेकनी हल 'ब्रह्मसूत्र' एंड ० (११२४), एंड १२ में अन्वय 'दिल रोमी' एन्वय ११, अन्वय १३, बिधय १५।

बलाग की बात मौजूद है तथा जुहाबाद की भांति एक बृहद विश्वास कि अस्माह मनुष्य से अमम है। इस्लाम को ईसा का देवत्व स्वीकार नहीं। मुहम्मद यद्यपि सामान्य मनुष्य का बटा ही रहना चाहते थे फिर भी बाद के जीवनी लेखकों ने उन्हें 'ईश्वरीय ज्ञान का प्रवतार' ही कहा है।

अस्माह के साहचर्य की आवश्यकता मामूम पहले पर इस्लाम ने ईसा के सलीब पर चढ़ाये जाने का समकदा उदाहरण भी अभी हुसैन और हुमेन की गहाहत में बूढ़ निदासा तथा यही मानव योद्धा गियासों द्वारा बैरब के प्रवतार बना दिये गये। अस्माह की भरबी मानना सबसे बड़ा कर्नम्य है और उसकी मरबी के घाम मुक जानेवासे मुसलमान हैं जिनका इस्लाम का प्रचार करना और दूसरो को मुसलमान बनाना चाहिए। यही बेहाद का प्रीचर्य है। मुहम्मद (घाम के संसार की दृष्टि में) गलतियों प्रवता प्रपराओं के जिम्मेदार हैं किन्तु ये इत्य वास्तव में उस सामाजिक परिवेश के परिणाम हैं जिसमें मुहम्मद रहते थे और इनके लिए उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं है। वे कई मामलों में अपने समाज से थोठ हाठ हुए भी उसी समाज की ही सत्याग थे। अपने समय में अरब मूर्ति पूजकों और हेलेनीय ईसाई धर्म में प्रचलित प्रनकेसरबाद तथा मूर्तिपूजा से उनका वास्ता न था।

धर्मशास्त्रियों के धर्म्य तर्क-बितर्कों और 'ट्रिनिटी' के सवस्थों में प्राथमिकता प्राप्त करने के साम्प्रदायिक ऋणों से अनेक सोप इतने सुबध थे कि उन्होंने सहर्य सातवी गताम्बी के अरब विजयाओं का स्वागत किया। निस्टोरिया के एक इतिहासकार ने लिखा "अरब की सत्ता-स्थापना न ईसाइयों के दिन बस्त्रियों सप्रमने लये—ईश्वर इस सत्ता का मुबूद और समुप्रत करे। अनेकालिन कम समय में इस्लाम ने सम्बे-बीड़े अथ अपने प्रविचार में कर लिए। अविहृत बोना में कुस्तुनगुनिया साम्राज्य के कुछ भूमध्यसागरीय मूक भी शामिल थे। ईसाई धर्म का प्रथम विरोधी विजेता धर्म इस प्रकार इस्लाम ही हुआ।"^१

१ अरब इस्लाम का कथन है: "मुसलमान अस्ली अरब के समुद्र बगुरियों और ईसाइयों की विजया करने व कर्नमि ने अपने कैमर के पूजाएतों में आ करते थे। इसलिए मुसलमान समाज में अनेक अर-दुर्बियों को अस्तित्वी प्रवस्तक हो गई। अगम्य अर मुसलमान अथ का एक अरबक पर अर देश का एक राष्ट्रीय अर होख है और मानव-जीवन के अनेक क्षेत्र में अथ-अर्थिक होते हैं। वे अर ईश्वर और नस्ल मानव के सम्बन्ध हैं। —मुहम्मद निरम (१९१६) पृष्ठ ७२।

२. इतिरक के जलि इस्लाम को एक अरब धर्म समझने व किसीकी प्रतिपुत्रने कनों के अस्मता अनुकूल थी। दैविय, देवरी विरल हल 'मुहम्मद देव टालमेन (१९२४), पृष्ठ १४७ (अर्थ अरब देव अनामि)।

सन् १७२ में क्रांतिवी बिजेता कौटूर ने बम्बई में मन्दिब की स्थापना की। यह बिबि के लिए बड़ी महत्त्वपूर्ण घटना थी। पूर्व और कानून की शिक्षा ग्रहण करने के लिए छात्र नी सत्तार के कोने-कोने में बिचारी यहाँ धाते हैं। बर्मिवास्वीय गिराकेन्द्रो म धरस्नु क बर्मन का धीर अधिष्ठान प्राप्त किया जाने लगा क्योंकि यह ईसाई सिद्धान्तों के बिद्व मामूम पटना बा।

बुधारा क समीप सन् १८ ईसवी म बनने प्रबु धानी हुमेन इज्ज सीना (बिन्हें सैटिन भाषा मे 'बिबिसेना' कहा जाता था) का पूर्व और परिवर्तन दोनों पर बिबि प्रभाव पड़ा था। विस्सन धीर गैद्योम का मत है कि परिवर्तनी बर्मिबिचारियों बिरो पत' टॉमस एबिबिनास धीर इन्स स्कोल्स पर उनका गभीर प्रभाव है। रबिबेकेन ने उनकी बड़ी प्रशंसा की है। उनका बर्तन धाकार बस्नु तथा उद्देश्य में कर्मध धरस्नु प्लेटो धीर नबप्लेटोधाव कपण के समान बा। उनके बिचार से मबप्लेटो-बाह मे प्लेटा धरस्नु तथा पूर्विय बिचारा का सम्मिलन था। इबिसीना न स्वयं धनेक बिरोधी तत्वा को मिमाकर एक किया धीर इस्माम के धाधारभूत सिद्धान्तों के धनुकार उनका एक मधुर सामञ्जस्य स्थापित किया।

बारहवीं शताब्दी के सर्वोत्कृष्ट मुसलमान बिचारक ये कौटूरका के समीप के हुकीम धबेरोड (११०६-१११८)। उन्होंने धरस्नु पर बिबि टीकाए मिची। धरस्नु मे ही उन्होंने मानव-ध्यात्मा की धूर्तता का सिद्धान्त प्रहण किया। धबेरोड के धनुमार मानव के सभी प्रवर्तों का कर्त विना हुआ है धीर धबद्वय मिस्ता है। बधार्थीधरन हमारे बिबेक की समझ मे बाहर है किन्तु उतकी धी प्राप्ति समय की धीमाधा—बिबेके हम धबे है धीर को हमारी सामान्य बिचार-मयति की जन्म दात्री हैं—मे परे 'धमी धीर सदा हो जाती है। बिती बिषेय समय धीर सदा धधार्थ प्रकाश का धूर्त धातम्य समय क उस धैमाने के धनुमार नहीं है। सन्धा बिबेके हम परिधिण हैं। हमारी बिचारन की दिमा समय के इस धैमाने के साध-साध बनती है इसलिए नम धिन्न बुद्धिकोष को नमधना कटिन है। किन्तु धबेरोड के धनु मार हम इस धुन्नी बिबा का धात्रने धीर नमधने के बाद ही धातम्य की प्राप्ति कर सकन हैं। इनका धबं माध यही है कि हमे समय क प्रति धुन्ने बुद्धिकोष धनाचना चाहिए।

३ ईसाइयों के धमपुत्र

कन एनाम परिवर्तन म धैम तथा धीर गतिवा धान्तर पर धुनी का धाधि पाव हा तथा धीर 'गार्' गाभाज्य की पूर्विय राजधानी बनने में पत्र गई तब धर्मिधधारिया ('होली धी') ने एक प्रयाधमन को प्राप्ताहन किया बिबिध

इसका या स्वयं जब की एकता को पुन स्थापित करना को तुल्यतुल्यता के मन्त्रों के द्वारा १२८ में मज हो चुकी थी। तुर्कों का धारक ईसाई गठन पर बनना था रहा था और फिसिस्तीन पर साम्राज्य हिमात्मक बावों की व हानियां तुल्य फैल रही थी। इन बातों ने बढ़ावा दिया कि यह इत्य राह जाय। ईसाइया के लिए यन्त्रालय बहु पवित्र मपर था जहां ईसा ने जन्मे दिये उक्त रास पर बनाया और बकनाया गया। उनही भावना की कि उन भूमि पर उनका अधिकार किसी यन्त्रालय-बासी से कम न था क्योंकि उनके प्राधनता न प्रपद पाहू न उन पवित्र किया था। उनका विचार था कि 'सॉई' की वजह को बुधित करनेबाये और उनका अनुयायियों को बुधा करनेबास मुसलमान पीढ़ों न अपनी विरासत की रक्षा करना उनका कर्तव्य है। रोमन कैथलिक जब और और धर्मोद्वेष जब बातों ही तुर्कों को पराजित करने के प्रयत्न में एक हो गए। इस प्रकार ग्यारहवीं शताब्दी के अंत में धर्मयुद्धों (क्रुसेड) का प्रारम्भ हुआ।^१ पहला धर्मयुद्ध १०९७ में १०९९ तक जारी रहा। इसके फलस्वरूप यन्त्रालय को मेरुतुर्क तुर्कों के प्राधिपत्य में मुक्त होकर सिया स्याबिन्तु ईसाई उसपर अपना अधिकार रख न सके। सन् ११४४ ईसवी में तुर्कों ने एडेसा पर पुन अधिकार कर लिया। इसपर यूरोप के राजाओं को नये धर्मयुद्ध का आवाहन ११४६ ईसवी में किया गया। एक सभ्यत कर्तव्य तृतीय तथा बुई सभ्यत के नेतृत्व में लार्डीनिबों के भाग्य को बदलने के लिए दूसरे धर्म युद्ध का आयोजन हुआ। यह धर्मयुद्ध कन्यरबा के सेंट बर्नार्ड (१०९ - ११२३ ईसवी) की प्रेरणा में हुआ था। अनेक विपत्तियों के परचात् ११४८ ईसवी में इसका अंत हुआ।

तुर्की साम्राज्य साइरेनका से लेकर ईराक के इजिप्ट-पश्चिम तक फैला था और बगदाद के लसीय प्रशासिक क नाममात्र के प्रमुख में सत्ताधीन सारे साम्राज्य का शासक था। उनका निकटपूर्व के लार्डीनी उपनिवेशों पर शासनक मुक्त क्रिये और ११८७ ईसवी में यन्त्रालय पर अधिकार कर लिया। इसपर एक नये धर्म युद्ध का प्रारम्भ हुआ जिसमें सम्राट फ्रैंक बार्बररोसा तथा इंग्लैंड और फ्रंस के बार्बरसा सम्मिलित थे। बार्बररोसा कभी भी फिसिस्तीन नहीं पहुंच सका किन्तु जिनिय प्रॉबस्टम और रिचर्ड कोएर ब लॉबन ने ११९१ ईसवी में फिसिस्तीन के सटबर्नी मपर धाके पर अधिकार कर लिया। यन्त्रालय मुसलमानों के अधिकार में ही रहा। सत्ताधीन ने सीरिया और मिश्र के सटों पर मुसलमानों का प्राधिपत्य

१ 'क्रुसेड राष्ट्र का जन्म है लैडिन राष्ट्र 'कल्प' किन्तु धर्म है 'क्रुड'। ईसाई धर्म का लैडिन है 'क्रुड' तथा इस्लाम का 'दूब का बार्ड'।

लोक में उन्हें से अधिक महत्त्व प्राप्त हो बैसा स्वीकार किया। सेंट बर्नार्ड को स्वतंत्र विचारों से भ्रम था। उनके मत में सर्वकार के विचार वर्म के लिए पाठक थे इस-लिए वे उन विचारों के विरोधी थे। उनकी शिक्षण सिद्धान्त की कार्यसिद्धि में सर्वेकार के अन्तर्गत सिद्धियों को वर्मविरोधी मानकर उनकी प्रशंसा की।

ठेरुही और चौदहवीं शताब्दी में पाश्चिमात्य के अपने चरण के प्रतिनिधि के प्रसिद्धतम मैनस रोजर बेकन (१२१४-१२९४) टॉमस एक्विनास बोनावैट्ट मूर और इन्त स्कोटस। प्रसिद्धतम मैनस (१२०९-१२८०) और टॉमस एक्विनास (१२२६-१२७४) ने कहा कि ठेरुही शताब्दी के सभी अन्धे विचारक नूतनी धर्म तथा मुसलमानी केंद्रों तथा अस्तु विशेष अध्ययन का विषय था की ओर आकर्षित थे जो ईसाई धर्म में भी अन्ध सम्मिलित करने का प्रयत्न किया और मध्ययुगीन सिद्धान्तों में अस्तु को सम्मिलित कर लिया। अपने समय में उनका दृष्टिकोण प्राथमिकतावादी था और उन्होंने ईसाई सिद्धान्तों में नये प्राक्कृत दिए। बुर्भाव्यवचन नई प्रकृतियां पुनः प्रकृत हुई। कथलिक धर्म के अतिवृत्त धर्म का निर्माण ही पुनः म हुआ। इसके बाद हुए घोसम कॅथोलिसिज्म (१३ - १३९६) तथा वर्मन अध्ययनवादी एन्वहार्ट (१२९०-१३२७) टॉमर और मूरों (१३००-१३६६)।

मध्ययुगीन दर्शन का विकास वैज्ञानिक निष्प्रयत्ना के पुनः म हुआ। कुछ अल्प वैज्ञानिक शास्त्र अध्ययन में प्रवेश हुई और औद्योगिक व रसायन का उपकीर्ण अन्ध विज्ञान में किया गया—इसाइरवचन बुनुबनुमा और बाकर—किर घी सामान्य दृष्टिकाल में अर्थात्त्व के बाद ही विज्ञान प्राप्त था। मध्ययुग की बाद की शताब्दियों का दृष्टिकोण अतिव्यापक था। इस युग में ईसाई धर्म में प्राथमिक एकादी की कला का नूतन व सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक संस्थाओं का निर्माण हो रहा था जो अविष्य में बहुत समय तक अविष्य रहने लगे थे। यूरोपीय विचारक सामाजिकों तक अनीत में ही दृष्ट रहे और महामुम करते रहे कि सम्पूर्ण अन्ध ज्ञान अनीत में ही निहित है। मध्ययुगीन वैज्ञानिक उपलब्धि का आधार था मानवीय विचारों का पुनः प्राप्ति।

५ पुनर्जागरण

'पुनर्जागरण' शब्द का प्रयोग बारहवीं शताब्दी के पूर्व के संदर्भ में किया

विषय (२)

जाता है जब बौद्धिक सक्रियता लोगों पर की जाये। म. कानाइन व। जगत भूय ची
 चीन की युवाना चीर रोमरु संसार के इतने ग सीध माहात्म्य रत्न की विदय
 साजना। परब चीर बुन्दुतुनियुतिया व. मारो इत्यादि विषयों मन्थन रानिबन्धन
 पुनानी विज्ञान चीर बान के साथ स्थापित हा गया था। बुन्दुतुनियुतिया प्रवण
 मोर सिधिमि बुन्दुतुनियुतिया तथा विभिन्नान तत्र विषयमा गा साजना व। सीमा
 के विस्तार के कारण विषय पर उन प्रवण का प्रमिन्न बौद्धिक तत्र मामूतिर
 प्रभाव पड़ा। प्रमत्तक विषयमी ममार म बायीं परिचयन हुआ। इन सब म युगो
 को ए. नई हुतिया चीर नये मूख्यों का प्रभाव हुआ। पू. ए. न पुनानिया क
 बौद्धिक दुस्साहस तथा प्रवण की प्रवृत्ति को पू. ए. न प्राप्त कर लिया। परबि
 चीर महान पुस्तकों चीर महान विचारों में हुआ। प्राप्तायन का बाका इव तत्र बहारा
 व. सही मिया। मन्थपुगीत धर्म-शास्त्रिया म प्रवृत्त चीर प्रवृत्त म प्रवृत्त बनाया
 चीर इन प्रकार प्रवृत्ति के प्रवणन म तम व प्रवाण री मनाबना व। क्रम दिया
 परिणामस्वरूप उन्होंने ही वैज्ञानिक विकास मभी योग दिया। पुनर्जागरण व मन्थ
 परिणाम व मानववाद प्राकृतिक विज्ञान का उदय नई हुतिया की तात्र चीर
 धर्म-मुधार।

तेरहवीं शताब्दी में विरबिद्यालय की स्थापना हुई। बाइबली शताब्दी म ही
 शान्त क स्वरुपा का प्रारम्भ हुआ था। पर उन विद्या म बाबासा तत्र तथा
 बरब वा। वैमि उदार बसाधों चीर प्रमगाएन में प्रवण हा गया। विरबिद्यालय
 हर गया मे धार्मिक नियमन व प्रवृत्ति स्वतंत्रता बचाय रखने को उन्मुक्त व।

ज्ञान की पुनर्प्राप्ति का धारण इतने में हुआ चीर ची. ए. ही विषयमी प्रयोग के
 प्रवण भाषों में किय गया। टॉमस एक्विनास वैमिन् विरबिद्यालय म प्राकृतिक
 चीर प्रवृत्त पर एक पुस्तक के रचयिता व। टॉम (१-१५-११११) पादरी म व
 फिर भी उन्होंने अपनी महान कविता 'व. डिवाइन कमिडी' म धार्मिक समस्याधा
 को उदघरा। यह गुत्ताला है 'कमिडी' है। स्वाधीनता की राह पर चीर
 प्राविशण के निम्न संसार म हाकर ही जानी है।

ग्यारहवीं शताब्दी में संसार को एक गया स्वतंत्र प्रदान करने का प्रयास किया
 जा रहा था जो ईसा की १५५ के अनुकूल समझा जाता था। युवाना मानववाद
 मे इस प्रवण को बढ़ावा दिया। यह विचार कि ईसा का माहात्म्य इस पृथ्वी पर
 नहीं है त्याग दिया गया चीर गवाधियों तक विरब का कायाकल्प करने का बुद्ध
 निरवध बाधन रहा। जिनने उद्वेगल ज्ञान व प्रकाश क विरब मानव-मस्तिष्क को
 तैयार किया। इसन धर्म चीर संसार-मुधार क धर्म प्राप्त म परमवर्णन पर प्रवण

सांख्यिकता सीधे हो गई। दूसरी धार, पूर्वोक्त यूरोप का ईसाई धर्म पारसी विकृता और सांख्यिकता पर खोर देता था किन्तु उसका सामाजिक चरित्र पश्चिम के सीटल ईसाई धर्म के सामाजिक चरित्र से कहीं अधिक कमजोर था।

पेट्रार्क (१३०४-१३७४) धार उनके विषय जीवन के प्रति मानववादी दृष्टि कोण के हामी थे। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य था मानव की सक्रियता का विकास और धार्मिक शौचिक व सांख्यिक पूर्णताप्राप्त धारसं मानव की सिद्धि। मानव वादी ईसाई धर्म के विरोधी नहीं थे किन्तु उसकी दृष्टियों और साम्प्रदायिकता क कठार घासोच्छ्रय थे। वे व्यक्ति के अधिकारों तथा स्वतंत्र निर्णय तर्कपद्धति पर खोर देते थे तथा समाजिक के फलस्वरूप मिलनेवासे धाराम की मुक्तता में तर्क की निश्चितता को अधिक महत्त्व देते थे। इससे धारवादी होते हुए भी धर्म के जीवन से असन्तुष्ट थे।

सांख्यिकताही और पोप के नियंत्रण में इटली की मुक्ति के पश्चात् दांते और पेट्रार्क हुए थे। अस्तित्व और लाली (पश्चिमी और सामूहिक शताब्दियों में) के उद्भव के समय इटली ने ऐसी शक्ति की अधीनता मान ली थी। निकोलो मैकि-यावेली ने राजनीतिक सफलता प्राप्त करने की कला पर एक पुस्तिका 'प्रिं' (१५१६) लिखी। इस पुस्तक में स्याम प्रववा क्या का कोई स्वागत नहीं है फिर भी विदेशी सामन से मुक्त एक मनुष्य इटली का स्वयं प्रवस्य देना गया है। बुनानी साहित्य के अध्ययन का पुनः धारण हुआ जिससे पूनामी कला के प्रति गर्व बधि जाती। महान चित्रकारों में प्रथम वा गियाटो जो १५७६ में फ्लोरेंस के समीप एक बाघ में पैदा हुआ था। उसके पदवात् कई महान चित्रकार हुए, यथा बॉटिसेली (१४६६-१५१०) लियोनार्डो दा विंची (१५१२-१५१६) माइकेलान्जो (१६०१-१५६६) तीरियाँ (१५७७-१५७६) और राफेल (१५८३-१५२०)। उत्तरमध्ययुग अपने स्वागत क लिए भी इतिहास में प्रसिद्ध है।

पहले पुस्तक हाथ में लिखी जाती थी। अब मुद्रणवर्ध जैसे वैज्ञानिक साधन धार हुए जिनसे ज्ञान के प्रसार में निश्चित योग मिला। मुद्रित पुस्तकों से ज्ञान का प्रसार हुआ जिनमें एक नवीन तार्किक प्रकृति को जन्म दिया। यही प्रकृति अधिनायक मोनहबी जनाम्बी के प्रोटेस्टेंट धार्मिक गुहार के लिए उत्तरदायी थी।

१ धार्मिक सुधार

पोप-नीति ईगार्न पर्यावरणियों में अधिक से अधिक घन भांगनी थी। ऐसा था नाचनों पर कर लगाकर या धर्म के अधिनायकों की नियुक्ति तथा प्रत्येक नियुक्ति के समय अग्ना उद्भव करके दिया जाता था। इस पोप-नीति ने अतृणरूप

जॉन कैम्ब्रिज जिस आदर्श जर्म की कल्पना करते थे उसे मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने जेनेवा के छोटे-से नगर-राज्य में एक जर्म की स्थापना की। १२३६ में प्रकाशित अपनी कृति 'इन्स्टीट्यूटियो थिरेक्वाली रेसीजियोमित' में उन्होंने प्रोटेस्टेंट सिद्धान्त की व्याख्या की और जर्म सरकार की रूपरेखा प्रस्तुत की। कैम्ब्रिज का मत था कि मध्ययुग धर्मज्ञान का युग था और पोप मिथो प्रथम बेगरी महान तथा सेंट बर्नार्ड जिस सिद्धान्तों के प्रतिपालक थे वे सिद्धान्त सम्भे जर्म के दूषित परिचय थे। उन्होंने एक नई प्रकार की प्राधिकारिकता को जन्म दिया कि ईसाईयों में व्यक्त सिद्धान्त थिरेक्वाली और प्रस्थित है। धार्मिक सिद्धान्तों की पवित्रता को वैज्ञानिक उत्सुकता धमका नहीं मान से दूषित नहीं किया जाना चाहिए। उनके अनुयायियों को आश्चर्य—पर्याप्त प्रत्येक मनुष्य के लिए पूर्वनिश्चित है कि उसे मोक्ष प्राप्त होया या शास्त्रत यंत्रणा—माय्य था।

पेरिस थिरेक्वालीय म कैम्ब्रिज के समकालीनों में एक भयान स्वेनी प्रफसर, इग्नाटियस सोमोला थे। उन्होंने जर्म का बाना पहन लिया और इस प्रकार स्वेनी सेना का पास और अनुशासन जर्म की सहायताय प्रस्तुत किया। उनकी पुस्तक 'सिपरिचुपम एन्तरसाइजेड' लोगों के विवेक को विश्वास रिमानवाली पुस्तक नहीं थी उसका उद्देश्य तो लोगों को धार्मिकारिष्ठा और एहनशीलता सिधाना था। उन्होंने १२४० इसको में 'सोसायटी थॉरु बीसप' की स्थापना की। उन समय ने लेकर पास तक ईसाई जर्म जर्मों और सम्प्रदायों में बंट रहा है। वे सभी अपने सिद्धान्तों की व्याख्या और उनकी रक्षा के लिए संघर्ष करते हैं।

पुनर्जागरण के जर्मनिरपेक्ष मानववादी दृष्टिकोण पर शीघ्र ही धार्मिक-मुबार सम्बन्धी तथा धार्मिक-मुधार-विरोधी धान्दामन की रक्षियों और धारकाओं का प्रभाव हो गया। वे तर्कित गतिविधियाँ—नाम्निकारिष्ठी धमका कठिनायी—की धार्मिक ही थी। धार्मिक मुबार के कारण थिरेक्वाली के प्रति सच्चाई और राष्ट्रीयता की जायना का ज्ञान हुआ और इसका धमर सम्पूर्ण संसार पर पड़ा।

के अब वेदों में ही जिनमें मध्ययुग जर्मों प्राये सब जगत्—सबकी धर्मप्र करते थे। धारण मूलम और रोम ने ही क्लेर को सिन्धवा का कि मन्त्र का संग्रहण कैंने करवा जर्मिज मुद्र कैंने लाने थारिज और सिग्मन टाज् केन सिन्धिल करने थारिज।" की कैंनेरी 'पैरु टैट कार' मधवी धनुवार (१२३३), एड १२४। 'थैर थैर थैर' (१२३४) में सिन्ध करवा कैंने सिन्ध है : 'सिन्धकी थारुपी में क्लेर के मन्त्र थैरिज को थैर एक धारण में धारण करने को बरा धारण तो बरी बरवा होय कि क्लेरिज मन्त्र की उपरिन्ध जर्मिज थारिज थिरेक्वाली मन्त्र मन्त्र थारिज थैरिज में थिरेक्वाली बुद्धि कुं थैर धारण-धार धार्मिक मन्त्र—जिनका धारण था धार्मिक मन्त्र की जन्म धारिजों को बर धारिज संग्रहण का रूप बरवा—धार्मिक मन्त्र होकर थारिज लान।

७ प्रागुत्पन्न विज्ञान

भारत और चीन में प्राचीन और मध्य कालों में वैज्ञानिक विज्ञानों और विधियों को समझा तो प्रबन्ध जाता था । किन्तु उनका विकास उन देशों में नहीं हुआ और प्रागुत्पन्न परिचयों संसार में फैलीकिया हवाई केमामिपस समनर म्युटन तथा अन्य वैज्ञानिकों के प्रादिकर्ष के परधान् हा सथा । ईसा सन् की पहली औरह एउरानियों में यूरोप इस काल में चीन और भारत से भागे था ऐसा नहीं कहा जा सकता ।

प्रागुत्पन्न विज्ञान की परम्पराएँ प्राचीन और मध्यकालीन कालों की सामान्य प्रवृत्ति के प्रतिबन्ध में थीं । यूरान के विज्ञान का प्रागुत्पन्न प्राप्ति न था किन्तु था वह विज्ञान ही । उदाहरणतः धरत्यूका बुद्ध धन था कि र्धर्मपूर्वक लक्षेत्र विरी धर्णों के धारण पर ही परिणाम निकले जा सकत है । स्फूर्तिव्यम द्वारा प्रतिपादित ब्राह्मण का सिद्धांत वास्तव में गैमधी जैसे प्रागुत्पन्न विचारकों का पूर्वमात था । मध्ययुगीन कीमिजापरी और कलीग की वस्तुओं की प्रवृत्ति को समझने के प्रयास थे । प्रागुत्पन्न मन्त्रिक का दावा था कि बहु मध्ययुगीन विज्ञानियों में प्रवृत्त धरत्यू काव की नियमावली और भद्रमुक्त प्रवृत्ति में मुक्त है, किन्तु उन विज्ञानियों ने ही धरत्यू की मास्यनानुसार, विज्ञान की सच्ची प्रवृत्ति की प्राप्ति किया । पश्चिम काव के फलस्वरूप समूहों यथाय का नर्धमंगल विवेकन हुआ । इनमें नर्धयुक्त विचार-प्रवाही और पक्षपातहीन धर्मधन को बढ़ावा मिला मही दोनों बातें समूह वैज्ञानिक प्रवृत्ति का कारण बनीं । प्रोफेसर्ट कम-मुपार ने प्रवृत्ति क धर्मधन और धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति दोनों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया । उनका मत था कि धार्मिकताएँ सत्य की त्वात्र में धर्माधिकारियों के पक्षप्रदशन को न मानना चाहिए और इंजीनों की स्याख्या अपने अनुभवों की कर्तीगी पर कर्मी चाहिए । इसका धर्म यही है कि वैज्ञानिक सत्य की श्रेष्ठ प्राचीन कालों में नहीं बल्कि अपने अनुभवों में कर्मी चाहिए ।^१ वैज्ञानिक के अनुयायियों का मत था कि कुछ विगिष्ट

१ 'परिचय' केपिज ।

२ डॉमन और ने अपने ग्रन्थ 'द हिस्ट्री ऑफ द टॉकन सोल्युटी (१९९७) में ईसाई धर्म और धर्म सोल्युटी के लेखों की कर्मी करत हुए लिखत है: 'वे लेखों की धार्मिक दृष्टर क धर्म काव कर्त कर सक्त है। कर्तीक धर्म ने धर्म कर्मी के वेध में लक्ष्य किया दृष्टने ने धर्म के वेध में । दोनों न समर्थ कर्तीक के विरुद्ध सत्यतः धर्म कर्तीक को दृष्टि प्रतिबुद्धि में गुजरता पथा और कर्तीक ने धर्म-प्रवृत्ति के लिए नूतन कर्तीक का धर्मता सिद्धा धर्म ने द श्रेष्ठो कर्तीक दृष्टने में श्रेष्ठ के विरुद्ध समुदाय र्ध । कर्तीक के दृष्टने में ऊर्ध्व धर्म की धर्मसे कर्तीक—धर्मनूतन धर्मता का धर्मने और धर्मनूतन का धर्मता करने—का कर्तीक

व्यक्तियों के प्रारम्भ में ही मौल्य होता है किन्तु सीधे ही कहा जाने लगा कि प्रकृति कामों से व्यक्ति मौल्य प्राप्त कर सकता है। उन्हीं प्रकृति कामों में से एक वा प्रकृति का वैज्ञानिक अध्ययन। प्राकृतिक विज्ञान के उदय से सम्पूर्ण बृष्टिकोश बलवत् बिया। पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य से सोलहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग तक यूरोप में अिठने विद्यालय परिवर्तन हुए, उतने आंग्लो-लैटिन और मैक्रिमावेसी के बीच के एक हूबान बयों में भी न हो सके थे।

अष्टादशवीं की समस्वाधा में अिध के कारण पन्द्रहवीं शताब्दी में प्रसंगारम्भक धनोम का पुनरारम्भ हुआ। कोपेनिकस (१५७३-१५४३) के कापरिस्म के उदय से धनेकामेक विपुल धाकड़े भीभूष के। ये प्रेक्षण सोफान्थ मुलर (१५३६-१५७६) तथा मध्य सोपों ने क्रिये के। कोपेनिकस ने अष्टादश का उदय पूर्व की माना और पुन्नी को तीन गुणिया प्रदान कीं—प्रथमी बरी पर प्रतिदिन मूमना बर्ष म एक बार पूर्व की परिचया तथा (धनत चलन का कारण समझाने के लिए) पुन्नी की बुरी का हिनता (आइरेयन)। कोपेनिकस के पक्षपात् दाइको दाइ और कैपलर हुए। कैपलर के अनुसार पूर्व ही एक ऐसा प्राकाशीय पिण्ड था 'जो परम पितापरमात्मा के लिए उपयुक्त है, बसत कि वे स्वय एक अइ विधास-स्वान से संतुष्ट हो सकें और अपने कृपापात्र देखरूता के साथ वही खने को नैयार हों। वैसीतियो और स्मूटन ने कोपेनिकस के काम को धाक अइया। १५४३ ईसवी में वैसासियस ने शरीरशास्त्र पर प्रथम प्राभािक ग्रंथ प्रकाशित किया। वैसीतियो (१५३४-१६४२) ने लकोल के क्षेत्र म वापेनिकस के लकीम विचारों को विकसित करने के साथ-साथ यागिनी के अध्ययन में गणितीय प्राकौतिक विधि का प्रयोग किया। उन्होने तापक्रम की माप के लिए पहला तापमापी बनाया समय की माप के लिए पेंडुलम का प्रयोग किया और सर्वप्रथम बेंडुलम बड़ी का डिजाइन बनाया। दुर्गासिबदा उन्हें बच के अधि कारियों का कोपबादन होना पड़ा और कोपेनिकस-सिद्धान्त को मानने के कारण धर्म-बिराह के उपलक्ष से अिधित होना पड़ा।

स्मूटन १६७१ में रोमन सोसायटी के सदस्य बने पय। सुराकार्पक-सिद्धान्त में उनका संघदान प्रसिद्ध है। उनका सिद्धान्त का कि समय स्थान और गति परम राशिवा है। अइतबादी होने के कारण उन्हें नि एरुप्रकार का गणििक विवरवचना बादी बृष्टिकोश धानाया।^१ जो शताब्दियों से अधिक समय तक स्मूटन के ग्रंथ

अरुण। दोना का ही विचार है कि उनके पूर्वक लपनी कर लकने के अिध भी पूर्वियों के प्रति उनमें स्मृतिगत अरुण था। दानो ही लपना ईश के अवेस—'लकी लीओ का अनुभव अरुण करा'—अबवेसोने थे। उनमें अिनियों और अरुणियों में का मौल्य तक समानता है।

१ "अष्टादश शताब्दी और अन्त्यर्षी है अवे अवेस का सर्व अन्तिम के कारण ही

'त्रिनिपिया' के आधार पर ब्रह्मांड की यांत्रिक व्याख्या प्रस्तुत की गई और भौतिक विज्ञान का विकास किया गया। ग्लूटन के बारे में माइकल व ब्रह्मांड या "केवल एक ब्रह्मांड है और उसके नियमों की व्याख्या करनेवाला विश्व 'निहाम' में केवल एक व्यक्ति।"

ब्रह्मांड की घटावरी में इयनर का विज्ञान मुख्यतः प्रायोगिक का और वास्तव का विज्ञान मुख्यतः वैज्ञानिक। लॉरेन्ज (१७१९-१८११) और लाप्लास (१७४९-१८२७) ने यांत्रिकी और ज्वाल के सिद्धांतों का विकास किया और लवार्दिये (१७४३-१७९४) ने जोसेफ ग्रीस्ले (१७११-१८०८) जैसे प्रमुख वैज्ञानिकों के प्रायोगिक परिणामों का इस्तेमाल करते सामाजिक परिवर्तन का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। इन्स्टी हर्बी (१७७८-१८०९) और माइकेल कैरर के माय-माय रसायन और विद्युत् का विकास प्रारम्भ हुआ।

उन्नीसवीं शताब्दी को वैज्ञानिक युग की पहली शताब्दी कहा जा सकता है। इस युग के विचारकों ने प्राकृतिक व्यवस्था की एकता को स्वीकार किया और मानव को उमा व्यवस्था के नियमों और परिमितताओं के अधीन उमना एक घन मानना प्रारम्भ कर दिया। ब्रह्मांड की घटावरी में भ्रमरगात्र एक घन विज्ञान बन गया। चार्ल्स डार्विन (१७९७-१८७९) ने भ्रमरगात्र पर महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं यथा 'त्रिनिपत्य घोड़ त्रियोसोर्जी डॉन ऐन एटेम्प्ट टु एक्सप्लेन द फॉर्मर कैम्प्रेड घोड़ द मय नैज्म बाई ऐक्रेण टु कैंब्रिज नाऊ इन प्रोपेगल (१८३०-१८३१) और 'पेट्रिक्विटी घोड़ मैन' (१८६३)। चार्ल्स डार्विन ने अपना प्रारम्भिक कार्य भूतजशास्त्र में किया था और उन्होंने अपनी 'आत्मकथा' में लिखा है कि वे भ्रमरगात्र के अध्ययन के पश्चात् ही जीवशास्त्रियों के विकास-सिद्धान्त तक पहुंच मके वे यद्यपि विकास की प्रक्रिया का विचार उन्हें मास्पर के 'एमे प्राति परिणाम' से मिला था। 'द डिसेंट घोड़ मैन' के अन्तिम अनुच्छेद में उन्होंने लिखा था 'मानव यद्यपि अपने प्रयत्नों के फलस्वरूप नहीं ऊपर उठकर प्राचिन्म के मीन पर पहुंच सका है, न बाल वर उमना वर्ष घन्य है। और यह उच्च कि वह आधिकार से घीरं वर नहीं या किन्तु ऊंच उठकर पहुंचा या प्राणा का संचार करता है कि मूलर अविध्य में उमना प्रारम्भ उसे और ऊंचाई तक उठाया।" हर्बी बीच, एक घन्य संश्लेष जीवशास्त्रिक बालेन (१८२१-१९१३) ने 'प्राकृतिक चुनाव का सिद्धान्त'

समस्त श्रेष्ठ स्थान का सर्वक है—"सर्वे घनती लक्ष के कारण वह मान जतीन परस्व मन्त्रिक का मन्त्रे कल्पना का बानी इच्छातुम्पर चार्ल्स और इन प्रकार लक्षके घनती का निर्माण व पुनर्निर्माण का लक्ष्य है। मन्त्रे श्रेष्ठ के अर्थों के परिचयन की भी बानी अन्त्य इन्हीं मन्त्रे है।"

विकसित कर लिया। स्वतः सिद्ध मान लिया गया कि 'परिस्थितियों के सर्वाधिक अनुकूल प्राणी ही जीवित रह पाते हैं' के अनुसार प्रकृति तो प्राकृतिक है। हर्बर्ट स्पेंसर (१८२०-१९०३) ने स्वतंत्र व्यापार और धार्मिक प्रतिबोधिता की नीतियों का समर्थन 'प्राकृतिक चुनाव के सामाजिक हथ' में किया। डॉकिन के सिद्धान्त ने पारिस्थिकी और धर्म को बलमानुष के साथ सम्बन्धित बताया और इतने पर्यन्त धर्म को रक्षक माने लोग परेशान हुए। डिब्रॉयली ने १८९४ में कहा 'आध्यात्मिकता का साथ बिना प्रसा को समाज के सामने रखा गया है और जो मुझे प्रकृतिक विभिन्न मान्य पड़ता है, वह है क्या? प्रकृतिक है मनुष्य बलमानुष है या कृत्रिम? माई लॉर्ड मैं तो कृत्रिमों का पक्षपाती हूँ। मैं चुनाव और उपेक्षा से इन नये सिद्धान्तों का खंडन करता हूँ।

सामाजिक विरोधों के बावजूद, जीवविज्ञान और कृत्रिमव्याप्त में विकास सिद्धान्त का उपयोग किया गया। डॉर्मि मेन्डेल ने संस-परम्परा की प्रकृति पर शोध की (१८६३)। फ्रांसिस वास्टन ने मनुष्य के सामाजिक विकास में उत्तम प्रकार के योग पर जोर दिया (१८६७)। मिन्हेल्म बुद्ध ने अपनी 'प्रिंसिपल्स ऑफ़ क्रिडिबिलिटीज्मिकल साइकोलॉजी' में मस्तिष्क और शरीर की परस्पर-निर्भरता पर जोर दिया (१८७२)। वास्टर बैयहॉट ने विकास और प्राकृतिक चुनाव के सिद्धान्तों को सामाजिक रीति-रिवाजों और संस्थाओं पर लागू किया (१८७३)। इन सबसे मानव की उत्पत्ति और विकास-सम्बन्धी नये सिद्धान्त का प्रचलन हुआ। इनसे पहले टॉमस हेनरी हक्सले और जर्मनी में अल्फ्रेड हुकेल जैसे शक्तिशाली नेताओं ने इन सिद्धान्तों को लोकप्रियता तक पहुँचाने में योग दिया। जीव-विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के बीच में जोनेस मिस्टर (१८६५), लुई पास्च्यूर और रॉबर्ट कोच ने महत्वपूर्ण काम किये जिनसे बैक्टीरियल दृष्टिकोण को सामान्य और गुण-सम्बन्ध प्रयोगों को बढ़ावा मिला।

पार्लैट पार्लैट्टाइन ने जिनकी मनुष्य युद्ध समय पूर्व ही हुई है, दुनिया के बारे में हमारी विचारधारा ही बदल दी। वे अज्ञान को धार्मिक नहीं जीवित मानते थे। उनकी परना थी कि धर्म और ऊर्जा एक ही बल के दो रूप हैं। उनका 'सापेज्म' बाद 'स्पिटिबलजिज्म' में सहायक हुआ।

८ प्राकृतिक टर्नोलाजी

रोडन लोलायट्टा का जर्सेय वा 'प्राकृतिक बलुओं तथा प्रयोगों द्वारा सभी प्राकृतिक कक्षाओं, उत्पादकों, संबंधों और धार्मिककार्यों के बारे में ज्ञान का संबंधन करना। टर्नोलाजी मानव में विकास की सम्पत्ति है और स्वयं विकास

के विषयों और विषयों पर आधारित है। पश्चिम बंजन में टेक्सासोत्री कविताम के उदाहरणस्वरूप ब्राह्मण मुद्रण धार कृत्तुबनुमा के प्राविष्कारों का नाम लिया था। उन्होंने गेरुहों घनाश्यों के घनने नामरुधि रक्षण बंजन क त्रिनका मन था कि वैज्ञानिक विधि क उदाहरणस्वरूप प्राग्ग ठकनीकी प्राविष्कारों म प्रविष्य प्रपन्न मुद्रण हागा विचारों को घनना लिया था। अंतिम बंजन का बंजना था कि प्रकृति की वैज्ञानिक व्याख्या और उसके लक्षणीता नियमन क उपयोग में 'जमा' ऐस प्राविष्कार' संभव हो सकेगे 'जा मानवता की प्रावरणवशाओं को कम और संभवताओं का समापन कर सकेगे। मुद्रहों घनाश्यों में तानमापी दाबमापी दूर दर्शी घनुबीजन यन्त्र ह्वागन्न विद्युत् की मगीत और पेंडमम की घरी वैम उर करणों का विकास हुआ।

पत्रहृषी घनाश्यों में औद्योगिक क्रांति के युग में टेक्सासोत्री की प्रय उर लक्ष्मिनां सामने आई। पत्रहृषी घनाश्यों का मकने महत्त्वपूर्ण प्राविष्कार था मात्र का इंसान। मात्र उत्तरी अमरीका में टेक्सासोत्री प्रपन्न समुत्पन्न है और वह बुद्ध तथा पांडि के घनक विमालकाम उरकरण रीया कर रहा है। मात्र जावन की प्रामात्र समृद्धि तथा मानव शौर्य के विकास के लिए ही इन उपकरणों का उपयोग प्रयत्नित था।

प्रापुनिक सम्यता का नियन्त्रण वैज्ञानिक और लक्षणीकी विधियों के हाथ में है। प्रत्येक विधेयत्र विवेकपूर्ण व्याख्या की महान विधि की उत्पत्ति है और घनम्बहार भी। इसी विधि न प्राकृतिक विज्ञानों टेक्सासोत्री प्रायिक प्रतिपादिता और लक्षणीक प्रतिद्रष्टिता के साथ ग्यबन्धन करके प्रापुनिक औद्योगिक समाज का जन्म दिया है। इस विकास न युरोप के सामना और कृत्तु भा समाज को लक्ष्य कर दिया और विद्या उपनिवेदीय लक्षों को प्राकार प्रदान किया। वा विन्धयुओं में क्रांति का संशुपन विद्याइ दिया है, और टेक्सासोत्री की बुक्तियों का घनाना-बामे विद्याम लक्षों में लक्षी प्रतिद्रष्टिता है। काय्य स्पष्ट है। नामिनीय ऊर्जा के धर में मानव की लक्षों न समूर्ण मानव-सम्यता क विधर्म के उदाय रीदा का विदे है और एक ऐस प्रविष्य का प्रामात्र दिया है जा मानवता के मात्र क स्वर्ण से प्ये है। विज्ञान और टेक्सासोत्री क परिणामों को प्रमसमकारी उहयों को पूर्ण में सुगता विमय और टेक्सासोत्री की प्राम्या का ही प्रामसुर रूपिन करना होया वैज्ञानिक विद्या का उहय मानव क बुद्धिकोय और रक्षि को प्रबन क भीति क्रापों तक ही सीमित कर देता नहीं है। उसका उहय है मानवता की एकता में प्रति एक सहयाम जगता कौंकि वैज्ञानिक प्राविष्कारों में त्रिन मयाक सांकेय

को जन्म दिया है उनके द्वारा ही समूह बिनाश से मानवता की रक्षा यही प्रह्लाद कर सकता है।

१ प्राधुनिक बर्तन

वैज्ञानिक धान्धोलन ने मानव-मस्तिष्क को उजागर कर दिया है और दर्शन तथा बर्तन का अत्यन्त प्रभावित किया है। प्राधुनिक यूरोपीय बर्तन का प्राविर्भाव अत्यन्त तीव्र वैज्ञानिक सक्रियता के युग में हुआ है। कोसा के निबन्ध (१४ १-१४१४) ग्यार्हानो बूनो (१५४५-१९) और फ्रांसिस बेकन ने प्राधुनिक बर्तन की आधारभूमि तैयार की। दृष्टिकोण का केन्द्र ईश्वर नहीं रहा मानव हो गया। मध्ययुगीन बर्तन पादरियों का उत्पादन था और पूर्णतः ईसाई सिद्धान्तों के दामरे के भीतर था इसके विपरीत प्राधुनिक बर्तन अधिकाधिक बर्तनिरपेक्ष होता था और सामान्य जन द्वारा उद्भूत हुआ। विज्ञान की प्रकृति और परिदृश्यगत ही प्राधुनिक पश्चिमी बर्तन की केन्द्रीय समस्याएँ बनीं। फ्रांसिस बेकन (१५९१-१६२९) को मान्य था कि मानवता के जीवन में विज्ञान का कितना बड़ा भूमि हो सकता है। वे वैज्ञानिक विधि को प्रायोगिक और अनुमानहीन मानते थे। विज्ञान के लिए बलिदान का महत्त्व तो उन्हें स्वीकार था किन्तु विज्ञान और निबोधक (इन्डिक्टिव) तर्कधारण का संभव सम्बन्ध नहीं था। रॉबर्ट बासेटेस्टे और रॉजर बेकन ने किसी भी हुई विचारप्रणाली के आधार पर परिष्कार निरामने की प्रथा का विरोध किया और तथ्य-निरीक्षण गणित के प्रयोग तथा प्रयोग-विधि का समर्थन।

रेने डेकार्त (१५९६-१६५०) ने गणित के अध्ययन में प्रयुक्त गणितीय विधि का आधारभूतत्व करके प्राकृतिक क्रियाकलापों का यांत्रिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। किन्तु गणितीय-प्रायोगिक विधि की पहलूय माप-बोध प्रक्रियाओं में परे न थी। पदार्थ के माप-प्रयोग-गुणों, जैसे रंग, स्वाद, गंध, जो जालेन्द्रियों के चित्त-विषयक गुण समझ जाते या बाह्य संसार में जिनका कोई अस्तित्व नहीं है। इसके विपरीत तन्मात्रा यदि विस्तार प्रादि मापबोध्य गुणों को पदार्थ के प्राथमिक वास्तविक पदार्थ-विषयक गुण माना जाता था। डेकार्त के अनुसार सभी मापबोध्य गुणों का महत्त्व एक समान नहीं होता।

सहज बुद्धि से कुछ आधारभूत विचार भूमे से जितना प्रारम्भ करके गणितीय परिष्कार निकाले गये। ये हैं अदि विस्तार और ईश्वर। डेकार्त ने कहा था "गणि और विस्तार भूमे मिल जाय ता मैं संसार का निर्माण कर दूंगा। उनकी विचारप्रणाली का मुख्य आधार ईश्वर था। ईश्वर ने विस्तार बनाया और ज्ञान का पनि प्रदान की। ज्ञान में बलि या परिष्कार स्थिर है क्योंकि वह वैश्व

एक बार निर्माण के क्षण में मिला था। इस प्रकार दकाठ संवेग की अभिव्यक्तता के नियम तक था पहुंचे थे।

बेकन प्रयोगशील परम्परा के पोषक थे। दकाठ ने जोर देकर बताया कि यथिन का योग विज्ञान में कितना हो सकता है। उन्होंने यथिन की तकनीक में प्रमुख योग दिया और नियामक (ओप्राइटेड) ज्यामिति का प्राविष्टार किया।

दकाठ के मन में सभी भौतिक वस्तुएं यानित्री के नियमों का पालन करने वाली मानीं हैं। इन वस्तुओं में धकात्रनिक पदार्थ पीछे जानकर और मानव शरीर सभी को उन्होंने सम्मिलित किया था। दकाठ ने प्राप्याग्मिक संसार के अस्तित्त्व को स्वीकार किया है, मानव जिसका भागीदार अपनी आत्मा के बस पर बनता है। मानव ब्रह्मांड के यानिक और प्राप्याग्मिक दोनों रूपों में भाग लेता है। दकाठ के समय से यह ईशवाद यूरोपीय दर्शन का केन्द्र है। दकाठ ने अनुसार पदार्थ का नियंत्रण विवेक और विज्ञान द्वारा तथा आत्मा का नियंत्रण आत्मा और धर्मशास्त्र द्वारा होता है। इस ईश के वाक्यद्वारा दकाठ का विचार था कि मानव-मस्तिष्क अविच्छिन्न शरीर के प्राणिक क्रियाकलापों पर निर्भर करता है। अपनी कृति 'डिस्कॉर्म ऑन मेच' में दकाठ कहते हैं "शरीर के धर्मों की व्यवस्था तथा सम्बन्धों के साथ मस्तिष्क का इतना गह्रा सम्बन्ध है कि मानव को धाम से अविच्छिन्न युक्तिमान और प्रवीण बनाने का कोई उपाय अधिपशास्त्र में ही पाया जा सकता है और वहीं उसकी खोज होनी चाहिए।

दकाठ ने गणित की उपपत्तियों के समान स्पष्ट और स्वयंसिद्ध प्रमाणों से प्राप्यात्मिक प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया। उनका विचार था कि वे ईश्वर तथा ब्रह्म संसार की सत्तासिद्ध और मानव तथा ब्रह्माण्ड में पदार्थ और आत्मा के परस्पर-सम्बन्ध का विवेचन प्रस्तुत कर चुके हैं। एक बार सृष्टि के सृजन ने परचाए ईश्वर ने उसकी कार्यशीलता में व्यवधान नहीं बना। यह घोषणा गमत है कि ईश्वर ब्रह्मांड के विनानुहित कार्यक्रम में भाग लेता है। पास्कल वैज्ञानिक और धर्मशास्त्री दोनों थे और सृष्टि के परिचामन के लिए ईश्वर को जाने और बाह में हमेशा के लिए छुट्टी दे देने के विचार के लिए दकाठ को कभी क्षमा नहीं कर सक। कोई धारण्य नहीं कि रोम और वेरिस में दकाठ के धर्मों को निषिद्ध कोटि में रखा गया।

स्पिनोसा ने अपने अध्यात्मवाद की विवेचना के लिए ज्यामितीय विधि प्रय नायी। उन्होंने अपनी योजना का केन्द्रबिन्दु ईश्वर को व्यवस्थ माना किन्तु प्राकृतिक नियमों के अनुसार 'फोस्ड टेस्टामेंट' की व्याख्या करने का प्रयास किया। सन् १६५६ में बहुवी धमाब ने ऐम्सटर्डम में उनके काम को बर्मबिरोधी और धर्म

के लिए आतरनाक होने का अपराधी ठहराया।

जर्मन दार्शनिक लीबनिज़ (१६४६-१७१६) 'डिडरेन्डियम कैंस्टुलस के प्राक्किकारकों में से एक थे। उनके मत में अस्तित्व सत्य सारे परिवर्तनों धीरे-धीरे के नीचे बसा अग्रत्यक्ष कोई अपरिवर्तनहीन वस्तु नहीं है। परिवर्तन धीरे-धीरे का सिद्धांत स्वयं ही एक बात है। उनका मत था कि हमारी दुनिया सब सम्भव दुनियाओं में सर्वश्रेष्ठ है धीरे-धीरे अधिकतम व न्यूनतम के सम्बन्धों पर आधारित है जिसके कारण हम से कम व्यय करके अधिक से अधिक प्रभाव पैदा किया जा सकता है।

मॉर ने अपने 'एसे ऑन ह्यूमन प्रॉग्रेशन' (१६६०) में मानव-अस्तित्व को जन्म के समय कोरा कायदा बताया है जिसपर बाह्य संसार के उद्दीपनों का प्रभाव पड़ता है जिनके फलस्वरूप भावनाओं धीरे-धीरे विचारों का जन्म होता है। उनका दृष्टिकोण था वास्तविक बर्तन को मांगू करने का। बास्तेयर ने मॉर के बारे में कहा है कि "उनसे अधिक बख्शी तरह कोई नहीं सिद्ध कर सका है कि ज्यामिति के ज्ञान के बिना भी ज्यामितीय प्रकृति को कैसे प्राप्त किया जा सकता है। मॉर के मनोबिज्ञान के सिद्धान्त ने तीन महत्वपूर्ण समस्याओं को जन्म दिया (१) दृष्टि ध्वनि स्वाद स्पर्श धीरे-धीरे बंध के विभिन्न प्रभाव किस प्रकार मिश्रित होकर एक ही वेतना प्रदान करते हैं? (२) वेतना किस प्रकार भावना में बदल जाती है? (३) भावनाएं किस प्रकार परस्पर सम्मिश्रित होती हैं?

मॉर ने धर्म के मूल्य को अस्वीकार नहीं किया। कुछ शताब्दियों से बीजा निक बिशन धीरे-धीरे धर्मशास्त्रीय विचारों का सामंजस्य स्थापित करने के प्रयत्न हुए हैं। १६६६ में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने एक विधेयक पारित किया कि ईसा के ईश्वर को अस्वीकार करना बंडनीय अपराध है। किन्तु मनेक व्यक्तियों की निजी सम्मनियों परम्पराबादी न थी। यूरोप के विभिन्न भागों में धार्मिक सहिष्णुता विभिन्न मात्राओं में उपजी।

घायरमंड में मॉलीनों धीरे-धीरे बर्तन तथा फ्रांस में दिपेरो धीरे-धीरे क्रांतिशास्त्र ने मॉर के दृष्टिकोण का विकास किया। इस में ने अपनी 'ट्रीटार्ड ऑन ह्यूमन नेचर' (१७१६) में इस समस्या को उठाया कि भावनाएं किस प्रकार सम्मिश्रित होकर विचारों को जन्म देती हैं। अपनी इति में उन्होंने लिखा: "भावनाओं के संयोग के तीन नियम मान्य पड़ते हैं यथा 'आवृत्त्य समय सास्वान में 'घर्ष' तथा 'आरब्ध' या 'प्रभाव'। मनोबिज्ञान के ये नियम भीतिही में पाश्चिमी के नियमों के समानुष्य हैं।

ह्यूम धारमवेतन को माना नहीं बरन् मान मानते थे। उनके अनुसार धारम वेतन भावनाओं धीरे-धीरे प्रभावों की शृंखला है जो कल्पनाशील धीमेता से निरन्तर

घाते हैं और सदैव प्रबहुमान व पतिघीन रहने हैं। यदि धारमचेतन मानसिक घट नाशों का प्रवाह या बय मात्र है तो संस्तेयक प्रवृत्ति आन सम्भव नहीं। ज्ञान हमें एक पूर्ण इकाई के रूप में नहीं बरन् खंडों में प्राप्त होता है जिनका संस्तेयक धार स्वक है। धारमचेतन में एकता या विधिप्यता न हो तो ज्ञान सम्भव नहीं। ह्यूम और परिकल्पना के अनुसार ज्ञान संभव ही नहीं है। हम किसी निश्चय पर नहीं केवल संभाव्य परिणामों तक पहुँच सकते हैं।

ब्रिस्टरफ़ डब्लिड हार्टमी (१७०२-१७५७) ने १७४६ में प्रकाशित अपने ग्रंथ 'प्रीन्सिपल्स ऑफ़ मैन' में इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया कि ज्ञानेन्द्रियों पर पड़नेवाले प्रभाव किस प्रकार भावनाओं में बदल जाते हैं। चूंकि इन्द्रियों पर स्वभाविक रंग से प्रभाव हमें पड़ते रहते हैं इसलिए कोई भी एक प्रभाव सम्बद्ध भावनाओं की गूँथला का धारम कर सकता है।

इस सिद्धान्त का उपयोग फ्रांस में मानवता की सहाई के लिए किया गया। ब्रिजमन के समय सभी मनुष्य समान हैं (जैसा सॉक ने कहा था) वो उनमें भिन्नता पैदा होने का कारण है बाधाकरण का असमान प्रभाव। हेमडेविच (१७१२-१७७१) ने मनुष्यों में भिन्नता का कारण शिक्षा की असमानता को माना है और अपनी दृष्टि 'प्रीन व माईंड' में जोर देकर कहा है कि 'समुचित शिक्षा प्राप्त करके ही मानव मुझे और शक्तिशाली बन सकता है। बास्तेयर की दृष्टियों और बिबेरो की 'एन्साइक्लोपीडिया' की भी यही ध्वनि है कि ज्ञान ही मानव की प्रगति का आधार है। बास्तेयर ने लिखा था "बिबेक और उद्योगों की अभिकारिक प्रगति होगी मात्र प्रयत्नकर्ताओं का उत्कर्ष होना और मनुष्य को दूषित करनेवाले दुर्बुन तथा उनसे पैदा होनेवाले शपकारी पक्षपात राष्ट्र के साधकों में क्रमशः समाप्त हो जाएंगे।" बिबेरो ने कहा कि 'एन्साइक्लोपीडिया' के उद्देश्य हैं 'मृतम पर जैसे समस्त ज्ञान को एक स्थान पर एकत्र करना और इस प्रकार एक सामान्य विचार प्रणाली का मुबल करना जिससे बीते युगों की उपलब्धियाँ ध्वंस न होने पाएँ और हमारी प्राणामी पीढियाँ अधिक ज्ञानवान पक्ष अधिक मुभी और सम्पन्न हो जाएँ।

बर्किट और ह्यूम के संभाव्यतात्मक तर्कों का उत्तर काष्ठ ने दिया धारमचेतन के वर्तम्य को प्रमुख मानकर। काष्ठ ने धारमचेतन के दो विभाग किए बिद्युद्ध धारम चेतन या ज्ञाना प्रवृत्ति में और अनुभववात्मक धारमचेतन या ज्ञान प्रवृत्ति 'मुझे, मुझमें, मुझको'। धारमचेतन ही खंड-खंड और क्रमशः प्राप्त धारमचेतन की संस्तेयक करके ज्ञान-वस्तु तैयार करता है। काष्ठ के अनुसार ज्ञान-सम्बन्धी क्रिया कलाओं के तीन स्तर हैं प्रतिबोधन के स्तरों से सम्बन्धित, 'सौन्दर्य-विषयक' मेधा की आरंभों से सम्बन्धित 'विस्तृत-आत्मिक', बुद्धिपरता से सम्बन्धित 'वाकिक'। मेधा की

धारणाएं ही मस्तिष्क की सृजनात्मक प्रकृति का अनुभवों का निर्माण करती हैं जिनके बिना अनुभववात्मक जगत् का ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। वे मस्तिष्क की एकीकरण-प्रवृत्ति के ठर्क-संगत प्रयुक्त रूप नहीं बन सकीं प्रकाशित हैं। अनुभव बहुत होने पर ही धारणाओं का उपयोग हो सकता है। इन कारण-कार्य विज्ञानों का परास्पर उपयोग गम्य है। उनके ही अनुस्यू अनुभववात्मक जगत् ब्रह्म होता है। अतः ज्ञान अनुभव जगत् तक सीमित है। वस्तुओं के वास्तविक रूप का ज्ञान उनसे नहीं प्राप्त हो सकता।

मेधा की धारणाएं अनुभव को व्यक्त करती हैं। इसके विपरीत बुद्धिपरता परास्पर है। उनके उपयुक्त वस्तुओं का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं किया जा सकता। वे वास्तव में विचार के इतने ऊंचे स्तर हैं कि इन्द्रियशास्त्र अनुभवों के रूप में व्यक्त नहीं हो सकते। वे धारणाएं हैं स्वप्न हैं, जिन्हें त्यागना नहीं जा सकता। बुद्धिपरता के उपयुक्त वस्तुओं का कोई 'विज्ञान' संभव नहीं है, यद्यपि हमारे आचरण अनिर्धार्यता ऐसे होते हैं मानो इस प्रकार की वस्तुएं हैं। हमारे ज्ञान-सम्बंधी जीवन का आधार प्रवृत्ति और धारणा है। हम सिद्ध नहीं कर सकते कि ईश्वर की सत्ता है और आत्मा अतत्त्व है। नैतिक के कारण बुद्धिपरता को गंभीरतर अर्थ प्राप्त होता है। अपनी कृति 'नैतिक धर्म व्यवस्था' में कांट ने एक सहज बोध की सम्भावना की बात नहीं है। यह बोध विधिपरता और सार्वभौमिकता में कोई अन्तर नहीं करता।

जोड़ों के परास्पर बुद्धिवादिता के समान बुद्धिपरता इस अनुभववात्मक संसार की नियामक विधिपरता है ईश्वर के सृजनात्मक मस्तिष्क की उत्पत्ति है संसार का प्रथम कारण है। यह हमारी कल्पना की उत्पत्ति नहीं बल्कि का प्रथम कारण है।

हीगल वैज्ञानिक ज्ञान और बार्थनिय विचारों में अन्तर करत हैं। प्रथम धार्मिक और अतत्त्व है, किन्तु द्वितीय साकार और तत्त्वपूर्ण। कांट और हीगल दोनों ही सांसारिक वस्तुओं को इन्द्रियशास्त्र मानत हैं किन्तु कारण भिन्न हैं। हीगल ने लिखा है "कांट के अनुसार दृश्य जगत् की सारी वस्तुओं को हम देख भर सकते हैं उनके वास्तविक रूप का ज्ञान अभी प्राप्त नहीं कर सकते उनका वास्तविक रूप हमारे जगत् की वस्तु है जहां हम पशु ही नहीं सकते। सत्य वास्तव में यों है जिन वस्तुओं को हम सीधे सम्बन्ध में हैं वे मात्र अतत्त्व हैं, केवल हमारे लिए नहीं अपने वास्तविक रूप में जो वे सीमित हैं इसलिए यही मानना उचित होगा कि उनकी सत्ता का आधार वे स्वयं नहीं बरत एक सार्वभौम अतत्त्व है। यह सही है कि दृश्य जगत् के बारे में यह विचार कांट ने विचार के समान बुद्धिवादी है, किन्तु इसे 'नैतिक अतत्त्व-सत्ता' के आधार पर बुद्धिपरतावाक के विपरीत 'पूर्वप्रत्ययवाद' कहना चाहिए।^१

१ 'अन्तरात्मिक' वैज्ञानिक प्रकृत।

हीमस के अनुसार 'द्वैतलोकिकस' धारणाओं का विवेचन है। निम्नतर धारणाएं स्वतंत्र सत्ताएं नहीं बनकर एक सर्वथा स्वतंत्र और यथार्थ उच्चतम धारणा की धरा हैं इसीलिए हम उनमें दुर्जरने पर बाध्य होना पड़ता है। ज्ञान के अनुभवधारक और ठाकिक रूप धर्म हैं क्याकि वे धार्मिक हैं। उच्चतम धारणा के पतिरिक्त अन्य कोई धारणा पृथक् बुद्धिपरक और यथार्थ नहीं हो सकती। पूर्ण प्रत्यय उच्चतम धारणा है। तथा धार्मिक धरणा बाह्य सम्पूर्ण यथाप और सारे धनुभवजगत् की सभी वस्तुओं में व्याप्त है। धार बुद्धि सारे धनुभवों में यह पूर्ण प्रत्यय व्याप्त है इसीलिए हम किसी निम्न धनुभवधरणा में सम्पुष्ट नहीं हो पाते। हम सबैव पूर्णता प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। मानस में निरक्षयत वह 'पूज' रहता है जिसमें धार्मिक मय निकलते हैं।

जयनी के विद्यवत् क्रिस्ते और हीमस के दार्शनिक पूर्णताधार का दावा था कि उसे पूज्यता माधुम है कि ईश्वर क्या है और जयनी भाकीभाएं क्या हैं। इसमें मानव-बुद्धि में पर क धार्मिक विचारों का बहिष्कार हुआ है और मानव-बुद्धि में विन्धाम दुष्ट हुआ। हीमस का कथन है कि स्वतंत्रता धारणा और ईश्वर दार्शनिकों के लिए ज्ञान प्राप्ति की वस्तुएं हैं।

भठारहकी गलाभी की जामुति को 'बुद्धि का युग' कहा गया। ब्रह्मांड में उन स्थित नियमों के आधार पर बताया गया कि उसमें एक लक्ष्मण व्यवस्था व्याप्त है। पूर्ण विद्वान् किंवा ज्ञान मया कि मानव सभी वस्तुओं की माप का पैमाना है धार सर्वोच्च धारण है अधिकाधिक धनुष्यों की अधिष्ठात प्रसन्नता। धर्म की प्रकृति भी मानवतावारी हो गई। इस्मैड में 'मैथोडिस्टों' जर्मनी में 'पीलिस्टों' और 'सोमायटी फाऊ फोर्म्' ने जोर दिया कि सामाजिक व्यवस्था का सुधार हो जलों धार धरणाओं का सुधार हो बह-विधान में गरमी हो दासता का नाश हो। बुद्धि वारी और धार्मिक दोनों प्रकार के व्यक्ति अधिष्ठ सामाजिक न्याय की मांग करने लगे। धमरीका की जामि कमनिरवेक्ष और किसी ह्य तक ईसाई-विरोधी जामुति में हुई थी किन्तु 'स्वाधीनता-सोपचापत्र' की धाराओं से स्पष्ट है कि उसने ईसाई परम्परा का लोप नहीं। धमरीका की जामि के थोड़े समय पश्चात् फ्रांस में जमि हुई उसने स्वतंत्रपेठा नडाओं ने उन्हें छोड़ने की मधुमध काशिष की। १७७ में ऐडबोकेट जगरण सगूर ने स्वीकार किया था कि "विचारकों ने लोकमठ परिवर्तित करके सिंहासन को हिमा और धम को धनुषुमित कर दिया है। फ्रांसीसी जमि १७८६ में हुई थी।

धनक मोगों का विन्धाम था कि जामि के फलस्वरूप बुनिया का पुनर्जम हा रहा है। वैदिक के पतन का जो सामान्य प्रभाव लोगों पर पड़ा उस बहसुधर्म

ने सिखा है

यूरोप में उस समय लुथी की लहरें बीड़ रही थी
पाँच स्वर्णयुग के क्षीय पर स्थित था
और लग रहा था मानवता पुनः जन्म ले रही है।

फ्रांसीसी चिन्तकों केवल यंत्रणा और कुसासन के विरुद्ध बिद्रोह नहीं बरम्
मानवता का अद्वितीय पुनर्जन्म समझा गया। सरकार जनता के मानस में है, यह
विचार खोल पड़ता गया और मध्ययुग से बनी आ रही संस्थाएँ बाँटो गट्ट हो
गयीं या उनकी प्रभावशालिता बहुत कम हो गई। प्रजातांत्रिक राष्ट्रीयता की मानवता
फैलान लगी।

बहुमुख के आदर्श ने आदर्शवादियों को बहुत प्रभावित किया। गॉडविन ने
सिखा "उस घुम दिन में बीमारी यंत्रणा निरुद्धा और विरोध कृष्ण न होया।
सन् १७९४ में कंडामेंट न अपना 'हिस्ट्री ऑफ द प्रॉग्रस ऑफ द ह्यूमन स्पिरिट'
लिखा। इस ग्रंथ में उन्होंने लिखा "मानव की पूर्णता प्राप्त करने की अक्षिप्त वास्तव
में निश्चीन है यह अक्षिप्त अथ पूरी तरह स्वतंत्र है और कोई भी ताकत इसे रोक
नहीं सकती। इसकी सीमा का अन्त है इस पृथ्वी का अन्त जिसपर हम आसीन
है।" माप्पास ने अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि सौरमंडल यात्रिकी के
सिद्धान्तों के अनुसार स्याही है इससे मानवता की असीम प्रवृत्ति का विश्वास बूढ़
हो गया। एक और माप्पास ने सौरमंडल के विकास का सिद्धान्त सामने रखा
(१७९६) ता दूसरी ओर काबानी ने उसी विकासवादी इतिहास के फलस्वरूप
मानव की मानसिक क्षमताओं का अनुमान प्रस्तुत किया। सामार्क (१७४४-
१८२९) का विश्वास था कि पशु मछीनें हैं जो विकास के निरम के अनुसार अंधी
धेभी में पहुँच गए हैं। उन्होंने प्राप्त सुषों की विरचनन का सिद्धान्त प्रतिपादित
किया। इरास्मस डाबिन (१७११-१८ २) ने अपनी 'यूनीवर्स' (१७९६) में
पीपों और पशुओं की जानियों के विकास के मंडर्म में प्रगति के सिद्धान्त को सामने
रखा। सामार्क और इरास्मस डाबिन का विश्वास था कि हर जीववारी के भीतर
एक रूप हाता है जो उसे उच्चतर भवियों में पहुँचाता है।

पीपों का बर्गीकरण करनेवाला एडम बडा वैज्ञानिक था मिना यूस (१७७७-
१७७८)। उग्लान पीपों और पशुओं दोनों का बर्गीकरण किया। बफन (१७७७-
१७८८) का कहना था कि सभी जन्तु बर्गीकरण भ्रामक है। अपनी 'नेचुरल
हिस्ट्री' की भूमिका में उन्होंने लिखा था "अम उलान होता है कि प्रकृति की
प्रकिया का न समझ पान में जो सर्वत्र अमम अमम रगरों कर जाता है" बर्गीकरण
पूर्व जीववारी से उतरने हुए आकारहीन अथ्य तक पहुँच जाना इस प्रकार संभव

ने लिखा है

यूरोप में उस समय लूची की सहरेँ दीङ रही थी
 फ्रांस स्वर्णयुग के शीर्ष पर स्थित था
 और लय रहा था मानवता पुनः जन्म से रही है ।

फ्रांसीसी श्रमिन्त्रि को केवल संभला और कुशासन के बिना विद्रोह नहीं बरन
 मानवता का अद्वितीय पुनर्जन्म समझा गया । सरकार जनता के मानस में है यह
 बिचार और पक्कता गया और मध्ययुग से अभी भा रही संस्थाएँ या तो नष्ट हो
 नहीं या उनकी प्रभावशालिता बहुत कम हो गई । प्रजातांत्रिक राष्ट्रीयता की भावना
 फैलन लगी ।

बहुत्व के आदर्श ने आदर्शवादियों को बहुत प्रभावित किया । गॉडविन ने
 लिखा "उस भुज दिन में बीमारी संभला निराशा और बिरोध कुछ न होना ।"
 सन् १७१४ में कंबामेंट ने अपना 'हिस्ट्री ऑफ द प्रॉजेस ऑफ द ह्यूमन स्पिरिट'
 लिखा । इस ग्रंथ में उन्होंने लिखा "मानव की पूर्णता प्राप्त करने की शक्ति वास्तव
 में निस्सीम है यह शक्ति सब पूरी तरह स्वतंत्र है और कोई भी ताकत इसे रोक
 नहीं सकती । इसकी सीमा का अन्त है इस पृथ्वी का अन्त बिसपर हम घासीन
 हैं । साम्नास ने अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया कि सौरमंडल वाशिकी के
 सिद्धान्तों के अनुसार स्वामी है इसमें मानवता की असीम प्रकृति का बिस्वास दुइ
 हो गया । एक और साम्नास ने सौरमंडल के बिकास का सिद्धान्त सामने रखा
 (१७६६) जो बूनरी और काबानी ने उमी बिकासवादी इतिहास के अमस्वरूप
 मानव की मानसिक समताओं का अनुमान प्रस्तुत किया । सामार्क (१७४४-
 १८२६) का बिस्वास था कि पशु मशीनें हैं जो बिकास के नियम के अनुसार ठंभी
 धेनी में पहुंच गए हैं । उन्होंने प्राप्त मुर्तों की बिकास का सिद्धान्त प्रतिपादित
 किया । इरास्मस डार्विन (१७९१-१८८२) ने अपनी 'जूनोमिया' (१७६८) में
 बीबा और पशुओं की आतियों के बिकास के संबंध में प्रकृति के सिद्धान्त को सामने
 रखा । सामार्क और इरास्मस डार्विन का बिस्वास था कि हर जीवधारी के भीतर
 एक बस जाना है जो उसे उच्चतर धेधियों में पहुंचाता है ।

पीपी का बर्गीकरण करनेबासा सबसे बडा वैज्ञानिक का सिना बूस (१७७७-
 १७७८) । उन्होंने पीपी और जलुओं बीना का बर्गीकरण किया । बडन (१७७-
 १७८८) का कहना था कि सभी इन्जिन बर्गीकरण भ्रामक हैं । अपनी निचुरन
 हिस्ट्री की भूमिका में उन्होंने लिखा था "अम जलान्न होता है कि प्रकृति की
 प्रक्रिया को न समझ जाने में जो सबैब अलग अलग स्तरों पर होता है 'सर्वाधिक
 पूर्व जीवधारी य उत्तरन हुए आकारहीन इन्ज ठक पहुंच जाना इस प्रकार संबंध

किन्तु हमारे दृष्टिकोण का मानन का बाबा करनेवाले लोगों के आचरण पहले दृष्टिकोण नाम भावों जैसे होते हैं। यदि हम अपनी बुद्धि और ईर्ष्या को पराजित कर सकें तो जितनी पवित्र बात हमारे पास है उसमें हम हम पृथ्वी की स्वर्ग में बदल सकते हैं। किन्तु हमें भय है कि किसी पापमय या मिथ्या गमना का काम करके—पापम तो हर देस में मौजूद है—हम सम्मता की आत्महत्या का राग उपस्थित कर सकते हैं। नैतिक नियंत्रण और आध्यात्मिक अनुशासन की उत्कृष्ट आवश्यकता है। बियेटी के गणों में यूनान और वीसीसी का अथवा मस्तिष्क और आत्मा का संघर्ष अभी भी जारी है। प्राणा का कारण केवल इतना है कि हम अपनी स्थिति का प्रति आगच्छ हैं।

सम्बन्धित उक्तियों और थोटा के मन में विशेष भावनाएं पैदा करनेवासी भाव तोत्पादक उक्तियों में प्रन्तर है। कविता की उक्तियों की सत्यता का प्रश्न नहीं उठाया जाता केवल उनके द्वारा व्यापित संवेदन की वात की जाती है।

ब्रह्मांड का सप्रमाण और सुव्यवस्थित विवरण का प्रयास वर्तन है, यह धर नहीं सोचा जाता। ब्रह्मांड के बारे में ज्ञान प्रदान करना विज्ञान का कार्य है। वर्तन का छोटेम अधिक से अधिक है विस्मेषण, स्पष्टीकरण। दार्शनिक कोकोई मतलब नहीं कि ईश्वर, धारमा प्रकवा संसार है मा नहीं। वह इस उक्ति का अर्थ जानना चाहता है कि ईश्वर, धारमा वा संसार है।

बौद्धिक लोग तो प्रत्यक्षतः यांत्रिक भौतिकवाद या तार्किक प्रयोगविज्ञान से सन्तुष्ट हैं किन्तु सामान्य जन में घास्वा की कमी होती जा रही है। वैज्ञानिक जग से प्रशिक्षित लोग धर्मनिरपेक्ष मानववाद के हामी हैं तो दूसरे लोग यांत्रिक परम्पराजन्य धून्यवाद के पोषक हैं। हमारे समय की श्रुतियां हैं—ईश्वर से प्रभवा रहता धम्माराज को दूर रखना और मधार्थवाद यांत्रिक दृष्टिकोण।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में यूरोप में प्रकृतिवादी वर्तन का शासकाला वा। धारमी स्वयं को मशीन की प्रतिरूपि में देखता वा। मानव के दो दृष्टिकोणों में विरोध है। उसमें मूर्खों का ज्ञान और धरमी की भ्रम है इसलिए वह पुष्पी पर धर्माधिक स्पष्ट मूर्तिमान ईश्वर है। यह ईसाई धर्म के अनेक रूपों से सम्बद्ध उपनिषदों और ज्येटो की परम्परा है। एक दूसरा दृष्टिकोण है, जिसका प्रारंभ पुनर्जागरणकाल में हुआ वा और जिसकी धक्ति के छोटे विज्ञान की महान जोड़े और तकनीकी धाकिष्कार हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार मानव एक ऐसा प्राणी है जिसे उसकी सृष्टिमिति के बिना जीवन-दशाह में बलों के संघार में फँक दिया गया है और वह महसूस करता है कि उसका बचना एक ही धर्त पर संभव है कि जिन धक्तियों के साथ उसका संघर्ष है उन्हें वह धर्माधिक धपन धाकिष्कार में रखे। स्वायी समाज की स्थापना के लिए दोनों मूलभूत प्रकृतिधों का सामंजस्य धावश्यक है। एक धाध्ममक प्रकृतिवाद वा धर्मनिरपेक्ष मानववाद और एक हृदिम धर्तिमानववाद, मधवाधवाध फंडामेंटलिस्म और नवधाकिष्वावाद के रूपों में धोलों ही धालुक्तियां हैं। जगता है, हम किसी भी धाधि में पड़ने को ठेकार है फिर पाड़े वह पोष की ही वा बाधजिन या मान्य की।

१ सुनवा धीविध, धर्तक-धवे : 'धरयी एक बीर है किन्तु धे धूर्त है, धरमी धधों का मेजर है सम्यक एक मेला है किन्तु धे धीर धवेक धधिन धधेले लकधधान् धिन धर्त धधधधधधे को धीर का धुधधधध धरध है। 'ध धरध' धधधे धधे धधधे धधधे धधधे' (१६२३), धध ११०।

किन्तु हमारे दृष्टिकोण को मानने का वादा करनेवाले लोगों के आचरण पहले दृष्टिकोण वाले लोगों जैसे होत हैं। यदि हम अपनी पूजा और ईर्ष्या को परित्यक्त कर सकें तो अतिनी घनिष्ठ धारा हमारे पास है, उक्त हम इस पृथ्वी की स्वर्ण में बहल सकते हैं। किन्तु हम भय है कि किसी पापतपन या मिथ्या गणना का काम करके—यामस तो हर देश में मौजूद है—इस सम्पत्ता की धारणहत्या का राक्ष उपस्थित कर सकते हैं। नैतिक निबंधक और धार्मिक धनसासन की तरफ़ास धारणहत्या है। बियटी के धर्मों में पुनान और नैनीनी का अथवा मन्त्रिक और धारमा का संघर्ष अभी भी जारी है। धारमा का कारण केवल इतना है कि हम अपनी स्थिति के प्रति जापकक हैं।

सम्बन्धित उक्तियों धीर घोषा के मन में निश्चय भावनाएं पैदा करनेवाली भाषा नोत्पादक उक्तियों में प्रकृत है। कविता की उक्तियों की सत्यता का प्रश्न नहीं उठाया जाता केवल उनके द्वारा व्यक्तित्व संवेदन की बात की जाती है।

ब्रह्मांड का सप्रमाण और सुव्याख्यित विवरण का प्रवास वर्धन है, यह सब नहीं सोचा जाता। ब्रह्मांड के बारे में ज्ञान प्रदान करना विज्ञान का कार्य है। वर्धन का उद्देश्य व्यक्ति से अधिक है विस्लेषण, स्पष्टीकरण। वार्सनिक को कोई मतलब नहीं कि ईश्वर, आत्मा भयवा संसार है या नहीं। वह इस उक्ति का अर्थ जानना चाहता है कि ईश्वर, आत्मा या संसार है।

भौतिक लोग तो प्रत्यक्षता यांत्रिक भौतिकवाद या तार्किक प्रयोज्यसिद्धिवाद से संतुष्ट हैं किन्तु सामान्य मन में आस्था कौ कमी होती जा रही है। वैज्ञानिक ढंग से प्रसिद्धित भौग धर्मनिरपेक्ष मानववाद के हामी हैं तो दूसरे भौग धार्मिक परम्पराजन्य धूम्यवाद के पोषक हैं। हमारे समय की कृषियां हैं—ईश्वर से धर्मय चला सम्प्रदाय को दूर रखना और मर्यादावाद मानसिक वृष्टिकोष।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में यूरोप में प्रकृतिवादी वर्धन का बालबाया था। धार्मिकी स्वयंको मशीन की प्रतिस्पर्धि में देखता था।^१ मानव के दो वृष्टिकोषों में विरोध है। उसमें मूर्खों का ज्ञान और असीम की मूर्ख है, इसलिए वह पृथ्वी पर सर्वाधिक स्पष्ट प्रतिमान ईश्वर है। यह ईसाई धर्म के अनेक रूपों में सम्बद्ध उपनिषदों धीर प्लेटो की परम्परा है। एक दूसरा वृष्टिकोष है, जिसका धार्मिक पुनर्जागरणकाज में हुआ था धीर जिसकी उक्ति के अंतर्गत विज्ञान की महान खोजें और तकनीकी आविष्कार हैं। इस वृष्टिकोष के अनुसार मानव एक ऐसा प्राणी है जिसे उसकी सहायता के बिना जीवन-प्रवाह में बलों के संसार में फेंक दिया गया है धीर वह महसूस करता है कि उसका बचना एक ही अर्थ पर संभव है कि जिन उक्तियों के साथ उसका संघर्ष है उन्हें वह अधिकाधिक अपना अधिकार में रखे। स्वाधीन समाज की स्थापना के लिए बोना मूलभूत प्रवृत्तियों का सामंजस्य आवश्यक है। एक धार्मिक प्रकृतिवाद या धर्मनिरपेक्ष मानववाद धीर एक हार्मिक अधिमानववाद लक्ष्यमन्वार फंडामेंटलिज्म धीर लक्ष्यवाध्यावाद के रूपों में दोनों ही धरतुक्तियां हैं। भयवा है इन किसी भी प्राणि में पढ़ने को तैयार है फिर चाहे वह पोष की हो या बाइबिल या मार्स की।

१ गुणना कोशिय, यूनि-वर्सल : "आर्यो एक धीर है, जिनको मूर्ख है, धर्मो लक्ष्यो का धीर है सम्बन्ध एक पोष है किन्तुके अंतर अनेक अर्थो अनेके परम्परायु धिर् परी वाक्यविधि की भीक का सुभाषण करण है। 'द एरू'मेर अर्थ देख्य के (१९२१) पृ १९०।

किन्तु हमारे दृष्टिकोण को मानने का दावा करनेवाले लोगों के प्राचरण पहले दृष्टिकोण वाले लोगों जैसे होते हैं। यदि हम अपनी पूजा और ईर्ष्या को पराजित कर सकें तो तितनी शक्ति प्राप्त हमारे पास है उसमें हम इस पृथ्वी को स्वर्ग में बदल सकते हैं। किन्तु हमें भय है कि किसी पावसपन या मिथ्या गणना का काम करके—पावस तो हर वरस में मौजूद है—हम सम्पत्ता की धारमहत्या का शत्रु उपस्थित कर सकते हैं। नैतिक नियंत्रण और आध्यात्मिक प्रशासन की उत्कृष्ट आवश्यकता है। बिपटी के घण्टों में मुत्तल और बीसीसी का प्रयत्न मस्तिष्क और धारमा का सर्वप्रथम भी जारी है। आघा का कारण केवल इतना है कि हम अपनी स्थिति के प्रति जागरूक हैं।

सम्बन्धित उक्तियों धीरे धीरे के मन में निश्चय भावनाएं पैदा करनेवाली बात नात्यावक उक्तियों में प्रथम है। कविता की उक्तियों की सत्यता का प्रश्न नहीं उठाया जाता केवल उनके द्वारा जागरित संवेदन की बात की जाती है।

ब्रह्मांड का संप्रमाण धीरे सुखस्वित्त विवरण का प्रयास वर्धन है यह प्रथम नहीं सोचा जाता। ब्रह्मांड के बारे में ज्ञान प्रदान करना विज्ञान का कार्य है। वर्धन का उद्देश्य अधिक से अधिक है विश्लेषण स्पष्टीकरण। दार्शनिक को कोई मतलब नहीं कि ईश्वर, धारमा अथवा संसार है या नहीं। वह इस उक्ति का धर्म जानना चाहता है कि ईश्वर धारमा या संसार है।

बौद्धिक भोग तो प्रत्यक्षतः धार्मिक नीतिक्रमों या तार्किक प्रयोगविद्युत्कार से सन्तुष्ट है किन्तु सामान्य जन में धारमा की कमी होती जा रही है। वैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षित भोग धर्मनिरपेक्ष मानववाद के हामी हैं तो दूसरे भोग धार्मिक परम्परागत्य धूम्यवाद के पोषक हैं। हमारे समय की खूबियां हैं—ईश्वर से घसग रहना धारमा को दूर रखना धीरे बर्बादभाव मानसिक दृष्टिकोण।

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में यूरोप में प्रकृतिवादी वर्धन का बासबाला था। धारमी स्वर्ग की मधीन की प्रतिस्पर्धि में देखता था।^१ मानव के दो दृष्टिकोणों में विरोध है। उसमें मूर्खों का ज्ञान धीरे धसीम की भूल है, इसलिए वह पृथ्वी पर सर्वाधिक स्पष्ट मुक्तिमान ईश्वर है। यह ईसाई धर्म के अनेक रूपों से सम्बद्ध उपनियमों धीरे प्लेटा की परम्परा है। एक दूसरा दृष्टिकोण है जिसका धारंभ पुनर्जागरणकाल में हुआ था धीरे जिसकी शक्ति के स्रोत विज्ञान की महान खोजें धीरे तकनीकी आविष्कार हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार मानव एक ऐसा प्राणी है जिसे जमीन सहमति के बिना जीवन-महाह में बलों के संसार में फेंक दिया गया है धीरे वह महसूस करता है कि उसका बचना एक ही शर्त पर संभव है कि जिन शक्तियों के साथ उसका संघर्ष है उन्हें वह अधिकाधिक अपने अधिनार में रखे। स्वाधी समाज की स्थापना के लिए दोनों मूलभूत प्रवृत्तियों का सामंजस्य आवश्यक है। एक धार्मिक प्रकृतिवाद या धर्मनिरपेक्ष मानववाद धीरे एक कृत्रिम धर्ममानववाद मन्वामवाद फंडामेंटलिस्म धीरे मन्ववाधियावाद के रूपों में दोनों ही धर्युक्तियां हैं। जनता है हम किसी भी शक्ति में पड़ने को तैयार है फिर चाहे वह पौध की हो या बाइबिल या मार्क्स की।

१ गुणना काश्चित् मूल-धर्मः 'धारमी एक धीरे है किन्तु मूर्ख है प्रकृति मूर्खों का भेदार है सम्बन्ध एक श्रेणी है किन्तु धर्म पर अनेक व्यक्ति धर्मों के अन्तर्गत मिल गई धर्मनिरपेक्ष का मीर वा मुम्बवा करण है। ६ एन्ड्रु ब्रॉड फोर्ड वेगर्स मिन (१९२३) पृष्ठ ११०।

किन्तु दूसरे दृष्टिकोण को मानन का दावा करनेवाले लोगों के धारण यहसे दृष्टिकोण बाल लोगों जैसे होते हैं। यदि हम अपनी बुद्धा और ईर्ष्या को पराजित कर सकें तो अतिमी शक्ति प्राप्त हमारे पास है उससे हम इस पृथ्वी को स्वर्ग में बदल सकते हैं। किन्तु हमें भय है कि किसी पागलपन या मिथ्या धर्म का काम करके—पागल तो हर देश में मौजूद है—हम सभ्यता की आत्महत्या का काम उपस्थित कर सकते हैं। नैतिक नियंत्रण और साम्यात्मिक धनघासन की उत्क्रान्त आवश्यकता है। ब्रिटीश के राष्ट्रों में यूनान और पैंसीनी का अथवा मस्तिष्क और आत्मा का संघर्ष अभी भी जारी है। आशा का कारण केवल इतना है कि हम अपनी स्थिति के प्रति जागरूक हैं।

तृतीय व्याख्यान पूर्व और पश्चिम

१. पूर्व पर पश्चिमी प्रभाव

विज्ञान और टेक्नॉलॉजी प्राबुद्धिक संसार का निर्माण करनेवाले मूल कारकों में से हैं। वत ४०० वर्षों में पश्चिमी मानव ने अपनी सभ्यता का प्रसार बुरख क्षेत्रों तक किया है और सभी महाद्वीपों पर अपना प्रभाव डाला है। लगभग १२०० ईसवी तक पूर्व और पश्चिम में काफ़ी समानता थी। किन्तु टेक्नॉलॉजी की तेज़ प्रगति के कारण यह अन्तर बढ़ गया है। हम चार अताखियों में इतिहास का अर्थ है यूरोपीय इतिहास रोप संसार का मात्र औपनिवेशिक इतिहास वा। हीनेल के अर्थों की सत्यता सिद्ध हो चुकी है "यूरोपवासियों ने अहाडों पर पृथ्वी की परिभ्रमा की है और सिद्ध कर दिया है कि पृथ्वी गोल है। उनके अधिकार में यदि कोई चीज़ नहीं था पाई तो या तो वह इस योग्य नहीं है अपना जलिय में था जाएगी।" यूरोप ने एशिया और अफ्रीका पर अधिकार कर लिया तथा आस्ट्रेलिया और अमेरिका को आबाद किया।

उत्तमाया अन्तरीय होकर भारत के लिए समुद्रपथ मामूज होने पर अमेरिका की आड के पदचात पृथ्वी के विस्तीर्ण स्थानों पर पश्चिमी लोगों का अवाचित प्रभाव और नियन्त्रण स्थापित हाता बना गया। इसे कभी-कभी कहा जाता है कि पश्चिम ने पूर्व पर आक्रमण कर दिया। यूरोपीय व्यापारियों ने पूर्वी देशों में पदचक्र, रिसे, कारखान और औद्योगिक अड्डे स्थापित किये। अन्त-साधनों के विकास का अगम्य समुग अक्षय पश्चिम को है। पश्चिमी देशों के अहाड ही दुनिया का अधिकातर साधन और सकारियां समुहों के आर-पार ल जाते हैं। उनके विमान महासाधनों और महाद्वीपों के पार उड़ते अने जात हैं। उनके रिसे इंजन ठार, बिजली के अड्डे, सेनी-बाडों के अड्डे एशिया और अफ्रीका में उपयोग में आते हैं। उनके कारखानों के उत्पादन मुद्रु देशवासियों की आड अचानक पूर्ण करने हैं। मोटरकार, विमानों की मशीनें अड्डे अड्डे अड्डे

राष्ट्र, फाउण्डेशन केमरा पेटेंट इत्यादि सभी देशों में ग्राम उपयोग की वस्तुएं हैं।^१

पश्चिमी शक्तियों के समझाव से अनेकानेक अधिक प्राचीन संस्कृतियों पर उन शक्तियों का राजनीतिक और धार्मिक प्रभुत्व तो स्थापित हो गया किन्तु उन (संस्कृतियों) की अपनी अपने समय में दबी पड़ी शक्तियां जाग उठी और उनमें राष्ट्रीयता की भावना उदित हुई। पश्चिम ने ही अपने प्रभुत्व की विरोधी शक्तियों को सबग किया और गुलाम देशवासियों में उन मोह्यताओं और संस्थाओं को पत पाया जिनका प्रयोग उसके ही विरुद्ध भली प्रकार किया गया। टार्निंग और बॉक्सर-विद्रोह भारत का स्वाधीनता-संग्राम और धार्मिक जापान का उद्भव 'पश्चिमीकरण' की उपसंज्ञियां हैं। कुछ ही दशकों में जापान भी पश्चिमी नमून की पूर्णतः औद्योगिक धार्मिक शक्तियों में जिता जाया गया। अपनी स्वामी नता बोधनापत्र फ्रांसीसी और रूसी शक्तियों अंतर्गतिक पापनापत्र तथा मनुक्त राष्ट्र-बोधनापत्र ने करोड़ों धार्मिकों को प्रेरित किया कि वे शमता का बुझा उतार फेंकें और राजनीतिक धार्मिक और सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त करें। जापान ने इस को पराजित किया तो एक नया विज्याम धार्मिकों के मन में जागा कि अपने उद्देश्य को प्राप्त करना उनकी शमता में परे नहीं है। दोनों युद्धों में 'अ-यूरोपीय' शमताओं के उपयोग से शमता की भावना जागी किन्तु उसके परिणाम तत्काल प्रत्यक्ष नहीं हुए। इस प्रकार पश्चिमी प्रभुत्व ने स्वयं अपने नाश के बीज बोए।

एशियाई समाज पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव ही एशियाई राष्ट्रीयतावादी और एशियाई एकता का आधार है। हिन्दू धार्मिक पुनरुत्थान अथवा पश्चिमी शोध का परिणाम है—संघर्ष पश्चिमी प्रभुत्व की प्रतिक्रिया का और संघर्ष ईसाई मिशनरी प्रचार के प्रति विद्रोह का। 'सोसायटी ऑफ पीसर्स' क सदस्यों पर पूर्वी एशिया के मिशन की विस्फेदारी थी। सोसायटी के उत्तरार्ध में अंधिध ईशियर गोष्ठा और जापान गये। सोसायटी के एक इटासबी सदस्य मातियो रिडी १२८२ में मैकाओ पहुंचे और १६०१ में पीकिंग अहां १६१० में उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने और उनके सहयोगियों म चीन के बौद्धिक समाज के आधार-भ्यक

१ 'साम्प्रदायी बोधनापत्र से मुक्तवा कर्मिण 'बुद्ध का कर्म' ने' अपने अपने सिद्ध कर दिया कि मानव की सन्निध्य बना कर सकर्त है। अपने मिमी सिद्धिओं रोमक कर्मों और शक्ति शिरों से कभी अधिक आरकर्तक कर्म कर विचये हैं 'बुद्ध का कर्म' सभी उपर्यों को सम्पन्न के मने में ला गया किया है। अधिक म अधिक ही कर्म के साम्प्रदाय में बुद्ध का कर्म ने सभी सिद्धि और सभी शरी जवाइक शक्तिओं का ध्यान किया है किन्ता अपने परते की शरी शक्ति परकम्पन सिद्ध कर न कर गई थी।

हार सील मिये और पश्चिम इबिकी तथा पश्चिम-सम्बन्धी अनेक चीनी प्रयोगों के अनुवाद किया। पूर्व में यूरोपीय बस्तियों की स्थापना आरम्भ होने के बाद ईसाई मिशनरों ने अपने कार्र्वेय का विस्तार किया। यद्यपि अनेक मिशनर अपने कार्य की भाङ में धार्मिक प्रसार कर रहे थे। मिचिगटन का वाणिज्य और ईसाई-धर्म-सम्बन्धी तारा इस बात का प्रमाण है। उनका कहना था कि व्यापार के रास्तों के खुलने के बाद ही मध्य अफ्रीका के आदिवासियों तक सम्पत्ता धर्पाई (उनके अनुसार) ईसाई-धर्म की पहुंच संभव है। उनके लिए ईसाई-धर्म का धर्म एक सिद्धांत नहीं था बल्कि 'एक बुझसी दाज-माधमा की दबाइयाँ व्यापार, शिक्षा थे। एशिया और अफ्रीका के निवासी भी ईसाई-धर्म के प्रति आकर्षित हुए क्योंकि उनका विचार था कि प्रभु पश्चिम का धर्म 'ईसाई-धर्म है इसलिए वह पश्चिम की श्रेष्ठतर नैतिक समता और वैज्ञानिक चर्चित का व्यावहारिक प्रेरणास्रोत भी है। राष्ट्र रेबरेण्ड स्टीफेन मीस ने लिखा है "यह सबोत्तम मान्य है कि ईसाई-धर्म के प्रसार की 'महान घटाखी' ही यूरोपीय प्रसार की महान घटाखी भी थी।" अनेक बार तो मिशनरी प्रवेश राजनीतिक नियंत्रण का बहाना बन गया। डॉ० स्टीफेन मीस का कथन है "इसलिये भारत में वर्षों को मुड़क बनाने का कार्य वैहात के सिद्धांतों ने किया जिनके बैतल का प्रतिकारा सरकारी अनुदानों से मिलता था।" एशियाई और अफ्रीकी राष्ट्रीयता की भावना के साथ-साथ उन मिशनरों की विरोधी भावनाएं बढ़ती जा रही हैं जिनको सरकारी सहायता प्राप्त भी फिर बाह्य बहु बुनियाद के लिए ही प्रथम मध्यम इम विरवास के आधार पर कि ईसाई-धर्म स्वीकार कर लेने पर लोगों की स्थिति धार्मिक अंधी हो जाएगी। स्वभावतः राजनीतिक समानता के दिनों में जो वर्ष धार्मिक रूप से सरकार पर धार्मिक स्थायीता के लिए संघर्ष करनेवाली जनता की सहायता नहीं पा सके। इसीलिए कहा जाने लगा कि वे साम्राज्यवादी पक्षियों के एजेंट थे। प्रथम स्थायीता प्राप्त हो चुकी है ईसाईयों की दोनरकी बच्चाकारी के बारे में सन्वेह नहीं रह गये हैं और अनेक राष्ट्रों में वे सम्मानित नागरिक हैं। भारत में समाज के नेता बनने के लिए

द्वितीय विरबुध की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना यह नहीं है कि कृषी राष्ट्रों—
 अमेरीकी, इण्डो-चीन, ब्राज़ील—की पराजय हुई। वे तो इतने कम समय में ही अपनी
 पूर्वाभ्युत्थि पर पहुंचने और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में प्रभाव डालने योग्य हो गये
 हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है एशिया में नई शक्तियों—चीन, भारत, पाकि
 स्टान, इण्डोनीशिया, बर्मा, श्रीलंका, तिब्बत—का उदय।

विदेशी शासन की घटाधिकियों के बावजूद, एशिया और अफ्रीका के बारे में सर्वाधिक विविध तथ्य हैं उनकी अकथनीय बुद्धि निदान्त गरीबी और निरक्षरता अकाम और बीमारियाँ। अफेली आयाजनुक बाह्य है घपनी भवानन घमान भीम परिस्थितियों से ऊपर उठने की इन देखा की जनता की सासछ। सोम यह मूस करने सने हैं कि बिम बुराइयों से बे पीड़ित हैं उन्हें पूर किमा आ सकता है और उन्हें सहन नहीं करना चाहिए। वे बिश्वास करने सग है कि घपनी बर्तमान स्थिति स ऊपर उठने के लिए उन्हें बिज्ञान का बुष्टिभोष तथा टेक्नोसोबी की बिबियाँ घपनानी पड़ेगी। यह सत्य है कि पश्चिम की तकनीकी बिदिप्यता के कारण मत्सास्त्रों की होड़ में पश्चिम घाने हो गया। पूर्व एव और पश्चिम की सैदिक बिजयों और उबर्बस्ती के घासन का बिरोधी है, किन्तु दूसरी घोर पश्चिम के रेतबे इंसनों शपनेमो और बिमान का स्वागत भी करता है। यह बिजेताघों को निक्काल बाहर करना चाहता है फिर भी उनकी बिजयों के उपकरणों यात्रिकी टेक्नोसोबी के उपकरणों और राजनीतिक संस्थाघों को स्वीकार करता है। पूर्व के देष इनका उपयोग परीबी को मिटाने धार्बिक धबतरों को बिस्तृत करने तथा आघपराघों स्वाम्य और सधार्ई के स्तर को ऊँचा उठाने में करना चाहते हैं। षोय हुप समय को पुरा करने और संसार के समुप्रत राष्ट्रों के समकय पहुँचने के लिए पूर्व टेक्नोसोबी की धाधुनिक बिबियाँ को घपना रहा है।^१

असमान परिस्थितियों ने पूर्व और पश्चिम दोनों को बाध्य कर दिया कि वे टेक्नोसोबी का उपयोग करें पूर्व का उद्देश्य है राजनीतिक परव्यमता तथा धार्बिक और सामाजिक-बिच्छेदन को दूर करना, और पश्चिम का उद्देश्य है अघनी अष्टता बनाए रखना। इन परिस्थितियों ने धार्सका है कि कहीं मनुष्य मघीन और भौतिक सफलता की मिर्कुकता का सिंकार न बन जाए।

पूर्व और पश्चिम का सम्पर्क एक ही घोर से नहीं रहा है। पश्चिम पर नवीन प्रभाव पड़े हैं। रेन्दा ने मुगल बिबी की मनुहतिघा बनाई और आघाम से नई सलित कसार् पहुँची। ब्यापार और घासन के उद्देश्य स पूर्वीय आघाएँ पड़ी जान लयी। ईसाई मिघान गीर-ईसाई देघों के बर्शन में सधि सेने लये। कम्प्युटियास की 'घनानकट्टस' बैदिक साहित्य बीडधर्म का 'बिपिटक' कुरान तथा धम्य इस्लामी घघों के यूरोपीय आघाघों में धनुबाह हुए। बिजेधी बर्नों में बिजेक और घाध

१ स्वर्णिम प्रोफ़ेसर ग्यार्स्ट बिक्टो ने, १९२० में अरबी बिदर मेकअरबड १ नामक पुस्तक में लिखा है कुछ समय परबाए करि पूर्व बुद्धिनि में पश्चिम को परास्य कर दे, तो अकक कर्ती बर्ब देघा कि पूर्व ने पश्चिम की टेक्नोसोबी को पूरी तरह अरबाकर अघा और बिबयत क्रिय है तथा एत प्रकार अर्ब पश्चिमी सम्पन्न में पश्चिम हो गया है।

रिमः महाराष्ट्र विसे जिनका पहले पता तक न था। लीबनिज ने कहा कि यूरोप और चीन के बीच बिचारी का आदान-आदान होना चाहिए। वास्तेवर की बुद्धि में कम्यूनियम एक महात्मा बार्सैनिक पैगम्बर और राजनीतिज्ञ के और अमस्कार नहीं बिल्लवाते थे बल्कि केवल सद्गुणों की शिखा देते थे।

२ साम्यवाद और प्रजातंत्र

पूर्वीय देश केवल विज्ञान की धारणा और टेक्नॉलॉजी की विधियों को ही नहीं बरन् पश्चिम में सफल राजनीतिक व्यवस्थाओं—उदार प्रजातंत्र प्रणवा साम्यवाद—को भी अपनाते जा रहे हैं।

मानव पूर्व-पश्चिम सम्बन्धों की बात की जाती है तो हमें प्रायः और पारस्व्य एमिया और यूरोप का क्याल नहीं आता बरन् यूरोप के राजनीतिक पूर्व और राजनीतिक पश्चिम का क्याल आता है। जब यूरोप में ईसाई-धर्म का रोमशाखा या तो रोमन कैथलिक और प्रोटेस्टेंट मत पश्चिम के प्रतिनिधि थे और ग्रीक चर्च तथा रसी परम्परावादी चर्च पूर्व के प्रतिनिधि। दोनों एक ही स्रोत ब्रुडार्ड-ईसेनीय से उद्भूत थे। दोनों में परस्पर जितनी समानता है उतनी समानता इनमें से किसी एक और किसी अन्य सम्य समाज के बीच नहीं है। इसके बावजूद साम्यवादी पूर्व और प्रजातांत्रिक पश्चिम के बीच की टाई पश्चिमी संसार के बीच की बार्ड है।

साम्यवाद का बंधन है—जेटो म्यू टेस्टामेंट ऑमबेस-मुन के सामाजिक समानतावादी रिवाजों ऐडम स्मिथ हीवेस फुरबाह मार्स एंगस लमिन। साम्यवाद के कुछ विभिन्न लक्षण पश्चिम के हैं।

यूनानी मानव तर्कप्रधान था। उनमें विवेक की विशिष्टता पर जोर दिया था। साम्यवाद का दावा है कि वह वैज्ञानिक विधि और विद्वेष-गणना को उपयोग में लाता है। उसे स्वयं में विश्वास है, वह निर्भ्रम है।

मानववाद यूनानियों के समय से ही पश्चिमी दर्शन का एक गुण रहा है। यूनानियों ने सामाजिक परिस्थितियों और स्वयंमिह प्रजातंत्र पर जोर दिया था। मानववादी रसी धरती पर एक पूर्व समाज की स्थापना करना चाहते हैं। श्रीयोगिन अमिन के अधिष्ठान पर पड़े प्रभाव—बहुत कम वेतन बच्चों और स्त्रियों से काम घाल पिक अदमंश्यासानी शम्बी बधिया पारिवारिक जीवन का विनाश—के विरुद्ध मानववादों आवाज बुलन्द करते हैं। सामाजिक न्याय के नाम पर वे पूंजीवादी व्यवस्था की आमांशना करते हैं। सेनिन का कथन है कि एक भी पीड़ित बच्चे की चींग हमारी दुनिया के प्रति एक भिन्नकार है।

आजमान गणतंत्र की केवल मौनिक आचर्यताओं की पुति की ही मांग नहीं

करता करता उच्च शिक्षण समाजता, धार्मिकता मुक्ति राजनीतिक व्यवस्था धार्मिक पोषण से मुक्ति जैसी मानवीय आकांक्षाओं की मांग भी करता है। मार्क्स एक नये मानव की, एक सच्चे मानवीय मानव की बात सोचते हैं जिसकी सत्ता पहले कमी नहीं की और जो धार्मिकरहित में मुक्त होवा। अपने दार्शनिक के अनुसार साम्यवाद प्रत्येक मनुष्य की जो आकांक्षा और कुंठाग्रस्त है, गंभीरतम आकांक्षाओं की पूर्ति का प्रयत्न प्रदान करता है। मानवीय प्रकृति में सबसे अधिक उद्देश्य है इस दुष्ट नरकर व्यक्तिगत जीवन को जिसमें नरकर धार्मिकता मौजूद है किसी ऐसे उच्च काम में लगा दिया जाय जिसकी कल्पना तक धर्म के द्वारा और नीतिकार के उदय के पश्चात् कोई मानव न कर सका हो। यह धारणा है पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना का मानवजाति को उद्देश्य उठाने का। अपने एक मानवीय क्षण में मार्क्स ने एक घनापत समाजवादी समाज का स्वप्न देखा था जहाँ "विभाजित मानव के स्वान पर पूर्णतः विभक्त व्यक्ति होगा ऐसा व्यक्ति जिसके लिए विभिन्न सामाजिक कार्य सक्षमता के ही रूप होंगे। मनुष्य मछली मार कल्पे धिक्कार वेस सकेंगे या साहित्यिक आलोचना करेंगे और इसके लिए उन्हें पेशेवर मछलीमार, धिक्कारी या आलोचक बनने की आवश्यकता न होगी।"

इतिहास में कोई भी बात नहीं है कि एक निश्चयी उद्देश्य ताकिकता के फल स्वरूप किम प्रकार सामाजिक प्रकार में परिवर्तित हो जाता है। "तुम सम्पूर्ण संसार में जाओ और प्रत्येक प्राणी को इंसानों की धिक्कारो।" ऐसा सगठ है कि साम्यवाद 'परमनिरपेक्ष' ईशान्य है।

प्रतिकूलता नियम के अनुसार प्रतिकूलताएं लाभ-साधन निर्वाह नहीं कर सकती। साम्यवादियों और धार्मिकवादियों का संघर्ष ऐन्स और स्टाई रोम और कार्लो मरिदियों और गैरमरिदियों युनानियों और बर्बरो ईसाइयों और मूर्तिपूजकों प्रोटेस्टेंटों और कैथलिकों के संघर्ष जैसा ही है। भाव यह स्वर्ग मनुष्यीय जनतंत्र और समाज के अवतार के बीच है। यह दसा 'यह या नही' संघर्ष के कारण है। इसमें संसार दो देवों में विभाजित हो गया है—मर्याद का साम्राज्य और धंधकार का साम्राज्य। धर्मोपसम्पत्ति का मस्तिक धंधकारमय और हृदय कठोर होता है तथा यह अपने धनु को बिगड़ कर क्षमता चाहता है। अपने विरोधियों को नास्तिक घोषित करने से एक प्रकार के नैतिक छत्रसूत्रीकरण का आभाव होता है। परिचयी मानव की मानसिक रचना में विभाजन प्रकृति एक आवश्यक तत्व रहा है। 'ब्रह्म' करानाश में बस्तापबस्ती का एक पाप कहता है "धार्मिक समाज स्थापित करने की यह क्षमता धार्मिकता से प्रत्येक मानव और धर्म मानवता के लिए सापेक्ष है। अपने देवताओं को ताक में रखकर, धार्मिक और हमारे देव

रिक्क पहुराई मिसे जिनका पहले पठा तक म बा । मीबनिज ने कहा कि यूरोप और चीन के बीच बिचारों का आदान प्रदान होना चाहिए । बास्तेयर की दृष्टि में कम्युनिज्म एग महारत्ना दार्शनिक पैगम्बर और राजनीतिक से और बमस्कार नहीं बिलमाते से बरिक् केबस सन्तुनों की शिखा सेते से ।

२ साम्यवाद और प्रजासंघ

पूर्वीय सेच केबस बिज्ञान की आरम्भा और टेक्नोलॉजी की बिचियोंकी ही नहीं बरन् पश्चिम म सफल राजनीतिक व्यवस्थाओं—उदार प्रजासंघ प्रथमा साम्यवाद—को भी अपनाते जा रहे हैं ।

आजकल पूर्व-पश्चिम सम्बन्धों की बात की जाती है तो हमें प्रायः और पारस्पर्य एगिया और यूरोप का स्थान नहीं घाता बरन् यूरोप के राजनीतिक पूर्व और राजनीतिक पश्चिम का स्थान घाता है । जब यूरोप में ईसाई-धर्म का मोमबाला था तो रोमन ईसाईक और प्रोटेस्टेंट मन पश्चिम के प्रतिनिधि से और ग्रीक धर्म तथा रानी परम्परावादी धर्म पूर्व के प्रतिनिधि । दोनों एक ही स्रोत जुड़ाई-हूमेनीय से उद्भूत से । दोनों में परस्पर जितनी समानता है उतनी समानता इनमें से किसी एक और किसी धर्म सम्म समाज के बीच नहीं है । इसके बावजूद साम्यवादी पूर्व और प्रजासंघाधिक पश्चिम के बीच की खाई पश्चिमी संसार के बीच की खाई है ।

साम्यवाद का बंधुता है—प्लेटो न्यू टैस्टामेंट थॉमसेल-मुग के सामाजिक समानतावादी रिफार्मों ऐबम स्मिथ ह्युमेन पयूरबाल मार्कस एबस्स सेनिल । साम्यवाद के कुछ बिभिन्न लक्षण पश्चिम के हैं ।

पूतानी मानस तर्कप्रधान था । उनमें बिकेक की बिशिष्टता पर आर दिया था । साम्यवाद का दावा है कि बहू ईसाईक बिधि और बिस्तेपक-गठन को उप माग म लाता है । उन स्वयं से बिचभाग है बहू निर्भरित है ।

मान्यवाद पूतानियों के समय से ही पश्चिमी वर्गों का एक मुम रहा है । पूतानियों से सामाजिक परिस्थितियों और स्वयंछिष्ठ प्रमाणों पर आर दिया था । मार्क्सवादी ग्नी घरती पर एक पूर्ण समाज की स्थापना करना चाहते हैं । धीरोगिक बान्ति के धनिजधर्म पर गहू प्रभाव—बहुत कम बैतल बच्चों और रिशियों से काय प्रत्य पिठ बनसंग्यावाणी कन्दी बन्धिया पारिवारिक जीवन का बिनाघ—के बिपुड मान्यवादी घाबाब बुलन्द करते हैं । सामाजिक ग्याप के नाम पर से पूंजीवादी व्यवस्था की घालाचना करते हैं । सेनिल का कथन है कि एक भी सीद्धि बच्च की चीन हमारो दुनिया के प्रति एक पिबकार है ।

साम्यवाद मान्य की केबस औचित्य घाबदवस्थाओं की पूर्ति की ही मांग करती

करता वरन् उच्च स्थिति समानता, प्रायिण्यसे मुक्ति राजनीतिक अथवा प्रायिक पोषणसे मुक्ति जैसी मानवीय प्राकाराओंकी मांग भी करता है। मानस एक नये मानव की एक उच्च मानवीय मानव की बात सोचते हैं, जिसकी सत्ता पहले कमी नहीं थी और जो भारतवर्ष से मुक्त होगा। अपने दावे के अनुसार साम्यवाद प्रायिक मनुष्य की जो प्राज निराश घोर कुंठप्रसू है संकीरतम प्राकाराओं की पूर्ण का अक्षर प्रदान करता है। मानवीय प्रकृति में सबसे अक्षा उद्देश्य है इस तुच्छ नरकर व्यक्तिगत जीवन को जिसमें अक्षर प्राप्तिरिक्तता मौजूद है किसी ऐसे उच्च काम में लगा दिया जाय जिसकी कल्पना एक धर्म के हास और मीठिक-वाद के उच्च के परचात् कोई मानस न कर सका हो। यह प्रादर्श है पृथ्वी पर स्वर्ग की स्थापना का मानवजाति को उच्च उठाने का। अपने एक मानवीय अणु में मानस में एक अगाध समानवादी समानता स्वप्न देना का जहां "विनाशित मानव के स्थान पर पूर्वत विकसित व्यक्ति होगा ऐसा व्यक्ति जिसके लिए विभिन्न सामाजिक कार्य सक्रियता के ही रूप होंगे। मनुष्य मछली मार सक्ते विकार सेल सक्ते या साहिरियक प्राप्ति करना करते और इसके लिए उन्हें पेशेवर मछलीमार, शिकारी या प्राप्ति कर बनने की प्रावश्यकता न होगी।

इतिहास में कोई नई बात नहीं है कि एक विघनरी उद्देश्य साक्षिकता के फल स्वरूप किम प्रकार प्राक्रमक प्रकार में परिवर्तित हो जाता है। "तुम सम्पूर्ण संसार में जाओ और प्रत्येक प्राणी का ईशियों की शिखा दो। ऐसा सगता है कि साम्य-वाद 'असंविशेष' ईशाईधर्म है।

प्रतिक्रमता नियमके अनुसार प्रतिक्रमताएं साध-मात्र निर्वाह नहीं कर सकतीं। साम्यवाधियों और अगाधवाधियों का अर्थ एक्स और स्पार्टा रोप और कार्बेज यूरुधियों और गैरयूरुधियों मूमानियों और बर्बरो ईसाइयों और मूर्तिपूजकों प्रोटे स्टेटों और कैथलिकों के अर्थ जैसा ही है। प्राज यह संघर्ष मंडवीय अक्षरतम और अक्षरता के अक्षरतम के बीच है। यह अथा 'यह या यह'-अक्षरतम के कारण है। इससे संसार दो खेमों में विनाशित हो गया है—अक्षरतम का साम्राज्य और अक्षरतम का साम्राज्य। अक्षरतम व्यक्ति का मस्तिष्क अक्षरतम और हृदय अक्षरतम होता है तथा यह अपने अक्षर को अक्षरतम कर अक्षरतम वाहता है। अपने विरोधियों की नास्तिक पीठ करने से एक प्रकार के नैतिक अक्षरतमकरण का प्राभास होता है। परिचयी मानव की मानसिक अक्षरतम में विनाश-अक्षरतम एक प्रावश्यक अक्षरतम रहा है। 'अक्षरतम अक्षरतम' में अक्षरतम अक्षरतम का एक प्रावश्यक अक्षरतम है "प्रायिक अक्षरतम स्थापित करने की यह अक्षरतम प्रायिकतम से प्रत्येक मानव और सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रावश्यक है। अपने ईशियों को एक में अक्षरतम, प्राणी और अक्षरतम

तामा की पूजा करो बरना हम तुम्हें और तुम्हारे देवताओं सबको मार डालेंगे । और यही कम दुनिया के अन्त तक यहाँ तक कि जब बैबता भी पृथ्वी से जायब हो जायमे बनता जायगा ।

जब तक धार्मिक सिद्धान्त और उनके प्राबल्य का व्याप्यकार रह्ये तब तक नास्तिकता भी ख्येवी और नास्तिक बंदिह भी किय जाये ख्येगी । धार्मिक सिद्धान्तों को अहितम और निर्रान्ति सरयों का प्रकाशन मान लेने पर सिद्धान्तिक मतमें ख्येवी और ख्येवी की बिधियों से मुक्ति संभव नहीं है । ईसाईधर्म की प्रारम्भिक शताब्दियों में सात समितियाँ मुझ सिद्धान्त का निरूपण करने और नास्तिकता को बंदिह करने के उद्देश्य से बंठी थीं ।

तमाकबिध , धपराबियों की पाप-स्वीकृति और कठोरतम बंड़ों की मांग की बातें हमने पकसर सुनी हैं । प्रारम्भिक ईसाई कर्ष में पाप-स्वीकारोपितयों और परबता ताप के उपाहरण हैं । बसी नागरिकों की मारमा की धार्मिक प्रभृति का ध्यान रखें ता हमें धारण्य नहीं होना कि वे राज्य के प्रति अपने धपराबों को स्वीकार कर लेते हैं ।

पश्चिम मुक्यत (यद्यपि एकान्तत नहीं) ईसाईक विवेक शास्त्रशास्त्र सिद्धा
नदी प्रचार और संसार को खो बिरोधी खेमें ने बांटेने पर खोर बैता है । साम्यवाद इन्ही बातों को और बका बैता है ।

काल मार्ग के उद्देश्यों से सम्बन्धित धपनी कृतियों में लेनिन ने सिद्धा है कि मान्य "धूर्म मेवावी पुष्य के जिम्हूनि मान्यता के तीन सर्वाधिक उन्नत खेयों का प्रतिनिधित्व करनेवाली उन्मानवी गान्धारी की तीन प्रमुख बिचारधारणों का प्रागे बद्रामा और परिणामान्ति तक पहुँचाया । ये तीन धारण्य भी परल्लभ्यवादी-धर्मन इर्दंग परल्लभ्यवादी पदेवी राजनीतिक धर्मधारण्य और फाँसीवी अन्तिमारी सिद्धान्त, सहित फाँसीवी समाजवाद ।

साम्यवाद स्वयं ख्येवी पश्चिमी इर्दंग का परिणाम है ख्येवी उद्यम प्रसार ख्येवी पश्चिम । राजधानियों—ग्रिमिन् पैरिज, जेनेवा—में प्रविष्टित नेताओं द्वारा हुषा है । प्रथम बिन्धुमुझ के धर्मन सरकार ने पबिष्य के कम को एक रेल के बिधे में एनकर मुहरबान्य करके बिस्पोट के लिए सन्नासीन फिर्नरुष के खेयन देवाधार रवाना कर दिया था ।^१ धन साम्यवाद पूर्वी सिद्धान्त नहीं है यद्यपि उत्तरा प्रचार

१ १९१४ ।

२ निरिध फीरेज क्कटिम का सिद्धान्त का कि राजनीतिक लेख सधाम्यवाद । धर्मनी के नेननसगी क्कटिम के ख्येवी 'बोनेरो उद्यम' के ख्येवी 'स्य उद्यम का बिधे धर्मनी के ख्येवी स्य-स्यन के बिधे वाया रिध का ।

यह पूर्व में हो रहा है।'

यह मान लेना गलत है कि पश्चिम की परम्परा के अनुक्रम सरकार केवल सनरीय प्रजातंत्र हो सकती है। इसमें यही चाहिए होगा कि हम यूनाइटेड स्टेट्स के अन्तर्गत राज्यों की निर्भङ्गता में सेकर अपने पुनर्जातावादी को भूल बैठें हैं। पश्चिम की विरामत में सभी प्रकार की सरकारें शामिल हैं।

यह सोचना गलत है कि यहिनाम्यवादी देश ईसाई-धर्म को स्वीकार कर में तो कुछ नहीं होंगे। कॉन्स्टेंटिन के समय में रोम-साम्राज्य ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था किन्तु अपनी समाप्ति तक वह मुझल रहा। इतिहास का मास्य नहीं है कि ईसाई राज्य कुरानों में कम मुझप्रिय हैं।

निम्नलिखित संसदीय प्रजातंत्र सरकार का सर्वाधिक समुच्चय है। इसमें हम पार्लियामेंट राज्यों में सीधे और कारिणीकारी सामाजिक-साक्षर परिवर्तन उत्पन्न कर सकते हैं। प्रजातंत्र में विरधान करने पर हमारी जिम्मेदारी हो जाती है कि हम राष्ट्रों के बीच सामाजिक स्थान स्थापित करें और अन्य राष्ट्रों को प्रजातांत्रिक परिष्कार प्राप्त करने में सहायक हों। यूनाइटेड स्टेट्स प्रजातंत्र का नारा समानता समान है, समका पालन करना कठिन। यदि प्रजातांत्रिक देशों में उद्देश्य के प्रति ईमानदारी की स्थापना का जल्दाह पैदा हो जाय तो वे घोषित राष्ट्रों को स्वतंत्र कर देने में सक्षम मान मिटाने का प्रयत्न करेंगे और पिछड़ हुए देशों को साक्षर प्रगति में सहायक होंगे। यदि संसार के प्रजातांत्रिक राष्ट्रों की प्रजातंत्र के प्रति बुद्धि का स्थापित हो सके तो प्रजातांत्रिक राष्ट्रों का विरोध कम हो जाएगा। घोषित देशों के अन्तर्गत निवासियों और संसार-भर के जगहों कामपारों साम्यवादी व्यवस्था में सामाजिक समानता राजनीतिक स्वतंत्रता और साक्षर विधायिकाकार के उन्मूलन की संभावनाएँ बोलती हैं। क्या हमारी जाने ही प्रजातंत्र का उद्देश्य नहीं है ?

साक्षरता है प्रजातंत्र के प्रति अपनी जल्दी स्थापना की कि साक्षरता पढ़ने पर अपनी बलि देने में भी किष्क न हो। हमें जातीय सीप्टता की भावना को त्याग देना चाहिए और हमारे देशों में होनेवाले साक्षरता प्रस्थापकों को समाप्त करना

१ प्रोफेसर हानेकी ने अपनी पुस्तिक 'निम्नलिखित' में लिखा है कि 'यूनाइटेड स्टेट्स में कम का पूरा में सरकार निष्ठा कर करने का प्रयत्न किया है। उक्त प्रयत्न है 'इस देश में प्रथम में निकोलस फिलेन तक के साम्राज्य के कम का अधिक यूरोपीय व्यवस्था के बारे में कबरे का कुछ तथे सरकार १९१० में अपनी साक्षर कारवाही — जिम्मेदार बर्ष के अर्ध साल में संसदीय प्रजातंत्र की रिता में अर्ध किन्तु अर्ध प्रजातंत्र किष्क अर्ध — यदि यूरोपीय-सिद्धि नहीं तो कम से कम अ-सूत्रीय की और है ।'

चाहिए वरन् जिम्मेदारियाँ टहराना चाहिए। हमें दूसरे राष्ट्रों के निवासियों से समता के स्तर पर मिलने को तैयार रहना चाहिए, चाहे वे किसी भी जाति के हों और उनकी लम्बा का रंग कुछ भी हो। अपनी जनता का सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्तर ढंका उठाने के लिए मलमलीक सभी देशों की सहायता करने का हमें तैयार रहना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को शांतिपूर्वक ढंग से हल करना प्राथमिक है। समार की युद्धभारत जनता यह अनुभव नहीं करना चाहती कि राष्ट्रों के बीच शांति और मित्रता की घाटा खोप नहीं रह गई है।

हम नहीं कह सकते कि साम्यवादी राज्य कामगारों के स्वयं हैं जहाँ हर प्रकार के भेदभाव और वर्गीय विरोधाधिकारों का उन्मूलन हो चुका है। इन राज्यों में सम्पूर्ण सत्ता एक छोटे-से बल के हाथ में रहती है और बल का प्रमुख सगमन धर्महीन हो जाता है। उनकी नीति का वास्तविक प्रयास नैतिक नीतिपरक ही होता है। बल का नेता हर व्यक्ति के लिए हर बात का निर्णय करता है, जिसका परिणाम यह होता है कि मानव-जीवन का प्रस्तुतन भी कठोर नियंत्रण में होता है। यदि किसी/स के बानी हम प्रकार शांति होने को तैयार हैं तो जब तक वे दूसरों के जीवन में बाधा नहीं बनते तब तक उनके साथ मित्रता का ही व्यवहार करना चाहिए। हमें एक ऐसी विश्वव्यवस्था कायम करनी चाहिए, जिसमें कुछ एक समाजवादी को दूसरी में धेड़ मानव की भावना वर्गेब और निरकुशता न हो। हमें एक नए सविधान बनाने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसमें सभी मानवीय समस्याओं के माने में सभी देशों के बानी समुचित नाम से हों।

हम साम्यवादी देशों के साथ सम्बन्ध नहीं बना पा रहे हैं। प्राथमिक सम्बन्ध विचारित होने में हम धीरे-धीरे आ जाते हैं और धीरे-धीरे उभरते जाते हैं। मनु, मरे, युवा का। आज के रोषरस्त संसार में सबसे बड़ा गीप है छोटे-छोटे देशों की अपनी-अपनी राष्ट्रीयता। जिस समाज में हुआ में उड़ना और परमाणु को तोड़ना सीखा है उसमें मानवीय एकता की स्थापना का प्रयत्न करना हमारा ही कर्तव्य है।

पहले समय में दुनिया में धनेत समाज थे जो धनेत-धनेत बंधन धीरे-धीरे विरहित हो रहे थे। इन विभिन्न प्रयोगों के फलस्वरूप दर्शन करना और विज्ञान की समस्त विरासत हमें पिनी है। अब दुनिया मिट्टीकर एक समाज में बदलती जा रही है। बानों का एक-दूसरे के विरोध पर बटिबट है। इनके बावजूद यह सही है। यहाँ तक कि बोना विरोधी व्यवस्था में भी राष्ट्रीय समानता है और वे एक ही दिशा में बढ़ रहे हैं। कहीं व्यवस्था की संज्ञा का गोल है— टैक्नोलॉजी। यह अपनी व्यक्तिगत सामाज्य प्रवृत्ति और बिबेक बनाये रखने को उतुक है और उसे

पूर्व घोर परिचय

मान्य है कि परिचयी प्रजापति के सामने वह टेकनॉलॉजी पर काबू करने के बाद ही उठर गयेगी। हम वर्ष पूर्व जब ८ मई १९४२ को जर्मनी ने धाममसमर्पण किया था 'सम्बन्ध टाइम्स' ने लिखा था "प्रह्वार झूठा घोर घक्ति की सामना से राष्ट्रों के करोड़ों पीड़ित इन्सानों पर त्रिभ राक्षसी धामन का बुधाकार दिया जा उठाका निरस्वारमय विनाश इस प्रकार हो गया घोर डीक ही हुया। उम पुत्र म दुनिया ने महसूस कर लिया था कि बिबेक द्वारा प्रतिबंधित वैज्ञानिक ज्ञान ने मनुष्य का विनाश की कितनी मयानक घक्ति प्रदान की है। सामूहिक विनाश के रास्ता की मयप्रद बुद्धि को मजर में रखते हुए हम हमबाग को मसा नहीं मकते कि मानव-मनुष्य राष्ट्रों की एकता घोर गानि की मयडहता मस्यामयक मय है। मामाय्य बागाए मात्र नहीं। किमु हमारे भीतर मय पुषा राष्ट्रीय ममिमाम घोर मयनी मयनी विचारधारा के प्रति मयविश्वास उपमिषत है। ये बिबेकपूर्व स्थितिया नहीं बनू मानमामक प्रकृतिया हैं जो सदैव मानव-मयबहार को प्रभावित करती हैं। हरममय के मयसर पर उठर धानेबासी इस प्रकृति को हम मयाना होमा कि हमारे मयु युमिण मयमकृतिक वैस्य है त्रिभना समूल विनाश नहीं तो कम से कम पराजय विरवगान्ति के लिए परमावश्यक है।

वर्तमान प्रचलित प्रचालियों में समान बोध है कि वे पाषिकता घोर तकनीक की मयसमिमता घोर मीनिकबाध की प्रकृति पर विचाम करते हैं। दोनों ही घक्ति पूजा को स्वयं में एष उहस्य मानते हैं। राज्य की मयमयकताओं के मामने मयिण को बबा मते हैं घोर राष्ट्र राज्य के उपासक हैं। राज्य के मयमचार से बनता पीडित होतो है फिर चाहे वह मयमचार फौजी हिमा का मय मयम करे, चाहे बाणिम्य सम्बन्धी मयम का। राष्ट्र राज्य की पूजा मूनानियों से मिली विरामत है। हमने युनानियों का मास दिया घोर मय हम मी उसी रास्ते पर बड़ रहे हैं। बहुरा मीमारीयों से फिरे त्रिभ बागों में हम रखते हैं ब राष्ट्र नहीं, एकता की मयममिषी दुनिया के पायमसानु है।

मानव जब मानवीय मयिण की पूजा करने मयते हैं घोर स्वय को रबल का मयिकारी समक मते हैं। तमी प्रतिफार के मयिकारी बन जाते हैं। धाम का सीत पुत्र विनी बिमेष रम के मयम नहीं है। वह दो राष्ट्रों के बीच का मयमय मही है, मानव की मालमा पर मयिकार करने के दो मयमकों के बीच का मयमय है। मीतिकबाध की मयम प्रकृति मयसे मयमय करने को मयसे बहा जाता है। बास्तव में हमारे लिए मय जान नहीं है। बसिक मयुम्य दुनिया के मयुमय ही मान्य मकती है। इस प्रकृति का विरोध करनेबासी प्रकृति का पठा दोनों बलों को फिर मयाना है। हम कुम मिडामों को मानने का बाबा करते हैं घोर मकत है कि हमारे मयुमों के पास ये मिडामत नहीं

है किन्तु भावस्थकता यह बात भी है कि शत्रुओं को मनवाने के प्रतिरिक्त इन सिद्धांतों को स्वयं भी मानें। यदि हमारा उद्देश्य मानवजाति की उच्चतर संभावनाओं का उद्देश्य है, तो उसे हमारी सामाजिक संस्थाओं में भी सम्मिलित होना चाहिए।

हमें यह रचना चाहिए कि मानव और उतकी संस्थाएं संघर्ष प्रणाली और संघर्ष कुरी है इसलिए संघर्ष प्रणाली और संघर्ष कुरे उद्देश्यों के लिए ही उनमें संघर्ष होता है। केवल शक्ति को डंका समझने और शूना की प्रकृति को उत्साहित करनेवाले लोग यह मूल बातें हैं कि प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर का अंश मौजूब है। अपने शत्रुओं में मानव को देख पाने की प्रसन्नता का अर्थ विश्वशांति की स्थापना नहीं बसौम बिनाशकारी मुक है।

सह-अस्तित्व की बात करते हैं तो हम पश्चिमी 'यह वा यह' से अलग हट जाते हैं। हमारा विश्वास है कि वो व्यवस्थाएं एक-दूसरे को प्रभावित करती हुई साथ-साथ रह सकती हैं। सह-अस्तित्व का अर्थ समझौता या समर्पण नहीं है। इसका अर्थ है एक-दूसरे को समझना सुधार करना। कोई भी सामाजिक व्यवस्था स्थिर नहीं है, कोई भी नियम अपरिवर्तनशील नहीं है, कोई भी संविधान स्थायी नहीं।

स्टालिन की मृत्यु के पश्चात् सोवियत व्यवस्था की कठोरता में हिसाई घाई है। यात्रा-सम्बन्धी प्रतिबन्धों में परिवर्तन हुआ है और कस में जनता को मुक्तिपाए मिली हैं। जोरिया और इण्डोचीन के समर्थों को मुक का रूप नहीं धारण करने दिया गया है। अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं में भी सोवियत रथैया वहुसे की घोरता प्रतिक संघर्ष और भीमि रहू है। पश्चिम के माप समझौता करल की इच्छा स्पष्ट है। समुचित समय सहिष्णुता और समझदारी से आगितय समझौता हो सकेया ऐसा सोचना अबाध ग पने नहीं। विशा के प्रसार और लोगों की मांगों में बुद्धि वा अाव अक परिणाम है सहिष्णुता की प्रक्रिया। साम्यवादी देशों के लिए भी यही सच है। यदि हम प्रक्रिया को रोगा गया तो सभी एकरागीय शासनों की भांति वे भी अपने आन्तरिक विरोधों के बल पर ही मट्ट हो जाएये।

११ अक्टूबर १९६६ को गर बिस्टन बर्षिप ने मास्को में लिखा था "हमें लगता है कि अटल बिहारी वाजपेयी ने सामाजिक विकास के मापने पर हमारी व्यवस्थाओं के बीच वा अन्तर अा हो आग्या और अविवादिता लोगों के जीवन को अविट समुझिगाती और सुगमय बनाने वा महाम सम्मिगित अापाण हर अर्प अदना वा रहा है। अाव शास के लिए आगि स्थापित हो आण ता व अन्तर वा अाव दुनिया को

इतना अधिक परेदान कर सकते हैं विज्ञानों के विचारों के विषयमात्र रह जायेंगे।”^१ वन सात वाद, १२ जुलाई १९२४ को उन्होंने 'हाउस ऑफ कॉमन्स' में इसी दृष्टि को बतलाया "मुझे विश्वास है कि (आन्तिपूर्व सह-अस्तित्व की) इस नीति को अपनाते से कुछ वर्षों बाद संसार का प्रायः विभाजित करनेवासी समस्याओं का समाधान मिल जायगा—या अनेक समस्याओं की तरह वे स्वयं सुलभ जायगी— और वह भी इस प्रकार कि मानवजाति का सामूहिक विनाश नहीं होना और समय मानवप्रवृत्ति तथा ईश्वर की कृपा से हम मुक्ति प्राप्त कर सकेंगे।

यही समय है जब हम निर्णय करना है और ज्यादा अच्छा होगा कि हम ईश्वर, मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूँ कि मैं धीरे धीरे नहीं हूँ के स्वाम पर शर्मना करें है ईश्वर मुझे पापी पर कृपा करो। स्वतन्त्र (निर्गल) और साम्यवादी दोनों ध्यवस्थाओं में भीषण दुर्गुण है और यह समझ नहीं है कि सम्पूर्ण मानवता किसी एक को स्वीकार कर ले। हमारे लिए आवश्यक है कि हम अपनी मानवता को सुदृढ़ करें, अपने विचार को नवीनता प्रदान करें, महगुप्त करें कि जिस विनाशकारी दुस्वप्न के बांगुल में हम छटपटा रहे हैं वह यथार्थ नहीं है। हमारी वर्तमान यज्ञया एक नये संसार के जन्म से पहले की पीड़ा है। इससे अधिक निरिपथ और कुछ नहीं है कि इस पृथ्वी की अनेक अन्य सम्प्रदायों के समान इस सम्प्रदाय का भी अंत होगा। कितने समय तक यह सम्प्रदाय बनी रहेगी बताया असंभव है, जिस प्रकार धारणी की जड़ की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। हमारे ही प्रयत्नों पर निर्भर है कि यह सम्प्रदाय अताविश्यों तक रहे या समय से पूर्व पतित होकर अकासमृत्यु को प्राप्त हो। वैदिक बुझाये और मृत्यु की अनिवार्यता जैसी प्रथी अनिवार्यता सम्प्रदायों के साथ नहीं होती। हमारा प्रयास बीसा पड़ गया अतुनासन कम हो गया हमारा धार्मिक धर्म विनष्ट हो गया तो हमारा अन्त हो जायगा। निर्णय होना 'विलिप्तावस्था में आत्महत्या'।

जिस युग में हम रहते हैं उसकी प्रवृत्तियों को ग्रहण करने उस युग की महत्ता समझने हमारे लिए प्रस्तुत उद्देश्यों को महगुप्त करने और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रबलनीय होने पर ही जीवन का कोई अर्थ है। हम पूर्वनिर्णयकार के अद्ययय और भी हैं। इतिहास अत्यधिक की नहानी है। इतिहास में कोई वैदिक विकास नहीं होना और मानवता अपने अतीत को स्थावर नवीन हो जाती है और साथ ही इसमें किसी नवीन और अज्ञात का विकास भी होता रहता है। प्रायः हम अपने ही अस्तित्वों और हृदयों के बल पर नये दिने से आरंभ करना है।

३ टेक्नोसॉजी : स्वामी नहीं, सेबक

हमारे मन में यह मानने की भावना उठती है कि टेक्नोसॉजी की प्रगति ही वास्तविक प्रगति है और भौतिक सफ़लता ही सभ्यता का मापदंड है। यदि पूर्वीय देशों के निवासी मशीनों और तकनीक के प्रति आकर्षित हों और पश्चिमी राष्ट्रों के समान उनका उपयोग बिना किसी शैक्षिक संस्थानों या शैक्षिक संस्थाओं की स्थापना में करते सब तो वे अति राजनीति में उलझ जाएँ और मृत्यु का खतरा भोग में सेवे। वैज्ञानिक और टेक्नोसॉजिकल सभ्यता में अन्धे घबहर और अन्धी संभावनाएँ हैं और साथ ही बड़े-बड़े खतरे और सामथ भी हैं। मशीनों का प्रमुख स्थापित हो गया तो हमारी सम्पूर्ण प्रगति व्यर्थ हो जाएगी। हमारे सामने की समस्या सार्वभौम है। पूर्व और पश्चिम दोनों के सामने एक ही खतरा है और दोनों का अविष्य समान है। बिनाम और टेक्नोसॉजी न अन्धे हैं न बुरे। धार स्वयंता उन्हें निषिद्ध करने की नहीं बरन् नियंत्रित रखने और उचित स्थापना पर स्थापित करने की है। वे प्रभु हो पायं तभी खतरा है।

उस मूर्ख बुद्धि से अधिक से लेकर जब मानव ने पहला परवर का प्रोडर बनाया था सारे दुर्गों को पार करते हुए धाक तक—जब मानव ने सारे संसार पर वैश्वीय का ज्ञान बिछा दिया है और आकाश से बम गिराकर बुनियाद के सहर्षों का विनाश करने की योजनाएँ बना डाली हैं—मातृसंजीवन की यात्रा भौतिक विजय और पश्चिमी उपनिवेशों की कहानी है। कसम कूची पहिपा फाड़ना हम ताब 'सीबर' चिरी इंजन अन्तर्गतम इंजन अधिक विकास के धर्म हैं। वैज्ञानिक रूप में नाभिकीय मजबूती चिया अग्नि क आधिपत्य से अग्नि नहीं है। मशीन पराध पर अस्तिष्क की विजय की प्रतीक है। वह स्वयं धर्म में ही उद्भव नहीं। वह है एक उपकरण जिसका आधिपत्य मानव ने अपने पार्श्वों को मूर्च्छित देने के लिए बिना था। हमारे पार्श्व ही बसत हा ता इसकी अग्नि दायी हमारा है, मशीनों पर नहीं। हमारे पार्श्व छोड़ी हों तो मशीनों का उपयोग अन्धकार के निवारण मानवता की दया को मुहारे और आत्मा की परिपक्वता प्राप्त करने के प्रयत्न में सहायक हो सक्ता है। मोटरकार में ऐसी कोई बात नहीं है कि हम उसे ठेकी स बलाकर पैदल यात्री को मार डालें। बिनाम में ऐसी कोई बात नहीं है जो हमें अपने सहयोगियों पर बम गिराने को बाध्य करे। मशीनों में स्वयं कोई घुटाई नहीं। उनके बुरा साहित हो जाने का कारण यही है कि हम स्वयं मूर्ख हैं।

मुझ लोगों का कथन है कि वैश्वीय जीवन में मशीनों का अविश्वसनीय प्रयोग

ही हमारी परिस्थिति का खतरा है। ऐसा कहकर वे वास्तव में प्राबुद्धि सम्पत्ता की अत्यधिक तेज रफ्तार, जीने की प्रतिभोगिता व सम्बन्धित विन्ता जीवन की अनिश्चितता अनेक नाममात्रों के जीवन की शुष्कता और एकरमता—जिन्हें बंटे पर बंटे एक ही तरह के काम मशीनों की तरह करने पड़ते हैं—हमारे मनोरंजनों को उनेत्रक प्रवृत्ति और बेहद तेज रफ्तार व काम के पूर्व फाइनेवासी माबाओं के प्रति समाज की ओर इशारा करते हैं।

धर्म की बचत करनेवासी पुरानी तरीकों का उपभोग मानव की शक्ति के भीतर ही किया जाता था। मानवीय नियंत्रण से मुक्त हो जाने के बाद टेक्नोलॉजी अपना धर्म खो बैठती है और उद्देश्य पर उपार्णों की विजय हो जाती है। प्रौद्योगिक शक्ति से पहले धारणी मशीनों को नियंत्रित करके बस्तु तैयार करते थे। वे अपनी बुद्धिमत्ता का प्रयोग करने में प्रसन्नता का अनुभव करते थे। अपने काम को वे धर्म के समानुस्य समझते थे। ऐसे काम के बारे में हीयत का कथन है 'नृत्य के अङ्ग-भाजन में लेकर स्वापत्यकता की विस्मयजनक विस्मयकाय कृतियों तक य सारे काम यत्र की योगों में घाते हैं' 'किया स्वयं मेट है' इस उपलक्ष्य में मेट 'ओ केवल एक बाह्य बस्तु न रहकर आन्तरिक बस्तु हो जाती है' एक धार्मिक विदाधीनता है और यह प्रवास आत्मबनमता को नकार कर अन्तर्वाणी और कल्पनावासी उद्देश्य की पूर्ति करता है तथा बाह्य जगत् के लिए प्रस्तुत करता है।"

टेक्नोलॉजी की सम्पत्ता में जहाँ हम सम्पूर्ण के एक घंघ पर ही ध्यान देते हैं, हमारे काम को आत्मा का संस्पर्श नहीं मिलता। उत्पादन की रफ्तार बढ़ाने की होड़ में कारखानों में काम को इतने छोटे-छोटे घंघों में बांट दिया जाता है कि कुममता अथवा बुद्धि की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। इस पुनरावृत्तिवासे नाम से करोड़ों कामगार अथ वरु और एकरमता में डूब चुके हैं। कामगार अपनी व्यक्तिगत प्रवृत्ति खो देते हैं और चेतना की सतह पर पीबित रहते हैं। हम मानव के सभ्येष्ठ अंग का प्रकामन नहीं करते। उच्चतर मानवों के लिए उल्लुके इस युग में हम सरल और पवित्र जीवन के अनिवार्य मूल्य को नजरअंदाज कर रहे हैं। किसी व्यक्ति-विषय का महत्त्व उसकी सम्पत्ति में नहीं बल्कि जीवन यापन के ढंग से धांका जाता है। मौलिक आवश्यकताओं और सांसारिक भागीदारी के संघर्ष में भारत ने अन्तोग्र और आत्मसंघर्ष के मूल्य पर खोरा दिया है। इस टेक्नोलॉजी-सम्पत्ता में उत्पादक या उपभोगता किसी भी हैसियत से जो जाने वाला धारणी व्यक्तिगत हो जाता है, अपनी जड़ खो बैठता है, अपने स्वाभाविक संघर्ष से अलग हो पड़ता है और मानो शून्य अन्त में फेंक दिया जाता है।

व्यक्ति के असीम सूक्ष्म मानव के प्रतिमान और प्रविष्टियों और आत्मा की स्वाधीनता को टेक्नोलॉजी के युग में खरबित करना प्रायोगिक काम नहीं है। आत्मा के पुनर्जीवन—जिसका अर्थ है मानव की गहराइयों में आत्मा की परिपूर्ति और जिसमें अपने से ऊपर उठकर मानव अपनी सत्ता के साथ से जुड़ जाता है—से ही यह संभव है।

दुर्भाग्यवश विज्ञान और टेक्नोलॉजी की उपलब्धियों से प्राकृत्य हमारे युवक कुछ नेता मानव को एक विद्युत् यांत्रिक भौतिक और स्वयंचालित इच्छाओं से निर्मित प्राणी समझते हैं। वे मानव की भौतिक प्रवृत्तियों पर तो जोर देते हैं, किन्तु उसके अन्तर्ग में उपस्थित उच्चतर पवित्रता को भूले-से सगते हैं। हमारे युवक अनेक लोगों का रोष है आत्माहीनता। वे प्राथमिक रूप से विस्थापित हैं, उनकी सांस्कृतिक जड़ें उखाड़ चुकी हैं। वे परम्पराहीन हैं। और चूँकि उनकी जड़ें नहीं हैं, इसलिए वे गहरा अकेलापन महसूस करते हैं और अमृत नहीं भी मीठों की तलाश करते हैं। वे फिरकेपरस्त बन जाते हैं। अन्तर केवल यही है कि प्राकृतिक फिरका पिछी भी रैप से बढ़ा है। यह महाडीनों में फैला है। पृथ्वी पर स्वर्ग के मये मसीहा उन सभी निराशियों का घोषण कर रहे हैं जो उदर हो चुके हैं या जिनमें शून्यवाद की अपरिमित निराशा भर कर चुकी है।

अपने भौतिक वातावरण को काबू में रखने की हमारी असीमित क्षमता से नहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है स्वयं अपने और अपने सहयोगियों के साथ हमारे सम्बन्ध। विवेक की उपस्थिति हमारी मानवता की गारंटी नहीं है। मानव बनने के लिए हमें विवेक के प्रतिरिक्त किसी और बस्तु की आवश्यकता है।

विज्ञान और टेक्नोलॉजी को ही नहीं सम्पत्ता का आधार नहीं बनाया जा सकता। वे एक गुदगुद नीब का निर्माण नहीं कर सकते। संभाव्य विज्ञान को दूर करने के लिए आवश्यक है कि हम किसी मये आधार पर जीना सीखें। हमें निश्चय ही प्राथमिकता की शोष करनी होगी। मानवीय व्यक्तित्व का सनावर करना होना सभी प्राथमिक परम्पराओं में व्याप्त पावनता की प्राप्ति को प्राप्त होगा और इसके उपयोग से एक नव मानव का निर्माण करना होगा जो इस नवीन प्रवृत्ति के साथ अपने प्राविष्टता उत्तरों का प्रयोग कर सके कि वह प्रवृत्ति को नियंत्रित करने से अधिक महत्त्व प्राप्तियों की संपूर्णता का क्षमतावान है। मानव को मानव की जगह के भीतर ही बनना ही सेवा में सीट प्राप्त चाहिए। मानवीय चेतना का ध्यान रखना प्रयास्य है।^१

^१ 'मेरे मन के अनुसार मानव चतन्य और व्यापक और शक्ति' है। मध्य अक्षांशों के मध्य V १३।

५ रचनात्मक धर्म

एक घोर यूरोप पर नये लठरे मंडरा रह है घोर दुसरी घोर पश्चिमी विचारों घोर तकनीकी कुसलता के प्रभाव से एशिया घोर अश्लीला का रूप बदलता जा रहा है। बुनिया धार्मिकपरस्परसम्बद्ध होती जा रही है घोर संस्कृतियों व सम्प्रदाय का सम्मिलन हो रहा है। कोई विधेय जीवन-पद्धति ही एकमात्र उपाय है ऐसा सोचना हूब करने की धारमकेन्धीयता है। धारमिक गड़ी कि सामा की विभिन्न वेधाओं को एक समान स्तर पर सा लडा किया जाय। वे विभिन्न गुणो को उजागर करती है। हृषाण कार्य एक जीवन-पद्धति क स्वाम पर दुसरी को सा लडा करना नहीं बल्कि प्रत्येक से उसका धस प्राप्त करना है।

पूर्व घोर पश्चिम में धारारपूत धस्तर नहीं है। हमसे प्रत्येक पूर्वीय भी है घोर पश्चिमी भी। पूर्व घोर पश्चिम दो ऐतिहासिक वा भीगोमिक धारणाए वही है। वे हर युग में हर मानव में अन्तर्हित दो सभावनाए हैं मानवीय चेतना के दो परिभासन हैं। मनुष्य के स्वभाव में उसकी धैर्यात्मिक घोर धार्मिक प्रकृतियों के बीच तनावती है। यह तनाव वा इनधम विपत्ति नहीं है, चुनौती है संभावना है।

हमसे से प्रत्येक धार्मिक घोर बीडिक दोनों है। पूर्व का महत्त्वपूर्ण धैर्यात्मिक वागदान है घोर पश्चिम की अकृष्ट धार्मिक उपलब्धियां। धार्मिक से धार्मिक अंतर केवल अोर देने पर है। बुद्धि घोर चेतना दोनों ही मानव-प्रकृति के गुण है। उनमें धभी सम्बन्धन नहीं स्थापित हो पाया है।^१ धात्र प्राग्मा के अंतर विचारों घोर चेतना-के-बीच एक लाई है। धरने धार्मिक राजनीतिक सामूहिक घोर सामा धिक धधधध में सामअसव स्थापित हो जाने के बाद ही कोई समाज स्थायी हो पाता है। वे तसव विगुंलन हो गये तो सामाजिक व्यवस्था धधधधूर हो जाती है।

हमारे युग की धाघाअनक घोर निरासोत्पादक प्रकृतियां केवल पूर्व वा पश्चिम में नहीं बरन् सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है। संसार का धैर्य युग होने की सर्वप्रथम धर्ष है कि धारे उत्तों का सामूहिक वधीनीकरण हो। केवल संयुक्त राष्ट्र संघ वा अन्तरी धम्य संस्थाओं द्वारा ही विश्व-एकता स्थापित नहीं हो सकती। धसग-धसग धधों में ही धाम्नि-स्थापना काफी नहीं। हर बात परस्परसम्बद्ध है। पूर्व धाम्नि है ही पूर्व युद्ध का अणुध टम सकता है। पूर्व का धार्मिक बुद्धि

१ 'ईश्वर धध धेइइ' अथक युगध में धरने निरन्ध में धध की कु ने निरन्ध है "कन तो वनों के रोडन अनेध निरन्ध ईश्वरधर अोर लडनी ईश्वर विचारों अोर अरुठक की धुनिधों के धधधूर लमलधध ईश्वर धध धधुधिन धधधध धैर्यात्मिक प्रकृति अोर धधुधिन धान क नाल नहीं हो ससा है।" कठ १५.३।

बोध है—जिसे परिचय भी अपरिचित नहीं—वि मानव जिसे मूर्खों का समु-
 धित बोध है पृथ्वी पर ईश्वर का सर्वोत्कृष्ट मूर्त रूप है। विज्ञान की प्रभृति का गलत
 समझने से इस दृष्टिकोण को बड़ा धक्का पहुंचा है जिसकी वजह से धार्मिक
 जीवन का बौद्धिक विनाश धीरे रचनात्मक दृष्टियों का हास हा हुआ है।

विभिन्न परम्पराओं के समय के फलस्वरूप महान् धार्मिक पुनरुत्थान
 संभव हो जाते हैं। कभीसट के अनुसार ईसाई-धर्म स्वयं दो चारों—हेनेतीय
 धीरे यहूदी—का संघम है। ईसाई-धर्म के प्रभाव से ध्वस्त हो रहा मूनामी रोमक
 संसार एक नये समाज में परिवर्तित हो गया। पृथ्वी की सतह पर सभी प्राण रहते
 हैं स्वाम धीरे समय की यह जहारहीबारी समी प्राणियों के लिए है। यही हमारा
 मौक्तिक आधार है धीरे यही समूह मानवता की एकता को समझ करता है।
 मानवता की एकता धर्म तथ्य नहीं है कर्मव्य है। विचारों धीरे उनकी धार्मिक
 समुचित के कारण बौद्धिक एकता की समावधान है। विन्नु मानवीय एकता धीरे मयों
 की संभावना प्रकृता के नभौर उद्घाटन के उद्भवता व्योमें ही है क्योंकि यही सब
 इतिहास में नवीन उद्घाटनार्थ का साध है। वे ही विरह-रुक्ता क सिए मान
 वीय प्रयास के व्येय धीरे धीरिय होता है। हां मरुता है कि पूर्व धीरे परिचय के
 संघाय के फलस्वरूप एक धार्मिक पुनर्जागरण हो धीरे एक विरह-समाज बन
 सके जो जन्म जेन को धृपता रहा है।

विश्व की वर्तमान परिस्थितियाँ वैज्ञानिक विधि का सर्वभौम स्वीकरण
 धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन विरह-रुक्ता की चुनौती इन सब धर्मों में
 धार्मिक रचनात्मकता का आन्दायन जन्म में रहा है। विभिन्न धर्मों के प्रयत्नोत्त
 विचारक परमाय मितकर साथ धीरे प्रेम द्वारा उत्तम जीवन की प्राप्ति के लिए
 प्रयत्नशील हैं। दुनिया धारा त्रिधावी गरीबी धिने हुए धर्मों धक्का प्रयास से
 दरलेबामी भर्मात्मता का नहीं बरन् पर रचनात्मक धार्मिक धर्म को पाना
 चाहती है। दुग धर्म का विज्ञान की प्रभृति क प्रतिक्रम न होना धार्मिक है। इन
 मानववर्गी धार्मिकों का प्रोत्साहित करनेवाला धीरे विरह-रुक्ता स्थापित करने
 के लिए प्रयत्नशील जाना चाहिए।

विज्ञान की तीव्र गमक धार्मिक धर्म की गहापक है। विज्ञान स्वयंभूमि
 प्रक्रिया-मात्र नहीं है धीरे न तनिहायिक परिवर्तन का प्रज्ञान कारण है। विज्ञान
 का विज्ञान उप सुगों की युद्धि पर निभर है जिनमें ज्ञान योग्य धीरे मुख्य-बोध
 है। मात्र उद्भवान् की प्रभृति पर धर्म का प्रभाव है धर्मोत्पत्ति का धार्मिक नहीं
 बन जाना। धर्म परमाणु की प्रभृति पर धर्म का प्रभाव है धर्मोत्पत्ति का धार्मिक नहीं
 बन जाना। धर्म परमाणु की प्रभृति पर धर्म का प्रभाव है धर्मोत्पत्ति का धार्मिक नहीं

मानव-चेतना क्या कुछ प्राप्त कर सकती है। इसके प्रतिरिक्त ये उपसंक्षिप्तों कठोर मासिक और वैज्ञानिक अनुशासन पदापातहीन सत्यनिष्ठा समर्पण की भावत और रचनात्मक वस्तुतापीयता की सुपरिणाम है।

विज्ञान और धर्म का संबंध ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण है। बीते इमान में वैज्ञानिकों ने धार्मिक और राजनीतिक प्रथाचार सह है। म्यार्दानो बूतो को पिठा पर जीवित बना दिया गया था और वैज्ञानिकों को कैद करके फासी के लिए धमकाया गया था। प्रायः भी वैज्ञानिकों का राजनीतिक आच या नैतिक बहिष्कार की धमकियां देकर सत्य कहन स रोका जाता है। धार्मिकीय कर्त्रा का स्वागत प्रायः इस रूप में नहीं किया जाता कि प्रकृति पर मानव की विजय में यह एक नय युग का आरंभ है और इसकी शक्तियां मानवता की भलाई के लिए हैं। इसके विपरीत इस मानवता के लिए नया अंतरा समग्र जाता है। इसका कारण है दृढ़ राष्ट्रीयतावाद का धर्मित प्रभाव। वैज्ञानिकों को सार प्रथाचारों का सामना करना चाहिए। उन्हें नटिबद्ध रहना चाहिए कि वे विज्ञान की सभाई को कायम रखें और इसके उचित साधन उपमोगो से इसे नीचे नहीं बिरने बने और सम्मता के प्रथम ही विभास के लिए विज्ञान का उपयोग बनन म रोके। मय ही ईश्वर है और सत्य की प्रेक्षा ही ईश्वर की सेवा है।

धर्म और विज्ञान दोनों प्रकृति की एकता की पुष्टि करते हैं। विज्ञान की केन्द्रीय धारणा ही धर्म का अन्तर्धान भी है कि प्रकृति बोधगम्य है। प्रकृति की प्रशियाधो का अध्ययन करते समय हमें उनकी व्यवस्था और सामग्रस्य प्रमाहित करते हैं और ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास होता है। मॉट टॉमस का कहना है "ईश्वर-निमित्त वस्तुओं में हमें—सबने पहले—ईश्वरीय विवेक की एक म्भक मिस सकती है, क्योंकि किसी हद तक उसकी क्षमि सभी वस्तुओं में मौजूद है। हमें ईश्वरीय विवेक को अपवादों और अतिक्रमनाधों में नहीं बरन् प्रकृति की व्यवस्था और सिद्धता, सुन्दरता और सुगुणता में देखना चाहिए। ब्रह्मांड का अस्तित्व जगभग सः प्ररब बलों से है, और इस कल्पना-मान में कि सम्पूर्ण इतिहास का आरंभ ब्रह्मांड के किसी स्थान पर किसी समय घटित एक अपूर्व घटना से हुआ है सामान्य मनुष्या की भी वैज्ञानिक चेतना म तनाव भा जाता है। प्रारम्भ स ही ईश्वर पृथ्वी से संयुक्त है।

१. इसके ने कहा था : 'धर्मो महा के सत्र हिंसात्मक लक्ष्यों से हमारे मालस को गुनाम बनानेवाला बर्ष करन् मक्षिड पर सत्र के बल से बा बनेवाला है। विरमोस का कफन है : "विधरो को सत्या हास मरी ध्यत्वा की म्भाम्भ इत्य विज्ञान विष्य अस्त है।" सम्भवेय बने मालस—मत्र ही विधरी इत्य है अन्ध्र म्भी भारत का म्भी अन्धर-मालस है।

बटे का कथन है कि क्रॉस्ट ने मानवीय ज्ञान की सभी शाखाओं का सम्बन्धन किया कोई भी अत्योपजनक उत्तर नहीं पाया और सत्य की खोज करता हुआ 'अकुत्सायि' बसुह पर आ पहुँचा। वह बिस्सा पड़ता है, 'और अब मैं यहाँ आ पहुँचा हूँ। मुझे अर्थ ज्ञान अभिप्रेत है और मैं पहले ही अिठना बुद्धिमान हूँ।' उसका ज्ञान अर्थ सिद्ध हो जाता है और खोज निरर्थक। वह निराश हो जाता है। वह एक प्राचीन पुस्तक को खोजता है, और उसकी पाँचों सुलेमान की मुहर— एक-दूसरे पर उभटे रहे दो त्रिभुज जो निम्नतर और उच्चतर, प्रकृति के संयोग के प्रतीक हैं—पर पड़ती हैं। उसमें परिवर्तन हुआ है और वह बिस्सा पड़ता है 'बाह! हर क्षण कितना नया ईदवरीय नबीर जीवन प्रत्येक भावना में भरता आ रहा है! मुझे जीवन का उदय फिर महसूस होने लगा है' कितनी ईस्वर ने यह विज्ञान बनाया या क्या?' पृथ्वी और ईस्वर तुझे मिले हैं।' इत्युक्त अन्त की एक नई समझ उससे आ जाती है। उसकी यात्रा में उसे प्रथकार में पहुँचा दिया किन्तु उस क्षण भी उसके समक्ष एक नया प्रकाश ज्योतित हुआ।

विज्ञान प्रयोगसिद्ध है यह अडिवासी नहीं है उदार है। जिन धार्मिक मूल्यों को स्वीकार करने की आशाएँ हमने की जाती हैं उनमें और धर्मव्यवस्थायी रुचियों में बड़ा अंतर है। धार्मिक मूल्यों का आधार है अनुभव—भौतिक संसार का नहीं बल्कि धार्मिक मयार्थ का अनुभव। विज्ञान के सिद्धांत भी अनुभव द्वारा प्रमाणित होते हैं। अनुभव का अर्थ केवल ऐन्द्रिक अनुभव या चिन्तनकार्य तक सीमित नहीं है। सामाज्येतर पटनाएँ और आध्यात्मिक अन्तर्बुद्धि भी अनुभव ही हैं।

धार्मिक मूल्यों के समान धार्मिक मूल्यों को भी अनुभव द्वारा प्रमाणित किया जा सकता है। मानव-स्वभाव-रूपी कश्च मानव की निर्दिष्टता नश्वता और प्रेम ने बना दिया जाय तो ईश्वर का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। धार्मिक धर्मार्थों का उद्देश्य है धार्मिक परिणाम तक पहुँचना। अन्तर्बुद्धि का कथन है आध्यात्मिक विवेकपूर्ण विचारधारा का अन्तर्बुद्धि में होना है।^१

पूर्व में धर्म को अनुभव या जीवन की संज्ञा ही गई है। यह विचारधारा धर्म मयी लोगों के धार्मिक लोभी द्वारा धर्मव्यवस्थायी स्वीकार की जा रही है। धर्मव्यवस्था धर्म की नहीं कार्य की है। 'ईश्वर ईश्वर' विष्णुवैष्णव लोगों

१ "अन्तर्बुद्धि का प्रेरण मूल्य में होता है और मूल्य में ही प्रेरण गतिविधि होती है।" — मूल्य की शक्तों में अन्तर्बुद्धि भी प्रेरण मयी है अन्तर्बुद्धि, और अन्तर्बुद्धि अन्तर्बुद्धि के अन्तर्बुद्धि मूल्य में है। — इन्द्रवैष्णव अन्तर्बुद्धि मूल्य में है।

२ विष्णुवैष्णव अन्तर्बुद्धि मूल्य में है (१९९३)।

की नहीं ईश्वरेश्वर का पालन करनेवाले लोगों की प्राबल्यवन्ता है।^१ तास्मद् का अर्थ है "यह है कि मेरा नाम भूमि जाय और मेरे आदेशों का पालन करे।" त्रितीय विश्वयुद्ध में विभिन्न ब्रह्मनिपायी पंथ की अविश्वसनीय गहराइयों तक जा पहुँचे थे और इस प्रकार प्रत्यक्ष सिद्ध हो गया था कि हमारे धार्मिक विश्वासों की प्रकृति अस्थिर नहीं है।

परम पिता की आज्ञा मानने के लिए जिज्ञासुता आवश्यक है। जगत् की नयी प्रत्यक्ष मानवजाति में जलनी चाहिए। "और परम पिता परमात्मा ने कहा मैं तुम्हारे भीतर एक नई जेठना भर दूंगा और मैं उनके धरीर में परब्रह्म का दिव्य विकासकर हाइ-मार्ग का दिग्गज दूंगा।"^२ मूल्य और ईमानदारी पवित्रता और गंभीरता, क्या और क्षमा जैसे गुण निस्सुहृता से उत्पन्न होते हैं, और निस्सुहृता द्वारा ही धार्मिक परिवर्तन संभव है। अब हमारी सामंताओं और अधिभाषकों का हमपर दासन है, हम अपने पड़ोसी का अपमान करते रहेंगे उसे शान्ति से न रहने देंगे अपनी हिंसात्मक प्रवृत्तियों का प्रयोग और मोक्षपथा से परिपूर्ण संस्थाएँ और ममानिर्मित करते रहेंगे। धारमकेन्द्रीयता के स्थान पर ईश्वर केन्द्रीयता की स्थापना से शान्ति और जीवन-सौख्य की प्राप्ति होती है। अक्षिप्त चिन्तन और अज्ञानता द्वारा ईश्वर की प्रकृति को गहराई तक जाना जा सकता है। धर्म का मूल तत्त्व धार्मिक सिद्धान्तों अथवा ऐतिहासिक घटनाओं की बौद्धिक स्वीकृति नहीं है। यह तो उन अनुभव की तैयारी मात्र है जो हमारी सम्पूर्ण सत्ता को प्रभावित करता है हमारी अद्यान्ति पीडा हमारी संकुर और निष्कमल सत्ता की व्यर्थता की भावना का अन्त कर देता है। सेंट एम्ब्रोस का कथन है "परम पिता परमात्मा अपने उपवासकों की रक्षा तर्कशास्त्र द्वारा नहीं करता चाहते थे। धर्म केवल मूल्य-चिन्तन नहीं बल्कि सत्य के लिए पीड़ित होता है। हमारा विश्वास है कि सत्य प्राप्त हो चुका है, मूर्तिमान है उसके मानक निश्चित किये जा चुके हैं और अब मानव का केवल यही काम रह गया है कि निश्चित परिपूर्णता के अनुस्यू गुणों को व्यक्त करे किन्तु दुःख है कि हम विश्वास में मानव-मन की धार्मिक विश्वासाधारणों को पंगु बना दिया है। यह तर्कसंगत धारमनिष्ठि का अक्षिप्त धर्म का एक दुःख नकारणकारण कर देता है कि धर्म धार्मिक 'एडवेंचर' भी है।

१ अक्षिप्त अक्षिप्त ने २ अक्षिप्त १९२२ को आन्तर्गत से अपने पुत्र के नाम पर मे सिद्ध था "धार्मिक धर्म आर्थिक या वैज्ञानिक नहीं बल्कि आन्तर्गत है और अक्षिप्त को अपने अनुस्यू कर देता है।" अक्षिप्त जी. एम. अक्षिप्त अक्षिप्त में अक्षिप्त अक्षिप्त अक्षिप्त (१९४४) पृष्ठ १७०।

२ 'दिव्यता' XI. १९ अक्षिप्त १९।

पूर्वीय धर्मों में मानव-जीवन की सिद्धि एक अनुभव है जिसमें उत्तरी सत्ता का प्रत्यक्ष स्तर उच्चतम तम तक पहुँच जाता है। हम प्रपञ्च में प्रकाश में पहुँचते हैं। हम स्वयं को एक मार्बनीय उद्देश्य में बँधना हुआ पाते हैं। हमारी सत्ता सम्पूर्ण हो जाती है। हमारे अकेलेपन का अन्त हो जाता है। हम अपने चारों ओर के संसार के सिक्कार नहीं बल्कि स्थायी बन जाते हैं। जिस तल दिल्ली धार्मिक इच्छा को बुद्धि प्राप्त होती है और वह अपनी सत्ता की गहराई में पहुँचता है। उगी सत्ता वह एक नये मार्ग पर चमकता है। बुद्ध या ईसा हमें नया जीवन प्राप्त करने की प्रेरणा देते हैं और हमारे मुक्तिदाता अथवा रक्षक हो सकते हैं। उनके जीवन और उपदेश इस परिवर्तन के उदाहरण हैं। इन्हींका पालन करके हम अपने पहले जन्म और प्रकृतिप्रदान बंधनों को तोड़कर अपनी धार्मिक सम्पूर्णता से ऊपर उठ सकते हैं। जब हमारी चेतना सामान्य स्तर से ऊपर उठ जाती है हम अज्ञेय को जानने समते हैं और इसी अधिक प्राम्णता का अनुभव करते हैं कि जब आत्मा अपनी ही गहराइयों में अपने जीवन और सम्पूर्ण मर्यादों के आधार को प्राप्त कर लेती है तब समय के उभरे धान्तेन्द्रिय को किसी भी भाषा में व्यक्त करना असंभव है।

परम सत्ता के प्रति यह आपूर्ति जिसकी चर्चा इच्छा करते हैं अचर्चनीय है।^१ सुरबिन्दु विवेकानन्द के उद्देश में इस अचर्चनीयता को प्रकटित तो किया जा सकता है। उन्को में भाषा नहीं जा सकता। इस विषय पर ब्रह्मसंदेश का श्रेष्ठ ब्यक्त है "धर्म प्रकल्पित मानिषों का स्वाभाविक मूल है। फिर भी माताएँ अनेक बानें चौकती हैं जिन्हें वे कह नहीं पाती। इस प्रकार यही अनेक बाल बानें धर्मिक धार्मिक प्रभाव हैं जिनके बारे में कोई तर्क नहीं है।"^२ इस अनुभव को प्रतीकों में व्यक्त किया जाता है जो इच्छाओं के ज्ञान और विश्वासों के अनुसार प्रतीक अनेक प्रकार के हो जाते हैं। फिर भी हिन्दू बीड ईसाई का मुखी अध्यात्मवादिता सभी का मूल अनुभव एक ही है। स्वर्गीय जीवन इसका अर्थ है कि "यम समय और राष्ट्रीयता के बावजूद अध्यात्मवादिता के उपायों में आरम्भजनक सहजति है।"^३

१ ईश्वर का नाम है। ईश्वर-वस्तु और विश्व-वस्तु (वस्तु) की अन्तर्गत ईश्वर का नाम गौरव रहता है। हमारा उद्देश्य कि ईश्वर एक अचर्चनीय-वस्तु है। ईश्वर के अन्तर्गत ईश्वर का नाम है। ईश्वर-वस्तु के अन्तर्गत ईश्वर का नाम है। ईश्वर-वस्तु के अन्तर्गत ईश्वर का नाम है। ईश्वर-वस्तु के अन्तर्गत ईश्वर का नाम है।

२ ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है।

३ ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है।

४ ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है। ईश्वर-वस्तु का नाम है।

प्रथम के उद्भव से जब सम्पूर्ण अस्तित्व अथवा सम्पूर्ण आत्मा के अनुभव का बौद्धिक प्रतीकों द्वारा व्यक्त किया जाता है तो वह प्रतीक मात्र होते हैं। अवस्था को पूर्वोक्त समय के दौरान पर व्यक्त नहीं किया जा सकता अस्तित्व को संवतनता को मत्ता के दौरान पर—अर्थात् समय-व्यक्त के प्रतीक म—सभी प्रकार व्यक्त नहीं किया जा सकता। फिर भी वे सम्भव नहीं हैं। कुछ धार्मिक विचार गंभीर तम अस्तित्व के परिचय हैं। प्रतीक। घोर विस्था या उपाय अन्वेषणमत्ता के लिए उद्घाटन के रूप में किया जाता है के स्वयं उपायना की वस्तु नहीं हैं।

धार्मिक विद्वानों के विकास का प्रथम है प्रारम्भ के अस्तित्व को किसी वस्तु में परिचयित करना। जो कुछ हमारे अस्तित्व का पहलू बिन्दु का या उसे हम एक वस्तु में परिचयित कर देते हैं जिसे हम स्वयं ग्रहण करते हैं। कुछ अनुभव ज्ञान का एक भाग बन जाता है। ईश्वर के बारे में मानव की धारणाएँ स्वयं ईश्वर नहीं हैं। ईश्वर के बारे में धार्मिक विद्वानों का परीक्षण प्रथम के हो तथ्यों अथवा अनुभवों द्वारा होता है। उन विद्वानों का अन्तिम घोर साक्ष्यमिष नहीं समझना चाहिए।

ब्रह्म बना घोर कर्म के धर्म से पर है क्योंकि बिधि विरहव्यापी इतिवृत्त का प्राचीनिक करता निरर रचना और ध्यानमानु करता है। किन्तु संसार का प्रथम अन्त विकास करता है वह आत्मा का ही प्रभाव है। सम्पूर्ण प्रकृति और जीवन ब्रह्मम है।

मत्तार ईश्वर की इच्छा का परिचय हैं कहने का अर्थ यह नहीं है कि उसकी इच्छा अर्थ है। इसमें केवल नहीं आत्मा होता है कि ब्रह्मांड की सम्भावनाएँ निरसीम घोर अर्थ है। इसका अर्थ यह भी है कि सृष्टि का स्वभाव परम नहीं बन सकता। ऐसा संभव होता तो शोषण ही परम हो जाता। अर्थात् मानव ईश्वर के समान है घोर उसकी ही प्रतिवृत्ति है—ब्रह्मा उनका अस्तित्व ही न रहता—इसलिए मत्तार ईश्वर की छवि है। अर्थात् मानव ईश्वर से मिल है इसलिए संसार भी ईश्वर से मिल है।

सभी धर्म पद्धतियों में प्रेम करने का उपदेश देने हैं, किन्तु प्रेम करने की क्षमता या लक्षणा कठिन काम है। आध्यात्मिक जीवन का विकास ही वह काम है जो पद्धतियों को प्रेम करने की क्षमता प्रदान कर सकता है, फिर चाहे हम स्वभावतः ब्रह्म न करेता चाहें। 'परिचित घोर में वेद वेद' म कहा गया है, 'तुम्हारे बाप मुझे और अज्ञे कहें से अर्थ है? तुम जाहो भी तो तुम्हारे म मुझे यहाँ से नहीं जाने।' मानवों की परम्पर-विराही आजायामों में ही मानवों में उजाड़नी घोर सत्तों का जन्म होता है। हमें अपने भीतर अनुभवना लक्षणा आवश्यक है। मेट टेक्सा के शब्दों में गंभीर अर्थ है, "इस पृथ्वी पर तुम्हारे घोर के अतिरिक्त ईश्वर का

और कोई घरीर नहीं है। तुम्हारे ही पांव हैं जिनके बस चलकर वे मसाले करते रहते हैं। तुम्हारे ही हाथ हैं जिनसे वे घापीबाँध बेते हैं।" अठारहवीं शताब्दी के महात्म्य आत्मबाबी विभिन्न नामों ने कहा था 'धर्म से भेदा महत्त्व उस स्वाभाविक क्रोमनता से नहीं है जो प्रत्येक व्यक्ति में उसकी घरीर रचना के अनुसार कम या अधिक मात्रा में उपस्थित है। इससे भेदा धर्म है बिनाके और धर्मनिष्ठा पर आधारित आत्मा का एक प्रबल व्यापक सिद्धान्त जिससे हम प्रत्येक प्राणी को ईश्वर द्वारा निर्मित प्राणी मानते हैं और उसके प्रति क्रोमन बचाव और सहाय हो जाते हैं, और ऐसा हम ईश्वर के लिए ही करते हैं।" धार्मिक अवहित्यता के कारण इस दुनिया ने बड़े दुःख उठाये हैं और रणत बहामा है। हमारे समय की राजनीतिक अवहित्यता ने भी—जो किसी भी धार्मिक संघर्ष के समान दूर, बिना व्यापी और हीली है—धार्मिक नामा धाड़ लिया है जो मध्ययुग के धर्मयुद्धों की याद दिलाता है। धर्म के नाम पर ईसाई मनाषों ने पूर्व पर आक्रमण किया था। किन्तु पश्चीर धार्मिक धारणा भी उम्मत अवहित्यता से रक्षा नहीं कर सकती। धर्मयोद्धाओं का विचार था कि वे मुसलमानों के खुरा के विरुद्ध और ईसाइयों के ईश्वर के पक्ष में लड़ रहे थे। वे इस विचार को संभव ही नहीं समझते थे कि मुसलमानों का खुरा बही ईश्वर हो सकता है जिसपर उनकी अपनी धारणा है। धर्मर मोम सोचने हैं कि धरने धर्म के प्रति बंधनदार रहकर वे व्यक्तिगत रूप से कुछ भी करने को स्वतंत्र हैं। हमारी महत्त्वार्थासाएँ बढ़ जाती हैं धरने लिए

१. रूप कल्पि किना धर्म सदाचाररो बंद ।

सदाचाररुषं वरुषयनिणि रदिः सुररानम् ॥

किसी भी धर्मनुष्ठी का प्रवृत्ति बंद सदाचार के प्रति होनी है जो वह प्रभुत्व को प्रति में बिना ही उद्यत होता है। पत्नी र पक्षीय डीक है।—मुनेष आर्य-मनास' (१४३) पृष्ठ १३ ।

२. धर्मयुद्ध के र गानदार भा रानी व सोम्य धरने विराय को रम सफूर्त रागा रो लयाय धरने र सुखमरिषि विरुग्धिया के संघर्ष में जिनका पूरा लक्ष्यत्व है। "पूर्व और पश्चिम के धार्मिक मतों को घोर मनेष की लयाय धरने में जिससे इच्छी लयाय का बर्णन हुआ है ईसाई धर्मयुद्ध एक दुःखर और विनाशकारी बला थी। लयाय रागापरियों पर रक्षित करण धुर इतिहास रार को बंद है। कर्म प्रभुत्व के उष्म-मध्य युग की लयाय है कि लयाय प्रवृत्ति किनी लयाय है। किना अधि र मध्ययुग का किन्तु किनी एक रक्षितकर रिकनी अधि र रक्षितकर की किन्तु किन्तु एक लयाय । लयाय को उष्मिषि रक्षितकर लयाय का बंद और लयाय लयाय को बंद लयाय लयाय और लयाय ने अधि रक्षियों को धरने कर दिया था । लयाय लयाय लयाय के लयाय के लयाय पर एक लयाय लयाय लयाय मे अधि र लयाय का और लयाय लयाय के लयाय लयाय लयाय ।—'र दिदी लयाय र लयाय' लयाय ३ (१४४), पृष्ठ ४४ ।

महीं बल्कि अपनी धार्मिक संस्थाओं के लिए। इन प्रक्रिया को विनियम लाने में धर्म को स्वयं बिल्कुल ईश्वर की ओर धारणा' कहा है। इत्येव की सारी सासनाएं और पक्षपात व्यर्थों के लिये बने रहते हैं और किसी तथ्याकथित धार्मिक उद्देश्य से कुछ जाते हैं। "इन धर्म प्रवृत्ति पृष्ठा और धरणाचार धनेक कार्यों को धार्मिक योग वा बाना पहनाकर पवित्र बना देते हैं प्रकृति स्वयं बिल्कुल तगदास्यर सम सनी है।" ईश्वरभक्ति के नाम पर इन धरणाचारों और धरणाचार को भी नेंवार रहते हैं। सगता है कि मानवता किसी धामुहित पापकर्म की बाध हो गई है और कुदृश्य करती सभी का रही है। सगता है कि कोई ईश्वर मानवता पर अनुप्य और उसकी परिस्थितियों पर, हाथी हो गया है। और ईमानदार धारमियों के समस्त सत्प्रयासों और सकिष्ठाओं का उपयोग पुष्कलों में करता जमा का रहा है। यदि प्रेम ही ईश्वर है तो ईश्वर ईश्वर महीं हो सकता। यदि ईश्वर के प्रकाश से ही प्रत्येक मानव धामुहित होता है तो ईश्वर न अपनी सत्ता का प्रमाण भी प्रस्तुत किया है तो हमारे धर्म के धतिरिक्त धर्म धर्मों के धनुवाधियों को भी ईश्वर का प्रेम प्राप्त है। ईश्वर के रहस्य को जानने के धनेक रास्ते हैं।

धर्मोत्थापूर्वक विचार करने तो धर्म धर्म मीन और बाधाधता से समान है। एक ही धरणाचार पर विभिन्न धार्मिक परम्पराएं स्थित हैं। इन सामान्य धरणाचार का भोग इतिहास से परे है, धारण है, इसलिये इनपर सबका समान अधिकार है। विभिन्न धर्मों के धरणाचारों के धनुमधों में समान तत्त्व मिश्रित हैं। विभिन्न धर्मों के लिये हम एक ही तत्त्व तक पहुँचना चाहते हैं। धामु सों की धीमाधों और नियमों के धतिरिक्तों को धार करने के बाध सभी को समान धारणाधिरिक धीधन प्राप्त होता है। इतिहास के धम्यधन द्वारा प्रमाणित धरणाधरुत सिद्धांतों की धारणाधिरिकता ही धरणाधिरिक की धरणाधिरिक है। इससे धतिर उमी गंभीर सत्य पर प्रकाश पड़ता है जिस पर पूर्वोक्त धर्मों ने धरणाधिरिक धरणाधिरिक है—धर्मों की प्रत्यक्ष धनेकता में एक प्रकृत्यन एकता है।

इसलिये सत्ता में भी धनेक ऐसे गंभीर धरणाधिरिक हुए हैं जो धारणाधिरिक धरणाधिरिक पर धिस्थान महीं करते थे। धरणाधिरिक के धिस्थान धरणाधिरिक धर्मों में भी सत्य के सत्य मानते थे। वे 'धरणाधिरिक धरणाधिरिक धरणाधिरिक'—धरणाधिरिक प्रत्येक धरणाधिरिक दो धरणाधिरिक धरणाधिरिक पर स्थित है, और इसी कारण धरणाधिरिक धरणाधिरिक प्रमाणधरणाधिरिक है—पर धरणाधिरिक करते थे। ईश्वर धरणाधिरिक धरणाधिरिक है और धरणाधिरिक

१ 'धरणाधिरिक', IV २३।

२ 'धरणाधिरिक' I ३।

३ 'धरणाधिरिक' XIV २०।

वस्तुओं में भी ध्याता है।^१ प्रोफेसर धार्मिक ज टॉपनबी^२ ने लिखा है 'मेरा विश्वास है कि मेरे जीवन-नाम के चार उच्चतर धर्म वास्तव में एक ही 'बीम' के चार रूप हैं घोर यदि हम स्वर्गिक संगीत के चारों प्रकार एकसाथ समान स्पष्टता से पृथकी पर एक मानव को सुनाई पड़ें तो योना प्रसन्न होया कि उसे कर्कश ध्वनिया नहीं मधुर संगीत सुनाई पड़ रहा है। वे विष्णुवाय नहीं करते कि कोई एक धर्म ही आध्यात्मिक मार्ग का धर्मय घोर प्रतिष्ठित उद्घाटन है। दूसरे धर्मों को यह कहकर धम्बीकार करना कि हो सक्ता है 'ईश्वर ने उन्हें भी स्वीकार किया हो घोर वे भी कुछ मानवीय धारणाओं के समक्ष ईश्वर के रहस्य का उद्घाटन करने हों मेरी दृष्टि में ईश्वरनिष्ठा है। उन्होंने साक्षमाक्ष का कवन उद्घाटन किया है "इतना महान धर्मोप का ज्ञान एक ही रास्ते पर आकर नहीं हो सकता" धार्मिकविषय विविधय तैमियल दूसरे धर्मों में यही बात कहते हैं "निर ईसाई विचार या धाधार या धागापना की प्रणामिया में जो कुछ भी धाधर्म है वह सब उनपर ही उनके भीतर ईसा का प्रभाव है। ईश्वरीय ज्ञान—धर्मान् ईसा

१ ईसा के बादशाह मगरम ने देहाभानिया को किंगड धर्षिकार में बुनिया का परमिय करने के बरफत बरशाबम तथा अन्य मन्दिर के पुनर्विर्माण के लिए मरुदियों को हर समय मर्यादा दी थी। मरु १११० में इसी के समय 'दाहो के राज्य' मिस सिडिलीमैर ने एक कोशिका की कि 'मरुके समय का जो अमी गबके अनुस्तर धर्म घोर धारणा का जलन करने घोर अने धर्म के उद्देश्यों का पक्ष लने की लक्षण है किन्तु किन्हीं की परमनुवाची को जाना गरी है कि वह दूसरे धर्म-वर्णियों का आत्मय में बारा टान का रुई बानि या धार्मिक आत्मत पदुकरे। — ईश्वर ज्ञान अमी १११४ जुठ १२० पर उल्लु।

२ '० अमी का इगुा रीट ४ (१११४), जुठ ४२०।
 ३ धार्मिक राजता धर्म निर्जन को मरु सभ्य में स्थान करने हैं। हमारे आध्यात्मिक रूप में है करने है मेरा अनुमान है कि धर्षिकम तथा सभ्यम संस्कार मानव ने बुर करने का रहे है—किन्तु-धार्मिक, साम्बधर और धर्मविरुध धर्षिकता, के ज्ञान करने का रहे है— और एक धर्षिक धर्म के अनुवाची बनने का रहे है किन्तु अल्प म कम में हुआ है य धर्षिक में। मेरा अनुमान है कि का ईसा-धर्म ज्ञान को धर्षिकत्व में स्थान और रोम मरुका था। अन्य इसका ज्ञान कि धार्मिक ईसा धर्म के मरु-जो जलो वा स्थान मरुत का एक मरुत लने से मरु। मेरा धारणा है और मैं धारणा करता हूँ कि ईश्वर धर्म के धा अधकार में ईश्वर का धर्म का धारणा या जाना जाया। किन्तु मेरा यह भी धारणा है और मैं धर्मय की बरफ हूँ कि हममें ईश्वर का ईश्वर ईश्वर मात्र-माना ईसा बरफता गरी रदगी और हम किन्तु ईश्वर की धारणा प्रकल्प कि उमर अने लप धर्षिक धर्षिक है को भी स्थान गरी दिव्य उद्देश्य। गरी अल्प वं काव्य-बल है। धर्मका धारणा (ईश्वर को धर्म का म्हा कैरे का धर्षिक) है कि स्थान का धार्मिक-धर्म करने का एक वही अनेक धारणा और धर्षिक करने का एक धारणा है। — धर्मय निर्दारी मरु-मैर (१६ अनेक १११४) जुठ १२१।

मनीह—के बल पर ही इग्रायह प्तनो जरयुम्न युद्ध घोर कल्पयुगियम धन पापित सायों को समझ घोर कहूँ गके ये । केवल एक ईश्वरीय प्रकाश है अपनी मीमा के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति उसम प्राकारित होता है । फिर भी प्रत्येक को उस प्रकाश की कुछ किरणें ही प्राप्त होती हैं और सम्पूर्ण प्रकाश के धामोत्तम के लिए सम्पूर्ण मानवीय परम्पराओं के सम्पूर्ण ज्ञान की आवश्यकता होगी ।^१

ईसाईधर्म का इतिहास बताता है कि अपने अन्तर्द्वय के समय में उसम प्राकार प्रकाश की प्रकृति थी । वह हमेशा पलंग बातों का महत्त्व देता और अपनी कठिनायों को लपेटता भी रहा है । रोमक साम्राज्य को बीडित करने के बाद उसने स्वयं को ठाकामीन व्यवस्थाओं के अनुसार बदल लिया इसम पूर्व रोमक साम्राज्य अपनी पुनर्र्जा सांस्कृतिक परम्पराओं और सामाजिक संस्थाओंवाला बर्बर समाज था । मध्ययुगीन कैथलिक विश्वास कि स्वर्ग के बिना मुक्ति संभव नहीं है प्रब नहीं रह गया । मैं सोचना है कि साठेरा अनुक के साफ-साफ कर्मों के बिना कैथलिकों को माननेवाला अधिक लोग होंगे । केमसा है "कैथलिक धर्मशास्त्रियों का केवल एक सार्वभौम स्वर्ग है, जिसमें बाहर किसीकी मुक्ति नहीं है । इस परिवर्तनशील संसार में कठिनायों की बदल जाती है । उदाहरणतः मध्ययुगीन सिद्धान्त कि जिन बच्चों का बपतिस्मा न किया गया वे धनस्तकाम तक मरक बासी रहेंगे । प्रॉपेटीन के शब्द हैं "बच्ची तरह इस बात को समझ लो । समझ बार धर्मशास्त्रियों के प्रतिनिधित्व बिना बपतिस्मा के यदि कोई नासमझ बच्चा भी इस संसार में जन्मा गया तो उसे सर्वत्र मरक की धमि में जलने का बच्चा मिलेगा ।" कैथलिक 'एम्साइकलोपीडिया' के अनुसार ११० ईसवी में भी गेंट धर्मशास्त्र भी गेंट प्रॉपेटीन के साथ पूर्वतया सहमत थे कि बिना बपतिस्मा के बच्चों को पापियों के समान यन्त्रधारण सहायी पड़नी है । काउन्सिल प्रॉफ ट्रेण्ट की अधिवृत्त प्रकोत्तरी (१५५९) में कहा गया है कि बिना बपतिस्मा के बच्चों का जन्म 'धनस्त यन्त्रधारण और मरकबास के लिए होता है । प्रायः कैथलिक लोग इस सिद्धान्त को नहीं मानते ।

हमें किसी बस्तुपरक सार्वभौम सिद्धान्त की ध्येना नहीं करनी चाहिए । सबके एक प्रकार से सोचने का मतलब है कोई नहीं सोचता । बिस्व-समाज में प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता है कि वह अपने अनुसार ईश्वर का समझ घोर ऐतिहासिक उच्च ठो स्वतन्त्रतापूर्वक बटमार्यों के अनुसार विकसित होते ही जाएंगे । जिस प्रकार किसी 'सिम्फनी' के संगीत की अद्वितीयता और मधुरता में प्रत्येक स्वर का योग होता है उसी प्रकार प्रत्येक कर्म का योग सम्पूर्ण की समृद्धि में होता है ।

प्रायः के सकटकाल में प्राचरवक है कि समस्त विश्व की धार्म्यात्मिक धर्मिता प्रायः में मिस भायं और महान धार्मिक परम्पराएं अपनी कृपात विमताओं को मूलकर अपनी प्राचारभूत एकता समझें और उसीमें मौलिक पूर्वनिश्चयवाद का विराज करन की शक्ति ग्रहण करें। जिस धर्म की क्यरेला यही प्रस्तुत है वह वैज्ञानिक प्रयोगसिद्ध और मानवतावादी धर्म है। इसीसे मानव और उसकी भारता का पूर्ण विकास हो सकता है। मानव के प्रति मानव की अमानवीयता बैसकर यह मौन नहीं रहेगा।

इसाई धर्मानुयायी धर्मशास्त्रीय विरोधों में समझकर रह गए और सामाजिक समस्याओं से उनका ध्यान हट गया इसी कारण इस्लाम ने लोगों को आकर्षित किया। पुनः, धर्म की अंतर-सांसारिक और प्रतिक्रियावादी प्रकृतियों की मर्त्सना के कारण साम्यवाद प्रायः आकर्षक-केन्द्र है। अपने धर्मशास्त्र प्रायः चल रही सामाजिक धार मानवीय जाति के साथ सामंजस्य स्थापित करके मानवता की श्रेष्ठतर व पूर्वतर जीवन की प्राप्ति के प्रयत्न बनेगे।

इसा बूझता धारम है एक नई मानवजाति का प्रथम उत्पन्न पुरुष। ज्यों-ज्यों पृथ्वी पर धार्म्यात्मिक राज्य का प्रसार होता जायगा इसा प्रकृति और अतिप्रकृति में ऐक्य स्थापित कर सकेंगे—जिस प्रकार वा ऐक्य प्रायः विचारों और अन्तु-प्रकृति में स्थापित हो चुका है—और उसमें भी प्राये बहु प्राण्ये जिस प्रकार विवेकपूर्वक जीवन प्रथम में निम्नतर ऐंग्रिक जीवन को पार कर जाता है। एक ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार स्वयं को और अपने संसार की पुनर्निमित्त करने वा मानवीय प्रथम उसकी अक्षमताओं को महानता और विधिप्यता प्रदान करता है। इसाइया की प्राणा है धार्म्यात्मिक व्यक्तित्व की एक नई जाति का मूलन जिसके प्रथम अर्थम्य व ईसा तथा प्रथम सम्त। वे पृथ्वी पर सत्य के अमुद्रा हैं धार्म्यात्मिक धर्म का प्रसार करनेवाले ईश्वरीय उपकरण हैं। मूलन की प्रक्रिया अत्र भी जारी है। यह नमान्य नहीं हो गई समाजि की गह पर है।^१

५ मिट्टय

हम मार्क्सवादी मानवतावादी नये युग के उग-रास में हैं। प्राणा की उत्तेजना है प्राणाधर्मों की हृमचन है जैसा प्रायःकाल म अत्र और की क्रियण पृथ्वी को जमाने ही होता है। हम प्राणा न चाहें रहने एक संसार म ही है और हमें मानव

१ 'बोवात्मिक' १२।

२ वे दिव हीन मुझे है वर मगर और धर्म

मानव को मान्य होने है रोव विषय करने मे ।

के ज़रूरत और भाग्य की समान धारणा प्रयत्नशील है। विभिन्न राष्ट्रों को मानव जाति के सदस्यों के रूप में एक-दूसरों के समान नहीं बल्कि सम्यता का विकसित करने के प्रयास में संलग्न मित्र-भागीदारों के समान रहना चाहिए। घनिष्ठ घासी राष्ट्र कम-बोर की सहायता करेवा और सारे मानव स्वतंत्र राष्ट्रों के निरन्तरवापी संघटन के सदस्य होंगे। यदि हम गिरिजाभवार व्यक्तियों के निरन्तर पूर्व तक प्रकल्पनीय शक्ति-स्रोतों के घटते से बच गए तो हम सभी जातियों को एकत्र करके एक उदार, विद्या सहयोगी समाज की स्थापना कर सकेंगे। हम समझेंगे कि सम्यता के विकास में किसी जाति या जाति-समूह का एकाधिकार नहीं रहा है। हम सभी राष्ट्रों की उपसम्पत्तियों को मान्यता देंगे उनके लिए प्रसन्न होंगे और इस प्रकार साधनमय बहुलता को प्रोत्साहन मिलेगा। विशेष रूप से धार्मिक मामलों में तो हमें दूसरे-दूसरों और युवों के मनीषियों के महत्त्वपूर्ण योगदान को तो प्रकल्प समझना चाहिए।

युद्ध की अनुपस्थिति ही शांति नहीं है यह एक सुबुद्ध बन्धुत्व-भावना का विकास है, प्रत्येक लोगों के विचारों और मूल्यों को ईमानदारी से समझने का प्रयास है। मानव के मानविकी जीवन की महत्ता का ज्ञान बढ़ता है तो शैतिक युद्धों के घन्तुर का महत्त्व कम हो जाता है। हमें पूर्व और पश्चिम के प्रतिस्पर्धी संघर्ष की ही नहीं प्रतिस्पर्धी ऐक्य की विचारों के मिश्रण की आवश्यकता के समर्थन की आवश्यकता है।

मानवता का उद्भव एक स्रोत से है जहाँ से इसके अनेक शाखाएँ हो गये हैं। प्रकल्प दृष्टे हुए को जोड़ने के लिए प्रयत्नशील है। पूर्व और पश्चिम का घसगाव समाप्त हो चुका है। नई दुनिया का एक दुनिया का इतिहास प्रारम्भ हो गया है। भाषा है कि यह इतिहास व्यापक बहुरंगी और दुर्लभयुक्तमुक्त होगा।

जब कभी भीतो मूर्च्छाएँ भर रहा था
 पश्चिम में घण्टर बुद्धिमत्ता का लक्षण था।
 और कभी केला में केवल ईश्वर की हृदा के शारे में ज्वरेता देने के
 कुद के सुद पर ईश्वर की लक्षणमय मुक्तता थी।
 और अब हमारी अस्मरसम्पन्न दुनिया शब्दी बोधी हो गई है
 कि हमें सौख्य एक विचार का जर्न है उपका शक्यता।
 सारे संसार में विचार का लक्षण है
 और हमें उनका स्पष्ट बोधा को कुद का मन है।

—मार्शल निकमर लेटर्स २ मल्लक प्रथम और द्वितीय १९४१, पृष्ठ १४ १२।

मुप्त (छत्रों और छातर्षी घटाया) महावीर (नबी घटायी) धीपर (बसबी घटायी) भास्कर (बाख्खी घटायी) ।

श्रीपथविज्ञान का जन्म बहुत पहले हुआ । बुद्ध के युग में भारतवर्षवासियों में घण्टापथ व और जगत घण्टापथकृत कमजोर समझायीत मुक्तकारी (घण्टा बनारस) में घण्टापथ व बाह के विज्ञानिया में घण्टापथकृता पर जोर दिया— घण्टापथ में घण्टा उतरने पैरू औरकर बरबा पैदा करण मूत्राशय की पथरी घण्टापथकृत की घण्टापथकृताए प्रचलित हुई । घण्टापथकृता के १२१ मिस घण्टाओं का वर्णन मिलता है । मनेरिया और मण्डरों का सम्बन्ध मान्य किता जा बुका या और मनुमह के रानियों के मुख में घण्टाओं की उपस्थिति मान्य थी । कश्मीर में घण्टाओं और कनिष्क के समय में जीवित (१२ - ११२ ईसवी) चरक ने घण्टाओं के एक सिप्य घण्टापथके घण्टाओं पर एक बंध की रचना की । ब्रह्मसूत्र (पिता और पुत्र) तथा मायबकर व बुद्ध इस सत्र के घण्टा व्यक्तिके ।

हिस्ती का सीह-नुम सगमग ४ ईसवी में खड़ा किया गया था । इसकी ऊंचाई २३ फुट में घण्टिक है । तथा घण्टा का व्यास १६ ४ इंच है जो कम होते होठ १२ ० ४ इंच हो जाता है । यह विपुल मोर्चा न घण्टापथके लोहे का बना है । इसे ने कैसे बना सके ? घण्टापथकृत की बुद्ध की मूर्ति विपुल ठांके की हो परतो से बनी है जो ७॥ फुट ऊंच और एक टन भारी एक घण्टापथकृत पर गड़ी गई है । ये इंडीयनियम के कौमस के घण्टापथकृतक नमुने है ।

मंस्कृत व्याकरण का विकास भी घण्टापथकृत से पहले हुआ था । यास्क ने वेदों की व्युत्पत्तिविषयक टीका 'निरुक्त' लिखी । यह पाणिनि-नाम में पहले ३००-७० ईसापूर्व के घण्टापथकृत की है । भाषाविज्ञान और व्याकरण में पाणिनि का नाम सर्वोपरि है । ये छत्रों सत्री ईसापूर्व के जतरार्ध में हुए थे । पाणिनि ने यास्क और लीनक को घण्टापथकृत माना है । उनकी 'घण्टापथकृता' एक हीर्षकामीत भाषाविज्ञानी विकास का हीर्षकामिनु है । पाणिनि में निमयों को स्वीकार और घण्टापथकृत का व्यक्त किया है । उनकी घण्टापथकृता में समयम ४० सूत्र हैं । वेदम एक सेबक घण्टापथकृत इनका घण्टापथकृत करके घण्टापथकृत पर साध नहीं सफटा था । यह घण्टापथकृतों की बुद्धि है और पाणिनि परम्परागत व्याकरण को घण्टापथकृत प्रदान करणबाध व्याकरण ने और उनकी कृति में घण्टापथकृतों के नाम है । घण्टापथकृतता और बिस्तार के कारण ही ये घण्टापथकृतों से घण्टापथकृत मये ।

पर्वजमिके अनुसार, पाणिनि की कृति मसी प्रकाश सम्पादित एक महान् घण्टापथकृत है ।^१ काव्यायन ने घण्टापथकृतों 'वातिक' का प्रघयन पाणिनि के सूत्रों

१ पाणिनिर्ण मन्त्र सुधिरित् ४ १.३.१; २ ३.५२ । ऊर्ध्वे घण्टापथकृत तावन्तिक एत मन्त्र

इंडोनीशिया ३१

ईरान ३३ ३५, ५० ६५, ७० ७६
७६ईसाई धर्म १६ ३५-३७ ४४ ४६
४७ ४४ ४५ ४६-१०७ ११२
११७ १२० १२३-१२४ १२७
१३८ १४१ १४४-१४५

ईसाई धर्मयुद्ध १८-१०१ १४४

ईशानसीह १०-११ ४७ ५१ ७१
७४ ७७-८० ८७ ११३ १४२,
१४६, १४८

ईसाई विद्यालयी १२३-१२४

ईस्ट इण्डिया कम्पनी ३६

उपनिषद् २० २१ २२, २४ २५, २७
२८ ३८ ४५, ४७ ६३ ७१ ७८
८२ १२०

ए धार बालेस १०६

ए० एच० गाडिनर ७३

ए एडवर्टीज १४२

एकहार्ट ८६, १०२

एडवर्टीज प्रथम १००

एडवर्टीज वेंचरर्स लिमिटेड ६-१० १२१

एडवर्टीज हुंटेन ११०

एडवर्टीज शैलम ७

एच एम० म्वाटकिन ७६

एच बी० युड १६७

एच रिगेन ६७

एनी बेनेट ४५

एनेलागारा ५३

एपॉलोबिस्ट्स ६२

एपीक्यूरस ६४

एपीडेनिमस ६६

एच एम० कॉर्नेफोर्ड ३७

एम० रिधी १२३

एम स्किनर, १४६

एम्पी डोकलीज ४० ५५, ५६, ६१ ६४

एरिस्टोफेस ३४

एरिवाकर ७२

एन्सुपिनिवार्ड एहस्वात्मक धर्म ३६
७२ ७७

एस० ए० कुक ७०

एस० बी० एड० ब्रीडन ७७

एस० वंसीमान १०० १४४

एसाइमस ३६

एथेस १२६

ऐडम रिमथ १२६

ऐमटर्डम ११३

ओ० एम्पर, १७

ओमिबर कामबेस १२६, १४१

ओयोगिफ्र बान्ति १२६

पंगारो, १७ ३१

पुण्य २१ २२, ४३ ४५, ५८

कनिफ १३१

कबीर ३३

कन्वोटिया ३१

पञ्चममणिका

कल्पपूजियम १३, २६, ३६-४१ १२६
१४७

काष्ठ ११३-११७

काशानिम ११८

काम मार्ग ११६-१२१ १२३ १२६
१२८

कार्तिक वीर्यम १३ १६

कान्तिराम १७

कौतुक-तृतीय ६६

कॉम्प्लैण्डन, ७७ ६३ ६४ ६६, १२६

कॉम्प्लैण्डिया ६६

कृष्ण ३२ ६६ १२३

कुम्भतनुनिया १०१ १ ३

कुम्भतनुनिया साम्राज्य ६४ ६६, ६७
१०१ १ ३

केप्लर, १ ८

कैथनिक वर्ष ३६, ४२, ६४ ६८-६९,
१०० १०२ १ ३, १०४ १०५,
१२६ १२७ १४७-१४८

कोरोनिकम १ ८

कोरिया १३२

कोयबट, १३२

क्रीडोरमट ११८

क्रीडितक ११४

कृष्ण ७८

काजा ३४

ग्यातो १ ४

ग्यार्वना बुला ११२ १३६

गिबल ६६, १०

गिबर्ट मटे, १४

प्रेयसी महान १०६

सेटे १४० १४२

सेमनर १ ७

सैमैटी १०७

सैलीमियो १०० १०८ १३६

बन्गुल ६६

बार्म्स डाबिन १०६

बार्म्स टियर एंड्रूज १७ ६

बार्म्स बियट १२३

बाल्म सेम १०६

बीन १६ ३१ ३७-४२, ४४ १०७
१२३-१२४ १२६

बुमाह्लू, ४२

बीतन्य ३३

बयाहित्य १३२

बहांगीर ३३

बज्र ३१

बर्मनी १२८ १३०-१३१

बस्तिन ७७ ६३

बरफोब २२

बरबुस्त ३३ ७६, ७६

बापान ३० ३१ १२३ १२४

बाबा ३१

बॉम कैस्विन १०६ १ ७

बॉम आइबोस्टॉम (सल) ६३

बॉम इ बीटिस्ट ७१ ८०

बॉम पर्वा १०३

बॉम मार्ग (सर) २६

बॉम मार्ग (सर) १८ २०

बॉम बाइकिल, १०३

जॉन हस १ २
 जॉर्ज मेंडेल ११
 जी० एम० ट्रेवेलियन १४१
 जी० फ्रेरेरो १०६
 जुडाबार ७०-७१ ७६-८ ८२ ८३,
 ८३ ८७ १२६, १३८ १४१
 जूमियन ७७
 जे० ए० स्टीवर्ट ६४
 जेनेवा १०६
 जे० बनेट ६०
 जेफर्सन १३
 जेनो ६८
 जेम्स बर्कहार्ट ३४
 जोषाधा द्वितीय (सम्राट) १६
 जोसेफ ग्रीन्गे १ १
 जोसेफ सिस्टर ११०
 जोसेफिन ६६ ७०-७१ ७८
 जोहर, ६८
 डाइमो बाहे, १ ८
 टास्वेरियस ७३
 टामर, १ २
 टानेमी किनाडेल्स ६७
 टॉमस एबिन्नास १०२
 टॉमस हर्बर्ट १०७
 टी एच० हफ्लेने ११
 टैगिटन ३४
 इम्म स्कोल्ड ६८ १०२
 इन्डू० नाडिविन ११८
 इन्डू जीयर ११ १३
 इयानीनियार्थ फर्म ५६ ५८, ६०

इयानीसियस (राजकुट) ६७
 इयक्लीधियन बेमेरियस ७७
 इन्द्ररामजी ११०
 इंग डज १४२
 डी एच० मिस्टर-बास्टो ६, १०
 डीमाजस ६७
 डीन मैम्पूज ८३ ६४
 डेमोफ्राइटस ३१ ६४
 डेमोस्बनीज ६४
 डेविड सिक्विम्टन १२४
 डेविड हार्टमी ११३
 टायोबार ३७-४२
 टायो १०४
 टिम्बल ३१
 तीरयो १०४
 तुकायम ३३
 तुमतीदास ३३
 तुर्क ६८-१ ०
 तुफिरतान ३१
 तु-कुट, ४०
 वियोजोमियस ७७ ६३
 वियोजुस्टस ६७
 वियोमोजिक्रम घोलापटी ४३
 वराप्पुगीज ७०
 वेम्न ३१ ३२, ६४
 वृमीदाइहन १३ २४
 वयानन्द सरम्बती ४२
 वाडू ३३
 वायगिबोह, ३३

- बफम ११८
 बर्कल ११४ ११५
 बर्टोल्ड रत्न ६४
 बर्बर घाक्रमण ४० ६२
 बर्मा ३१
 बहामुप्त १५०-१५१
 बहामुन ४५
 बारबरा बार्डे १०६
 बाम यमावर विमक ४५
 ब्राह्मण बर्म २५, ३१ २८-३६
 बॉन्डिनी १०४
 बिन्मुसाट, ६६
 ब्रिटेन ३६
 बी० वी० सिंग १२५
 ब्र १६ २० २६-३२ ३७ ४१ ४६
 ६७ ६८ ७० ७१ ७६ ७६,
 १२५
 बीसोमिया १६ ३१ ६६ ७२ ७६
 १६६
 रज बॉन ह्यूजेस ८१
 केनोबेन्डूयूय १ २
 तारोबुबुद, १७ २१
 तिमोना १०३

 तपकवृगीता ४० ४५, ७१
 तर्कहति, १२२
 तारन १६, १७ १८ २० २१ ३१
 ३२ ३४ ३६ ३६ ४३ ४६ ४५
 ६७ ६८ ६६ ७४ ७६ ७८ ६०
 १ ७ १०२ १२३ १ ६ १३५,
 १५०-१५२
 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ३६ ४३

 मास्तर १२१

 मकबूतिया ५५, ६७
 मनी ४७
 मलय प्रायद्वीप ३१
 महात्मा गांधी २७ ४५
 महावीर २६ १६१
 माइकेल कैरवे १०६
 माइकेल वेतो १०४
 मापी (बुद्धिमान व्यक्ति) ७८
 मातुमत २६-३०
 मायब ३२
 मायबकर, १२१
 मागीफीबाब ३३
 मास्वस १०६
 मार्कस मारेनियस ६८
 माटिम नुपर १०५
 मालीगुक्त ११५
 मिथाक २२ २३ ४७ ७६-७७
 मिय १५ १६ ४७ ५० ५१ ५२ ६०
 ६५, ६७ ६६, ७० ७२ ७७ ८६,
 ६५, ६६
 मिटो (मॉर्टे) ३६
 मुहम्मद २६ १०१
 मेनाम्बनीज ६७
 मेपांडिग ११७
 मेनाम्ब घववा मिनिम्द (गम्राट्) ६८
 मेमोगोटामिवा ३५, २०
 मेरगिल विरवविद्यालय ६
 मेरगम ६
 मेरियावती १ ६ १०८
 मोहनजोदड़ो १८, १६, २०

मोस्मु, ४१

मौर्य ६६

मंगोल ४७

महलसम ७१ ६६

महूदी ४४ ४६, ४७ ४८ ४९ ५० ६६-

८१ १४६

पास्क १५१

पूकिलड ६७

पूनाम १३ १७ १६ ४६-६८ ७२,

७४-७६ ६१ ६२ ६३ १०३

१ २, १२१ १२६ १२७ १२६

१३१ १३८ १४६, १५०

पूनामी परम्परबादी अर्थ ६५, ६८-

६६ १०१ १ ४ १२६

पूरिपिडीड ४६ ५७ ५६

पूगेवियस ६६

पोग्रान्स केपलर १०८

पोप २

रबीन्द्रनाथ ठाकुर, ६०

राष्ट्रेल १०४

रामकृष्ण ३४ ४५

रामबास ३३

रामानन्द ३३

रामानुज ३२

राममोहन राय ४५

रॉजर बेकन ६८ १ २, १११ ११२,

११३

रॉबर्ट कोच ११

रॉबर्ट प्रॉस्टेडे ११२

रॉबल सोमायनी १ ७ १०८ ११

रिवाडी १२६

रिचर्ड प्रथम ६६

रीसेस्ट (बॉकलर) ४१

रूमी ३४

रुस १२३ १२७-१२८ १३० १३२

१४६

रूसी शान्ति १२८

रेम्बा १२५

रैम वकार्त ११२ ११३

रोम ४७ ४५ ६ ६६, ६८ ७१

७४-७७ ८० ८६ ६४ १०३

१०५ १२७ १२६, १३८ १४७

१५०

रोमक १५०

साभोले १६, ३८

साईन्ज १०६

साप्पास १०६, ११८

सामार्च ११८

सॉफ ११४ ११५

सॉबिकन गॉबिटिवियस २४

मिनाइयस ६७ ११८

मियोगार्डो वा मिषी १ ४

मियो प्रथम १ ६

मिसिनियस ७७

मीन्ज ४२, ११४ १२६

मुई नवम १

मुई पास्म्युट, ११०

मुबकिय फ्लूजेस्टीन १४२

मुई सप्तम ६६

मेनिन १२६ १२८

मेवाइसिये १ ६

वेस्ली स्टीडन ४३	वैजय ३४
लोजिकल पॉजिटिविज्म २४	
स्पूनटियस १०७	संकर, ३२
बर्द्धवर्ध ११७	सर्ववर्धन १२२
बर्जिस ७४	द्यान्तियेन ३०
बराह्मिहिट, १२	साहजहा ३३
बसिण्ट १४	धिया ३४
बाग्मट्ट १२१	सिब २ ३१ ४४
बामन १४२	घानक १२१
बाभेपर ११४ ११२, १२६ १३२	वी धरविन्द ४३
बिल० डकूरेट २०	वीचर, १२१
बिलियम (ओबम के) १ २	सम्मती ३३
बिलियम ओम्स (सर) ४०	सत्तावीन २२
बिलियम मेप्पिन १४६	संजन ३२
बिलियम मॉ १४४ १४३	संयुक्तराज्यधमरीका ३१ १११ ११७
बिल्लेस्म बुट ११	संयुक्त राष्ट्रसंघ १३७
बिबलवेवठावासी १००	साहभाकस १४६
बिबलपुत्र (प्रथम) १२८	साहमोनाइस २४
बिबलपुत्र (द्वितीय) १२४ १३ -१३१	साहरस ६२ १४६
१४१	साही ३३
बिण्डु, ३१ ४४	साम्यवाद १६, ११२-१२० १२६-
बिस्टन पश्चिम (सर) १३२ १३३	१३३ १४०
बिजान १०७-११० ११०-११२	जिन्दर महान ६३-६८ ७२
१२२, १२६ १३६-१३६ १३०-	मिन्मरिया ६७ ७२ ७३ ७६
१३२ १४० १४०-१४२	मिपुलम्यता १७ १८, २६
बी गौडन चान्द १४, १२ ४२	मिओला ११३-११४ १३२
बेनाम ३३	नीरिया ३१ ६६ ७० ७२ ७४ ७६,
बेजिग १०	२१ १२०
बेमानियम १०७ १ ८	सी बोन्ड ८२
बेन्ट कोट (बिजान) १७	मुद्रण ६७ ६१-६३ ६२
बैरिड नाम्यता २१-२२ ४२, ४८ ६२	मुन्नी ३८

मुभेमात्र ७०
 मुसुन १५१
 मूफीबाद ३३
 मूर्य १५०
 मूमो १ २
 मीगापर, ११७
 मेस्सुनय, ६७
 मेंट घबानासिमस ८८ ८९
 मेंट प्रमेसम १०१ १४७
 मेंट प्रम्बोत्र १४१
 मेंट प्रोगलीन ८१ ८४ ८७ ९२
 १४१
 मेंट इरेमांस ८५, ९२
 मेंट एण्टमी ८९
 मेंट क्कोर्मेट, ८५, ९१ ९२, ११८
 मेंट प्रेमपी ७५
 मेंट प्रगरी (म्यासा क) ९१
 मेंट जॉन ७३ ८७ १४५
 मेंट जेण्ड १४१
 मेंट टॉमस १५
 मेंट टॉमस एक्विनास, ८४ ८५ ९८
 १०२, १०३
 मेंट डेरैसा १४३
 मेंट डेदिस ९२
 मेंट पॉल १५, १२, ७६ ८३ ८६, ८७
 ८८ ९१ ९४ ११६
 मेंट पीटर, ३५, ८२
 मेंट प्रॉमिंग नैबियर, १६, १२३
 मेंट बर्नेर्ड (कॉपरवा के) ९९, १०१
 १ ६
 सोओफनीब १४
 सोमोन ५१

मागापटी प्रांठ जीमम १०६ १२३
 मोमापटी प्रांठ वेन्गम ११७
 म्यालिन ११७
 म्यात्र ऋषे १ ०
 म्डीकेन मीम १५
 स्टोइक ६४ ६८
 म्नेन १०१ १ ३ १ ४ १०६

हकणा १८
 हर्बर्ट स्पेयर, ११०
 हन्डी डेबी १०९
 हम्मुरबी २१
 हर्ष ३१
 हगरी १४६
 हाइजोवन बम ११ १११
 हाडिज १३
 हाम (डॉक्टर) १९
 हामेडी (प्रोजेक्टर) १२९
 हार्बी १ ७
 हिन्दू धर्म १६ २० २६ २८ २९
 ३२ ३३ ३६ ३७ ४५, ७१-७२,
 ७८-७९, ९० १२३ १२५, १४४
 १५०-१५२
 हिप्पार्कस ६७
 हिमालय १७-१८
 हिंसिपोर ३०
 हीरोक ११३-११७ १२८ १२६ १३५,
 १३२
 हुमन ९७ १०१
 हुप क्वाइलम ९२
 हुपस (आवर) १८
 हुरोशीलस २ ५८ ६

१६२

पूर्व घोर पश्चिम

हेरोड ७८

हीमड ३६

हेस्बेटियस ११५

रूम ११४-११५, ११६

होमेन ३०

होमर, २१ ४६ ५४ ५७ ६० ६३

विपिटक १२५

६४

० ० ०

